रिसाले-ए-नूर संग्रह:
भाग 9

सत्य की झलक

स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नुस्खे

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रह:
भाग 9

सत्य की झलक

स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नुस्खे

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

TUGHRA BOOKS
न्यु जर्सी

कॉपीराइट © 2010 तुघरा बुक्स द्वारा
13 12 11 10 1 2 3 4

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा लिखित अनुमति के बिना पुन: प्रस्तुत या प्रेषित नहीं किया जा सकता है।
प्रकाशक से.

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित

345 क्लिफ्टन एवेन्यू, क्लिफ्टन, एनजे, 07011,

यूएसए

www.tughrabooks.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा उपलब्ध है

आईएसबीएन 978-1-59784-214-3 (हार्डकवर)

द्वारा मुद्रित

Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

भाग तीन

भाग चार

प्रस्तावना

बेदिउज्जमां ने कहा नर्सी और
स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए नुस्खे

बेदिउज्जमां सईद नूरसी (1877-1960) की उपलब्धियों, व्यक्तित्व और चरित्र की विरासत और उनका निरंतर प्रभाव उन्हें बीसवीं सदी के मुस्लिम जगत में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाता है। सबसे प्रभावी और गहन तरीके से बेदिउज्जमां इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उन्होंने अपना अधिकांश जीवन इस्लाम के प्रति प्रेम और उत्साह से ओतप्रोत होकर बिताया, तथा एक बुद्धिमत्तापूर्ण सक्रियता अपनाई जो ठोस तर्क पर आधारित थी, तथा जो कुरान और पैगम्बर के उदाहरण की छाया में विकसित हुई थी।

उनके द्वारा अपनाए गए उच्च आदर्शों, विश्व और अपने समय के साथ उनकी गहन जानकारी, साथ ही उनकी सादगी और सादगी, मानवीय कोमलता, मित्रों के प्रति वफादारी, शुद्धता, विनम्रता और संतोष के बारे में बहुत कुछ कहा और लिखा गया है।

यद्यपि बाहरी रूप से वे अत्यंत सरल थे, फिर भी उनके कई विचार और गतिविधियाँ पूरी तरह से मौलिक हैं। उन्होंने मानवता को अपनाया और अविश्वास, अन्याय और विचलन के घोर विरोधी थे; बेदीउज्जमां ने सभी प्रकार के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष किया, यहाँ तक कि अपने जीवन की कीमत पर भी। उनके गहन विश्वास और भावना, जब उनके बुद्धिमान और तर्कसंगत विचारों और समस्या-समाधान के तरीकों के साथ संयुक्त हुए, तो उन्होंने प्रेम, उत्साह और भावना का एक उदाहरण प्रस्तुत किया।

वह अपने विचारों, कार्यों और विभिन्न मामलों से निपटने के तरीकों में असाधारण रूप से संतुलित थे; सईद नूरसी एक दूरदर्शी व्यक्ति थे जो

आस-पास की परिस्थितियों का आकलन और आकलन किया तथा अपने सामने आने वाली समस्याओं को हल करने का प्रयास किया।

उनके कई समकालीनों ने या तो मौन रूप से या स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि बेदीउज्जमां बीसवीं सदी के तुर्की या यहां तक कि मुस्लिम दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे। इसके बावजूद और अपने समय की बौद्धिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में एक नए इस्लामी पुनरुत्थान में उनके निर्विवाद स्थान के बावजूद, वे ईश्वर के एक विनम्र सेवक बने रहे। उनके जीवन ने विनम्रता की उनकी समझ को दर्शाया: "प्रसिद्धि की इच्छा दिखावा और आडंबर के समान है, और यह एक 'जहरीला शहद' है जो हृदय की जीवन शक्ति को बुझा देता है।"

पूर्वी तुर्की के एक छोटे से पहाड़ी गांव में जन्मे बेदीउज्जमां ने पूरे मुस्लिम जगत की आहों और विलापों के साथ-साथ उसके विश्वास, उम्मीदों और आकांक्षाओं को भी आवाज़ दी। उन्होंने कहा:

> मैं अपने दुखों को तो झेल सकता हूँ, लेकिन इस्लाम और मुसलमानों पर आई विपत्तियों से उपजे दुखों ने मुझे तोड़कर रख दिया है। मैं मुस्लिम दुनिया पर पड़ने वाले हर आघात को ऐसे महसूस करता हूँ जैसे कि वह पहले मेरे दिल पर लगा हो। इसीलिए मैं इतना हिल गया हूँ।

उन्होंने यह भी कहा:

> अस्सी साल से ज़्यादा की ज़िंदगी में मैंने दुनियावी सुख-सुविधाओं का स्वाद नहीं चखा है... ऐसा कोई उत्पीड़न नहीं है जिसका मैंने स्वाद न चखा हो, ऐसा कोई उत्पीड़न नहीं है जिसका मैंने सामना न किया हो। मुझे न तो जन्नत की परवाह है और न ही नर्क से डर। अगर मैं अपने देश के लोगों की आस्था को सुरक्षित देखूंगा, तो मुझे नर्क में जलने की भी परवाह नहीं होगी, क्योंकि जब मेरा शरीर जल रहा होगा, तो मेरा दिल मानो गुलाब के बगीचे में होगा।

बेदीउज्जमां वैश्विक संकट के समय में रहते थे। भौतिकवाद अपने चरम पर था, साम्यवाद का व्यापक अनुसरण हो रहा था, और मुसलमानों से इस्लाम को अस्वीकार करने का आग्रह किया जा रहा था। पश्चिम की वैज्ञानिक और सैन्य जीत से हैरान और आधुनिक विचारों से प्रभावित होकर, मुसलमान अपनी ऐतिहासिक जड़ों और कभी-कभी अपने विश्वास को त्याग रहे थे। कई मुस्लिम बुद्धिजीवी सीधे मार्ग से भटक गए। हालाँकि, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर निर्देशित किया और उनमें समग्र पुनरुत्थान की प्रबल आशा जगाई। उनके लेखन ने इस्लाम की सच्चाई को प्रदर्शित किया और बढ़ते विचलन का विरोध किया।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का उपयोग युवा नास्तिकों को पैदा करने के लिए किया जा रहा था और शून्यवाद लोकप्रिय था, जब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर ऐसी चीजें की जा रही थीं,

बेदिउज्जमां ने लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, तथा उनके मन और आत्मा में आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रशिक्षण भी डाला।

बेदीउज्जमां ने मुस्लिम समुदायों को पीड़ित करने वाली लंबे समय से चली आ रही “बीमारियों” का निदान किया और सबसे प्रभावी उपचार सुझाए। कुरान, सुन्ना, इस्लामी परंपरा और प्राकृतिक घटनाओं (ईश्वरीय अस्तित्व और एकता के संकेत माने जाते हैं) पर अपनी गतिविधि को आधार बनाते हुए, उन्होंने महत्व के क्रम में, इस्लाम के स्तंभों का समर्थन करने पर ध्यान केंद्रित किया; विश्वास, पूजा, नैतिकता और अच्छे आचरण की आवश्यकता, साथ ही समकालीन मुसलमानों के सामने आने वाले सामाजिक-आर्थिक मुद्दों की खोज करना।

बेदिउज़्ज़मान की सोच और गतिविधियों का सार

बेदिउज्जमां के समय और हमारे समय में, ईश्वर और पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के बारे में अज्ञानता, धार्मिक आदेशों की अनदेखी, दोनों दुनियाओं में समृद्धि की इस्लामी गतिशीलता के प्रति उदासीनता और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान की अज्ञानता मुस्लिम दुनिया के पिछड़ेपन के प्राथमिक कारकों में से रहे हैं। बेदिउज्जमां का कहना था कि अगर मुसलमानों ने आधुनिक वैज्ञानिक और धार्मिक ज्ञान या व्यवस्थित रूप से सोचने की क्षमता हासिल नहीं की, और अगर वे सच्चा ज्ञान प्राप्त करके विचारों की भ्रामक प्रवृत्तियों से खुद को सुरक्षित नहीं रख सके, तो वे कभी भी उस पिछड़ेपन से नहीं निकल पाएंगे जिसमें वे गिर गए हैं।

अज्ञानता मुस्लिम गरीबी का एक स्रोत थी। इस्लाम की सच्चाई के बारे में अज्ञानता, जब वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान की अज्ञानता के साथ जुड़ जाती है, तो इसका परिणाम यह होता है कि विशाल मैदान बंजर रह जाते हैं और मुस्लिम भूमि की प्राकृतिक संपदा दूसरों के खजाने में चली जाती है। अज्ञानता मुस्लिम दुनिया के आंतरिक संघर्षों के साथ-साथ अन्य समस्याओं का एक प्रमुख कारण थी। हालाँकि कुरान एकता की माँग करता है, लेकिन मुसलमान एक-दूसरे से झगड़ रहे थे, जबकि उनकी भूमि पर विदेशी ताकतों द्वारा आक्रमण किया जा रहा था और उनके लोगों को अपमानित किया जा रहा था।

इसी समय, वे मुस्लिम बुद्धिजीवी, जिनसे जनता नेतृत्व और मुक्ति की उम्मीद करती थी, पश्चिम से आए हिंसक इनकार के तूफान से आकर्षित हुए। पिछली शताब्दियों में मानवता-केंद्रित विश्व-दृष्टिकोण से उभरे, जो वैज्ञानिकता, बुद्धिवाद और प्रत्यक्षवाद में निहित था, साथ ही आधुनिक विज्ञान के बीच विरोधाभासों से भी।

वैज्ञानिक खोजों और विज्ञान के विरोधी चर्च के कारण, इस तूफान ने धीरे-धीरे यूरोप से ईसाई धर्म में उसके विश्वास को खत्म कर दिया। नतीजतन, रहस्योद्घाटन को मानवीय तर्क के आगे झुकना पड़ा।

इतिहास में बेमिसाल इस प्रक्रिया ने इस्लाम की "इमारत" को हिलाकर रख दिया, जिसे पहले से ही कई दिलों और दिमागों (व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों) में पुराना और क्षयग्रस्त माना जाता था। बेदीउज्जमां का मानना था कि इस "इमारत" को आधुनिक पुरुषों और महिलाओं के दिमाग और तर्क के सामने इस्लाम की सभी शाखाओं के साथ आवश्यक तत्वों को प्रस्तुत करके आगे के विनाशकारी प्रभावों से बचाया जा सकता है। उनके अनुसार, मुस्लिम दुनिया, जो स्पष्ट रूप से आधुनिक दुनिया के महासागरों में फंसी हुई है, केवल तभी फिर से स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ पाएगी जब वह इस्लाम के सभी क्षेत्रों में एक सफल, व्यापक नवीनीकरण से गुजरेगी।

बेदिउज़्ज़मां ने स्वयं को इस्लाम के स्तम्भों की व्याख्या करने के लिए समर्पित कर दिया।
जानबूझकर सकारात्मक - यहाँ तक कि भौतिकवादी - शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप बुद्धिजीवियों और युवाओं के बीच इस्लाम विरोधी रुझान और दृष्टिकोण बढ़ रहे थे। इन कारकों ने बेदिउज़्ज़मान को इस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया।

विश्वास और उपासना के मूल तत्व और कुरान में बताए गए मुख्य उद्देश्य, जिन्हें उन्होंने ईश्वरीय अस्तित्व और एकता, पैगम्बरत्व, पुनरुत्थान और उपासना और न्याय की आवश्यकता को स्पष्ट करने और साबित करने के रूप में वर्णित किया। वे बताते हैं:

> सृष्टि का सर्वोच्च उद्देश्य और उसका सबसे उत्कृष्ट परिणाम ईश्वर में विश्वास है। मानवता का सबसे श्रेष्ठ पद ईश्वर का ज्ञान है। जिन्न और मानवता के लिए सबसे उज्ज्वल खुशी और सबसे मधुर उपहार ईश्वर के ज्ञान में निहित ईश्वर का प्रेम है; मानव आत्मा के लिए सबसे शुद्ध आनंद और मानव हृदय के लिए सबसे शुद्ध आनंद ईश्वर के प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है। वास्तव में, सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार और निर्मल आनंद ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित हैं।
>
> विश्वास केवल नकल पर आधारित संक्षिप्त पुष्टि तक सीमित नहीं है; बल्कि, इसमें विस्तार या विकास की डिग्री और चरण होते हैं। यह एक बीज की तरह है जो एक पूर्ण विकसित, फल देने वाले पेड़ की अवस्था में विकसित होता है, या दर्पण में या पानी की एक बूंद में सूर्य की छवि की तरह समुद्र की सतह पर और स्वयं सूर्य की छवियों की तरह है। विश्वास में ईश्वर के सभी नामों और ब्रह्मांड में निहित वास्तविकताओं से संबंधित इतने सारे सत्य शामिल हैं कि सबसे परिपूर्ण मानव विज्ञान, ज्ञान और गुण ईश्वर का विश्वास और ज्ञान है जो तर्क और जांच पर आधारित विश्वास से उत्पन्न होता है। जबकि नकल पर आधारित विश्वास को संदेह और प्रश्नों के माध्यम से खारिज किया जा सकता है-

आधुनिक विचारों द्वारा उठाए गए तर्कों के अनुसार, तर्क और जांच पर आधारित विश्वास की अभिव्यक्ति की डिग्री और स्तर उतने ही हैं जितने ईश्वरीय नामों की संख्या है। जो लोग उन सत्यों के प्रत्यक्ष अवलोकन से विश्वास की निश्चितता प्राप्त करते हैं जिन पर विश्वास आधारित है, वे ब्रह्मांड का अध्ययन एक तरह के कुरान के रूप में करते हैं।

कुरान, ब्रह्मांड और मानवता एक ही सत्य की तीन अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं। कुरान, वाणी के दिव्य गुण से निकला है, इसलिए इसे लिखित या रचित ब्रह्मांड माना जा सकता है। ब्रह्मांड, शक्ति और इच्छा के दिव्य गुणों में उत्पन्न हुआ है, इसलिए इसे कुरान द्वारा रचित माना जा सकता है। चूँकि ब्रह्मांड कुरान का प्रतिरूप है और एक तरह से सृष्टि के दिव्य नियमों का संग्रह है, इसलिए ब्रह्मांड का अध्ययन करने वाले विज्ञान इस्लाम के साथ असंगत नहीं हो सकते। इसलिए, वर्तमान समय में (जब विज्ञान प्रबल है) और भविष्य में (ज्ञान का युग), सच्चा विश्वास तर्क और जाँच-पड़ताल पर, ब्रह्मांड में ईश्वर के "संकेतों" पर निरंतर चिंतन और प्राकृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक घटनाओं पर आधारित होना चाहिए। विश्वास अंधी नकल पर आधारित कोई चीज़ नहीं है; बल्कि, इसे बुद्धि/तर्क और हृदय दोनों को आकर्षित करना चाहिए, क्योंकि इसमें तर्क की स्वीकृति और पुष्टि और हृदय का अनुभव और समर्पण दोनों शामिल हैं।

ईमान की एक और डिग्री है, वह है, अपनी सच्चाईयों के सीधे अनुभव से आने वाली निश्चितता। यह नियमित उपासना और चिंतन पर निर्भर करता है। जिसने ऐसा ईमान हासिल कर लिया है, वह पूरी दुनिया को चुनौती दे सकता है। इसलिए हमारा पहला और सबसे बड़ा कर्तव्य है कि हम ऐसा ईमान हासिल करें और पूरी ईमानदारी और पूरी तरह से ईश्वर के लिए इसे दूसरों तक पहुँचाएँ। एक हदीस में कहा गया है कि तुम्हारे लिए यह बेहतर है कि कोई तुम्हारे ज़रिए ईमान अपनाए, बजाय इसके कि तुम पूरी दुनिया पर कब्ज़ा कर लो।

जैसा कि वैज्ञानिक अध्ययन और अनगिनत अनुभव स्पष्ट रूप से दिखाते हैं, ब्रह्मांड के क्रम में और इसके अस्तित्व के लिए सर्व-महान निर्माता के मूल उद्देश्यों में जो प्रमुख है वह है अच्छाई, सुंदरता और पूर्णता। क्योंकि विज्ञान की हर शाखा जो ब्रह्मांड का अध्ययन करती है, वह ऐसे शानदार क्रम और पूर्णता को इंगित करती है जिसके सामान्य सिद्धांत इस पर आधारित हैं कि मन इस ब्रह्मांड से बेहतर कुछ भी नहीं सोच सकता। यह भी एक अवलोकनीय और अनुभवजन्य तथ्य है कि बुराई, कुरूपता, झूठ और बुराई सृष्टि में गौण और गौण हैं। वे सृष्टि के उद्देश्य नहीं हैं; बल्कि, वे अप्रत्यक्ष रूप से और तुलना के उपायों के रूप में मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, कुरूपता सुंदरता को विभिन्न रूपों और डिग्री में प्रकट करने का काम करती है। बुराई और यहां तक कि शैतान को भी मनुष्यों पर हमला करने की अनुमति दी गई है ताकि वे विकास के साधन के रूप में कार्य कर सकें।

> और मनुष्य की पूर्णता। संक्षेप में, कुरूपता और बुराई को सार्वभौमिक सुंदरता और अच्छाई के साधन के रूप में बनाया गया है।
>
> अच्छाई, पूर्णता और सुंदरता ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। इसलिए, मानव जाति, जिसने अपने अन्याय और अविश्वास से पृथ्वी को कलंकित किया है, पहले ऐसे अत्याचारों की सजा भुगते बिना और फिर ब्रह्मांड के अस्तित्व के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन बने बिना (ईश्वरीय आदेश का पालन करके) अस्तित्व में नहीं जा सकेगी।

संक्षेप में, बेदिउज़्ज़मान का तर्क है कि ईमान का अर्थ है इस्लाम को उसकी सम्पूर्णता में अपनाना।

बेदीउज्जमां ने देखा कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है। विडंबना यह है कि मुसलमानों द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपेक्षा के कारण ही वे आर्थिक और सैन्य क्षेत्रों में पश्चिम से पीछे रह गए। लेकिन उसी विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने पश्चिम को वैश्विक सैन्य और आर्थिक श्रेष्ठता हासिल करने में सक्षम बनाया, जिसके कारण पश्चिमी लोगों ने अपना विश्वास और पारंपरिक नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को खो दिया, जिससे वे निराशावाद, दुःख और आध्यात्मिक संकट में पड़ गए। यह स्वाभाविक था, क्योंकि यद्यपि प्रकृति के दिव्य नियम (विज्ञान का विषय-वस्तु) दिव्य शास्त्र या धर्म के समकक्ष हैं, लेकिन पश्चिम में वे एक-दूसरे से अलग हो गए थे। नतीजतन, धर्मनिरपेक्ष नैतिकता और आर्थिक स्वार्थ ने धार्मिक और अन्य पारंपरिक मूल्यों की जगह ले ली थी।

बेदीउज्जमां ने प्रकृति को ईश्वरीय संकेतों के संग्रह के रूप में देखा, जिसका अर्थ था कि विज्ञान और धर्म में कोई संघर्ष नहीं हो सकता; बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए बेदीउज्जमां के नुस्खे

बेदीउज्जमां संक्रमण के दौर में रहे - ओटोमन राज्य के अंतिम वर्ष और तुर्की गणराज्य के प्रारंभिक वर्ष। उन्होंने चौदह वर्ष की आयु में सामान्य मेदरेस (पारंपरिक धार्मिक विद्यालय) की शिक्षा पूरी कर ली थी। हालाँकि, अपने शुरुआती वर्षों में भी वे मौजूदा शिक्षा प्रणाली से असंतुष्ट थे। धार्मिक विद्वानों की सदियों पुरानी प्रथा के विपरीत, उन्होंने प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान का भी अध्ययन किया। उन्होंने जल्द ही सुधार के लिए व्यापक प्रस्ताव विकसित किए, जिसके केंद्र में पारंपरिक धार्मिक विज्ञानों को आधुनिक धर्मनिरपेक्ष विज्ञानों के साथ जोड़ने और प्रमुख तुर्की शहरों में विश्वविद्यालय स्थापित करने का उनका आह्वान था, जहाँ उनके प्रस्तावों को लागू किया जा सके-

यद्यपि उन्होंने अपने विश्वविद्यालय के लिए दो बार धनराशि प्राप्त की और 1913 में इसकी नींव रखी गई, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के परिणामों और समय के उतार-चढ़ाव के कारण यह कभी पूरा नहीं हुआ।

अपने जीवन के शुरुआती दौर में, जो ओटोमन राज्य के अंतिम वर्षों के साथ मेल खाता था, बेदीउज्जमान सईद नूरसी देश के सामाजिक-राजनीतिक जीवन में शामिल थे। उन्होंने बहुत यात्रा की, तुर्की के दक्षिण-पूर्व में कुर्द नेताओं और धार्मिक विद्वानों के साथ बैठकें कीं, बाल्कन और काकेशस का दौरा किया, और तुर्की और वृहद मुस्लिम दुनिया में व्याप्त अज्ञानता, गरीबी और आंतरिक संघर्ष को प्रत्यक्ष रूप से देखा।

जब सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय को गद्दी से उतार दिया गया और संविधानवाद की घोषणा की गई, तब वे इस्तांबुल में थे। उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में निरंकुशता की कड़ी आलोचना की और परामर्श के इस्लामी सिद्धांत पर आधारित संविधानवाद का समर्थन किया। उन्होंने इन वर्षों के दौरान कई किताबें या पुस्तिकाएँ लिखीं, जैसे कि सुनुहाट ("दिल की घटनाएँ"), तुलुआत ("दिल में उठने वाले विचारों की चमक"), रुमुज़ ("सूक्ष्म संकेत"), इशारत ("संकेत"), और मुनाज़रत ("चर्चाएँ")। इन किताबों या पुस्तिकाओं में, बेदिउज़्ज़मान ने मुसलमानों की स्थिति का विश्लेषण किया, इसके कारणों का विश्लेषण किया और इस पर चर्चा की कि इसे कैसे सुधारा जा सकता है। उन्होंने एक स्वस्थ सामाजिक जीवन के लिए बहुमूल्य नुस्खे पेश किए। उनकी दो अन्य पुस्तकें, हकीकत चेकर्डेक्लेरी ("सत्य के बीज) और लेमेट ("सत्य की झलक - सत्य के बीजों से फूल"), जिनमें उन्होंने ठोस सोच के लिए बहुत मूल्यवान मानदंड पेश किए हैं, उन्हें भी कार्यों की इस श्रृंखला में शामिल किया जा सकता है।

1911 में उन्होंने दमिश्क की उमय्यद मस्जिद में लगभग 10,000 लोगों को एक धर्मोपदेश दिया, जिसमें 100 उच्च श्रेणी के विद्वान शामिल थे। इस धर्मोपदेश को बाद में खुतबा-ए-शामिया के नाम से प्रकाशित किया गया।

(“दमिश्क का उपदेश”), और उल्लिखित अन्य पुस्तकों में, बेदिउज़-ज़मान ने विश्लेषण किया है कि मुस्लिम दुनिया “मध्य युग” में क्यों सीमित रह गई थी: निराशा की वृद्धि, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में सच्चाई की हानि, युद्धप्रियता का प्रेम और विश्वासियों के बीच उचित बंधनों की अज्ञानता, जीवन के सभी क्षेत्रों में निरंकुशता और स्वार्थपरता।

उन्होंने अपना इलाज बताया: उम्मीद, सच्चाई और विश्वसनीयता, आपसी प्यार, सलाह-मशविरा, एकजुटता और इस्लाम के मुताबिक आज़ादी। उन्होंने निम्नलिखित बिंदुओं पर भी जोर दिया:

> इतिहास हमें दिखाता है कि मुसलमानों का विकास और सभ्यता इस्लाम की सच्चाई के प्रति उनके पालन के अनुपात में है, जबकि दूसरों का विकास और सभ्यता इसके विपरीत अनुपात में है।

अपने धर्म के प्रति समर्पित हैं। साथ ही, सत्य हमें बताता है कि मानवता का जागरण धर्म के बिना नहीं हो सकता। विशेष रूप से, एक व्यक्ति जो सत्य के प्रति जागृत हो गया है, सच्ची मानवता को जान गया है, और जो भविष्य और अनंत काल के लिए उम्मीदवार है, वह धर्म के बिना ऐसा नहीं हो सकता।

हम मुसलमान, जो कुरान के विद्यार्थी हैं, प्रमाण का अनुसरण करते हैं और विश्वास की सच्चाइयों को अपने तर्क, बुद्धि और हृदय से स्वीकार करते हैं।
अन्य धर्मों के कुछ सदस्यों के विपरीत, हम प्रमाणों को नहीं छोड़ते या धार्मिक नेताओं का अंधानुकरण नहीं करते। इसलिए, भविष्य में, जब तर्क, विज्ञान और ज्ञान हावी होंगे, तो यह कुरान ही होगा, जिसके सभी आदेश और प्रस्ताव तर्क द्वारा पुष्टि किए गए हैं, जो निश्चित रूप से शासन करेगा।

इतिहास का कोई भी कालखंड, सुख के युग से लेकर वर्तमान समय तक, हमें किसी ऐसे मुसलमान के बारे में नहीं बताता जिसने ठोस तर्क के आधार पर इस्लाम के बजाय किसी दूसरे धर्म को प्राथमिकता दी हो और ठोस सबूत के आधार पर उस धर्म में प्रवेश किया हो। यह सच है कि कुछ लोग ऐसे भी रहे हैं जिन्होंने इस्लाम छोड़ दिया है; लेकिन यह नकल के माध्यम से हुआ है और इसका कोई महत्व नहीं है। अगर हम अपने कामों के ज़रिए इस्लामी नैतिकता की पूर्णता और इस्लाम की सच्चाई को प्रदर्शित करते हैं, तो दूसरे धर्मों के अनुयायी बड़ी संख्या में इसमें प्रवेश करते रहेंगे; यहाँ तक कि धरती के कुछ पूरे क्षेत्र और देश इसे स्वीकार करेंगे।

देखो, समय एक सीधी रेखा में नहीं चलता है, ताकि उसका आरंभ और अंत एक दूसरे से दूर हो जाए। बल्कि, पृथ्वी की गति की तरह, समय एक चक्र बनाकर चलता है। यह कभी वसंत और गर्मी के रूप में प्रगति को प्रदर्शित करता है और कभी सर्दियों और तूफानों के मौसम के रूप में गिरावट को प्रदर्शित करता है। इसलिए, जिस तरह हर सर्दी के बाद वसंत और हर रात की सुबह होती है, उसी तरह मानव जाति भी, ईश्वर की इच्छा से, एक नई सुबह और वसंत का अनुभव करेगी। ईश्वरीय दया से हम इस्लाम की सच्चाई के सूरज में एक सामान्य शांति द्वारा चिह्नित सच्ची सभ्यता को देखने की उम्मीद कर सकते हैं।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, बेदीउज्जमां सईद नूरसी सामाजिक-राजनीतिक जीवन से पूरी तरह से अलग हो गए। सामाजिक-राजनीतिक जीवन में शामिल होने के दौरान उन्होंने खुद को पुराना या भूतपूर्व सईद कहा, और अब वे पूरी तरह से इस्लामी आस्था की सच्चाई और पूजा और अच्छे आचरण के अर्थ और महत्व को समझाने में समर्पित थे। हालाँकि, 1950 के बाद उन्होंने अपने पहले के दौर से संबंधित उन कार्यों को संशोधित किया, और उन्हें फिर से प्रकाशित किया। आपके हाथ में यह पुस्तक इन कार्यों से बने संकलन का अनुवाद है।

— प्रकाशक

भाग एक

भाग एक

सत्य के बीज

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए हो, तथा हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और साथियों पर सारी कृपा और शांति हो।

• एक बीमार युग, एक बीमार राष्ट्र और एक विकलांग लोगों के लिए नुस्खा कुरान का पालन करना है।

• इस गौरवशाली, यद्यपि दुर्भाग्यपूर्ण महाद्वीप के लिए, जो कभी इतना गौरवशाली था, फिर भी अब एक दीन और दयनीय राज्य है, जो कभी इतना अमूल्य था, फिर भी अब एक असुरक्षित लोग है, इस्लाम के मार्गदर्शन में एकता है। • जो व्यक्ति पृथ्वी, ग्रहों और तारों को माला के मनकों की तरह आसानी से नहीं घुमा सकता, वह सृष्टि में किसी भी हिस्से का दावा नहीं कर सकता, क्योंकि सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है।

• न्याय के दिन सभी मृतकों का पुनरुत्थान ईश्वर की शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना वसंत में एक मक्खी को उसकी सर्दियों की नींद से जगाना। क्योंकि दिव्य शक्ति दिव्य सत्ता में निहित है; यह बदल नहीं सकती, क्षय नहीं हो सकती, कम नहीं हो सकती, या बाधित नहीं हो सकती। निरपेक्ष होने के कारण, यह किसी भी डिग्री को स्वीकार नहीं करता और इसके संबंध में सब कुछ समान है।

• जिसने मच्छर की आँख बनाई है, उसी ने सूर्य को भी बनाया है।
• जिसने पिस्सू के पेट का आदेश दिया है, वही आदेश दिया है सौर - मण्डल।

सत्य की 4 झलकियाँ

• ब्रह्माण्ड की चमत्कारी व्यवस्था और सामंजस्य को देखकर, सभी "प्राकृतिक" कारण (मान लीजिए कि उनका स्वतंत्र तंत्र है) झुकते हैं और कहते हैं: "आप सर्व-महिमावान हैं। हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। आप सर्व-महिमावान, सर्व-बुद्धिमान हैं।"

• ईश्वर की एकता और महिमा के अनुरूप, कारणों का सृष्टि या ब्रह्मांड के कामकाज में कोई वास्तविक या रचनात्मक प्रभाव नहीं होता। लेकिन अस्तित्व के बाहरी (भौतिक) आयाम में, कारण ईश्वरीय शक्ति के संचालन को छिपाने का काम करते हैं, ताकि कुछ अप्रिय या तुच्छ लगने वाली सत्ताओं और घटनाओं को सीधे तौर पर ईश्वर से न जोड़ा जा सके।

• प्रत्येक वस्तु का आंतरिक आयाम जिसमें ईश्वरीय शक्ति सीधे कार्य करती है, पूर्णतः शुद्ध एवं पारदर्शी है।

• यह दृश्यमान, भौतिक संसार अदृश्य संसारों के सामने एक आवरण मात्र है।

• सही जगह पर एक बिंदु बनाने के लिए एक असीम शक्ति की आवश्यकता होती है जो पूरे ब्रह्मांड का निर्माण कर सकती है। ब्रह्मांड की इस महान पुस्तक के प्रत्येक अक्षर, विशेष रूप से प्रत्येक "जीवित" अक्षर, का एक चेहरा होता है और एक आँख इसके प्रत्येक वाक्य को देखती है।

• एक रमज़ान के अंत में, लोग नए अर्धचंद्राकार चाँद को देखने की कोशिश कर रहे थे जो ईद (धार्मिक उत्सव का दिन) की शुरुआत का प्रतीक है। एक बूढ़े व्यक्ति ने इसे देखने का दावा किया। हालाँकि, वह नहीं जानता था कि उसने जो देखा वह उसकी अपनी सफ़ेद पलकों में से एक का वक्र था।

एक पलक अर्धचन्द्र के बराबर कैसे हो सकती है? जो सम्पूर्ण प्रजाति का निर्माण करता है, उसके स्थान पर सूक्ष्म परमाणुओं की गति को कैसे स्वीकार किया जा सकता है?

• प्रकृति अदृश्य नियमों से बना एक प्रिंट या मॉडल है, लेकिन यह प्रिंटर या कंपोज़र नहीं है। यह एक डिज़ाइन है, डिज़ाइनर नहीं, एक प्राप्तकर्ता है लेकिन एजेंट नहीं; यह व्यवस्था है, लेकिन वह नहीं जो चीज़ों को व्यवस्थित करता है। यह एक कानून है, कोई शक्ति नहीं। यह ईश्वरीय इच्छा द्वारा स्थापित कानूनों का एक संग्रह है - ऐसे कानून (जिन्हें हमारा दिमाग समझ सकता है लेकिन) जिनमें स्वयं कोई शक्ति या भौतिक वास्तविकता नहीं है।

• किसी के (सहज) मानवीय अंतःकरण में आकर्षण और आकर्षित होने की भावना सत्य की आकर्षक शक्ति के कारण होती है।

• किसी चीज़ की जन्मजात प्रेरणा या उसका ईश्वर-प्रदत्त स्वभाव या स्वभाव झूठ नहीं बोलता: उदाहरण के लिए, एक बीज की बढ़ने की इच्छा कहती है: "मैं फलां पौधा बनूँगा और फल पैदा करूँगा," और फिर वह ऐसा करता है। एक अंडे में जीवन की इच्छा उसे बताती है: "मैं एक चूजा बनूँगा," और फिर वह चूजा बन जाता है।

पानी की जमने की इच्छा कहती है: "मैं और जगह घेर लूँगा," और फिर वह ऐसा ही करता है। कठोर और ठोस लोहा इसका खंडन नहीं कर सकता; बल्कि, जब जम जाता है, तो पानी लोहे को विभाजित कर सकता है। ऐसी प्रेरणाएँ और आग्रह सृष्टि के दिव्य आदेशों की अभिव्यक्तियाँ हैं जो दिव्य इच्छा से जारी होते हैं।

• शाश्वत शक्ति, जो सुनिश्चित करती है कि चींटियों के पास एक नेता और मधुमक्खियों के पास एक रानी है, निश्चित रूप से मानवता को पैगंबर के नेतृत्व से वंचित नहीं करेगी। चंद्रमा को विभाजित करना दृश्यमान, भौतिक दुनिया में दिखाए गए उनके चमत्कारों में से एक था।1 उनका स्वर्गारोहण (ईश्वर की "उपस्थिति" के लिए)2 उनका सबसे बड़ा चमत्कार था जो आंतरिक आयामों की दुनिया में स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों को दिखाया गया था, और एक ऐसा चमत्कार जिसने उनके पैगंबर होने की पवित्रता को साबित और दिखाया। उस चमत्कार के माध्यम से, उस सबसे शानदार व्यक्ति ने आंतरिक आयामों की दुनिया में बिजली की चमक या एक उज्ज्वल चंद्रमा की तरह अपनी चमक को बढ़ाया और फैलाया। • विश्वास की पुष्टि के दो भाग - मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उनके सेवक और दूत हैं - एक दूसरे की सच्चाई को प्रमाणित करते हैं। पहला दूसरे के लिए एक पूर्वगामी तर्क है, और दूसरा पहले के लिए एक पश्चगामी तर्क है।

• चूँकि जीवन अनेकता के क्षेत्र में एकता की अभिव्यक्ति है, यह एकता की ओर ले जाता है, जो एक चीज को सब कुछ का स्वामी बनाने में सक्षम बनाता है।

• आत्मा एक चेतना युक्त नियम है तथा एक वास्तविक, संवेदनशील अस्तित्व है।

सृष्टि के स्थायी नियमों की तरह, आत्मा भी ईश्वरीय आज्ञाओं और इच्छा शक्ति की दुनिया से निकलती है। ईश्वरीय शक्ति

आत्मा को सूक्ष्म शरीर या डबल (भौतिक शरीर का ईथर प्रतिरूप) में संवेदी अंगों के शरीर के भीतर कपड़े पहनाए जाते हैं। यह आत्मा-यह, जो प्रत्येक मनुष्य में मौजूद है, नियमों का प्रतिरूप है

---

1 पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने मक्का में उनके पैगंबर होने को अस्वीकार करने वाले लोगों के समूह के सामने अपनी तर्जनी के इशारे से चाँद को विभाजित किया। यह सबसे प्रामाणिक हदीस स्रोतों में वर्णित है, जैसे कि सहीहु'ल-बुखारी, सहीह मुस्लिम और सुनानु'त-तिर्मिधि। आयतें, अंतिम घड़ी निकट आ गई है, और चाँद विभाजित हो गया है। जब भी वे कोई चमत्कार देखते हैं, तो वे घृणा से उससे दूर हो जाते हैं और कहते हैं: "यह एक के बाद एक कई अन्य जादू की तरह है।" (54:1–2) इस चमत्कार का संदर्भ देते हैं। इस चमत्कार के बारे में चर्चा के लिए, देखें, अली उनाल, द कुरान विद एनोटेटेड इंटरप्रिटेशन इन मॉडर्न इंग्लिश, द लाइट, न्यू जर्सी, 2008, पृष्ठ 1082–1083। (अनुवाद)

2 स्वर्गारोहण (अल-मिराज): पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की चमत्कारी यात्रा, रूपों की सीमा से परे अस्तित्व के क्षेत्रों के माध्यम से, जिसके दौरान उन्होंने ईश्वर के सर्वोच्च संकेतों को देखा। चर्चा के लिए, देखें, अली उनाल, ibid., 1290–1295.

"प्रकृति" जिसका सैद्धांतिक, अदृश्य अस्तित्व है। दोनों अपरिवर्तनीय और स्थायी हैं, और दिव्य आदेशों की दुनिया से आते हैं। यदि शाश्वत शक्ति ने कानूनों को बाहरी अस्तित्व से ढक दिया होता-

प्रत्येक नियम एक आत्मा होता; यदि मानव आत्मा से चेतना निकाल दी जाए तो वह एक अमूर्त नियम बन जाएगा।

- अस्तित्ववान प्राणी प्रकाश के माध्यम से दिखाई देते हैं, और उनका अस्तित्व जीवन के माध्यम से जाना जाता है। प्रकाश और जीवन दोनों ही खोजकर्ता और प्रकटकर्ता हैं।
- ईसाई धर्म या तो लुप्त हो जाएगा या शुद्ध हो जाएगा और इस्लाम के खिलाफ़ अपना संघर्ष छोड़ देगा। यह कई बार विभाजित हो चुका है और प्रोटेस्टेंटवाद को जन्म दिया है, जो बदले में (विभिन्न संप्रदायों और समूहों में) विभाजित हो गया है और (कुछ) एकेश्वरवाद के करीब पहुंच गए हैं। ईसाई धर्म और भी विभाजित हो जाएगा, जिसके बाद यह लुप्त हो जाएगा या इस्लाम की सच्चाई को खोजकर, जिसमें ईसा के मूल धर्म के मूल तत्व शामिल हैं, इस्लाम का अनुसरण करेगा। इस सच्चाई का संकेत एक पैगंबरी परंपरा में मिलता है: "पैगंबर ईसा इस दुनिया में वापस आएंगे, मेरे समुदाय में शामिल होंगे और मेरे शरिया का पालन करेंगे।"3

- आम लोगों (जनता) का बहुमत प्रमाणों की ताकत की बजाय सत्ता की पवित्रता से आकर्षित होता है।

- शरिया का नब्बे प्रतिशत हिस्सा इस्लाम के आवश्यक और निर्विवाद नियमों से बना है, और इसकी तुलना हीरे के खंभों से की जा सकती है। शेष दस प्रतिशत, जिसकी व्याख्या की जा सकती है और जिसे इस्लाम के कानूनी अधिकारियों द्वारा निर्धारित किया जाना है, की तुलना सोने के टुकड़ों से की जा सकती है।

नब्बे हीरे के खंभों को दस सोने के सिक्कों के संरक्षण में नहीं रखा जा सकता। बल्कि, धार्मिक पुस्तकों और न्यायिक तर्कों और निर्णयों से हमें कुरान को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलनी चाहिए। उन्हें देखने के लिए दूरबीन और उसके अर्थों को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण के रूप में काम करना चाहिए, न कि उसे ढकने या बदलने के लिए।

- इज्तिहाद4 करने के योग्य व्यक्ति अपने लिए नया कानून घोषित कर सकते हैं, लेकिन दूसरों या मुस्लिम समुदाय के लिए नहीं। • धर्म से संबंधित किसी विचार को दूसरों तक पहुँचाने से पहले, उसे विद्वानों के बहुमत द्वारा स्वीकार किया

जाना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है, तो उसे खारिज कर दिया जाएगा।

---

3 अल-बुखारी, "मज़ालिम" 33; मुस्लिम, "ईमान" 242.

4 इस्लामी कानून में इज्तिहाद, उभरती परिस्थितियों से निपटने के लिए कुरान और सुन्नाह के अपरिवर्तनीय, स्थापित सिद्धांतों से कानूनी निर्णय प्राप्त करने की प्रक्रिया है। (ट्र.)

इसे इस्लाम के विधिशास्त्रीय सिद्धांतों के विपरीत एक नवाचार के रूप में माना और अस्वीकार किया गया।

• मनुष्य स्वभाव से ही महान स्वभाव वाला होता है, इसलिए वह सत्य की खोज करता है। लेकिन कभी-कभी वह झूठ को खोजकर अपना लेता है। सत्य की खोज करते समय, वह कभी-कभी अनजाने में ही गलत रास्ते पर चला जाता है और उसे ही सत्य समझकर गलत राह पर चल देता है।

• बहुत सारे दर्पण, जिनमें से प्रत्येक दूसरे से अधिक सूक्ष्म है, दिव्य शक्ति को प्रतिबिंबित करते हैं। वे पानी से लेकर हवा तक, हवा से लेकर आकाश तक, और फिर प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया तक, और आत्माओं की दुनिया तक और यहां तक कि समय और विचारों तक फैले हुए हैं। हवा के दर्पण में एक शब्द लाखों गुना बढ़ जाता है। दिव्य शक्ति की कलम इसे एक अद्भुत तरीके से पूरा करती है। इन दर्पणों में चीजें या तो अपनी स्पष्ट पहचान के साथ या पहचान और प्रकृति दोनों के साथ प्रतिबिंबित होती हैं। एक ठोस इकाई का प्रत्येक प्रतिबिंब एक चलता-फिरता निर्जीव रूप है; एक चमकदार आध्यात्मिक इकाई का प्रत्येक प्रतिबिंब मूल से जुड़ा एक जीवित रूप है। भले ही एक चमकदार इकाई का प्रतिबिंब मूल के समान न हो, लेकिन यह कुछ अलग नहीं है।

• चूँकि सूर्य अपनी धुरी पर घूमने के कारण हिलता है, इसलिए उसके फल (ग्रह) गिरते नहीं हैं। अगर वह हिलना बंद कर दे, तो उसके फल बिखर जाएँगे।

• एक विचार अंधकारमय होता है और अंधकार फैलाता है जब तक कि उसे हृदय की रोशनी से प्रकाशित न किया जाए। आँख का सफ़ेद भाग, जिसे दिन के समान माना जा सकता है, तब तक दृष्टि उत्पन्न नहीं कर सकता जब तक कि उसे परितारिका और पुतली के साथ न जोड़ा जाए, जिसे रात के समान माना जा सकता है। उसी तरह, एक विचार का "सफ़ेद भाग" तब तक सत्य की दृष्टि उत्पन्न नहीं कर सकता जब तक कि उसे हृदय की "परितारिका और पुतली" के साथ न जोड़ा जाए।

• बिना विश्वास के ज्ञान अज्ञानता से थोड़ा बेहतर है। किसी चीज़ का पक्ष लेना या उसे अपनाना विश्वास से काफ़ी अलग है।

• झूठ और निर्णायक बातों का काल्पनिक, विस्तृत वर्णन सरल दिमागों को गुमराह करता है।

• एक विद्वान मार्गदर्शक को भेड़ की तरह होना चाहिए, मादा पक्षी की तरह नहीं। भेड़ अपने बच्चे को दूध पिलाती है, जबकि मादा पक्षी अपने चूज़ों को उल्टी करके खाना देती है। • किसी चीज़ का अस्तित्व उसके सभी भागों के अस्तित्व पर निर्भर करता है। चूँकि किसी चीज़ का अस्तित्व

उसके कुछ भागों के अस्तित्व न होने से संभव है।

इसके भागों में, एक नपुंसक व्यक्ति अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए विनाशकारी हो जाता है; वे सकारात्मक रूप से कार्य करने के बजाय नकारात्मक रूप से कार्य करते हैं। • ज्ञान के सिद्धांत और अधिकार के कानून आम लोगों पर तब तक कोई प्रभाव नहीं डालते जब तक कि पूर्व को राज्य के कानून के साथ और बाद वाले को बल के नियमों के साथ जोड़ न दिया जाए।

• (आज की दुनिया में) अन्याय या अत्याचार ने न्याय की टोपी पहन ली है, विश्वासघात ने देशभक्ति के जोश का लबादा पहन लिया है, जिहाद[5] को आक्रामकता और मानवाधिकारों का उल्लंघन कहा जाता है, और गुलामी को स्वतंत्रता कहा जाता है। संक्षेप में, विपरीतों ने रूप बदल लिए हैं।

• व्यक्तिगत स्वार्थ पर आधारित राजनीति पाशविक है।

• भूखे जंगली जानवर के प्रति प्यार जताने से उसकी भूख और बढ़ जाती है। इसके अलावा, आपको खाने के बाद वह आपसे खाने के लिए और पैसे मांगता है।
तुम पर।

• समय दर्शाता है कि स्वर्ग सस्ता नहीं है और नरक व्यर्थ नहीं है।

• "अभिजात वर्ग" माने जाने वाले लोगों के गुणों ने उन्हें अहंकार और अत्याचार की ओर प्रेरित किया है, जबकि इन गुणों से उन्हें विनम्रता और आत्म-विनम्रता की ओर प्रेरित होना चाहिए। करुणा और परोपकार जगाने के बजाय, गरीबों की विपन्नता और आम लोगों की गरीबी ने उनके अपमान और दासता का कारण बना है।

• यदि किसी वस्तु से सम्मान और पुण्य प्राप्त होता है, तो उसे कुलीन वर्ग और नेताओं को दिया जाता है, लेकिन यदि उससे बुराई और बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं, तो उसे आम लोगों में बाँट दिया जाता है।

• यदि लोगों के पास कोई लक्ष्य नहीं है, या यदि मुख्य उद्देश्य को भुला दिया गया है या उपेक्षित किया गया है, तो मन व्यक्तिगत अहंकार की ओर मुड़ जाता है और उसके इर्द-गिर्द घूमने लगता है।

• सभी क्रांतियों, सभी भ्रष्टाचार, तथा सभी बुराइयों और नैतिक असफलताओं के कारण और स्रोत का सार दो छोटे वाक्यांशों में बताया जा सकता है: पहला यह है: "मैं भरा हुआ हूँ, इसलिए यदि अन्य लोग भूख से मरते हैं तो मुझे क्या लेना-देना?"
और दूसरा है: "तुम कष्ट सहोगे ताकि मैं आराम से रह सकूँ। तुम काम करोगे ताकि मैं खा सकूँ।" पहले शब्द के घातक जहर का एक ही इलाज है जो इसे जड़ से खत्म कर देगा: यह शरिया द्वारा आदेशित और स्थापित ज़कात है । दूसरी बीमारी का इलाज सूद और ब्याज का निषेध है। कुरान का न्याय मानवता के द्वार पर खड़ा है और सूद और ब्याज को दूर करता है, यह घोषणा करते हुए: "तुम

5 जिहाद का अर्थ है ईश्वर के मार्ग और मानवता की भलाई के लिए प्रयास करना। (अनुवाद)

प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है!'' फिर भी मानवता ने इस निषेध की अनदेखी की है और एक बड़ा झटका झेला है।6 अब उसे इससे भी बड़ा झटका मिलने से बचने के लिए इस पर ध्यान देना चाहिए। 7

• राष्ट्रों और राज्यों के बीच युद्धों का स्थान वर्ग युद्ध ने ले लिया है, क्योंकि लोग न तो गुलाम बनना चाहते हैं और न ही वेतनभोगी बनना चाहते हैं।

• जो व्यक्ति वैध उद्देश्य के लिए अवैध मार्ग पर चलता है, उसे आमतौर पर विपरीत परिणाम प्राप्त होता है। यूरोप8 जैसे गैर-इस्लामी प्रेम का पुरस्कार प्रेमी की निर्दयी शत्रुता है।

• अतीत और सभी विपत्तियों पर भाग्य के प्रकाश में विचार किया जाना चाहिए। भविष्य और किए गए पापों को मानवीय स्वतंत्र इच्छा और जिम्मेदारी के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। यह जब्र (भाग्यवाद) और इतिज़ाल (हमारे कार्यों में भाग्य की भूमिका को नकारना) की चरम सीमाओं को समेटता है।

• आपको जो आप कर सकते हैं या जिसका समाधान ढूंढ सकते हैं उसमें अपनी असमर्थता प्रदर्शित करके सांत्वना नहीं ढूंढनी चाहिए, न ही आपको जो आप नहीं कर सकते या जिसका समाधान नहीं ढूंढ सकते, उस पर विलाप करना चाहिए।

• किसी के जीवन से जुड़े घाव तो भर सकते हैं, लेकिन इस्लाम की गरिमा और राष्ट्रीय सम्मान पर लगे घाव इतने गहरे होते हैं कि उन्हें भरना मुश्किल होता है। • कभी-कभी एक ही कथन सेना को परास्त कर देता है, जैसे एक गोली 30 मिलियन लोगों की मौत का कारण बन सकती है।9 सही परिस्थितियों और हालातों में, एक (प्रतीत होता है) महत्वहीन कार्य उसके कर्ता को सर्वोच्च पद पर पहुंचा सकता है या निम्नतम पद पर गिरा सकता है। • एक सत्य झूठ के ढेर को गिरा सकता है। एक ही वास्तविकता बेहतर है-

कल्पनाओं के ढेर में सक्षम.

---

6 सईद नूरसी प्रथम विश्व युद्ध की बात कर रहे हैं। (अनुवाद)

7 दुर्भाग्य से, मानवता ने इस चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया और द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में उसे एक और बड़ा झटका मिला। यदि मानवता इस चेतावनी को अनदेखा करना जारी रखती है, तो उसे एक और, कहीं अधिक बड़ा झटका मिलेगा। (ट्र.)

8 सईद नूरसी लिखते हैं: "यूरोप दो प्रकार का है। एक वह है जो ईसा के धर्म और इस्लामी सभ्यता से लाभ उठाता है, वैज्ञानिक और तकनीकी आविष्कारों के माध्यम से मानव सामाजिक जीवन और न्याय की सेवा करता है, दूसरा वह है जो प्रकृतिवादी और भौतिकवादी दर्शन पर आधारित है और सभ्यता की बुराइयों को सद्गुण मानकर मानवता को बुराई और गुमराही की ओर ले जाता है।" अधिक चर्चा के लिए जर्सी, 2008, पृष्ठ 161-168 देखें। (अनुवाद)

, द ग्लेम्स, (अनुवाद), तुग़रा बुक्स, न्यू

9 गैवरिलो प्रिंसिप, एक सर्बियाई निजी, ने ऑस्ट्रो-हंगेरियन आर्कड्यूक फ्रांसिस फेर्डिनेंड और उनकी पत्नी की हत्या कर दी; यह प्रथम विश्व युद्ध के फैलने का बहाना था, जिसके परिणामस्वरूप 30 मिलियन लोग मारे गए।

• तुम्हें हमेशा सच बोलना चाहिए, लेकिन हर सच बोलना सही नहीं है। • जो लोग हर चीज के अच्छे पक्ष पर ध्यान देते हैं, वे अच्छे का चिंतन करते हैं।

जो लोग अच्छाई का चिंतन करते हैं, वे जीवन का आनंद लेते हैं। •

लोग महत्वाकांक्षा और आशा से ऊर्जा प्राप्त करते हैं और आशा के अभाव में हतोत्साहित हो जाते हैं।

• अपनी स्थापना के समय से ही इस इस्लामिक राज्य ने खुद को इस्लामिक दुनिया के लिए बलिदान करने के लिए बाध्य माना है और खिलाफत के मानक के रूप में देखा है; तदनुसार इसने इस्लामी स्वतंत्रता को बनाए रखने और ईश्वर के वचन को महिमामंडित करने के लिए सामूहिक धार्मिक दायित्व, जिहाद का सहारा लिया। इस राज्य के पतन की भरपाई भविष्य में मुस्लिम दुनिया की खुशी और स्वतंत्रता से होगी, क्योंकि इसका पतन एक ऐसी आपदा है जो हमें भाईचारे और बहनचारे को विकसित करने के लिए प्रेरित करती है, जो मुसलमानों के रूप में हमारे जीवन का खमीर या उत्प्रेरक है।

• समय का पहिया किस प्रकार विपरीत दिशा में घूमता है, इसका एक उदाहरण यहां दिया गया है: वे ईसाई धर्म को सभ्यता के ऐसे गुणों का श्रेय देते हैं, जो उसकी संपत्ति नहीं हैं, जबकि इस्लाम पर पिछड़ेपन को बढ़ावा देने का आरोप लगाया जाता है, जिसका इस्लाम विरोध करता है और जिसके विरुद्ध लड़ता है।

• एक अच्छा लेकिन धूमिल हो चुका हीरा हमेशा कांच के टुकड़े से बेहतर होता है, चाहे वह कितना भी अच्छा पॉलिश किया हुआ क्यों न हो।

• जो लोग सब कुछ पदार्थ (भौतिक अस्तित्व) में खोजते हैं, उनकी बुद्धि उनकी आंखों में होती है; हालाँकि, जो आध्यात्मिक है उसके प्रति भौतिक आंखें अंधी हैं।

• यदि कोई रूपक ज्ञान के हाथ से अज्ञान के हाथ में चला जाए, तो वह तथ्य में परिवर्तित हो जाता है और अंधविश्वास का द्वार खोल देता है।

• किसी व्यक्ति या वस्तु को यह दिखाना और देखना कि उसके पास ईश्वर द्वारा दी गई कृपा से अधिक है, वस्तुतः उन पर कोई उपकार नहीं करना है।

इसलिए, हर चीज़ का वर्णन उसी तरह करना बेहतर है जैसी वह वास्तव में है।

• प्रसिद्धि प्रसिद्ध लोगों को वह प्रदान करती है जो वास्तव में उनका नहीं होता।

• पैगम्बर की बातें जीवन की खान हैं और सच्चाई की प्रेरणा देती हैं।

• इस्लाम के पुनरुत्थान का मतलब है राष्ट्र का पुनरुत्थान। इस्लाम का जीवन

जीवन का प्रकाश है.

• कुरान मानवता के लिए दया है, और एक ऐसी सभ्यता का आग्रह करता है जो अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम खुशी सुनिश्चित करती है।

पश्चिमी सभ्यता, अपने वर्तमान चरण में, पाँच नकारात्मक सिद्धांतों पर स्थापित है: यह शक्ति या बल पर आधारित है; मूल चरित्र-

बल का सिद्धांत आक्रामकता है। यह व्यक्तिगत स्वार्थ को साकार करना चाहता है, जिसके कारण लोग चीजों को पाने के लिए पागलों की तरह दौड़ पड़ते हैं। यह जीवन को संघर्ष या द्वंद्व मानता है, जिसकी अनिवार्य विशेषता विवाद और पारस्परिक प्रतिकर्षण है। लोगों की एकता के लिए यह जो बुनियादी बंधन प्रदान करता है वह नस्लवाद या नकारात्मक राष्ट्रवाद है, जो दूसरों को निगलकर "पोषण" करता है, और भयानक संघर्ष को जन्म देता है। इसकी आकर्षक सेवा वासनाओं और जुनून को उत्तेजित करना और पशु इच्छाओं की संतुष्टि को सुविधाजनक बनाना है, जो लोगों को क्रूर बनाती हैं।

जहाँ तक इस्लाम की शरीयत में वर्णित सभ्यता का प्रश्न है, वह शक्ति या बल पर नहीं, बल्कि अधिकार पर आधारित है, और अधिकार के लिए न्याय और संतुलन की आवश्यकता होती है। इसका लक्ष्य स्वार्थ नहीं, सद्गुण है, और सद्गुण आपसी स्नेह और प्रेम को बढ़ाता है। इसके जीवन का सिद्धांत संघर्ष के बजाय सहयोग या पारस्परिक सहायता है, और इससे एकता और एकजुटता पैदा होती है। लोगों के बीच एकता का इसका साधन जातिवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद के स्थान पर धर्म और नागरिकता के बंधन हैं; और ये आंतरिक शांति और भाईचारे (और बहनचारे) की ओर ले जाते हैं, और बाहरी आक्रमण के विरुद्ध केवल आत्मरक्षा का आग्रह करते हैं। वासना और जुनून के स्थान पर, शरीयत की सभ्यता की सेवा का रूप मार्गदर्शन है और मार्गदर्शन की अनिवार्य विशेषता मानवता के अनुकूल तरीके से प्रगति और समृद्धि, और आध्यात्मिक और नैतिक पूर्णता है। इस्लाम से कभी न नाता न तोड़ो, क्योंकि यह हमारे अस्तित्व की गारंटी है। दिल और आत्मा से उससे जुड़े रहो, नहीं तो हम पूरी तरह से नष्ट हो जाएँगे।

• एक आम आपदा ज़्यादातर लोगों की आम विफलता का नतीजा होती है। हर आपदा किसी विफलता का नतीजा होती है, लेकिन साथ ही यह मुसलमानों के लिए इनाम का एक रास्ता भी खोलती है।

• शहीद जानते हैं कि वे जीवित हैं। चूँकि वे मरने को मृत्यु के रूप में अनुभव नहीं करते, इसलिए वे देखते हैं कि ईश्वर के लिए बलिदान किया गया उनका जीवन स्थायी, निरंतर और अधिक परिष्कृत है।

• कुरान का शुद्ध, पूर्ण न्याय पूरी मानवता के लिए एक निर्दोष व्यक्ति के जीवन की बलि नहीं देता। ईश्वरीय शक्ति और न्याय की दृष्टि में, एक व्यक्ति का जीवन मानवता के जीवन के बराबर है।

फिर भी कुछ लोग इतने स्वार्थी हो सकते हैं कि वे सब कुछ नष्ट कर देंगे और पूरी मानवता को नष्ट कर देंगे, यहां तक कि यदि संभव हो तो पूरे विश्व को भी, यदि ऐसा करना उनकी इच्छाओं की पूर्ति में बाधा बनता प्रतीत हो।

• डरपोकपन और कमज़ोरी बाहरी दबाव और हस्तक्षेप को बढ़ावा देते हैं।
• संभावित नुकसान के डर से किसी निश्चित लाभ को त्यागना नहीं चाहिए।

- राजनीति अब स्पैनिश फ्लू जैसी बीमारी बन गई है।
- पागल व्यक्ति से बार-बार कहिए, “तुम ठीक हो,” और यह असामान्य नहीं है कि वह ठीक हो जाए। और अच्छे व्यक्ति से बार-बार कहिए, “तुम बुरे हो,” और यह असामान्य नहीं है कि वह बुरा हो जाए।

- शत्रु का शत्रु तब तक मित्र रहता है जब तक वह शत्रु रहता है, और शत्रु का मित्र तब तक शत्रु रहता है जब तक वह मित्र रहता है।

- एक जिद्दी व्यक्ति इस तरह से व्यवहार करता है: अगर कोई शैतान किसी की मदद करता है या उसका समर्थन करता है, तो वे उसे "फ़रिश्ता" कहते हैं और उस पर दुआएँ माँगते हैं। लेकिन अगर वे किसी फ़रिश्ते को विरोधी पक्ष में देखते हैं, तो वे इसे फ़रिश्ते के भेष में शैतान के रूप में देखते हैं, और उस पर शाप देते हैं।

- किसी बीमारी का इलाज किसी दूसरी बीमारी के लिए हानिकारक हो सकता है। किसी भी दवा की अत्यधिक खुराक नई बीमारियों का कारण बन सकती है।
- जिस समाज में एकजुटता होती है, वह निष्क्रिय लोगों को उत्तेजित करने के लिए बनाया गया एक साधन है, जबकि जिस समुदाय में दुर्भावनापूर्ण ईर्ष्या होती है, वह सक्रिय लोगों को शांत करने के लिए बनाया गया एक साधन है।
- यदि किसी समुदाय में स्वस्थ और ईमानदार एकता नहीं है, तो वह कमजोर हो जाएगा क्योंकि उसकी संख्या केवल जनसंख्या वृद्धि के माध्यम से बढ़ती है। यह भिन्नों के गुणन की तरह है। राशि जितनी बार गुणा की जाती है, उसके अनुपात में कम बढ़ती है।10

- किसी चीज़ के अस्तित्व की पुष्टि न करना अक्सर यह पुष्टि करने के साथ भ्रमित होता है कि वह मौजूद नहीं है। किसी चीज़ के अस्तित्व के सबूतों की अनुपस्थिति लोगों को उसके अस्तित्व की पुष्टि न करने का औचित्य दे सकती है यदि वे उसके अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं। लेकिन किसी चीज़ के गैर-अस्तित्व की पुष्टि करने के लिए उसके गैर-अस्तित्व को साबित करने के लिए स्पष्ट सबूत की आवश्यकता होती है, क्योंकि उसके अस्तित्व की पुष्टि न करना संदेह है, जबकि उसके गैर-अस्तित्व की पुष्टि करना इनकार है।

- यदि किसी एक विश्वास के बारे में संदेह होने पर उसके एक या सौ प्रमाण भी अमान्य हो जाते हैं, तो भी उसकी सच्चाई बरकरार रहती है, क्योंकि उसके समर्थन में हजारों अन्य प्रमाण मौजूद होते हैं।

---

[10] पूर्ण संख्याओं को गुणा करने या जोड़ने से बड़ी संख्या प्राप्त होती है, जबकि भिन्नों को गुणा करने से छोटी संख्या प्राप्त होती है। चार गुणा चार सोलह होते हैं। लेकिन जब एक तिहाई को एक तिहाई से गुणा किया जाता है, तो परिणाम नौवां होता है। ठीक उसी तरह, अगर किसी समुदाय में पर्याप्त, ईमानदार एकता नहीं है, तो उसकी संख्या में वृद्धि से वह छोटा होता जाता है, बिखरता जाता है और उसका मूल्य कम होता जाता है।

• बहुसंख्यक आस्थावानों की सहमति का पालन करें। उमय्यदों ने ऐसा ही किया और अंततः अहलू-सुन्ना वल-जमा'आ11 में शामिल हो गए, हालाँकि शुरू में वे धर्म का पालन करने में सावधान नहीं थे। लेकिन चूँकि शिया, जो शुरू में धर्म का पालन करने में सावधान और दृढ़ थे, ने एक छोटी अल्पसंख्यक बने रहना पसंद किया, इसलिए उनमें से कुछ अंततः राफ़िदी बन गए।12

• अगर इस बात पर आम सहमति है कि क्या अच्छा और सच्चा है, और अगर बेहतर और सच्चा खोजने से असहमति और कलह पैदा होती है, तो जो सच है वह उससे ज़्यादा सच्चा है जो सच्चा है और जो अच्छा है वह उससे बेहतर है जो बेहतर है। इसलिए कहो: “मेरा रास्ता अच्छा और सच्चा है,” लेकिन कभी मत कहो: “मेरा रास्ता ही एकमात्र रास्ता है, सबसे सच्चा और सबसे अच्छा।”

• स्वर्ग के बिना नरक की यातना को महसूस या समझा नहीं जा सकता।

खड़ा हुआ।

• जैसे-जैसे समय बीतता है, कुरान जवान होता जाता है, और इसके रहस्य और संकेत स्पष्ट और बेहतर ढंग से समझे जाने लगते हैं। जैसे प्रकाश को आग समझ लिया जाता है, वैसे ही जोरदार वाक्पटुता को कभी-कभी अतिशयोक्ति समझ लिया जाता है।

• गर्मी की मात्रा ठंड के अस्तित्व के माध्यम से होती है; सुंदरता की मात्रा कुरूपता के अस्तित्व के माध्यम से होती है। ईश्वर की शाश्वत शक्ति ईश्वरीय सत्ता का एक आवश्यक गुण है और उसके सार में निहित है।

इस शक्ति की कोई डिग्री नहीं है, क्योंकि नपुंसकता इस तक नहीं पहुंच सकती। इसलिए, इसके सामने सब कुछ बराबर है।

• विचार करें: समुद्र में और उसकी सबसे छोटी लहर या बुलबुले में सूर्य की छवि एक ही पहचान रखती है।

• जीवन, ईश्वर की एकता की अभिव्यक्ति है, जो बहुलता में एकता लाता है।

• जब तक लोगों में से कौन संत हैं, शुक्रवार को प्रार्थना के लिए कौन सा समय सबसे अधिक स्वीकार्य है, रमज़ान के दौरान शक्ति और भाग्य की रात की तारीख, ईश्वर के सभी सुंदर नामों में से सबसे बड़ा नाम, और जीवनकाल के भीतर मृत्यु का नियत समय छिपा हुआ और अज्ञात रहता है, तब तक सभी सम्मानित और महत्वपूर्ण बने रहते हैं। अज्ञात अंत के साथ बीस साल का जीवन ज्ञात अंत के साथ एक हजार साल के जीवन से बेहतर है।

---

11 अहलू-सुन्ना वल-जमाआ मुसलमानों का वह विशाल बहुमत है जो विचार, पंथ और कर्म में पैगम्बर और उनके साथियों के मार्ग का अनुसरण करता है। (ट्र.)

12 राफिदी वे शिया हैं जो पैगम्बर के अधिकांश साथियों पर धर्मत्यागी होने का आरोप लगाते हैं, क्योंकि उन्होंने पैगम्बर - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - के तुरंत बाद चौथे खलीफा अली इब्न अबी तालिब को खलीफा नहीं चुना। (ट्र.)

• बुराई के लिए सांसारिक प्रतिफल आख़िरत में आने वाली सज़ा का सबूत है।

• ईश्वरीय शक्ति की दृष्टि में, प्रावधान या पोषण जीवन जितना ही महत्वपूर्ण है। प्रावधान शक्ति द्वारा निर्मित होता है, भाग्य द्वारा विभाजित होता है, और अनुग्रह या कृपा द्वारा पोषित होता है। चूँकि जीवन निश्चित परिस्थितियों और घटनाओं का निश्चित परिणाम है, इसलिए इसे समग्रता में देखा या देखा जा सकता है। लेकिन प्रावधान न तो निश्चित है और न ही निश्चित है, क्योंकि यह बिखरा हुआ है और एक निश्चित समय में प्राप्त होता है; यह अनिश्चित मात्रा में आता है और लोगों को चिंतन की ओर ले जाता है। जो लोग अपने शरीर में संग्रहीत पोषण (जैसे वसा, उदाहरण के लिए) के पूरी तरह से समाप्त होने से पहले भूख से मरते दिखाई देते हैं, वे नियमित पोषण में बदलाव या त्याग के कारण होने वाली बीमारियों से मर जाते हैं। • जंगली मांसाहारियों का वैध पोषण असंख्य जानवरों की लाशें हैं-

इन्हें खाकर ये मांसाहारी जीव अपना पेट भरते हैं और पृथ्वी की सतह को साफ करते हैं।

• कल्पना कीजिए कि आपके पास समान पोषण मूल्य वाले दो खाद्य पदार्थ हैं।
एक की कीमत सौ सेंट है और दूसरे की कीमत दस डॉलर है। अगर आप दूसरे वाले को सिर्फ़ कुछ सेकंड के आनंद के लिए पसंद करते हैं, जो आपकी स्वाद की इंद्री को, आपके शरीर के निरीक्षक या द्वारपाल को देगा, तो क्या यह बर्बादी का सबसे घटिया रूप नहीं है?

• जब सुख की अनुभूति हो, तो व्यक्ति को कहना चाहिए, “ऐसा लगता है जैसे मैंने इसे (सनकी येदिम) खा लिया है।” इस सिद्धांत का पालन करने वाला व्यक्ति सनकी येदिम नामक मस्जिद के बराबर का भोजन खा सकता था , लेकिन उसने ऐसा नहीं किया।13

• जब ज़्यादातर मुसलमान भूखे न हों तो आराम की ज़िंदगी आकर्षक लग सकती है। लेकिन जब ज़्यादातर मुसलमान भूखे हों तो कोई भी मुसलमान ऐसी ज़िंदगी नहीं चुन सकता।

• क्षणिक सुखों का मुस्कुराहट के साथ स्वागत करने के बजाय, क्षणिक बीमारियों का स्वागत करें। अतीत के सुख व्यक्ति को पछतावे की ओर ले जाते हैं, क्योंकि “हाय!” एक छिपी हुई बीमारी का संकेत देता है। अतीत की बीमारियाँ व्यक्ति को राहत की साँस लेने के लिए प्रेरित करती हैं, जो एक छिपी हुई खुशी और एक उपकार की खबर देती है।

• विस्मृति भी एक वरदान है; यह व्यक्ति को केवल वर्तमान के दु:खों को ही सहने देती है; यह संचित दु:खों को भुला देती है।

---

13 इस्तांबुल में एक मस्जिद है जिसका नाम है सनकी येदिम (जैसे कि मैंने इसे खा लिया हो)। जब भी इस मस्जिद के निर्माण के लिए पैसे देने वाले को कुछ महंगा खाना होता था, तो वह कहता था, "ऐसा लगता है कि मैंने इसे खा लिया है," और वह पैसे बचा लेता था जो वह अन्यथा खर्च कर सकता था। इस तरह से बचाए गए पैसों से उसने आखिरकार एक मस्जिद बनवाई। (ट्र.)

• हर विपत्ति में ईश्वरीय कृपा की मात्रा होती है। बड़ी विपत्ति के प्रति सचेत रहें, जिससे छोटी विपत्ति के अनुग्रह के लिए आभारी रहें। किसी विपत्ति पर ध्यान केंद्रित करने और उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताने से वह बढ़ जाती है, और हृदय या कल्पना में यह बढ़ा-चढ़ाकर किया गया प्रतिबिंब उसे वास्तविक और कष्टकारी बना देता है।

• सामाजिक जीवन में, हर किसी के पास एक खिड़की होती है - स्थिति - जिसके माध्यम से देखा और देखा जा सकता है। यदि खिड़की उनकी ऊंचाई (वास्तविक कद या मूल्य) से अधिक है, तो वे गर्व के कारण लंबे (या अधिक लंबे) दिखाई देंगे। लेकिन अगर खिड़की उनकी ऊंचाई से कम है, तो वे विनम्रता से झुकेंगे और सिर झुकाएंगे। मनुष्य में, महानता का मापदंड खुद को निम्न-श्रेणी या विनम्रता के रूप में जानना है, और वास्तविक निम्न-श्रेणी का माप महानता या अहंकार का दिखावा करना है।

• कमज़ोर लोगों का स्वाभिमान या गरिमा, शक्तिशाली या ताकतवर लोगों के सामने अहंकार बन जाती है। शक्तिशाली लोगों की विनम्रता, कमज़ोर लोगों के सामने आत्म-हीनता बन जाती है, जब कमजोर लोग उसे अपना लेते हैं। अपने पद पर, अधिकार प्राप्त व्यक्ति की गरिमा गरिमा होती है, और उसका आत्म-शून्य होने का भाव आत्म-हीनता होता है। लेकिन अपने घर में, उसका आत्म-शून्य होने का भाव विनम्रता होता है, और उसका गुरुत्वाकर्षण अहंकार होता है। अपने लिए सहनशीलता और त्याग करना अच्छा और पुण्य है, लेकिन दूसरों के लिए किया गया यह बुरा और विश्वासघाती है। लोग व्यक्तिगत रूप से अपने साथ जो किया जाता है, उसे धैर्यपूर्वक सहन कर सकते हैं, लेकिन राष्ट्र के लिए राष्ट्र के साथ जो किया जाता है, उसे धैर्यपूर्वक सहन नहीं कर सकते।

राष्ट्र के लिए गर्व और आक्रोश सराहनीय है, लेकिन अपने लिए ये निन्दनीय है।

• सभी आवश्यक उपाय किए बिना और सभी आवश्यक व्यवस्थाएं किए बिना किसी कार्य की सिद्धि को ईश्वर को सौंप देना आलस्य है।
जो कुछ भी किया जा सकता है, उसे करने के बाद इच्छित परिणाम की प्राप्ति को ईश्वर पर छोड़ देना ही ईश्वर पर भरोसा करना है। अपने सबसे बड़े प्रयासों के बाद अपने भाग्य या परिणाम से संतुष्ट होना प्रशंसनीय संतोष है, और आगे के प्रयासों को प्रोत्साहित करता है, व्यक्ति की ऊर्जा और परिश्रम को फिर से बढ़ाता है। हालाँकि, जो पहले से ही है, उससे संतुष्ट होना एक कमी है और इसका मतलब है कि आवश्यक प्रयास या प्रयासों में कमी।

• जिस तरह शरिया के आदेशों का पालन या अवज्ञा की जाती है, उसी तरह सृष्टि और जीवन के ईश्वरीय नियमों का पालन या अवज्ञा की जाती है। पूर्व के लिए पुरस्कार और दंड ज्यादातर परलोक में प्राप्त होता है, जबकि बाद के दंड और पुरस्कार ज्यादातर भुगतने पड़ते हैं

इस दुनिया में। उदाहरण के लिए, धैर्य का पुरस्कार सफलता है, जबकि आलस्य का दंड वंचना है। श्रम का पुरस्कार धन है, और दृढ़ता का पुरस्कार विजय है। न्याय का कोई भी दावा जो समतावादी नहीं है, एक झूठा दावा है।

• समान आयु और स्थिति या सामाजिक प्रतिष्ठा प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष का कारण बनती है। पूरक और सुसंगत होना एकजुटता का आधार है। हीन भावना अहंकार को भड़काती है। कमजोर चरित्र अहंकार का स्रोत है। नपुंसकता विरोध को जन्म देती है। जिज्ञासा ज्ञान की शिक्षक है। • जिस शक्ति ने प्रत्येक वस्तु को अपने स्वभाव से बनाया है, उसने मानवता और जानवरों को उनकी ज़रूरतों, विशेष रूप से भूख के माध्यम से नियंत्रित
किया है और उन्हें एक निश्चित क्रम में रखा है। इसने दुनिया में अव्यवस्था और भ्रम को भी रोका है और ज़रूरत को सभ्यता का मकसद बनाकर हर क्षेत्र में प्रगति सुनिश्चित की है।

• उदासी और संकट, अपव्यय के शिक्षक हैं; निराशा, विचारों में भटकाव और हृदय का अंधकार, संकट और अवसाद की खान हैं।

• जब पुरुष सांसारिक सनक और कल्पनाओं पर ध्यान केंद्रित करके स्त्रैण बन जाते हैं, तो स्त्रियाँ असभ्यता और निर्लज्जता के माध्यम से पुरुषोचित बन जाती हैं। यदि कोई सुंदर स्त्री "भाइयों" की सभा में प्रवेश करती है, तो दिखावा, प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या उत्पन्न होती है। महिलाओं को पर्दा खोलना और उन्हें उन पुरुषों के साथ स्वतंत्र रूप से घुलने-मिलने देना, जिनसे उनका कोई सम्बन्ध नहीं है, बुराइयों या बुरे आचरण को बढ़ावा देता है।

- चित्र, विशेषकर अश्लील चित्र, लोगों की वर्तमान पापमयता और दुर्भाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- इस्लाम द्वारा निषिद्ध मूर्तियाँ या तो क्रूर अत्याचार हैं, या दृढ़ जुनून हैं, या पाखंड का मूर्त रूप हैं।

• इस्लाम के मूल सिद्धांतों और निर्देशों की ईमानदारी से पुष्टि करने वाले और उनका पूरी तरह से पालन करने वाले व्यक्ति में विस्तार की प्रवृत्ति पूर्णता की ओर झुकाव है। जबकि यही प्रवृत्ति किसी अन्य व्यक्ति में जो इस्लामी मूल सिद्धांतों के पालन के दायरे से बाहर है और उनके प्रति उदासीन है, वह भ्रष्टाचार और विनाश की ओर झुकाव है।

तूफ़ानों और भूकंपों के समय में सही काम इज्तिहाद का दरवाज़ा खोलना नहीं है - यानी क़ुरान और सुन्नाह से नए नियम निकालने की कोशिश करना; बल्कि दरवाज़े बंद करना और खिड़कियाँ बंद कर देना है (नवाचार के खिलाफ़)। जो लोग असावधान और उदासीन हैं-

धर्म के प्रति आस्था और आचरण में विश्वास रखने वाले लोगों को छूट नहीं दी जानी चाहिए; बल्कि उन्हें सख्त चेतावनी दी जानी चाहिए और अधिक भारी जिम्मेदारियों और अधिक सावधानी के साथ जगाया जाना चाहिए। • असुरक्षित और गलत तरीके से प्रस्तुत सत्य मूल्यहीन होकर अपना मूल्य

खो देते हैं

हाथ.

• हमारी पृथ्वी एक सजीव प्राणी जैसी दिखती है जो जीवन के लक्षण प्रदर्शित करती है। अगर इसे अंडे के आकार में छोटा कर दिया जाए, तो क्या यह एक तरह का जानवर होगा? या अगर किसी सूक्ष्म जीव को पृथ्वी के आकार में बड़ा कर दिया जाए, तो क्या यह पृथ्वी जैसा नहीं होगा? अगर पृथ्वी जीवित है, तो इसमें एक "आत्मा" होनी चाहिए। अगर ब्रह्मांड को एक व्यक्ति के आकार में छोटा कर दिया जाए, जिसमें उसके तारे उसके शरीर के कण और परमाणु या तत्व बनाते हैं, तो क्या यह एक सचेत, सजीव प्राणी नहीं होगा? भगवान ने इस तरह के कई तरह के जीवित प्राणियों का निर्माण किया है।

• शरिया (ईश्वरीय कानून) दो तरह के होते हैं: वे जो वाणी के ईश्वरीय गुण से निकलते हैं और मानवता (सूक्ष्म जगत) के कर्मों और स्थितियों को नियंत्रित करते हैं, और वे जो इच्छा के ईश्वरीय गुण से निकलते हैं और ब्रह्मांड (वृहद मानव) के निर्माण और संचालन को नियंत्रित करते हैं। इस दूसरे समूह को गलत तरीके से प्रकृति कहा जाता है।

देवदूत एक शक्तिशाली समुदाय का गठन करते हैं; वे सृष्टि और व्यवस्था के दिव्य आदेशों को व्यक्त करते हैं, उनका प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें मूर्त रूप देते हैं, जो ईश्वरीय इच्छा से जारी होते हैं और जिन्हें ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के शरिया के रूप में जाना जाता है।

• जब आप किसी सूक्ष्म प्राणी की इन्द्रियों की तुलना मनुष्य से करते हैं तो आपका सामना एक आश्चर्यजनक, रहस्यमय सत्य से होता है: प्रत्येक व्यक्ति सुरतु या-सिन के समान है, और प्रत्येक व्यक्ति में सुरतु या-सिन अंकित है।14

• भौतिकवाद एक आध्यात्मिक महामारी है; इसने मानवता को इस भयानक बुखार से संक्रमित कर दिया है और उसे दैवीय क्रोध और दंड का भागी बना दिया है।

मनुष्य की आलोचना करने और उसे आत्मसात करने की क्षमता में वृद्धि के अनुपात में यह महामारी और भी गंभीर होती जाती है और व्यापक रूप से फैलती जाती है। • सबसे दुखी, व्यथित और दुखी व्यक्ति वह है जो

निष्क्रिय रहता है। क्योंकि निष्क्रियता अस्तित्वहीनता का भतीजा है, जबकि परिश्रम या कड़ी मेहनत करना शरीर का जीवन और जीवन की जागृत अवस्था है।

14 सूरतु या-सीन कुरान का 36वाँ अध्याय है । ऐसी पट्टिकाएँ हैं जिन पर संपूर्ण सूरतु या-सीन अरबी के बड़े अक्षरों Y(a) और S(in) में अंकित हैं। (ट्र.)

- बैंकों का मुनाफ़ा, सूदखोरी के दरवाज़े और उसके कंटेनर, हमेशा सबसे बुरे इंसानियत के लिए होता है - काफिरों के लिए - और काफिरों में सबसे ज़्यादा अन्यायी लोगों के लिए, और अन्यायियों में सबसे ज़्यादा बदचलन लोगों के लिए। यह इस्लाम की दुनिया के लिए बिल्कुल हानिकारक है। शरीयत न तो यह माँग करती है और न ही यह ज़िम्मेदारी लेती है कि सभी इंसान हमेशा हर कीमत पर समृद्ध रहें। एक काफिर के लिए, खासकर अगर वे इस्लाम और मुसलमानों के साथ युद्ध में हैं, तो उन्हें सम्मान या कानूनी सुरक्षा का हक नहीं है।

- शुक्रवार के उपदेश लोगों को इस्लाम के मूल तत्वों की याद दिलाने के लिए होते हैं, न कि इसके अमूर्त सैद्धांतिक बिंदुओं पर विस्तार से बताने के लिए। इसे देखते हुए, उन मूल तत्वों को व्यक्त करने वाले अरबी वाक्यांश इस तरह से याद दिलाने के लिए सबसे उपयुक्त हैं। जब कुरान की आयतों की तुलना पैगंबर की बातों से भी की जाती है, तो यह देखा जाएगा कि मानव जाति का सबसे वाक्पटु व्यक्ति भी कुरान की वाक्पटुता का मुकाबला करने में असमर्थ था।

भाग दो

भाग दो

सत्य की झलक

सत्य के बीज से फूल

रमज़ान के अंतिम दिनों और ईद के दिन के बीच

यह रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए इस्लामी विश्वास, विचार और कार्य पर एक संक्षिप्त " मथनवी" है

नोट: अपनी रचना और विषय-वस्तु दोनों में, यह संग्रह अन्य मथनावी या कविता के संकलनों से अलग है। इसका शीर्षक लेमेट (सत्य की झलक) है और इसे कुछ हद तक लेखक की पिछली रचना, हकीकत सेकिर्डेक्लेरी (सत्य के बीज) को स्पष्ट करने के लिए लिखा गया था; इसके अलावा, यह गद्य रूप में है और इसमें मनोरंजक छवियां या असंतुलित भावनाएं नहीं हैं। यह बेदीउज्जमां के कुछ छात्रों के लिए विद्वत्तापूर्ण निर्देश के रूप में लिखा गया था, जिसमें उनका भतीजा भी शामिल था, जो लेखन के समय उनके साथ था; इसमें कुरान और विश्वास की सच्चाईयाँ शामिल हैं, जो पूरी तरह से तर्क के अनुसार हैं।

यह कुरान और आस्था के बारे में एक सबक है। जैसा कि हमारे गुरु ने खुद कहा था, और जैसा कि हम समझ सकते हैं, बेदिउज़्ज़मान को कविता या शायरी से कोई लगाव नहीं था, और वह खुद को उनमें व्यस्त नहीं रखते थे।

हर दिन दो या ढाई घंटे काम करके, बेदीउज्जमां ने इस काम को पद्य रूप में लिखा (हालाँकि यह कविता नहीं थी); यह काम रमजान के दौरान बीस दिनों में पूरा हुआ। उस समय, वह दारुल-हिक्मिति-इस्लामिये ("इस्लामिक ज्ञान का घर") के सदस्य थे, और उनके पास कई व्यस्तताएँ थीं। हालाँकि इसे "एक्सटेम्पोर" लिखवाया गया था और बहुत जल्दी पूरा किया गया था, लेकिन काम को संपादित नहीं किया गया और इसे वैसे ही प्रकाशित किया गया। हमारी राय में, यह एक जीत है-

रिसाले-ए-नूर से इसके संबंध के कारण। कविता का कोई अन्य संकलन इतना उल्लेखनीय नहीं लगता जितना कि यह गद्य के रूप में पढ़ने में आसान है। ईश्वर की इच्छा से, यह काम एक तरह का मथनवी बन जाएगा

रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए । यह रिसाले-ए-नूर के लिए एक सूचकांक के रूप में कार्य करता है , या इसके लिए एक अग्रदूत है, क्योंकि रिसाले-ए-नूर दस साल बाद प्रकाशित हुआ और तेईस वर्षों में पूरा हुआ।

रिसाले-ए-नूर के छात्र,
सुंगुर, मेहमद फ़ेज़ी, हुसेरेव

स्मरण रखें: जैसा कि कहावत है: "एक व्यक्ति उस चीज़ के प्रति शत्रुतापूर्ण है जो उसे चाहिए।" वे नहीं जानते।" मैंने कविता और तुकबंदी के बारे में बहुत सोचा है क्योंकि मैं उनके बारे में ज़्यादा नहीं जानता। मैं कभी भी कविता की माँगों में फ़िट होने के लिए अपने मतलब की वास्तविकता को बदलना नहीं चाहता था। इसलिए, इस पुस्तक में, मैंने उदात्त सत्य को एक ऐसे अनाकर्षक परिधान में पहना है जो तुक या छंद से रहित है।

सबसे पहले, मुझे कोई बेहतर तरीका नहीं पता और मैं सिर्फ़ अर्थ बताने के बारे में सोच रहा हूँ। दूसरे, मैं उन कवियों की आलोचना को एक रूप देना चाहता था जो कपड़ों के हिसाब से शरीर को तराशते हैं। तीसरे, इस तरह की बचकानी शैली बेहतर है और रमज़ान के दौरान शारीरिक आत्मा और दिल को व्यस्त रखने के लिए ज़्यादा उपयुक्त है। लेकिन, मेरे पाठक, मुझे यह स्वीकार करना चाहिए कि मैंने एक गलती की है और मैं आपको भी ऐसा करने से बचना चाहता हूँ - इस घटिया शैली से गुमराह न हों और इसके महान सत्यों का लापरवाही से अनादर न करें!

एक बहाना: हे पाठक! मैं शुरू में ही यह स्वीकार करता हूँ कि मैं लेखन और छंद-रचना की अपनी क्षमताओं के बारे में चिंतित था। जहाँ तक पद्य और तुकबंदी का सवाल है, मैं कभी भी एक भी कविता नहीं लिख पाया था। लेकिन अचानक मुझे चीज़ों को पद्य में ढालने की इच्छा हुई, एक इच्छा जो बनी रही। साथियों के अभियानों के बारे में कुर्दिश में एक महाकाव्य है जिसे कव्ल-ए-नवाला सिसाबन कहा जाता है। मेरी आत्मा ने इसकी स्वाभाविक लय का आनंद लिया, जो एक भजन के समान है। इसलिए मैंने इसके पद्य रूप का उपयोग करना चुना, लेकिन एक तरह से अपने लिए। मैंने एक रचना की जो किसी तरह पद्य से मिलती-जुलती थी, हालाँकि मैंने मीटर के साथ कोई मेहनत नहीं की। कोई भी व्यक्ति जो चाहे, इसे गद्य की तरह आसानी से पढ़ सकता है, इसके पद्य-रूप के बारे में सोचे बिना। वास्तव में, इसे गद्य के रूप में समझना बेहतर होगा ताकि अर्थ को बेहतर ढंग से समझा जा सके। प्रत्येक खंड के पद्य अर्थ के संबंध में परस्पर संबंधित हैं। पाठकों को तुकबंदी के बारे में नहीं पूछना चाहिए। फ़ेज़ बिना टैसल के हो सकता है, और मीटर बिना तुक के हो सकता है, कविता बिना नियमों के। मुझे लगता है कि अगर कोई रचना अपनी कलात्मकता के ज़रिए लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती है, तो मन उसी में व्यस्त हो जाता है।

कला। इसलिए, एक रचना कलाहीन होने पर बेहतर होती है, जिससे अर्थ से ध्यान नहीं भटकता।

इस काम में मेरा शिक्षक कुरान था, मेरी किताब जीवन थी, और जिससे मैंने बात की वह मैं खुद था। और आप, मेरे पाठक, एक गुप्तचर हैं।
छुपकर सुनने वालों को आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं है; उन्हें जो अच्छा लगे उसे स्वीकार करना चाहिए और जो उन्हें अच्छा न लगे उसे अनदेखा करना चाहिए। मुझे उम्मीद है कि पाठकों की जुबान मेरे लिए माफ़ी की दुआ करेगी या अगर अल्लाह चाहे तो फ़ातिहा पढ़ेगी।

याचक

मैं एक उजड़ी हुई कब्र हूँ, जिसमें ढेर लगे हैं
सत्तर-नौ मरे सईद अपने पापों और दुखों के साथ।
अस्सीवाँ इस कब्र के लिए एक क़ब्र का पत्थर है;
वे सब मिलकर इस्लाम के पतन पर रोते हैं।
मेरी क़ब्र के पत्थर और मृत सईदों की कराहती क़ब्र के साथ
मैं अपने कल के निवास की ओर आगे बढ़ता हूँ।
मुझे पूरा यकीन है कि भविष्य का आकाश और पृथ्वी
हम सब मिलकर इस्लाम के स्पष्ट, चमकते हाथों के आगे आत्मसमर्पण कर देंगे।
क्योंकि इसकी ताकत इसके विश्वास और आशीर्वाद में निहित है,
यह सभी प्राणियों को शांति और सुरक्षा प्रदान करता है।

ईश्वरीय एकता के दो सर्वोच्च प्रमाण

जो कुछ भी इसमें है, उसके साथ यह ब्रह्माण्ड एक सर्वोच्च प्रमाण है; अदृश्य और प्रकट जगतों की अपनी भाषाओं के साथ यह ईश्वर की एकता की घोषणा करता है और उसकी महिमा करता है।
सर्वदयालु की एकता की घोषणा करते हुए, यह निरंतर घोषणा करता है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसकी कोशिकाओं के सभी परमाणु, इसके सभी भाग और सदस्य, मनुष्य की भाषाएँ हैं-
वे एक साथ उस गूंजती हुई आवाज़ में कहते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

भाषाएँ असीम रूप से विविध हैं, आवाज़ें भिन्न-भिन्न स्वरों की हैं,
लेकिन वे एक बात पर एकमत हैं - उसका उल्लेख, और कहते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

ब्रह्माण्ड वृहत् मानव है; यह ऊंची आवाज में ईश्वर का उल्लेख करता है, जबकि इसके सभी तत्व और परमाणु उस ऊंची आवाज में अपनी छोटी आवाजें जोड़ते हुए एक स्वर में घोषणा करते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

ब्रह्मांड ईश्वर की याद का एक चक्र है, जो कुरान को खंड-दर-खंड पढ़ता है। इसका प्रकाश कुरान से आता है, और आत्मा वाले सभी प्राणी सत्य पर चिंतन करते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

कुरान, सत्य और असत्य का यह महान, गौरवशाली मानदंड, ईश्वरीय एकता का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। इसकी सभी आयतें सत्य की वाणी हैं, तथा विश्वास की बिजली की किरणें हैं। वे सब मिलकर घोषणा करती हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

यदि आप उस कसौटी की छाती से अपना कान लगा लें, तो उसकी गहनता में-
सबसे गहराई में तुम स्पष्ट रूप से एक स्वर्गीय आवाज सुनोगे जो कहती है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसकी आवाज़ अत्यंत ऊँची, अत्यंत गंभीर, वास्तव में ईमानदार, अत्यंत मैत्रीपूर्ण है,
यह पूरी तरह से विश्वसनीय है और इसके साथ कई प्रमाण भी दिए गए हैं। बार-बार यह कहा गया है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इस प्रकाश के प्रमाण के सभी छह पहलू पारदर्शी हैं: इस पर चमत्कार का फूल और मुहर है और इसमें मार्गदर्शन का प्रकाश चमकता है, जो कहता है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसके नीचे सूक्ष्म रूप से गुंथे हुए तर्क और प्रमाण हैं; इसके दाहिनी ओर बुद्धि या कारण बोला गया है और मन इसे पूरी तरह से पुष्ट करते हुए कहता है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसके बायीं ओर, जो दायीं ओर के समान है, अंतःकरण साक्षी के रूप में उपस्थित होता है; इसके समक्ष शुद्ध अच्छाई विद्यमान है तथा इसका लक्ष्य सुख और समृद्धि है, जिसकी कुंजी प्रत्येक क्षण में यही है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

इसके परे इसका आधार, "इसके पहले" के समान, स्वर्गीय, शुद्ध दिव्य रहस्योद्घाटन है। ये सभी छह पहलू प्रकाशमान हैं और प्रत्येक के संकेत में प्रकट होते हैं:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है!

क्या कोई भी छिपा हुआ संदेह, कोई भी कल्पनीय, तीक्ष्ण संदेह, कोई भी विश्वासघाती विचलन उस देदीप्यमान, चमकते महल में घुस सकता है, जिसकी ऊंची दीवारें सुरों से बनी हैं, जिसका प्रत्येक शब्द एक देवदूत की वाणी है:

उसके अलावा कोई देवता नहीं है !

महान क़ुरआन ईश्वरीय एकता का सागर है। उस सागर से एक बूँद का उदाहरण लें, तो केवल एक छोटी सी बूंद को देखें।

यह सूरा ' सूरतु'ल-इखलास' से लिया गया है ; इसमें असंख्य संकेत हैं: इसके छः वाक्य, तीन सकारात्मक, तीन नकारात्मक, ईश्वर के साथ साझीदारों के सभी प्रकार के आरोपण का खंडन करते हैं तथा ईश्वरीय एकता को उसके सात पहलुओं में सिद्ध करते हैं:

पहला वाक्य: कहो, वह: यह उसकी स्पष्ट पहचान है, इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। अर्थात् यह उसकी परिभाषा करता है, उसके नामों, गुणों और कार्यों पर विचार किए बिना। यह परिभाषा सीधे उसकी ओर संकेत करती है। अर्थात्:

वहाँ कोई “वह” नहीं है, सिवाय उसके।

यह ईश्वरीय एकता की अनुभवात्मक पुष्टि का संकेत है।

जब सत्य को देखने वाला दृष्टिकोण ईश्वरीय एकता में लीन हो जाता है, तो वह कहता है:

उसके अलावा कुछ भी नहीं देखा जाता है!

दूसरा वाक्य: ईश्वर, जो पूर्णतः एक है, अद्वितीय है, ईश्वर की दिव्य सत्ता या उसकी दिव्यता के रूप में एकता की स्पष्ट पुष्टि है। वास्तविकता सत्य की भाषा में घोषणा करती है: उसके अलावा पूजा करने के लिए कुछ भी नहीं है!

तीसरा वाक्य: ईश्वर, जो हमेशा से ही मांगा जाता है। यह ईश्वरीय एकता के दो मोतियों का खोल है। पहला है ईश्वर की एकता (सारी सृष्टि के स्वामी के रूप में)। ब्रह्मांड का क्रम घोषित करता है:

उसके सिवा कोई रचयिता नहीं!

दूसरा मोती है ईश्वर की एकता जो स्वयं-निर्भर है, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड अपनी संपूर्णता में एक लेखक, एक परम, रचनात्मक कारण की पूर्ण आवश्यकता की भाषा के माध्यम से घोषणा करता है, जो इसके अस्तित्व में आने और इसके निरंतर अस्तित्व दोनों के लिए है:

कोई भी स्वयंभू नहीं है, जिसके द्वारा सभी जीवित हैं, सिवाय उसके!

चौथा वाक्य: वह जन्म नहीं देता। यह ईश्वर की एकता को दर्शाता है, जो सर्व-महान है। यह ईश्वर को भागीदार मानने के सभी प्रकार के आरोप को अस्वीकार करता है, और अविश्वास का निर्णायक रूप से खंडन करता है। अर्थात्, जो परिवर्तन या उत्पादन या विभाजन के अधीन है, वह न तो निर्माता हो सकता है, न ही आत्मनिर्भर, न ही देवता।

अरबी में ' नहीं' (लैम) का निषेध ईश्वरीय सत्ता के लिए संतान पैदा करने के विचार को निर्णायक रूप से नकारता है। ईश्वर को भागीदार बनाने (अर्थात ईश्वरीय सत्ता के लिए पितृत्व स्वीकार करना) के इस प्रकार के कारण अधिकांश मानव जाति पापी बन गई है। इसने यीशु, एज्रा, स्वर्गदूतों या "दस बुद्धि" जैसे पंथों को जन्म दिया है जो ईश्वरीय सत्ता की संतान हैं।

पाँचवाँ वाक्य: न तो वह पैदा हुआ है, यह ईश्वर की सर्व-शाश्वत एकता को दर्शाता है। अर्थात्, जिसका अस्तित्व आवश्यक नहीं है, पूर्व-शाश्वत है, या समय से असंबद्ध है, वह ईश्वर नहीं हो सकता। अर्थात्, जो अस्तित्व में आया-

जो समय के भीतर स्थित है, या पदार्थ से उत्पन्न हुआ है, या किसी पूर्वज से उत्पन्न हुआ है, वह ब्रह्माण्ड का आश्रय और रक्षक नहीं हो सकता।

कारणों (कारण-कार्य) को अस्तित्व का श्रेय देना, सितारों की पूजा, मूर्तिपूजा और प्रकृतिवाद, ये सभी ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ने के विभिन्न प्रकार हैं, तथा ये सभी गुमराही के जाल हैं।

छठा वाक्य: और उसके बराबर कोई नहीं है, यह एक व्यापक वाक्य है जो ईश्वरीय एकता के सभी पहलुओं को व्यक्त करता है। अर्थात्, कोई नहीं का निषेध करने वाला वाक्य यह दर्शाता है कि ईश्वर का सार, गुण या कर्म में कोई समान, साथी या समकक्ष नहीं है।

अर्थ की दृष्टि से, इन छहों वाक्यों में से प्रत्येक वाक्य दूसरे वाक्यों का परिणाम और प्रमाण दोनों है; क्रमानुसार प्रमाण और उनसे उत्पन्न होने वाले परिणाम इस सूरा में सम्मिलित किए गए हैं , ताकि इसे एक किले के रूप में निर्मित किया जा सके।

अर्थात्, सूरतुल इखलास में, अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप, छत्तीस सूराएं सम्मिलित हैं , जिनके भागों को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि वे एक दूसरे के प्रमाण और परिणाम दोनों बन सकें; यह एक सूरा ही वह क्षितिज है जिस पर छत्तीस सूराएं उभरती हैं।

ईश्वर के अलावा अदृश्य को कोई नहीं जानता

कारण पूरी तरह स्पष्ट हैं

ईश्वरीय भव्यता और गरिमा की अपेक्षा है कि प्राकृतिक कारण, तर्क की दृष्टि में, शक्ति के हाथ के सामने एक पर्दा हैं;

साथ ही ईश्वरीय एकता और महिमा के लिए यह आवश्यक है कि प्राकृतिक
शक्ति के कार्यों के अस्तित्व में आने में कारणों का कोई हाथ नहीं है।

अस्तित्व भौतिक दुनिया तक सीमित नहीं है

अस्तित्व के असीम रूपों को इस दृश्यमान जगत तक सीमित नहीं किया जा सकता; यह उन्हें समाहित नहीं कर सकता;

भौतिक संसार अदृश्य की चमकती हुई दुनियाओं पर एक जालीदार पर्दा मात्र है।

शक्ति की कलम की सार्वभौमिकता ईश्वरीय एकता को प्रदर्शित करती है

कला के दोषरहित कार्य उत्पत्ति के प्रत्येक बिंदु पर कारणों की रचनात्मकता का स्पष्ट रूप से खंडन करते हैं;

शक्ति की कलम के शिलालेख सृष्टि के प्रत्येक बिंदु पर मध्यस्थों के अस्तित्व को अनिवार्यतः अस्वीकार करते हैं।

सब कुछ के अस्तित्व के बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सामंजस्य और एकजुटता विद्यमान है, जो छिपी हुई भी है और दिखाई भी देती है - अस्तित्व के आंतरिक और बाह्य दोनों पहलुओं में।

यह एकजुटता और सहयोग - पारस्परिक सहायता या आवश्यकताओं की पारस्परिक पूर्ति - दोनों दर्शाते हैं कि केवल एक सर्वव्यापी शक्ति ही ऐसा कर सकती है: इस प्रकार एक परमाणु का निर्माण होता है और वह अपने सभी संबंधों के लिए उपयुक्त तरीके से स्थित होता है।

ब्रह्माण्ड की पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति और शब्द सजीव है;
उन्हें एक दूसरे की ओर आकर्षित करता है और एक दूसरे से परिचित कराता है।

चाहे वह कहीं से भी आए, मदद के लिए की गई हर पुकार का उत्तर मिलता है: दिव्य एकता के नाम पर, उसकी आवश्यकता पड़ने पर उसकी सहायता करने के लिए सभी आस-पास के लोग तत्पर हो जाते हैं।

हर जीवित शब्द का एक चेहरा होता है जो मुड़ा हुआ होता है और एक आँख होती है जो सबकी ओर देखती है वाक्य.

सूर्य की गति गुरुत्वाकर्षण के कारण है और गुरुत्वाकर्षण सौरमंडल को स्थिरता प्रदान करता है

सूर्य एक फल देने वाला पिंड है; यह अपने आप को हिलाता है ताकि इसके फल - जो गतिशील हैं - गिर न जाएं।

यदि यह गति करना बंद कर दे और रुक जाए, तो गुरुत्वाकर्षण समाप्त हो जाएगा
और उसके उत्साही अनुयायी अंतरिक्ष में बिखर जाएंगे और रोएंगे।

छोटी चीजें बड़ी चीजों से जुड़ी हुई हैं

निस्संदेह, जिसने मच्छर की आंख बनाई है, उसने सूर्य और आकाशगंगा दोनों का निर्माण किया है।

और जिसने पिस्सू के पेट को व्यवस्थित किया है, उसने निस्संदेह सौरमंडल को व्यवस्थित किया है।

और जिसने आंख को दृष्टि और पेट को जरूरत दी है, उसने आकाश की आंख को प्रकाश के कोहल से सजाया है और प्रकाश फैलाया है।
पृथ्वी के चेहरे पर दावत।

ब्रह्माण्ड की व्यवस्था में एक परम चमत्कार है

देखिये, ब्रह्माण्ड के संगठन में चमत्कार है; यदि असम्भव को मान लिया जाये तो सभी प्राकृतिक कारण ऐसे कारक हैं जो जो चाहें कर सकते हैं,

वे इस चमत्कार के सामने अपनी पूरी शक्तिहीनता स्वीकार करते हुए, उसके आगे दंडवत करते और घोषणा करते: " आपकी महिमा हो! हमारे पास कोई शक्ति नहीं है! हमारे प्रभु, आप शाश्वत, सर्वशक्तिमान महामहिम हैं!"

ईश्वरीय शक्ति के समक्ष सब कुछ समान है

तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक आत्मा के समान है। (31:28)

दैवीय शक्ति दैवीय सार के लिए आवश्यक है तथा उसमें अंतर्निहित है; नपुंसकता उस तक नहीं पहुंच सकती।

ईश्वरीय शक्ति में कोई सीमा नहीं हो सकती, न ही कोई बाधा किसी भी तरह से उसे बाधित कर सकती है। चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष, सभी चीजें उसके संबंध में एक समान हैं।

क्योंकि प्रत्येक वस्तु एक दूसरे से जुड़ी हुई है तथा एक दूसरे पर निर्भर है; जो सब कुछ नहीं बना सकता, वह कुछ भी नहीं बना सकता।

जो अपने हाथ में ब्रह्माण्ड नहीं पकड़ सकता, वह कण भी नहीं बना सकता।

यदि किसी के पास इतना शक्तिशाली हाथ नहीं है कि वह पृथ्वी, सूर्य और तारों - उन असंख्य पिंडों - को उठा सके और उन्हें प्रार्थना की मालाओं की तरह क्रम में पिरो सके, और उन्हें अनंत अंतरिक्ष के सिर और वक्ष पर रख सके, तो वह दुनिया में किसी भी चीज का निर्माण

करने का दावा नहीं कर सकता; उसे किसी भी चीज का आविष्कार करने का दावा करने का कोई अधिकार नहीं है।

किसी प्रजाति को जीवन देना एक व्यक्ति को जीवन देने के समान ही है

जिस प्रकार शीत ऋतु की मृत्यु-सी निद्रा में सुन्न हो गई मक्खी को पुनर्जीवित करना दैवी शक्ति के लिए कठिन नहीं है, उसी प्रकार शीत ऋतु की मृत्यु-सी निद्रा में सुन्न हो गई मक्खी को पुनर्जीवित करना दैवी शक्ति के लिए कठिन नहीं है।

इसी प्रकार, न तो पृथ्वी की मृत्यु और न ही इसका पुनरुत्थान कोई समस्या उत्पन्न करेगा।
दैवी शक्ति के लिए कोई भी कठिनाई।

न ही सभी प्राणियों को आत्माओं सहित जीवन में वापस लाना कोई बड़ी समस्या प्रस्तुत करेगा।

प्रकृति दिव्य कला है

प्रकृति मुद्रक नहीं है, वह कुछ मुद्रित वस्तु है;

यह लिखने वाला नहीं है, बल्कि शिलालेख है; यह करने वाला या लिखने वाला नहीं है।
एजेंट के रूप में, यह प्राप्तकर्ता है; यह स्रोत नहीं है, बल्कि पैटर्न है।

यह वह नहीं है जो आदेश देता है, यह स्वयं व्यवस्था है; यह शक्ति नहीं है, बल्कि कानून है; यह कानूनों का एक समूह है जो इच्छा के दिव्य गुण से निकलता है; यह कोई वास्तविकता नहीं है जिसका भौतिक स्व-अस्तित्व हो।

अंतःकरण अपने आकर्षण के माध्यम से ईश्वर को पहचानता है

अंतःकरण में एक आकर्षण, एक मोह होता है; अंतःकरण अनुभव करता है कि वह निरन्तर एक आकर्षक शक्ति के आकर्षण से आकर्षित होता रहता है।

यदि सर्वसुन्दर, दयालु भगवान् स्वयं को स्थायी रूप से प्रकट करें-
निस्संदेह, बिना किसी आवरण के, चेतन प्राणी परमानंद से अभिभूत हो जाएंगे।

चेतना - मानव चेतन प्रकृति - निर्णायक रूप से गवाही देती है
एक अनिवार्यतः विद्यमान, ऐश्वर्य, सौंदर्य और अनुग्रह से युक्त;

आकर्षण की भावना एक साक्ष्य है, और इसी प्रकार आकर्षित होने की भावना भी एक साक्ष्य है।

सृष्टिकर्ता द्वारा दिया गया सहज स्वभाव सत्य बोलता है

किसी चीज़ का जन्मजात स्वभाव या ईश्वर-प्रदत्त स्वभाव झूठ नहीं बोलता; यह जन्मजात स्वभाव जो कुछ भी कहता है, वही सत्य है। बढ़ने की प्रवृत्ति होने पर, बीज की जीभ कहती है: "मैं अंकुरित होऊँगा और फल दूँगा," और वह जो कहती है, वह है

सत्य सिद्ध हुआ.

जीवन के प्रति झुकाव अंडे की गहराई में बड़बड़ाता है: "यदि ईश्वर चाहेगा, तो मैं चूज़ा बनूँगा।" यह जो कहता है वह सच है।

यदि एक मुट्ठी पानी पर्याप्त ठण्डे होने पर लोहे की तोप के गोले के अन्दर जमने का इरादा रखता है,

इसके अंदर फैलने की प्रवृत्ति कहती है: "फैल जाओ! मुझे और जगह चाहिए।"
इस आदेश का विरोध नहीं किया जा सकता।

मजबूत लोहा काम पर लग जाता है, और उसे गलत साबित नहीं करता; पानी की सच्चाई और ईमानदारी लोहे को विभाजित कर देती है।

ये सभी प्रवृत्तियाँ ईश्वरीय सृजनात्मक आदेश हैं और प्रत्येक एक
ईश्वरीय आदेश। ये सभी सृष्टि और जीवन के ईश्वरीय नियम हैं, ये सभी इच्छा की अभिव्यक्तियाँ हैं।

ईश्वरीय इच्छा सभी प्राणियों को इस प्रकार निर्देशित करती है: सभी प्रवृत्तियाँ ईश्वर के अनुरूप होती हैं
प्रभु की आज्ञाएँ.

अंतःकरण में ईश्वरीय अभिव्यक्ति एक ही है;
आकर्षण और आकर्षित होने की भावना दो शुद्ध "आत्माएं" हैं;

वे दो पॉलिश दर्पण हैं जिनमें शाश्वत सौंदर्य प्रतिबिंबित होता है-
विश्वास की ज्योति और प्रकाश।

पैगम्बरत्व मानव जाति के लिए आवश्यक है

वह दिव्य शक्ति, जो चींटियों को नेता विहीन या मधुमक्खियों को रानी विहीन नहीं छोड़ती

निश्चित रूप से मानवजाति को किसी कानून या पैगम्बर के बिना नहीं छोड़ा जाएगा।
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था स्वतः ही इसकी मांग करती है।

स्वर्गारोहण स्वर्गदूतों के लिए वैसा ही था जैसा मानव जाति के लिए चंद्रमा का विभाजन था

फ़रिश्तों ने स्वर्गारोहण के पैगम्बरीय आश्चर्य में, निर्विवाद पैगम्बरत्व के भीतर एक सर्वोच्च संतत्व देखा।

वह चमकता हुआ व्यक्ति बुराक पर सवार होकर (उसे स्वर्ग में ले गया) और बिजली की तरह चमक रहा था; यात्रा करने वाले चंद्रमा की तरह, उसने चारों ओर प्रकाश की दुनिया देखी।

उसी तरह मानवता के लिए, जो इस दृश्यमान माध्यम से बिखरी हुई है
दुनिया, और चाँद का विभाजन (54:1) एक महत्वपूर्ण, अवलोकनीय चमत्कार था;

अतः आत्माओं की दुनिया में रहने वालों के लिए, स्वर्गारोहण, जैसा कि ' सर्व-महिमावान है वह, उसने अपने सेवक को रात में यात्रा पर ले लिया...' (17:1) में बताया गया है, सबसे बड़ा चमत्कार था।

विश्वास की पुष्टि का प्रमाण इसके भीतर है

विश्वास की पुष्टि में दो वाक्य होते हैं, जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे की गवाही देता है; एक दूसरे के लिए तर्क और प्रमाण है।

पहला, दूसरे के लिए एक पूर्वानुमेय तर्क है, और दूसरा, दूसरे के लिए एक पूर्वानुमेय तर्क है।
पहले के लिए एक पश्चातवर्ती तर्क।

जीवन एकता की अभिव्यक्ति है

जीवन एकता का प्रकाश है जिसके माध्यम से इस बहुलता के क्षेत्र में एकता प्रकट होती है। वास्तव में, एकता की अभिव्यक्ति बहुलता को एकीकृत करती है, इस प्रकार इसे एक एकीकृत इकाई बनाती है।

जीवन एक ही चीज़ को सभी चीज़ों का स्वामी बना देता है, जबकि एक जीवन के लिए-
कम चीज़ सभी चीजें अस्तित्वहीन हैं।

आत्मा बाह्य अस्तित्व में लिपटा हुआ एक नियम है

आत्मा एक प्रकाशमान नियम है जो बाह्य अस्तित्व से आच्छादित है तथा चेतना से संपन्न है।

यह आत्मा, जिसका वास्तविक, संवेदी अस्तित्व है, उस प्रत्यक्ष नियम का भाई, साथी बन गया है।

स्थापित, निरंतर प्राकृतिक नियमों की तरह, आत्मा भी ईश्वरीय आदेश और इच्छा शक्ति के संसार से आती है।

शक्ति उसे इन्द्रियों से सुसज्जित करती है, उसके सिर में चेतना जोड़ती है, तथा सूक्ष्म शरीर को उस मोती का खोल बनाती है।

यदि सृष्टिकर्ता की शक्ति बाह्य अस्तित्व में प्रजातियों में कार्यरत नियमों को धारण कर ले, तो प्रत्येक एक आत्मा बन जाएगा;

यदि आत्मा को बाह्य अस्तित्व और चेतना से अलग कर दिया जाए तो वह एक अमर नियम बन जाएगा।

जीवन के बिना अस्तित्व गैर-अस्तित्व के समान है

प्रकाश और जीवन दोनों ही प्राणियों के लिए खुद को प्रकट करने और जानने का कारण हैं। देखो, अगर जीवन का प्रकाश नहीं है,

अस्तित्व पर अस्तित्वहीनता का दाग लग जाएगा; वास्तव में, यह अस्तित्वहीनता जैसा ही है। चाहे वह चाँद ही क्यों न हो, वह अजनबी और अनाथ है, जब तक कि उसमें जीवन न हो।

जीवन के कारण चींटी पृथ्वी से भी बड़ी है

यदि आप अस्तित्व के तराजू पर एक चींटी को तौलें, तो उससे उत्पन्न होने वाला ब्रह्मांड हमारी पृथ्वी में समाहित नहीं हो सकता।

मेरे विचार से पृथ्वी जीवित है। लेकिन अगर, दूसरों की धारणा के अनुसार,
यदि आप निर्जीव मिट्टी को चींटियों के दूसरे पलड़े में रख दें, तो इसका आकार चींटी के चेतन सिर के आधे के बराबर भी नहीं होगा।

ईसाई धर्म इस्लाम का अनुसरण करेगा

ईसाई धर्म या तो विलुप्त हो जाएगा या शुद्ध हो जाएगा। यह इस्लाम के सामने आत्मसमर्पण कर देगा और हथियार छोड़ देगा।

यह बार-बार खंडित होता रहा, जब तक कि अंततः प्रोटेस्टेंटवाद प्रकट नहीं हुआ, लेकिन इसे सुधारने के लिए जो आवश्यक था, वह वहां नहीं मिल सका।

पर्दा फिर से फट गया, वह पूरी तरह से गुमराह हो गया। हालाँकि, उसका एक हिस्सा ईश्वरीय एकता की पुष्टि के करीब पहुँच गया; उसमें उसे मुक्ति मिलेगी।

यह फिर से टूटने की तैयारी कर रहा है। अगर यह विलुप्त नहीं हुआ, तो क्रिस्टी-
सभी लोग शुद्ध होकर इस्लाम में सम्मिलित हो जायेंगे।

इसमें एक महान रहस्य छिपा है, जिसका संकेत पैगंबरों के गौरव ने किया था जब उन्होंने कहा था: "यीशु आएगा और मेरी शरीयत का पालन करेगा; वह मेरी बिरादरी का होगा।"

आंशिक या अप्रत्यक्ष दृष्टिकोण असंभव को संभव मानता है

यह एक प्रसिद्ध घटना है: लोगों का एक बड़ा समूह ईद की शुरुआत स्थापित करने के लिए अर्धचंद्र की तलाश में क्षितिज पर नजर गड़ाए हुए था, लेकिन किसी को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।

तभी एक बूढ़े आदमी ने कसम खाकर कहा कि उसने यह सब देखा है। लेकिन जो कुछ उसने देखा था, वह सच नहीं था।
एक घुमावदार सफेद पलक दिखी।

पलक उसकी अर्धचंद्राकार हो गई। लेकिन एक टेढ़ी पलक कैसे
क्या तुम अर्धचन्द्र बन सकते हो? यदि तुम हमारे दृष्टान्त को समझ गए हो:

परमाणुओं की गति आपके तर्क के ऊपर की पलक बन गई है - एक काली पलक जो भौतिकवादी आंख को अंधा कर देती है।

वह उस एक को नहीं देख सकता जिसने सभी प्रकार के प्राणियों का निर्माण किया है, अतः वह भ्रांतिग्रस्त है।
मार्गदर्शन आप पर आता है.

वह गति उस एक की जगह कैसे ले सकती है जिसने ब्रह्मांड को बनाया और व्यवस्थित किया है? यह मान लेना कि पूर्व वाला ही उत्तरार्द्ध है, एक जटिल असंभवता है।

कुरान में दर्पण की आवश्यकता है, न कि किसी प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने की

तर्कसंगत तर्कों के बजाय, यह स्रोत की पवित्रता है जो मुस्लिम समुदाय और आम लोगों को इसका पालन करने के लिए प्रोत्साहित करती है और उनसे इसका अनुसरण करने का आग्रह करती है।

शरीयत का 90 प्रतिशत हिस्सा धर्म के स्पष्ट, निर्विवाद मामलों और आवश्यक तत्वों से बना है, जिनमें से प्रत्येक एक हीरे जैसा स्तंभ है।

जो मामले व्याख्या के लिए खुले हैं, विवादास्पद और गौण हैं, वे केवल दस प्रतिशत हैं। जिसके पास ये दस सोने के सिक्के हैं, वह नब्बे हीरे के खंभों का मालिक नहीं हो सकता, न ही उन्हें अपने पर्स में रख सकता है, न ही उन्हें सोने के सिक्कों पर निर्भर बना सकता है।

हीरे के खंभों का स्रोत कुरान और हदीस है ।
स्तंभ उनकी संपत्ति हैं और हमेशा उनमें तलाश की जानी चाहिए।

---

15 हदीस पैगंबर मुहम्मद के शब्दों, कार्यों और दूसरों में उनके द्वारा स्वीकृत कार्यों का संग्रह है। इस्लाम के दूसरे स्रोत के रूप में, हदीस सुन्ना की अवधारणा के समान है और रहस्योद्घाटन पर आधारित है। जब बड़े अक्षरों में नहीं लिखा जाता है, तो हदीस शब्द का अर्थ होता है

शरीयत की किताबें और व्याख्याएँ कुरान का दर्पण या दूरबीन होनी चाहिए जिसके माध्यम से कुरान की जाँच की जाए। चमत्कारिक व्याख्या के उस सूर्य को छाया या किसी और की आवश्यकता नहीं है जो उसकी ओर से कार्य करे!

सत्य को झुठलाने वाला असत्य को सत्य मान लेता है

मनुष्य स्वभाव से ही नेक है, इसलिए उसका उद्देश्य सत्य की खोज करना है। लेकिन कभी-कभी झूठ भी उसके हाथ लग जाता है, और उसे सत्य समझकर वह अपनी जेब में रख लेता है।

सत्य की खोज करते समय, अनजाने में ही उन पर गुमराही आ पड़ती है।
वे इसे सत्य मानकर इसे अपने सिर पर धारण कर लेते हैं।

दैवी शक्ति के दर्पण अनेक हैं

सर्वशक्तिमान की शक्ति में असंख्य दर्पण हैं। वे खिड़कियाँ खोलते हैं, जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से अधिक पारदर्शी और सूक्ष्म है, जो सभी प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया को देखती हैं।

जल से वायु, वायु से आकाश, आकाश से प्रतिरूप या आदर्श रूप, आदर्श रूप से आत्मा, आत्मा से समय, समय से कल्पना, तथा कल्पना से मन तक के विभिन्न दर्पण, सभी ईश्वर के कार्यों की अभिव्यक्तियाँ दर्शाते हैं।
अपना कान हवा के दर्पण पर लगाइये: एक शब्द लाखों हो जाता है!
सत्ता की कलम असाधारण तरीके से प्रतिलिपियाँ बनाती है; यह है
प्रजनन का रहस्य...

प्रतिनिधित्व के विभिन्न प्रकार हैं

दर्पण में प्रतिबिम्ब या प्रतिबिंब चार प्रकार का होता है: या तो यह केवल पहचान या प्रतिबिंबित वस्तु का भौतिक रूप होता है; या आवश्यक, सजीव विशेषताओं के साथ पहचान होती है; या पहचान और वस्तु की प्रकृति से किरण दोनों होती है; या प्रकृति और पहचान दोनों होती है।

यदि आप उदाहरण चाहते हैं: एक मनुष्य, सूर्य, देवदूत, और
शब्द। दर्पण में ठोस चीजों की छवियाँ चलती हुई मृत आकृतियाँ हैं।
प्रकाशमान शरीर के प्रतिबिंबों में उसकी छवियाँ जीवित हैं और उससे जुड़ी हुई हैं; भले ही वह स्वयं आत्मा न हो या उसके समान न हो, वे इसके अलावा और कुछ नहीं हैं।

पैगम्बर के किसी एक विशेष शब्द या कार्य या दूसरों के किसी शब्द या कार्य को स्वीकार करना। (ट्र.)

वे प्रत्येक एक विस्तारित प्रकाश हैं। यदि सूर्य एक जीवित प्राणी होता, तो उसकी ऊष्मा उसका जीवन होती, और उसका प्रकाश, उसकी चेतना - दर्पण में उसकी छवि में ये गुण होते (अर्थात्, उसमें ऊष्मा और प्रकाश दोनों होते हैं)।

इससे निम्नलिखित रहस्य स्पष्ट होता है: महादूत गेब्रियल एक ही समय में लोटे-वृक्ष16 पर तथा पैगंबर की मस्जिद में दिह्या17 के रूप में मौजूद हैं - और कौन जानता है कि कितने अन्य स्थानों पर मौजूद हैं!

इसके अलावा, ईश्वर ही जानता है कि अज़राएल एक साथ कितनी जगहों पर मौजूद हो सकता है, और मरने वालों की आत्माओं को ले जा सकता है।

साथ ही, पैगंबर अपने समुदाय के सामने संतों के दर्शन और सच्चे सपनों दोनों में प्रकट होते हैं;

और न्याय के दिन सर्वोच्च सभा के मैदान में वह
उनकी ओर से मध्यस्थता करने के लिए सभी से मिलें।

संतों के "प्रतिस्थापन" (अब्दाल) प्रकट होते हैं और उन्हें अनेक स्थानों पर देखा जाता है।
एक ही समय पर स्थानों पर।

इज्तिहाद करने के योग्य व्यक्ति अपने लिए नया कानून बना सकता है, लेकिन वह कानून निर्माता नहीं हो सकता।

जो कोई भी इज्तिहाद करने की क्षमता रखता है, वह उन मामलों में अपने लिए नए कानून बना सकता है जिनके बारे में कुरान या सुन्नह में कोई स्पष्ट फैसला नहीं है; ये उस व्यक्ति पर बाध्यकारी हैं, लेकिन अन्य लोगों पर नहीं।

वह कानून नहीं बना सकता और मुस्लिम समुदाय से उनका पालन करने का आग्रह नहीं कर सकता। उसके निष्कर्षों को शरीयत से संबंधित माना जाता है, लेकिन उन्हें शरीयत में शामिल नहीं किया जा सकता क्योंकि वे सभी मुसलमानों पर बाध्यकारी हैं। वह मुजतहिद हो सकता है , लेकिन वह कानून बनाने वाला नहीं हो सकता।

केवल बहुसंख्यक विद्वानों की सहमति ही शरिया की मुहर है। किसी विचार को स्वीकार करने के लिए दूसरों से आह्वान करने की पहली शर्त बहुमत द्वारा स्वीकृति है।

अन्यथा, ऐसा आह्वान नवाचार है और इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए; इसे
गले में फँसना चाहिए, और इसका उच्चारण नहीं किया जाना चाहिए!

---

16 सबसे दूर की सीमा का लोटे का पेड़ (कुरान में सिद्रतुल-मुन्तहा , 53:14); यह ईश्वरत्व के क्षेत्र और सृष्टि के क्षेत्र के बीच की सीमा को दर्शाता है। (ट्र.)

17 दिहयातुल-कलबी पैगम्बर मुहम्मद के साथियों में से एक थे। महादूत गेब्रियल कभी-कभी उनके रूप में पैगम्बर के पास आते थे। देखें, अल-बुखारी, “मनक़िब” 25; मुस्लिम, “ईमान” 271. (ट्र.)

तर्क का प्रकाश हृदय से आता है

अज्ञानी बुद्धिजीवियों को यह सिद्धांत जानना चाहिए: हृदय के प्रकाश के बिना कोई विचार प्रबुद्ध नहीं हो सकता।

जब तक मन की किरण हृदय के प्रकाश से नहीं जुड़ती, तब तक अंधकार, उत्पीड़न और अज्ञान ही परिणाम होता है। यह अंधकार झूठी रोशनी में लिपटा हुआ है।

आपकी आँख का एक सफ़ेद हिस्सा है, जो दिन के समय जैसा दिखता है, लेकिन यह अंधा और अंधेरा है। लेकिन इसमें एक पुतली है, जो रात की तरह अंधेरी है, लेकिन प्रकाशित है।

पुतली के बिना, मांस का वह टुकड़ा आँख नहीं है, और आप कुछ भी नहीं देख सकते। अंतर्दृष्टि के बिना आँख भी बेकार है।

अतः, यदि हृदय की काली पुतली विचार के श्वेत भाग में उपस्थित नहीं होगी, तो मन की अंतर्वस्तु कोई ज्ञान या अंतर्दृष्टि उत्पन्न नहीं करेगी।
हृदय के बिना तर्क या बुद्धि नहीं हो सकती।

मन में ज्ञान के स्तर परिवर्तनशील होते हैं और भ्रमित हो सकते हैं

मन में ज्ञान के कई स्तर होते हैं जो एक दूसरे से भ्रमित हो सकते हैं और जिनके परिणाम अलग-अलग होते हैं। पहले व्यक्ति किसी चीज़ की कल्पना करता है, फिर उसके बारे में सोचता है और उसे एक रूप देता है।

इसके बाद, व्यक्ति इस बात पर विचार करता है, फिर इसकी पुष्टि करता है, और फिर इस पर पूर्ण विश्वास करता है। फिर वे इसका पूर्ण समर्थन करते हैं; फिर वे इसके प्रति प्रतिबद्ध या समर्पित हो जाते हैं।

आपकी प्रतिबद्धता अलग है, और आपका समर्थन भी अलग है, जिनमें से प्रत्येक अलग है।
परिणाम एक अलग स्थिति या दृष्टिकोण में आता है:

दृढ़ता प्रतिबद्धता या समर्पण से उत्पन्न होती है, जबकि अनुपालन समर्थन या वकालत से आता है। अनुपालन दृढ़ विश्वास से और पक्षपात तर्क से होता है, जबकि अवधारणा के स्तर पर कोई विचार नहीं बनता है।

यदि आप कल्पना के स्तर पर ही रहेंगे तो परिणाम कुतर्क ही होगा।
झूठ और भ्रामक चीजों का सुंदर, मनोरम वर्णन सरल मन को चोट पहुंचाएगा और गुमराह करेगा।

बिना पचा हुआ ज्ञान दूसरों को नहीं देना चाहिए

सच्चा, विद्वान मार्गदर्शक एक भेड़ की तरह होता है, पक्षी की तरह नहीं; वे निस्वार्थ भाव से ज्ञान प्रदान करते हैं।

क्योंकि भेड़ अपने मेमनों को शुद्ध दूध के रूप में पचा हुआ भोजन देती है,
जबकि पक्षी अपने चूज़ों को उगला हुआ भोजन देता है।

विनाश आसान है, इसलिए कमजोर लोग विनाशकारी होते हैं

किसी वस्तु का अस्तित्व उसके सभी भागों के अस्तित्व पर निर्भर करता है, जबकि उसका अस्तित्व न होना उसके किसी एक भाग के न होने पर संभव है; इस प्रकार, विनाश आसान है।

इसका कारण यह है कि नपुंसक व्यक्ति कभी भी कुछ सकारात्मक या रचनात्मक करने या उत्पन्न करने के लिए इच्छुक नहीं होता है जो उसकी शक्ति और क्षमता को दर्शाए; वह नकारात्मक रूप से कार्य करता है, और हमेशा विनाशकारी होता है।

बल का प्रयोग उचित होगा

यदि बुद्धि के सिद्धांत, राज्य के कानून, अधिकार के उपदेश और बल के नियम एक दूसरे की सहायता या समर्थन नहीं करते हैं, तो वे लोगों के बीच न तो फलदायी होंगे और न ही प्रभावी होंगे।

शरीयत के चिह्न या सार्वजनिक प्रतीक उपेक्षित हो जाएंगे और स्थगित हो जाएंगे।

वे अब लोगों के लिए उनके मामलों में समर्थन का बिंदु नहीं रहेंगे,
और लोगों को अब उन पर भरोसा या भरोसा नहीं रहेगा।

कभी-कभी विपरीतों में भी विपरीत होते हैं

कभी-कभी विपरीत अपने भीतर विपरीत को छिपा लेते हैं। राजनीति की भाषा में शब्द अपने अर्थ के विपरीत होते हैं।

अत्याचार ने न्याय की टोपी पहन ली है। विश्वासघात ने देशभक्ति का सस्ता चोला पहन लिया है। जिहाद और ईश्वर के लिए युद्ध को आक्रामकता और मानवाधिकारों का उल्लंघन करार दिया गया है। पशुवत वासनाओं की गुलामी और शैतान की निरंकुशता को स्वतंत्रता कहा गया है।

चीज़ें एक दूसरे के विपरीत हो गयी हैं, रूप बदल गये हैं,
नाम बदल दिए गए हैं, पद और रैंक बदल गए हैं।

स्वार्थ पर आधारित राजनीति पाशविक है

वर्तमान की राजनीति, जो स्वार्थ पर आधारित है, एक लालची जानवर है।

यदि आप किसी हिंसक पशु से प्रेम करेंगे तो आप उसकी दया को आकर्षित नहीं कर सकेंगे, बल्कि उसकी भूख को बढ़ा देंगे।

फिर वह आप पर आक्रमण कर देगा और अपने पंजों और दांतों के इस्तेमाल के लिए आपसे पैसे मांगेगा।

चूँकि मानव क्षमताओं पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया है
सृष्टि, उनके अपराध महान हैं

पशुओं के विपरीत, सृष्टि में मनुष्य की क्षमताओं पर प्रतिबंध नहीं लगाया गया है; उनसे उत्पन्न होने वाली अच्छाई और बुराई की कोई सीमा नहीं है।

एक शक्ति से उत्पन्न स्वार्थ और दूसरी शक्ति से उत्पन्न अहंकार यदि अहंकार और हठ दोनों को मिला दिया जाए तो ऐसे पाप हो जाएंगे जिनका अभी तक कोई नाम नहीं मिल पाया है।

चूँकि ये पाप नरक की अनिवार्यता के प्रमाण हैं, इसलिए इनकी सजा भी नरक ही हो सकती है।

उदाहरण के लिए, अपने एक झूठ को सही साबित करने के लिए एक आदमी चाहता है कि,
उनके दिल में इस्लाम का पतन था।

वर्तमान समय ने दिखा दिया है कि नरक अनावश्यक नहीं है और स्वर्ग सस्ता नहीं है।

कभी-कभी अच्छाई बुराई की ओर ले जाती है

जबकि वास्तविकता में अभिजात वर्ग के गुणों से उनमें विनम्रता और आत्म-विनम्रता पैदा होनी चाहिए, दुर्भाग्य से वे अहंकार और उत्पीड़न को जन्म दे रहे हैं।

और जबकि गरीबों की विपन्नता और आम लोगों की गरीबी (जैसा कि वे वास्तव में करते हैं) उनके प्रति दया और अनुग्रह जगाने के साधन के रूप में काम करना चाहिए, दुर्भाग्य से अब वे आम लोगों के अपमान और दासता का कारण बन गए हैं।

यदि किसी चीज से सम्मान और पुण्य प्राप्त होता है, तो उसे कुलीन वर्ग और नेताओं को दिया जाता है, लेकिन यदि उससे बुराई और बुराइयां उत्पन्न होती हैं, तो उसे आम लोगों या कर्मचारियों और सेवकों में बांट दिया जाता है।

अगर किसी विजयी कबीले को कोई सम्मान मिलता है तो उसके हसन आगा (मुखिया) को बधाई दी जाती है; लेकिन अगर उसके बाद कोई नुकसान होता है तो कबीले के सदस्यों पर हर तरह की लानत बरसाई जाती है। यह मानव जाति में एक दुखद बुराई है!

उद्देश्य का अभाव अहंकार को मजबूत करता है

यदि लोगों के पास कोई लक्ष्य नहीं है, या यदि मुख्य उद्देश्य को भुला दिया गया है या उपेक्षित किया गया है, तो मन व्यक्तिगत अहंकार की ओर मुड़ जाता है और उसके इर्द-गिर्द घूमने लगता है।

इस प्रकार अहंकार फूल जाता है, कभी-कभी क्रोध से फूल जाता है; इसे “छेदा” या पिचकाया नहीं जाता ताकि यह “हम” बन जाए। जो लोग खुद से प्यार करते हैं वे किसी और से प्यार नहीं करते।

क्रांतियों का एक जीवन मृत्यु से उभरा है

ज़कात और सूदखोरी की ज़िंदगी

सभी क्रांतियों, सभी अराजकता और भ्रष्टाचार का मूल, सभी बुराइयों, दुर्गुणों और भ्रष्ट गुणों का मूल और स्रोत, दो छोटे वाक्यांशों में अभिव्यक्त किया जा सकता है: पहला है: "मैं भरा हुआ हूं, इसलिए यदि अन्य लोग भूख से मरते हैं तो मुझे क्या लेना-देना है?"

और दूसरा: "तुम कष्ट सहते हो ताकि मैं आराम से रह सकूँ। तुम काम करते हो ताकि मैं खा सकूँ। भोजन मेरे लिए है, श्रम करना तुम्हारे लिए है।"

पहले शब्द के घातक जहर का एक ही इलाज है, जो है
इसे जड़ से खत्म कर देंगे और स्थिति को ठीक कर देंगे:

यह ज़कात है जिसे शरीयत द्वारा स्थापित किया गया है, जो इस्लाम का एक स्तंभ है।
दूसरे शब्द में ज़क़्कुम का वृक्ष है , जिसे सूद और ब्याज का निषेध ही उखाड़ देगा।

यदि मानव जाति मोक्ष चाहती है और अपने जीवन से प्यार करती है, तो उसे ज़कात अवश्य लागू करनी चाहिए और सूदखोरी और ब्याज को ख़त्म किया जाएगा।

यदि मानव जाति जीवन को प्राथमिकता देती है, तो उसे हर प्रकार के सूदखोरी को समाप्त करना होगा

अभिजात वर्ग से लेकर आम लोगों तक फैले मानवीय संबंधों का बंधन टूट चुका है। इसलिए नीचे से (निचले सामाजिक तबके से) क्रांति की चीखें, बदला लेने की चीखें, शिकायत और ईर्ष्या की चीखें उठती हैं।

ऊपर से अत्याचार और तिरस्कार की आग, अहंकार की गड़गड़ाहट और उत्पीड़न की बिजलियाँ उतरती हैं।

नीचे से प्रेम, सम्मान और सद्भाव उत्पन्न होना चाहिए। और ऊपर से करुणा और सहायता, दया और विचारशीलता उतरनी चाहिए।

यदि मानव जाति ये सब चाहती है तो उसे ज़कात पर दृढ़ रहना चाहिए तथा सूद और ब्याज का परित्याग कर देना चाहिए।

कुरान का न्याय दुनिया के दरवाजे पर खड़ा है और सूदखोरों और ब्याज से कह रहा है: "प्रवेश वर्जित है! तुम्हें प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है!" उन्हें इस दरवाजे से पीछे हट जाना चाहिए और दुनिया से गायब हो जाना चाहिए।

---

[18] ज़क़्कुम एक बहुत ही कड़वा और कांटेदार पेड़ है जो जहन्नम की तलहटी में उगता है; जहन्नम के लोग इसे खाएंगे। (ट्र.)

मानवजाति ने इस आदेश पर ध्यान नहीं दिया और इस प्रकार उसे एक गंभीर आघात मिला है; लोगों को एक और अधिक गंभीर आघात सहने से पहले अब इस आह्वान पर ध्यान देना चाहिए।

मानव जाति ने गुलामी को नष्ट कर दिया है; यह मजदूरी कमाने को भी नष्ट कर देगा

एक सपने में मैंने कहा था कि राष्ट्रों और राज्यों के बीच कम गंभीर युद्ध, सामाजिक वर्गों के बीच भीषण युद्धों का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

क्योंकि पिछले युगों में मानवजाति ने गुलामी को स्वीकार नहीं किया और उसे अपने खून से कुचल दिया। अब वह मजदूरी करने वाला बन गया है; इस समय मानवता इस बोझ को सह रही है, लेकिन इसे भी कुचल दिया जाएगा।

मानवजाति (सामाजिक प्रगति के) चार चरणों से गुजरकर बूढ़ी हो गई है: बर्बरता, खानाबदोशता, गुलामी और उपनिवेशवाद; अब हम पांचवें युग में हैं, जो मजदूरी का युग है, लेकिन यह भी बीत रहा है।

एक गैरकानूनी तरीका उस चीज़ के विपरीत ले जाता है जिसका इरादा था

हत्यारा (जिसकी उसने हत्या की है) उससे कोई विरासत नहीं प्राप्त कर सकता; यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है: "जो कोई भी व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए (इस्लाम में) अवैध तरीके का अनुसरण करता है, वह आमतौर पर बदले में जो चाहता है उसके विपरीत परिणाम प्राप्त करता है।"

(दूसरे) यूरोप का प्यार शरिया के अनुसार वैध प्यार नहीं है; यह एक अंधा अनुकरण और अप्रिय मित्रता है। इसका परिणाम और प्रतिफल प्रेमी की अत्याचारी शत्रुता और उसके अपराध हैं।

पापी को हानि की सजा दी जाती है, अंत में उसे न तो कोई खुशी मिलेगी, न ही कोई सुख।
न ही मोक्ष.

जबरिया और मुताज़िला दोनों में सच्चाई का एक दाना है

ऐ सत्य के खोजी! शरिया के दृष्टिकोण और विचार में अतीत और विपत्तियाँ, और भविष्य और पाप एक समान नहीं हैं।

अतीत और विपत्तियों को ईश्वरीय भाग्य के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है; इसके लिए उपयुक्त शब्द जाबिरया का है, (जो हर घटना को भाग्य से जोड़ते हैं)।

भविष्य और पापों के बारे में मानवीय जवाबदेही को ध्यान में रखा जाता है; इसके लिए, मुताज़िला का शब्द उपयुक्त है, (जो मानवीय कार्यों में भाग्य की भूमिका से इनकार करते हैं)। यहाँ मुताज़िला और जबरिया का मेल हो गया है।

इन दोनों झूठे स्कूलों में सच्चाई का एक अंश है। प्रत्येक की एक विशेष परिस्थिति होती है; झूठ उस सामान्यीकरण से उत्पन्न होता है जो किसी विशेष परिस्थिति से परे होता है।

केवल असमर्थ लोग ही नपुंसकता और शिकायतों में सांत्वना तलाशते हैं

यदि तुम जीवन चाहते हो, तो उन चीजों के लिए नपुंसकता से मत चिपके रहो जिनका कोई समाधान नहीं है;

यदि आप मन की शांति चाहते हैं, तो उन चीजों के बारे में अफसोसजनक शिकायत न करें जिनका कोई समाधान नहीं है।

यदि रस्सी पर खड़ा व्यक्ति ज़मीन पर खड़े व्यक्ति से लड़ता है, तो रस्सी पर खड़ा व्यक्ति हार जाएगा।

इस्लाम के खिलाफ युद्ध करने वाले काफिरों के साथ अपमानित लोगों के लिए विनम्र शांति से रहना उचित है। शारीरिक घाव तो भर जाते हैं, लेकिन इस्लाम की गरिमा और राष्ट्रीय सम्मान पर लगे घाव गहरे हैं।

यदि रस्सी पर संतुलन बनाता हुआ कोई कलाबाज जमीन पर खड़े किसी व्यक्ति से लड़ने की पेशकश करता है, तो वह लड़ने से इंकार नहीं करेगा, क्योंकि कलाबाज का जीवन और उसका अद्भुत कौशल उसके संतुलन पर निर्भर करता है।

एक बार जब वह अपना संतुलन खो देगा, तो देखिए क्या होगा! ज़मीन पर पड़ा हुआ व्यक्ति, किसी भी कौशल से रहित, केवल बैठ सकता है या खड़ा हो सकता है।

एक अस्पष्ट प्रस्ताव सार्वभौमिक नहीं हो सकता

कुरान और हदीस के स्पष्ट कथनों के बीच एक बिना शर्त प्रस्ताव को कभी-कभी सार्वभौमिक प्रस्ताव के रूप में लिया जाता है।

अंततः वह समय आता है जब इसे स्थायी नियम मान लिया जाता है। एक व्यक्ति में एक बार भी इसका एहसास होना ही सत्य होने के लिए पर्याप्त है।

उदाहरण के लिए, कहा जाता है, “एक घंटे की पहरेदारी एक साल की पूजा के बराबर है।”
एस्कीशेहर और इनोनु19 मोर्चों ने इसकी सच्चाई साबित कर दी है।

कुरान में कहा गया है कि जो व्यक्ति किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या करता है, वह पूरी मानव जाति की हत्या करने के बराबर माना जाता है।20

---

[19] एस्कीशेहिर और इनोनू वे मोर्चे थे जहां तुर्की सेना ने तुर्की स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आक्रमणकारी यूनानी सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। (ट्र.)

२० लेखक इस आयत का हवाला दे रहा है: ...जो कोई किसी आत्मा को मारता है, जब तक कि वह हत्या के लिए या पृथ्वी पर अव्यवस्था और भ्रष्टाचार फैलाने के लिए (कानूनी सजा में) न हो, ऐसा होगा जैसे उसने सभी मनुष्यों को मार डाला हो-

एक समय ऐसा आता है जब एक शब्द ही सेना की पराजय का कारण बन जाता है।
एक गोली से तीन करोड़ लोग मारे गये।[21]

कभी-कभी छोटी-छोटी चीजें बड़े परिणाम देती हैं

कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती हैं जिनमें एक छोटा सा कार्य करने वाले को सर्वोच्च पद पर पहुंचा देता है;

फिर ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं, जहाँ एक छोटा-सा कार्य उसके कर्ता को सबसे निम्नतम स्तर पर पहुंचा देता है...

कुछ लोगों के लिए एक पल एक साल के बराबर होता है

कुछ जन्मजात क्षमताएँ तुरन्त विकसित हो जाती हैं, जबकि कुछ धीरे-धीरे विकसित होती हैं, धीरे-धीरे विकसित होती हैं। मानव स्वभाव में ये दोनों ही गुण मौजूद हैं।

वे परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं, और उसके अनुसार बदलते हैं। कभी-कभी वे धीरे-धीरे विकसित होते हैं। कभी-कभी वे बारूद की तरह होते हैं - काले, अचानक धधकती आग में बदल जाते हैं।

कभी-कभी एक नज़र कोयले को हीरे में बदल देती है। कभी-कभी एक स्पर्श
पत्थर को अमृत में बदल सकते हैं.

पैगम्बर की एक नज़र ने एक अज्ञानी खानाबदोश को एक पल में ज्ञान के प्रबुद्ध व्यक्ति में बदल दिया।

यदि आप तुलना करना चाहते हैं तो: इस्लाम से पहले उमर और इस्लाम के बाद उमर।

दोनों की तुलना करें: एक बीज और एक पेड़। बीज ने तुरंत फल पैदा कर दिया। मुहम्मद की वह नज़र, पैगंबर की कृपा, उन पर शांति और आशीर्वाद हो,

अरब प्रायद्वीप में कोयले जैसी प्रकृति को अचानक हीरे में बदल दिया। उन्होंने बारूद की तरह काले चरित्रों को प्रबुद्ध किया; वे सभी चमकते हुए प्रकाश बन गए।

झूठ अविश्वास का शब्द है

सत्य का एक दाना लाखों झूठों को जला देता है। वास्तविकता का एक दाना सपनों के महल को नष्ट कर देता है। सत्यता एक सर्वोच्च सिद्धांत है, एक चमकता हुआ रत्न है।

यदि सत्य बोलने से हानि हो सकती हो तो मौन रहना उचित है; परन्तु ...
झूठ के लिए कभी कोई स्थान नहीं होता, भले ही ऐसा प्रतीत होता हो कि उसका कुछ उपयोग है।

मानवजाति के लिए; और जो एक जीवन बचाता है वह ऐसा होगा मानो उसने सभी मानवजाति के जीवन को बचाया है... (5:32)

[21] फुटनोट 9 देखें.

आप जो भी कहें वह सच होना चाहिए, आप जो भी निर्णय दें वह सही होना चाहिए, लेकिन आपको वह सब कहने का कोई अधिकार नहीं है जो सच है।

हमें इस बात से भली-भांति परिचित होना चाहिए, तथा इसे अपने सिद्धांत के रूप में अपना लेना चाहिए:
"जो स्पष्ट और सहज है उसे ग्रहण करो, जो अस्पष्ट और कष्टदायक है उसे त्याग दो।"

चीजों के अच्छे पक्ष को देखें, ताकि आपके विचार अच्छे हों।
चीजों को अच्छा जानिए और उनके बारे में अच्छा ही सोचिए, ताकि आपको जीवन में आनंद मिले।

जीवन में आशा और हर चीज के बारे में अच्छा सोचना ही जीवन है, जबकि निराशा और निराशा ही जीवन है।
दूसरों के बारे में बुरा सोचना खुशियों का नाश करने वाला और जीवन का हत्यारा है।

प्रतिनिधित्व या आदर्श रूपों की दुनिया में एक सभा में

शरिया और आधुनिक सभ्यता के बीच तुलना,
और वैज्ञानिक प्रतिभा और शरीयत के मार्गदर्शन के बीच

प्रथम विश्व युद्ध के बाद युद्ध विराम की अवधि की शुरुआत में शुक्रवार की रात को एक सच्चे सपने में, विश्व की एक सर्वोच्च सभा ने मुझसे पूछा
प्रतिनिधित्व और आदर्श रूप:

“हार के बाद मुस्लिम दुनिया में क्या उभर कर आएगा?”
वर्तमान युग के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने उत्तर दिया, और उन्होंने मेरी बात सुनी:

अपनी स्थापना के समय से ही इस राज्य ने इस्लामी दुनिया के लिए खुद को बलिदान करने के लिए अपने कर्तव्य को निभाया और इस्लामी क्रांति के ध्वजवाहक के रूप में कार्य किया।

खलीफा,

और तदनुसार उसने जिहाद नामक सामूहिक धार्मिक दायित्व को अपनाया,
इस्लामी स्वतंत्रता को बनाए रखना और ईश्वर के वचन का महिमामंडन करना।

समय के साथ इस राज्य, इस मुस्लिम राष्ट्र पर जो विपत्ति आई है,
इससे निश्चित रूप से मुस्लिम जगत में समृद्धि और स्वतंत्रता आएगी।

इस वर्तमान आपदा की भरपाई भविष्य में की जाएगी। जो व्यक्ति तीन खोता है और बदले में तीन सौ पाता है, उसे कोई नुकसान नहीं होता। एक उत्साही मजदूर की तरह, वे बेहतर भविष्य के लिए अपना वर्तमान बदल देते हैं।

इस आपदा ने हमारे जीवन में जो उत्प्रेरक या उत्प्रेरक है, उस करुणा और इस्लामी एकजुटता और भाईचारे को असाधारण स्तर तक जगा दिया है; इसने हमारे भाईचारे को अद्भुत प्रोत्साहन दिया है।

वर्तमान सभ्यता, जो वस्तुतः नीचता है, अपना रूप बदल लेगी, उसकी व्यवस्था नष्ट हो जाएगी; तब इस्लामी सभ्यता का उदय होगा। निश्चय ही मुसलमान ही उसमें स्वेच्छा से प्रवेश करने वाले प्रथम लोग होंगे।

यदि आप शरिया की सभ्यता और वर्तमान सभ्यता के बीच तुलना करना चाहते हैं, तो प्रत्येक के सिद्धांतों की बारीकी से जांच करें और उनके महत्व पर विचार करें।

नतीजे:

वर्तमान सभ्यता के सिद्धांत नकारात्मक हैं। इसकी नींव

और मूल्य पांच नकारात्मक सिद्धांत हैं। इसकी मशीनरी इन्हीं पर आधारित है।

इसका आधार और भरोसा अधिकार के बजाय शक्ति या बल है, और बल का मूल लक्षण आक्रामकता और शत्रुता है, जिससे विश्वासघात उत्पन्न होता है।

इसका लक्ष्य, सद्गुण के स्थान पर, स्वार्थ की तुष्टि है, जिसका अनिवार्य लक्षण संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता है, और जिसका परिणाम अपराध है।

इसके जीवन का नियम सहयोग और पारस्परिक सहायता के बजाय संघर्ष है; संघर्ष की आवश्यक विशेषता विवाद और पारस्परिक प्रतिकर्षण है; परिणाम गरीबी है।

लोगों के बीच इसका मूल बंधन नस्लवाद या नस्लीय भेदभाव है, जो दूसरों के नुकसान के लिए विकसित होता है; यह दूसरों के अधिकारों के हनन से पोषित और मजबूत होता है।

नकारात्मक राष्ट्रवाद या नस्लवाद निरंतर, भयानक झड़पों, विनाशकारी टकरावों का मार्ग प्रशस्त करता है; परिणाम विनाश होता है।

पांचवां यह है: वर्तमान सभ्यता की मोहक सेवा वासनाओं और भावनाओं को उत्तेजित करती है, जिससे पशुवत इच्छाओं की पूर्ति में सहायता मिलती है; परिणाम होता है भोग-विलास।

वासनाओं और भावनाओं की मूल विशेषता हमेशा यही होती है: वे मनुष्यों को पशु में बदल देती हैं, उनका चरित्र बदल देती हैं; वे उन्हें विकृत कर देती हैं, उनकी मानवता को विकृत कर देती हैं।

इनमें से ज़्यादातर सभ्य लोग - अगर आप उन्हें अंदर से बाहर कर दें - तो बंदर, लोमड़ी, साँप, भालू और सूअर जैसे दिखेंगे। उनके चरित्र ने उनके रूप तय कर लिए हैं। वे कल्पना में अपने फर और खाल में दिखाई देते हैं!

इसके विपरीत, शरिया, पृथ्वी का संतुलन है। शरिया में दया कुरान के स्वर्ग से आती है। कुरानिक सभ्यता के सिद्धांत सकारात्मक हैं। खुशी के लिए इसका तंत्र पाँच सकारात्मक सिद्धांतों पर निर्भर करता है:

इसका आधार और अवलंबन शक्ति के स्थान पर अधिकार है और अधिकार का अपरिवर्तनीय लक्षण न्याय और संतुलन है, जो दीनता और दुष्टता को दूर कर मोक्ष, सुरक्षा और कल्याण को जन्म देता है।

इसका उद्देश्य स्वार्थ के स्थान पर सद्गुण है और सद्गुण का मूल चरित्र स्वार्थ के स्थान पर सद्गुण है। प्रेम और परस्पर आकर्षण से सुख उत्पन्न होता है और शत्रुता मिट जाती है।

इसके जीवन का सिद्धांत संघर्ष और हत्या के बजाय सहयोग है, और सहयोग की आवश्यक विशेषता एकता और एकजुटता है; ये समुदाय को जीवंत करते हैं।

वासना और जुनून के स्थान पर, इसकी सेवा का रूप मार्गदर्शन है और मार्गदर्शन की आवश्यक विशेषता मानवता के लिए उपयुक्त तरीके से प्रगति और समृद्धि है, साथ ही आत्मा द्वारा अपेक्षित तरीके से ज्ञान और पूर्णता भी है।

जबकि नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद जनता के बीच एकता के बिंदु को नष्ट करते हैं, शरिया लोगों के बीच धर्म, नागरिकता, पेशे और विश्वास के भाईचारे के बंधन स्थापित करता है।

इन बंधनों की बुनियादी विशेषताएँ ईमानदारी से भाईचारा, और सामान्य मुक्ति, सुरक्षा और कल्याण हैं। शरिया केवल बाहरी हमलों के मामले में आत्मरक्षा की मांग करता है।

अब आप समझ गए होंगे कि मुसलमान वर्तमान सभ्यता को अपनाए बिना उससे दूर क्यों रहे।

आज तक मुसलमानों ने इस सभ्यता में स्वेच्छा से प्रवेश नहीं किया है, यह उन्हें पसन्द नहीं आई है, बल्कि उन पर दासता की बेड़ियाँ डाल दी गई हैं।

जबकि इसे मानवजाति के लिए इलाज होना चाहिए था, यह सभ्यता जहर बन गई है। इसने अस्सी प्रतिशत आबादी को अभाव और दुख में डाल दिया है और दस प्रतिशत को झूठी खुशी दी है।

शेष दस प्रतिशत लोग बेचैनी में रह गए हैं, दोनों के बीच फंसे हुए हैं। व्यापार से मिलने वाला लाभ अत्याचारी अल्पसंख्यकों के पास चला गया है। लेकिन सच्ची खुशी वह है जो सभी को मिले, या कम से कम बहुसंख्यकों के लिए मुक्ति। कुरान, जो मानव जाति के लिए दया के रूप में प्रकट हुआ है, केवल उस तरह की सभ्यता को स्वीकार करता है

इससे सभी को, या कम से कम बहुसंख्यकों को खुशी मिलती है। वर्तमान सभ्यता में, भावनाएं अप्रतिबंधित हैं, आवेग और कल्पनाएं भी स्वतंत्र हैं; यह एक पशु स्वतंत्रता है।

लोगों पर भावनाएं हावी रहती हैं, आवेग और कल्पनाएं भी निरंकुश होती हैं; वे
अनावश्यक आवश्यकताओं को आवश्यक बना दिया है, तथा सहजता और राहत को खत्म कर दिया है।

जबकि आदिम जीवन में व्यक्ति को चार चीजों की जरूरत होती थी, सभ्य जीवन-
इस विनाश ने उन्हें सौ करोड़ की दरिद्रता से वंचित कर दिया है।

वैध श्रम लागत को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है। इसने मानवता को प्रेरित किया है-
धोखाधड़ी और गैरकानूनी कामों के प्रति झुकाव। इसी वजह से सभ्यता ने नैतिकता के सार को भ्रष्ट कर दिया है।

इसने समाज और मानव जाति को कुछ धन और चमक दी है, लेकिन इसने व्यक्ति को अनैतिक और दरिद्र बना दिया है। इसके कई प्रमाण हैं।

प्राचीन काल की सारी बर्बरता और अपराध, सारी क्रूरता और विश्वासघात इस दुष्ट सभ्यता ने एक साथ उगल दिया है, और इसका पेट अभी भी उबकाई खा रहा है।22

यह तथ्य कि इस्लामी दुनिया अलग-थलग रहने में सक्षम है, दोनों का अर्थ है-
यह सभ्यता अत्यंत महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय है। यह सभ्यता स्वीकार करने में अनिच्छुक रही है, तथा इसने उदासीन रवैया अपनाया है।

सचमुच, प्रतिष्ठित शरीयत में ईश्वरीय प्रकाश का विशिष्ट गुण स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता है।

इसी गुण के कारण मार्गदर्शन का प्रकाश हमें कभी नहीं आने देता
रोम की प्रतिभा, (यूरोपीय) सभ्यता की भावना, उस पर हावी होने के लिए।

शरीयत के मार्गदर्शन को दर्शन के साथ नहीं जोड़ा जा सकता
न तो इस पर कलम लगाओ, न ही इसका अनुसरण करो।

इस्लाम की आत्मा में जो करुणा और आस्था की गरिमा पाई जाती है, तथा शरीयत की जिन सच्चाइयों को इसने पोषित किया है - चमत्कारिक व्याख्या के कुरान ने शरीयत की सच्चाइयों को अपने चमकते हाथ में ले लिया है; शरीयत की ये प्रत्येक सच्चाई उस चमकते हाथ में मूसा की एक छड़ी है। भविष्य में वह जादूगर सभ्यता उसके सामने आश्चर्य से झुक जाएगी।

अब, इस पर ध्यान दें: दो प्रतिभाशाली लोग थे - प्राचीन ग्रीस और रोम, एक ही वंश के जुड़वां बच्चे। एक कल्पनाशील था, दूसरा भौतिकवादी।

पानी और तेल की तरह, वे कभी एक साथ नहीं मिल सकते। ऐसी घटना के लिए समय की आवश्यकता थी, सभ्यता ने ऐसा करने का प्रयास किया और ईसाई धर्म ने भी कोशिश की, लेकिन कोई भी उन्हें एक साथ नहीं मिला सका।

---

22 यानी सभ्यता और भी भयानक उल्टी करेगी। इसने दो विश्व युद्धों के रूप में इस तरह उल्टी की है कि इसने हवा, जमीन और समुद्र को गंदा कर दिया है, उन्हें खून से रंग दिया है।

दोनों ने अपनी आंशिक स्वतंत्रता को बचाए रखा। वे एक ही शरीर में दो आत्माएँ बनकर रह गए हैं; अब उन्होंने अपना शरीर बदल लिया है; एक जर्मन बन गया है, दूसरा फ्रांसीसी।

उन्हें एक प्रकार का पुनर्जन्म अनुभव हुआ है। हे मेरे स्वप्न-भाई!
समय ने यही दिखाया है। उन जुड़वां प्रतिभाओं ने उन्हें एक साथ लाने के किसी भी कदम को अस्वीकार कर दिया है;

वे अभी भी मेल-मिलाप नहीं कर पाए हैं। चूँकि वे जुड़वाँ हैं, वे भाई और दोस्त हैं, प्रगति में साथी हैं; लेकिन वे लड़े हैं और कभी एक-दूसरे के साथ नहीं बने हैं
शांति।

तो फिर यह कैसे हो सकता है कि कुरान की रोशनी और शरीयत का मार्गदर्शन, जबकि उसका स्रोत, उत्पत्ति और प्रकट होने का स्थान बिल्कुल अलग है, रोम की प्रतिभा और आधुनिक सभ्यता की भावना के साथ सामंजस्य स्थापित कर ले और उसके साथ जुड़ जाए?

वह प्रतिभा और यह मार्गदर्शन - उनकी उत्पत्ति अलग-अलग है: मार्गदर्शन स्वर्ग से उतरता है, प्रतिभा धरती से उभरती है। मार्गदर्शन दिल में काम करता है और प्रतिभा दिमाग में काम करती है।

प्रतिभा मन में काम करती है और दिल को भ्रमित करती है।
आत्मा को जन्म देती है, उसके बीजों को अंकुरित करती है और फलती-फूलती है; अंधकारमय मानव स्वभाव इससे प्रकाशित होता है।

पूर्णता के लिए मार्गदर्शन की क्षमता अचानक बढ़ जाती है; यह शारीरिक आत्मा को एक विनम्र सेवक बना देती है; यह उत्साही और प्रयासशील मनुष्यों को एक दिव्य चेहरा प्रदान करती है।

जहाँ तक प्रतिभा का प्रश्न है, यह अपना ध्यान मुख्यतः शारीरिक आत्मा और भौतिक अस्तित्व पर केन्द्रित करती है; यह प्रकृति में आती है, आत्मा को कृषि योग्य क्षेत्र बनाती है और शारीरिक क्षमताएँ विकसित और फलती-फूलती हैं;

यह आत्मा को वश में कर लेता है, जिससे बीज सूख जाते हैं; यह मानवजाति में शैतानी विशेषताएं प्रदर्शित करता है। लेकिन मार्गदर्शन दोनों जीवनों को खुशी देता है - इस और अगले - और इस दुनिया और अगले दोनों में प्रकाश फैलाता है, मानवजाति को ऊपर उठाता है।

प्रतिभावान व्यक्ति, एक आँख से अंधे मसीह विरोधी की तरह, केवल इसी जीवन और इसी को देखता है।
यह भौतिकवादी और संसार-प्रेमी है। यह मनुष्य को पशु बना देता है।

प्रतिभा बहरी प्रकृति की पूजा करती है और अंधी शक्ति की सेवा करती है। लेकिन मार्गदर्शन सचेत कला (प्रकृति के रूप में प्रकट) को पहचानता है और बुद्धिमान शक्ति (जो प्रकृति को अस्तित्व प्रदान करती है) की ओर मुड़ता है। प्रतिभा पृथ्वी पर कृतघ्नता का पर्दा खींचती है जबकि मार्गदर्शन धन्यवाद का प्रकाश बिखेरता है।

इसी कारण से प्रतिभा बहरी और अंधी होती है, जबकि मार्गदर्शन सुनना और देखना होता है। प्रतिभा के दृष्टिकोण से, पृथ्वी की देन स्वामित्वहीन लूट है;

यह उन्हें हड़पने और चुराने की इच्छा को बढ़ावा देता है, बिना किसी आभार के, क्रूरतापूर्वक उन्हें प्रकृति से दूर कर दें।

मार्गदर्शन की दृष्टि से धरती के सीने और ब्रह्माण्ड के चेहरे पर फैली हुई नेमतें दया के फल हैं; वह प्रत्येक नेमत के नीचे एक कृपालु हाथ को देखती है, और कृतज्ञतापूर्वक उसे चूम लेती है।

मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि सभ्यता में अनेक सद्गुण हैं, लेकिन वे ये न तो ईसाई धर्म की संपत्ति हैं, न ही यूरोप की खोज।

न ही वे इस शताब्दी की उपज हैं; वे मानवता की सामान्य संपत्ति हैं, जो समय के साथ विचारों और अध्ययनों के संयोजन के परिणामस्वरूप, प्रकट धर्मों के नियमों से उत्पन्न हुई हैं, और जन्मजात आवश्यकता से उभरती हैं,

और विशेष रूप से इस्लामी क्रांति से मुहम्मद की शरिया। कोई भी इन पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकता।

प्रतिनिधित्व जगत से सभा के नेता ने एक और प्रश्न पूछा:

प्रश्न: "विपत्तियाँ हमेशा विश्वासघात का परिणाम होती हैं, लेकिन पुरस्कार का मार्ग प्रशस्त करती हैं। हे वर्तमान शताब्दी के मनुष्य! ईश्वरीय नियति ने आघात पहुँचाया है और ईश्वरीय आदेश ने सजा सुनाई है।

"तुमने ऐसा क्या किया कि ईश्वरीय आदेश और नियति दोनों ने तुम्हारा ऐसा न्याय किया - कि ईश्वरीय आदेश ने तुम्हें इस विपत्ति की सजा सुनाई और तुम्हें पीटा?

“यह सदैव बहुमत की गलती होती है जो सामान्य आपदाओं का कारण बनती है।”

मैंने जवाब में कहा:

उत्तर: मानव जाति की गलत सोच, निम्रोद जैसी हठधर्मिता, फिरौन जैसी अहंकारिता धरती पर बढ़ती गई और तब तक बढ़ती गई जब तक कि वे स्वर्ग तक नहीं पहुंच गए। मानवता ने सृष्टि के संवेदनशील रहस्य का भी अपमान किया।

इससे पिछले युद्ध की सिहरनें आसमान से बरसने लगीं, जैसे महामारी और जल प्रलय; इसने काफिरों पर स्वर्गीय प्रहार किया।

इसका मतलब यह है कि यह आपदा पूरी मानव जाति की आपदा थी। इसका सामान्य कारण, जिसमें पूरी मानव जाति शामिल थी, भौतिकवाद से उत्पन्न गलत सोच थी - पाशविक स्वतंत्रता, शारीरिक इच्छाओं और कल्पनाओं की निरंकुशता।

इसमें हमारा हिस्सा इस्लाम के स्तंभों की उपेक्षा और उनके परित्याग का परिणाम है। क्योंकि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को एक घंटा चाहिए था।

चौबीस.

उसने हमें आदेश दिया, इच्छा व्यक्त की कि हम अपने भले के लिए पाँचों दैनिक प्रार्थनाओं के लिए एक घंटा निर्धारित करें। लेकिन आलस्य के कारण हमने उन्हें छोड़ दिया, लापरवाही में उनकी उपेक्षा की।

अतः हमें निम्नलिखित दण्ड मिला: उसने हमें इन पिछले पांच वर्षों के दौरान एक प्रकार की प्रार्थना करने के लिए बाध्य किया, जिसमें हमें लगातार चौबीस घंटे अभ्यास और कठिनाई के माध्यम से आगे बढ़ना और प्रयास करना पड़ता था।

उन्होंने हमसे साल में एक महीने उपवास करने की भी मांग की, लेकिन हमें दया आ गई।
हमारी शारीरिक आत्माएं, इसलिए प्रायश्चित के लिए उसने हमें पांच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया।

वह चाहता था कि जो संपत्ति उसने हमें दी है, उसका हम चालीसवाँ या दसवाँ हिस्सा ज़कात के रूप में अदा करें। किन्तु हमने कंजूसी के कारण अन्याय किया, हमने अपनी संपत्ति में हराम को भी मिला दिया और स्वेच्छा से ज़कात नहीं दी।

फिर उसने हमारी जमा की हुई ज़कात हमसे ले ली और जो कुछ हमारे माल में हराम था उससे हमें बचा लिया। और जो काम करता है, वह अपने-अपने ढंग से सज़ा देता है। और सज़ा भी उसी तरह की होती है, जैसा काम करता है।23

अच्छे, नेक काम दो तरह के होते हैं: एक सकारात्मक और स्वैच्छिक, दूसरा नकारात्मक और मजबूरी में किया गया। सभी दुख और विपत्तियाँ अच्छे कर्म हैं, लेकिन वे नकारात्मक और मजबूरी में किए गए हैं। हदीस जो हमें इस बारे में बताती है24 सांत्वना देती है।

---

23 मैंने स्वप्न में हज का उल्लेख नहीं किया , क्योंकि हज और उसकी बुद्धि की उपेक्षा करने से विपत्ति नहीं, बल्कि ईश्वरीय प्रकोप हुआ, और उसका दण्ड हमारे पापों का प्रायश्चित नहीं, बल्कि हमारे पापों में वृद्धि थी। यह उस उच्च इस्लामी नीति की उपेक्षा थी, जो हज में विद्यमान है और जो पारस्परिक परिचय के माध्यम से विचारों की एकता और पारस्परिक सहायता के माध्यम से सहयोग लाती है, और यह हज में निहित विशाल सामाजिक लाभों की उपेक्षा थी , जिसने दुश्मन के लिए इस्लाम के विरुद्ध लाखों मुसलमानों को नियोजित करने का आधार तैयार किया है। वे भारतीय मुसलमान थे! यह समझकर कि वह उनका दुश्मन है, उन्होंने अपने पिता (ओटोमन राज्य) को मार डाला, और अब वे उसकी लाश के पास रो रहे हैं। तातार और कोकेशियाई लोग हैं! वे समझ गए कि जिसकी हत्या में उन्होंने दुश्मन के साथ सहयोग किया है, वह उनकी बेचारी माँ है, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी! वे उसके चरणों में रो रहे हैं। ये अरब हैं! उन्होंने भूल से अपने वीर भाई को मार डाला, और अब अपनी घबराहट में वे रोना भी नहीं जानते। ये अफ़्रीकी हैं!

उन्होंने अनजाने में अपने भाई को मार डाला, अब वे विलाप कर रहे हैं। यह मुस्लिम दुनिया है, इसने अपने ध्वजवाहक बेटे को मारने में दुश्मन की मदद की, अब यह अपने बाल नोच रहा है, कराह रहा है और विलाप कर रहा है। हज के लिए उत्सुकता से जल्दी जाने के बजाय, जो शुद्ध अच्छाई है, लाखों मुसलमानों को दुश्मन के झंडे के नीचे लंबी यात्राएं करने के लिए मजबूर किया गया है, जो शुद्ध बुराई है। इस पर विचार करें और सावधान रहें!

२४ मानवजाति का अभिमान कहता है: "एक विश्वासी जिस भी परिस्थिति में हो, वह उसके भले के लिए है।
यह बात विश्वासियों के अलावा किसी और के लिए सही नहीं है। क्योंकि अगर उसके साथ कोई खुशी की बात घटित होती है, तो वह

इस पापी राष्ट्र ने रक्त से स्नान किया है; इसने कर्मों से पश्चाताप किया है। तत्काल पुरस्कार के रूप में, इस राष्ट्र के पाँचवें हिस्से यानी चार मिलियन लोगों को शहादत या ईश्वर के लिए युद्ध करने के माध्यम से संत की उपाधि दी गई; इससे उनका पाप मिट गया।

प्रतिनिधित्व की दुनिया से उन्नत विधानसभा की सराहना की
इन शब्दों।

मैं अचानक जाग गया; बल्कि यह सोने से पहले सच्ची जागृति की एक मुलाकात थी। मेरे विचार में, जागना एक सपना है और सपना एक तरह की जागृति है।

वहाँ मैं इस युग का प्रतिनिधि था, और यहाँ मैं हूँ सईद नूरसी!

जंग लगे मार्गदर्शन भी हीरा है

इस्लाम का मार्गदर्शन जंग खा चुका है, जबकि वर्तमान सभ्यता की प्रतिभा इच्छाओं और भावनाओं से चमक उठी है।

चाहे किसी बेजोड़ हीरे में जंग लग जाए, वह हमेशा सोने के पानी से मढ़े कांच के टुकड़े से बेहतर होता है। उस हीरे पर कोई दिव्य शिलालेख खुदा हुआ है; भौतिकवादियों की आंखें उस बेजोड़ शिलालेख को न तो देख पाती हैं, न ही उसे पढ़ पाती हैं।

भौतिकवादी सब कुछ पदार्थ में खोजते हैं; उनकी बुद्धि उनकी आँखों में है,
वे आध्यात्मिक चीज़ों के प्रति अंधे हैं, क्योंकि शारीरिक आँखें उसके प्रति अंधी हैं।

अज्ञानता एक तथ्य के लिए एक रूपक लेती है

यदि कोई रूपक ज्ञान के हाथ से अज्ञान के हाथ में चला जाए, तो वह तथ्य में परिवर्तित हो जाता है, और अंधविश्वास का द्वार खोल देता है।

बचपन में मैंने चंद्रग्रहण देखा था। मैंने अपनी माँ से पूछा, तो उन्होंने कहा: “इसे साँप ने निगल लिया है।” मैंने उनसे पूछा: “फिर यह क्यों दिखाई दे रहा है?” उन्होंने कहा: “वहाँ साँप अर्ध-पारदर्शी हैं।”

इस तरह के रूपक को वास्तविकता के रूप में देखा जाता है: दैवीय आदेश पर, जब पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य की कक्षाओं के प्रतिच्छेद बिंदुओं, जिन्हें "सिर" और "पूंछ" के रूप में जाना जाता है, के बीच में आ जाती है, तो चंद्रमा ग्रहण हो जाता है।

अल्लाह का शुक्रिया अदा करता है और यह उसके लिए अच्छा है। अगर कोई तकलीफ़ उसे छूती है, तो वह धैर्य रखता है और यह भी उसके लिए अच्छा है। (मुस्लिम, "ज़ुहद" 64; अद-दारिमी, "रिक़क" 61.) (ट्र.)

दो काल्पनिक चाप जो दो साँपों के समान बनते हैं, उन्हें “तिन्निनयन (दो साँप)” कहा जाता है। यह नाम एक खगोलीय घटना को आलंकारिक रूप से समझाने के लिए गढ़ा गया था और इसे वास्तव में वही माना जाने लगा जिससे इसकी तुलना की गई थी।

अतिशयोक्ति निहित अपमान है

आप जो भी वर्णन करें, उसे वैसे ही वर्णित करें जैसा वह वास्तव में है। मेरे विचार में, अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा निहित निंदा है।

किसी व्यक्ति या वस्तु को उसकी वास्तविक क्षमता से अधिक देखना और दिखाना
परमेश्वर ने जो उन पर अनुग्रह किया है, वह वस्तुतः उन पर कोई उपकार नहीं है।

प्रसिद्धि दमनकारी है

प्रसिद्धि एक निरंकुशता है; यह दूसरों की संपत्ति को प्रसिद्ध लोगों पर थोप देती है।

प्रसिद्ध नसरुद्दीन होजा25 को दी गई विनोदप्रियता में से केवल उसकी
ज़कात, यानी चालीसवाँ या अधिक से अधिक दसवाँ हिस्सा, उसका हो सकता है।

रुस्तम-ए-सिस्तानी की काल्पनिक प्रसिद्धि ने ईरान के गौरव के एक युग को लूट लिया।

उनकी पौराणिक छवि ने दूसरों की वीरता को लूटा, तथा उसे अंधविश्वास के साथ जोड़ दिया गया, जिससे रुस्तम-ए-सिस्तानी मानवता की सीमाओं से परे चला गया।

जो लोग धर्म और जीवन को अलग-अलग मानते हैं, वे ही विनाश के कारण हैं

युवा तुर्कों की गलती यह थी कि वे यह नहीं जानते थे कि हमारा धर्म हमारे जीवन का आधार है; वे समझते थे कि राष्ट्र और इस्लाम एक दूसरे से भिन्न हैं।

उन्होंने कल्पना की थी कि वर्तमान सभ्यता कायम रहेगी और हावी रहेगी,
और जीवन की खुशी और समृद्धि को इसके भीतर निहित देखा।

---

25 मोल्ला नसरुद्दीन या नसरुद्दीन होजा तेरहवीं शताब्दी के एक मुस्लिम व्यक्ति थे, जो अपनी बुद्धिमत्ता, महान बुद्धिमता, मजेदार कहानियों और उपाख्यानों के लिए प्रसिद्ध और याद किए जाते थे। (अनुवाद)

26 यंग तुर्क आधुनिक पश्चिमी विचारधारा के पक्षपाती थे और ओटोमन प्रशासन के खिलाफ थे। उन्होंने विशेष रूप से सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय की सरकार के खिलाफ संघर्ष किया। (ट्र.)

अब समय ने हमें दिखा दिया है कि सभ्यता की प्रणाली भ्रष्ट और हानिकारक है27; स्पष्ट अनुभव ने हमें यह सिखाया है:

धर्म ही जीवन का प्राण है, उसका प्रकाश है, उसका आधार है। इस राष्ट्र का पुनरुत्थान धर्म के पुनरुत्थान से ही संभव है।

मुसलमान इसे समझ चुके हैं।

अन्य संस्कृतियों के विपरीत, हमारा राष्ट्र उस सीमा तक प्रगति करने में सक्षम है जिस सीमा तक हम अपने धर्म का पालन करते हैं। यह उस सीमा तक पतन की ओर अग्रसर है जिस सीमा तक हमने इसकी उपेक्षा की है।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है, जिसे हम भूलने का नाटक कर रहे हैं।

मृत्यु उतनी भयानक नहीं जितनी कल्पना की जाती है

यह एक गलत, गुमराह करने वाली धारणा है जो मौत को भयावह बनाती है। मौत कपड़ों का बदलाव है, या स्थानों का बदलाव है। यह कालकोठरी से बगीचे तक ले जाती है।

जो कोई जीवन चाहता है, उसे शहादत की इच्छा करनी चाहिए। कुरान हमें बताता है कि शहीद जीवित हैं। शहीद, जो मृत्यु की पीड़ा का अनुभव नहीं करते, वे स्वयं को जीवित जानते और देखते हैं।28

लेकिन उन्हें अपना नया जीवन ज़्यादा पवित्र लगता है। उन्हें नहीं लगता कि वे मर गए हैं। उनके और मृतकों के बीच अंतर को ध्यान से देखें; यह इस प्रकार है: एक सपने में दो व्यक्ति एक सुंदर बगीचे में घूम रहे हैं जहाँ हर तरह का आनंद है। एक व्यक्ति जानता है कि यह केवल एक सपना है और

इससे उसे कोई आनंद नहीं मिलता।

इससे उसे कोई संतुष्टि नहीं मिलती; बल्कि यह उसे पछतावे से भर देता है। हालाँकि, दूसरा व्यक्ति जानता है कि वे जाग रहे हैं, और सच्ची खुशी का अनुभव करते हैं; यह उनके लिए वास्तविक है।

---

27 यह दमनकारी, धर्म-विरोधी सभ्यता को संदर्भित करता है, जो अपने पतन की ओर बढ़ रही है।

28 क़ुरआन कहता है: और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए उनके विषय में यह न कहो कि वे मर गए।

बल्कि वे जीवित हैं, किन्तु तुम नहीं जानते (2:154)। जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गए, उन्हें मुर्दा न समझो। बल्कि वे जीवित हैं, अपने रब के पास उनका रोज़ी है। वे उस पर प्रसन्न हैं, जो अल्लाह ने उन्हें अपने अनुग्रह से प्रदान किया है। और उन लोगों के लिए शुभ सूचना पर प्रसन्न हैं, जो अभी तक उनके साथ नहीं आए। कि (शहादत की स्थिति में) उन्हें न कोई भय होगा और न वे शोकाकुल होंगे। वे अल्लाह की कृपा और अनुग्रह की शुभ सूचना पर प्रसन्न हैं और इस पर भी कि अल्लाह ईमान वालों का प्रतिफल व्यर्थ नहीं जाने देता।

(3:169–171). (ट्र.)

स्वप्न, प्रतिनिधित्व जगत की छाया है, जो मध्यवर्ती क्षेत्र की छाया है। इसी कारण से उनके सिद्धांत एक दूसरे के समान हैं।

राजनीति लोगों के मन में शैतानी है; इससे बचने के लिए ईश्वर की शरण लेनी चाहिए

आधुनिक राजनीति बहुसंख्यकों की सुविधा के लिए अल्पसंख्यकों की बलि चढ़ाती है। इससे भी बदतर बात यह है कि निरंकुश अल्पसंख्यक अपने लिए बहुसंख्यकों की बलि चढ़ाते हैं।

कुरान का न्याय कभी भी किसी निर्दोष व्यक्ति के जीवन को व्यर्थ नहीं मानता; यह कभी भी किसी व्यक्ति का खून बहाने की अनुमति नहीं देता, चाहे वह समस्त मानव जाति का ही क्यों न हो, किसी विशेष क्षेत्राधिकार में बहुसंख्यकों का तो बिल्कुल भी नहीं।

यह आयत, 'जो कोई किसी व्यक्ति को मारता है, सिवाय इसके कि वह हत्या के लिए (कानूनी सजा के रूप में) हो... वह ऐसा होगा मानो उसने सारी मानव जाति को मार डाला हो (5:32), हमारी आंखों के सामने दो शक्तिशाली सिद्धांत रखती है।

एक है शुद्ध न्याय। यह उत्कृष्ट सिद्धांत है कि जिस प्रकार व्यक्ति और समुदाय ईश्वरीय शक्ति के संबंध में समान हैं, उसी प्रकार ईश्वरीय न्याय भी उनमें कोई अंतर नहीं देखता।

यह एक स्थायी, स्थापित ईश्वरीय और पैगम्बरीय सिद्धांत और व्यवहार है। एक व्यक्ति अपने अधिकारों का त्याग कर सकता है, लेकिन कानून उनका त्याग नहीं कर सकता, यहाँ तक कि पूरी मानव जाति के लिए भी नहीं।

किसी के अधिकारों को रद्द करना, या किसी का खून बहाना, या किसी की बेगुनाही को रद्द करना, समस्त मानवता के अधिकारों को रद्द करने, या समस्त मानवजाति की बेगुनाही को रद्द करने के बराबर है।

दूसरा सिद्धांत यह है: यदि कोई स्वार्थी व्यक्ति लालच या जुनून के कारण किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या कर सकता है, तो वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति में बाधा बनने पर, यदि ऐसा करने में सक्षम हो तो, पूरे विश्व को नष्ट कर सकता है, तथा समस्त मानवता का विनाश कर सकता है।

दुर्बलता शत्रु को बल देती है; परमेश्वर अपने बन्दों को परख सकता है, परन्तु वे उसे परख नहीं सकते।

हे भयभीत, दुर्बल! तुम्हारा भय और दुर्बलता व्यर्थ है और तुम्हारे लिए हानिकारक है; वे बाहरी प्रभावों को प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें तुम्हारी ओर खींचते हैं।

हे संदेह और भ्रम से पीड़ित लोगों! संभावित नुकसान के डर से निश्चित लाभ को त्यागना नहीं चाहिए। आपको बस कार्रवाई करने की ज़रूरत है; परिणाम भगवान के हाथ में है।

भगवान के काम में कोई दखल नहीं दे सकता। वह अपने सेवक को अपने पास ले जाता है।

परीक्षण के अखाड़े में आता है और कहता है: "यदि आप ऐसा करेंगे, तो मैं ऐसा करूंगा।"

लेकिन सेवक कभी भी भगवान को नहीं परख सकता। अगर वह कहता है, "क्या भगवान मुझे

सफलता के लिए मैं यह करूंगा," ऐसा कहते हुए वह अपनी सीमाओं का उल्लंघन कर रहा है।

शैतान ने यीशु से कहा: “चूँकि वही सब कुछ करता है और उसका भाग्य नहीं बदलता, तो तू अपने आप को पहाड़ से नीचे कूद जा और देख कि वह तेरे साथ क्या करता है।”

यीशु ने उत्तर दिया: “हे शापित! परमेश्वर के सेवक उसकी परीक्षा नहीं कर सकते!”29

इस्लामी राजनीति इस्लाम से आगे बढ़नी चाहिए; राजनीति दूसरों के लिए साधन नहीं होनी चाहिए। पक्षपात दिलों को विभाजित करता है, एकजुट नहीं करता

वर्तमान समय में इस्तांबुल की राजनीति स्पैनिश फ्लू जैसी है, जो लोगों को संक्रमित कर रही है; वास्तव में, यह कभी-कभी उन्माद का कारण बन जाती है।

राजनीतिक पागलपन एक बीजान्टिन (अर्थात धोखेबाज और कबीले-नियति) मानसिकता का उत्पाद है; राजनीति अपने आप नहीं घूमती; बल्कि यह एक बाहरी अभिविन्यास के माध्यम से ऐसा करती है।

यूरोप राजनीति को सम्मोहित करता है और उसके कानों में फुसफुसाता है। इस प्रकार, कोई कह सकता है

यहाँ एक नाटक का मंचन किया जा रहा है।

चूंकि फुसफुसाहट बाहर से आती है, इसलिए यदि वह नकारात्मक है, तो व्यक्तिगत अक्षरों की तरह उसका भी कोई मूल्य नहीं होता; वह तभी लाभदायक होता है जब वह अन्य अक्षरों के साथ संयुक्त हो।

हमारी स्वतंत्र इच्छा की अब इसमें कोई भूमिका नहीं रह जाती, इसलिए भले ही हमारे इरादे अच्छे हों, हमारे अच्छे इरादे किसी काम के नहीं हैं।

यदि बाहरी फुसफुसाहट सकारात्मक है, तो उसका मूल्य, वाक्य में शब्दों की तरह,

पहले अपने लिए, और फिर अप्रत्यक्ष रूप से दूसरों के लिए।

यहां राजनीतिक मतभेद विपरीत दिशाओं में चलते हैं, और देश में उनका कोई प्रतिच्छेद बिंदु नहीं है; संपूर्ण पृथ्वी पर कहीं भी उनका एक साथ आना संभव नहीं है।

चूँकि ऐसा है, इसलिए जो लोग सकारात्मक, रचनात्मक रास्ता अपनाते हैं, उन्हें शिक्षित होना चाहिए और ज्ञान का पालन करना चाहिए। जैसे कमज़ोर लोग या अल्पसंख्यक कुरान की रक्षा नहीं कर सकते, शक्तिशाली हाथ या बहुमत को इसकी रक्षा करनी चाहिए।

29 इब्नु'ल-जावज़ी, तल्बिसु इब्लीस, 344।

उन्हें उससे प्रेम करना चाहिए और उससे जुड़े रहना चाहिए, क्योंकि धर्म का नकारात्मक उपयोग नहीं किया जा सकता।
सक्रिय रूप से या नकारात्मक परिणाम के लिए। 31 मार्च की घटना[30] ने यह दिखाया।

इससे पता चला कि धर्म का सबसे कम नकारात्मक उपयोग भी
मातृभूमि पर आक्रमण का परिणाम बहुत भयानक निकला। मुसलमान इस युद्ध में हार गए।

जो चीजें आपको पसंद हैं, उनका अति प्रयोग न करें

एक बीमारी का इलाज दूसरे के लिए हानिकारक हो सकता है; जो एक के लिए मारक है, वह दूसरे के लिए जहर बन जाता है। अगर इलाज का अत्यधिक सेवन किया जाए, तो यह बीमारी का कारण बनता है और घातक हो जाता है।

हठ की आँख देवदूत को भी शैतान समझ लेती है

हठ के कारण व्यक्ति इस प्रकार व्यवहार करता है: यदि कोई शैतान किसी की सहायता करता है या उसका समर्थन करता है, तो वे उसे "देवदूत" के रूप में स्वीकार करते हैं और उस पर आशीर्वाद बरसाते हैं।

लेकिन अगर वे विपरीत दिशा में किसी देवदूत को देखते हैं, तो वे उसे शैतान समझते हैं
वे फ़रिश्ते का रूप धारण करके उन पर शत्रुता से शाप देते हैं।

कभी-कभी आपको उन जगहों से मदद मिलती है जिनकी आपने उम्मीद नहीं की थी

यह असामान्य बात नहीं है कि एक पागल व्यक्ति तब ठीक हो जाता है जब लोग उसे बार-बार यह कहते हैं कि वह ठीक है, जबकि एक अच्छा व्यक्ति तब बुरा हो जाता है जब लोग बार-बार उस पर बुरा होने का आरोप लगाते हैं।

इस प्रकार, शत्रु का शत्रु तब तक मित्र रहता है जब तक वह शत्रु बना रहता है, और शत्रु का मित्र तब तक शत्रु बना रहता है जब तक वह मित्र बना रहता है।

बंदर मित्र बन गया और उसने मदद की, तो भालू ऐसा क्यों न करे?
एक सूअर तुम्हारा गला घोंट देता है, और एक भालू उसका गला घोंटकर तुम्हारा मित्र बन जाता है।

इस भालू को कभी मत उकसाओ या उसे अपने ऊपर हमला करने के लिए मत उकसाओ। जब तुम आग में जल रहे होगे, तो एक बड़ी बाढ़ तुम्हें बुझाने आएगी, इस तरह वह तुम्हारा दोस्त बन जाएगा।

जैसे तुम (उसकी सहायता पाकर) बन्दर नहीं बने, वैसे ही तुम भी
भालू नहीं बनूंगा (उसके साथ मित्रता करके)।

---

30 31 मार्च की घटना एक विद्रोह था जो 13 अप्रैल, 1909 को इस्तांबुल में शुरू हुआ था। इसकी वास्तविक प्रकृति और कारण अभी तक सामने नहीं आए हैं। इसके परिणामस्वरूप सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय को गद्दी से उतार दिया गया और यूनिटी एंड प्रोग्रेस पार्टी सत्ता में आई। (ट्र.)

किसी समुदाय के जीवन का उत्प्रेरक सुदृढ़ और ईमानदार एकजुटता है

जिस समाज में एकजुटता होती है, वह निष्क्रिय लोगों को उत्तेजित करने के लिए बनाया गया साधन है; जबकि जिस समुदाय में द्वेषपूर्ण ईर्ष्या होती है, वह सक्रिय लोगों को शांत करने के लिए बनाया गया साधन है।

अगर किसी समुदाय में ठोस या ईमानदार एकता नहीं है, तो वह कमजोर हो जाएगा क्योंकि उसकी संख्या सिर्फ़ जनसंख्या वृद्धि के ज़रिए बढ़ती है। यह भिन्नों के गुणन की तरह है। संख्या में वृद्धि उस अनुपात में कम होती है जिस अनुपात में उन्हें जितनी बार गुणा किया जाता है।

भले ही अस्वीकृति आपका अधिकार हो, लेकिन खंडन करना आपका अधिकार नहीं है।

ऐ सत्य के खोजी! यदि कोई बात तुमसे सम्बन्धित हो (विशेषकर किसी ईमान की सच्चाई से सम्बन्धित या किसी हदीस के रूप में),

आपका दायित्व है कि यदि इसकी सत्यता का कोई प्रमाण हो तो इसे स्वीकार कर लें।

यदि ऐसा नहीं है, तो आप इसकी स्वीकृति से बच सकते हैं, जो कि संदेहास्पद है।

किसी प्रमाण का अस्तित्व न होना, उसे स्वीकार न करने का तर्क है, जबकि उसके अस्तित्व न होने का आपका दावा, खंडन और अस्वीकार का अर्थ है, जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है।

जो बात प्रमाण से स्थापित नहीं की जा सकती, उसका दावा नहीं किया जा सकता

बिना प्रमाण के अस्तित्वहीन होना।

किसी चीज़ के अस्तित्व को न स्वीकारना आमतौर पर उसके गैर-अस्तित्व को स्वीकार करने के साथ भ्रमित होता है, हालांकि एक संदेह है और दूसरा इनकार।

आपको इनकार करने का कोई अधिकार नहीं है.

कभी-कभी ऐसा होता है कि एक ही घटना से संबंधित कई वाक्यांश होते हैं और उनका आशय एक ही अर्थ व्यक्त करना होता है, या अर्थ कुछ ऐसा होता है जिसके अनेक संकेत या तर्क होते हैं।

यदि इनमें से एक या दस पर भी संदेह किया जाए या उनका खंडन किया जाए तो भी संविधान का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा।

कथन और उसके इच्छित अर्थ का खंडन नहीं किया जा सकता।

हमें बहुसंख्यक मुसलमानों का अनुसरण करना चाहिए

ऐ मुक्ति और सुरक्षा के चाहने वाले! एक हदीस में कहा गया है कि हमें बहुसंख्यक मुसलमानों का अनुसरण करना चाहिए और उनके साथ रहना चाहिए।31

---

३१ मुस्लिम, "'इमारा" 59; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 7; अबू दाऊद, "गलत" 46.

उमय्यद, शुरू में, धर्म का पालन करने के प्रति सावधान नहीं थे, लेकिन जब वे मुस्लिम समुदाय के बहुमत में शामिल हो गए, तो उन्हें अंततः अहलू-सुन्ना वल-जमा में शामिल कर लिया गया।

शिया लोग शुरू में धर्म के पालन में सावधान और दृढ़ थे, लेकिन उनमें से एक हिस्सा जो अल्पसंख्यक था, ने अंततः राफिदियों का संप्रदाय बना लिया।

यह एक महत्वपूर्ण, उल्लेखनीय वास्तविकता है।

जो सही है उसे जानने के बाद, किसी बेहतर चीज़ के लिए मतभेद पैदा न करें

ऐ सत्य के खोजी! यदि भलाई और सत्य के विषय में सर्वसम्मति हो और श्रेष्ठ और सत्य की खोज मतभेद और मतभेद का कारण बने, तो जो सत्य है वह सत्य से अधिक सत्य है और जो अच्छा है वह श्रेष्ठ से अधिक श्रेष्ठ है।

इस्लाम शांति और सुलह है; वह अपने अंदर कोई विवाद या शत्रुता नहीं चाहता

ऐ इस्लामी दुनिया! तुम्हारा जीवन एकता में निहित है, और यदि तुम एकता चाहते हो, तो तुम्हारा मार्गदर्शक सिद्धांत निम्नलिखित होना चाहिए:

आपको यह सिद्धांत अपनाना चाहिए, “यही सत्य है,” बजाय इसके कि “केवल यही सत्य है।” सच;” और “यह सबसे अच्छा है,” के बजाय “यह वही है जो विशेष रूप से अच्छा है।”

हर मुसलमान को अपने स्कूल और अपने तरीके के बारे में कहना चाहिए: "यह सच है; मैं दूसरों के कामों में दखल नहीं देता। भले ही दूसरे भी अच्छे हों, लेकिन मेरा तरीका सबसे अच्छा है।"

उन्हें यह नहीं कहना चाहिए: "केवल यही सत्य है, बाकी सब झूठे हैं। केवल मेरा ही अच्छा है, बाकी सब गलत और अप्रिय हैं।"

आत्म-प्रेम से ही अलगाव की मानसिकता पैदा होती है। अंततः यह एक बीमारी बन जाती है और विवाद को जन्म देती है।

यदि अनेक बीमारियों और उपचारों का अस्तित्व एक उचित वास्तविकता है, तो सही भी कई गुना बढ़ जाएगा। आवश्यकताओं और खाद्य पदार्थों की विविधता सही है, और सही विविधतापूर्ण हो जाता है।

क्षमताओं और शिक्षा का गुणन सही है, और यह सही है
भी बढ़ेंगे। एक ही पदार्थ जहर और मारक दोनों है।

सत्य धर्म के गौण विषयों में स्थिर नहीं है; वह सापेक्ष है और स्वभाव तथा परिस्थितियों के भेद के अनुसार मिश्रित है।

स्थिति.

ऐसे मामलों के संचालन के लिए जिम्मेदार लोगों के स्वभाव का उनमें हिस्सा होता है, और वे तदनुसार निष्कर्ष निकाले जाते हैं और बनाये जाते हैं।

विधि-विद्यालयों के संस्थापकों ने अस्पष्ट शब्दों में निर्णय दिए तथा अपने विद्यालयों की सीमाओं का निर्धारण बाद में आने वाले विभिन्न स्वभावों पर छोड़ दिया।

किसी स्कूल के प्रति कट्टर लगाव के कारण उस स्कूल के निर्णय
सामान्यीकृत, और इससे उत्पन्न पक्षपात विवाद को जन्म देता है।

इस्लाम से पहले मानवता के वर्गों के बीच गहरी दरारें, तथा लोगों और स्थानों के बीच बड़ी दूरी के कारण किसी भी समय अनेक पैगम्बरों, विभिन्न शरीयतों और असंख्य धर्मों का अस्तित्व आवश्यक था।

विभिन्न संप्रदायों के लोग।

इस्लाम ने मानव जाति में क्रांति ला दी और लोग एक दूसरे के करीब आ गए। विभिन्न शरीयतों को एक ही शरीयत में समाहित कर दिया गया और एक ही पैगम्बर था।

लेकिन मानव जाति के स्तर समान नहीं थे, इसलिए विधि के स्कूल कई गुना बढ़ गए। अगर प्रशिक्षण और शिक्षा की एक ही प्रणाली सभी के लिए पर्याप्त और उचित होती, तो स्कूल एकजुट हो सकते थे।

विपरीतों के सृजन और संयोजन में महान बुद्धिमत्ता है: शक्ति के हाथ में सूर्य और एक छोटा कण बराबर हैं

हे सजग हृदय वाले भाई! शक्ति विपरीतताओं के संयोजन में प्रकट होती है। सुख में दुख है, अच्छाई में बुराई है, सुंदरता में कुरूपता है, लाभ में हानि है, वरदान में परेशानी है, प्रकाश में आग है... क्या तुम जानते हो ऐसा क्यों है?

ऐसा इसलिए किया गया है, ताकि सापेक्ष सत्य स्थापित हो सकें और एक ही चीज़ के भीतर कई चीज़ें हो सकें, और अस्तित्व की कई विभिन्न घटनाएँ स्पष्ट हो सकें।

तेज गति से घूमने से बिंदु रेखा जैसा दिखाई देता है।
प्रकाश के एक बिंदु को एक चमकदार वृत्त जैसा बना देता है।

इस संसार में बीज अंकुरित हो सकें, इसके लिए सापेक्ष सत्य का होना आवश्यक है।
ये ब्रह्मांड की मिट्टी, इसकी व्यवस्था के बंधन, इसके शिलालेखों के बीच संबंध बनाते हैं। ये सापेक्ष वास्तविकताएं सत्य बन जाएंगी
परलोक में।

गर्मी की मात्रा ठंड के अस्तित्व के कारण होती है। सुंदरता की मात्रा कुरूपता के हस्तक्षेप से आती है। प्रत्यक्ष कारण मानो अंतिम कारण या अस्तित्व का कारण बन जाता है।

प्रकाश अंधकार का ऋणी है, सुख दुःख का ऋणी है; ऐसा कोई सुख नहीं है जो अंधकार का ऋणी हो। बीमारी के बिना स्वास्थ्य की चेतना.

अगर जन्नत न होती तो शायद नर्क में यातना न होती। नर्क अत्यधिक ठंड के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता। अगर अत्यधिक ठंड (उसकी गर्मी के अलावा) न होती तो नर्क जलता नहीं।

सदा जीवित रहने वाले सृष्टिकर्ता ने विपरीतों की रचना में अपनी बुद्धि का प्रदर्शन किया है और उनकी महिमा स्पष्ट हो गई है।

उस सनातन सर्वशक्तिमान ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है
विपरीतताओं का संयोजन, और उसकी भव्यता प्रकट हो गई है।

तथापि, चूंकि दैवी शक्ति दैवी सार के लिए आवश्यक है तथा उसमें अंतर्निहित है, इसलिए इसमें कोई विपरीत नहीं हो सकता, और इसलिए नपुंसकता इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती; इसमें कोई डिग्री नहीं हो सकती; इसके लिए कुछ भी कठिन नहीं हो सकता।

सूर्य उसकी शक्ति के प्रकाश के लिए एक जगह बन गया है। समुद्र की सतह उस जगह के प्रकाश के लिए एक दर्पण है और ओस की बूंदों की आँखें सभी छोटे दर्पण हैं।

समुद्र की चौड़ी सतह से परावर्तित सूर्य की रोशनी, उसके माथे की झुर्रियों पर पड़ी बूंदों से भी परावर्तित होती है। ओस की बूंद की छोटी सी आँख भी उसके साथ चमकती है, किसी तारे की तरह; वे एक ही पहचान रखते हैं।

सूर्य की दृष्टि से ओस की बूंद और समुद्र एक समान हैं;
इसकी शक्ति उन्हें बराबर बनाती है। ओस की बूंद की आंख की पुतली एक छोटा सूरज है।

भव्य सूर्य भी एक छोटी ओस की बूंद है; उसकी आंख की पुतली एक
शक्ति के सूर्य से प्राप्त प्रकाश और यह उस शक्ति का चंद्रमा है।

आकाश एक सागर है; दयालु की एक सांस पर, बूँदें
उसके माथे की झुर्रियों में लहराते हैं, जो तारे और सूर्य हैं।

शक्ति प्रकट हुई और इन बूंदों पर चमक बिखेर दी।
हर सूरज एक बूंद है, हर तारा एक ओस की बूंद है;

हर चमक एक प्रतिनिधित्व है - वह बूंद जैसा सूरज इस अभिव्यक्ति का एक छोटा सा प्रतिबिंब है। यह अपने पॉलिश किए हुए शीशे को उस अभिव्यक्ति की चमक के लिए एक बल्ब बनाता है, जो मोती की तरह चमकता है।

उस ओस की बूंद जैसे तारे की नाजुक आंख में चमक के लिए जगह है और चमक एक दीपक बन जाती है, जिसका रेशा आंख के रूप में होता है - और उसका दीपक प्रकाशित हो जाता है।

बहुलता अपने दोनों ओर एकता प्रकट करती है

यह ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्ति है कि बहुलता का आरंभ और अंत एक ही बिंदु पर एकजुट होकर ईश्वरीय एकता को प्रदर्शित करते हैं।

यह ईश्वरीय शक्ति का प्रकटीकरण है कि परिवर्तनशील शक्ति
ब्रह्माण्ड में एकता को अनेकता में बदल देता है;

दैवी शक्ति कणों के बीच वितरित होती है और प्रकृति में परिवर्तन होता है, तथा
यहीं से गुरुत्वाकर्षण की डिग्री या किरणें उत्पन्न होती हैं।

ये किरणें संयुक्त होती हैं - निर्माता उन्हें एक सामान्य गुरुत्वाकर्षण में बदल देता है, जिसका अर्थ है कि बहुलता एकता बन जाती है।

यदि आपमें कोई गुण या योग्यता है, तो उसे धूल के नीचे ही रहने दीजिए, ताकि वह फल-फूल सके।

हे विख्यात गुणों में से एक! अपने आपको प्रकट करके अत्याचारी मत बनो; यदि तुम गुप्त रूप से रहोगे, तो अपने भाइयों के लिए उपकार और आशीर्वाद का स्रोत बनोगे;

इसके अलावा, आपके भाइयों को आपके गुणों से लाभ होगा या उनमें हिस्सा मिलेगा; यह भी संभव है कि आपका हर भाई आपके जैसा बन जाए - इससे उनमें से प्रत्येक के प्रति सम्मान बढ़ेगा।

लेकिन अगर आप छुपकर बाहर निकलेंगे और खुद को प्रदर्शित करेंगे, तो भले ही आप इसके अंतर्गत सम्मानित और उदार हों, लेकिन आप खुले में अत्याचारी बन जाएंगे। वहां आप एक सूरज थे, यहां आप दूसरों पर छा जाएंगे।

तुम अपने भाइयों का सम्मान खो दोगे। इसका मतलब है, आत्म-प्रकटीकरण-
व्यक्तिगत रूप से अलग होना और अलग-अलग पहचाना जाना निरंकुश दृष्टिकोण हैं।

यदि यह वास्तविक गुणों की अभिव्यक्ति के बारे में सत्य है, तो फिर झूठी चालाकी और पाखंड के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए क्या स्थान बचा है? यह एक गहन रहस्य है, और इसी के अनुरूप दिव्य बुद्धि और उसने जो उत्तम व्यवस्था स्थापित की है, वह सत्य है।

अपनी प्रजाति के भीतर एक असाधारण व्यक्ति पर गोपनीयता का पर्दा डाल दें, जिससे संपूर्ण प्रजाति का मूल्य बढ़ जाए और वह सराहनीय बन जाए।

आपके लिए उदाहरण: मानव जाति के बीच संत और जीवनकाल के भीतर नियुक्त समय अज्ञात, अनिश्चित है। शुक्रवार के भीतर एक ऐसा समय छिपा हुआ है जब प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं।

रमज़ान के महीने में शक्ति और भाग्य की रात छिपी हुई है। सभी खूबसूरत नामों के बीच महान का अमृत छिपा हुआ है-
नाम है.

यह उनका अपरिभाषित होना ही है जो इन उदाहरणों में वैभव उत्पन्न करता है - सम्पूर्ण मानवता का वैभव, जो इसमें सम्मिलित संतों के कारण है, शुक्रवार का पूरा दिन, क्योंकि वह समय है जब प्रार्थनाएं स्वीकार की जाती हैं, तथा रमजान का पूरा महीना, क्योंकि वह शक्ति और भाग्य की रात है।

यह सुंदर रहस्य भी अपरिभाषित होने के माध्यम से प्रकट होता है और छिपाव के माध्यम से स्थापित होता है। उदाहरण के लिए: इस तथ्य में एक संतुलन है कि नियत समय अपरिभाषित है: आप जिस भी स्थिति

में हों, यह हमेशा भय और आशा के दो पलड़ों के बीच संतुलन बनाए रखता है, अगले संसार और इस संसार के लिए काम करता है।

और कल्पित स्थायी अस्तित्व जीवन को आनंद प्रदान करता है।

अज्ञात अंत वाले बीस साल के जीवन की अपेक्षा, ज्ञात अंत वाले एक हजार साल के जीवन की अपेक्षा बेहतर है। क्योंकि आधा जीवन बीत जाने के बाद, हर बीतते घंटे के साथ आप फाँसी की ओर एक नया कदम बढ़ा रहे हैं।

आपकी पीड़ा आनुपातिक रूप से बढ़ती है; इसकी कोई कल्पना भी नहीं की जा सकती
स्थायित्व जो आपको सांत्वना तो देगा पर आपको शांति नहीं मिलेगी।

ईश्वर की दया या क्रोध से अधिक दया या क्रोध महसूस करना गलत है

किसी को भी ईश्वर की दया से अधिक दया महसूस या प्रदर्शित नहीं करनी चाहिए, न ही किसी को ईश्वर से अधिक क्रोध महसूस करना चाहिए।

अतः मामलों को उस अत्यन्त न्यायकारी, अत्यन्त दयावान पर छोड़ दो, क्योंकि अत्यधिक दया पीड़ा का कारण बनती है और अत्यधिक क्रोध अनुचित और निन्दनीय है।

सांसारिक प्रतिफल आख़िरत में सज़ा साबित करता है

हर किसी ने अपने जीवन में कम से कम एक बार ऐसा अनुभव किया है और निष्कर्ष निकाला है: “उस व्यक्ति ने वह बुरा काम किया है और उसे वह भुगतना पड़ा जिसके वह हकदार था।” यह जीवन का एक सिद्धांत है।

यह सार्थक वाक्य अक्सर लोगों द्वारा व्यक्त किया जाता है।
विभिन्न प्रकार की बुराइयों में एक महत्वपूर्ण बात बुराई की प्रकृति ही है।

इसका मतलब यह है कि बुराई अपने स्वभाव के कारण सज़ा के योग्य है और उसे सज़ा की ज़रूरत है। छोटी बुराइयों के लिए यहाँ सज़ा दी जाती है, जबकि बड़ी बुराइयों के लिए परलोक का ज़िक्र किया जाता है।

बुराइयों के लिए सांसारिक प्रतिफल, संसार में दण्ड का प्रमाण है।
इसके बाद.

मानव जाति की सहजता उसकी इच्छा और शक्ति के व्युत्क्रमानुपाती होती है; प्रावधान एक व्यापक, धीरे-धीरे एकत्रित होने वाला निकाय है

हे दुष्टता में लिप्त मानवजाति! तुम्हारी स्वतंत्र इच्छा और शक्ति ही तुम्हारे अभाव और परेशानियों का स्रोत और कारण बन गई है। निर्बलता और शक्तिहीनता के अनुपात में ही प्रावधान मिलता है।

एक बार मैंने एक जानवर देखा, जो बहुत ही दयनीय था, उसकी हड्डियाँ और खाल ही बची थी। एक योग्य माँ ने कई अन्य जानवरों के साथ उसे भी जन्म दिया था।

जबकि वह स्वयं बड़ी मुश्किल से खाने के लिए एक निवाला खोज पाता था, उसकी माँ के स्तनों से सुखद, पौष्टिक आहार निकलता था; दैवी शक्ति वह आहार उपलब्ध कराती थी।

वह सजीव प्राणी अपनी माता के गर्भ में निश्चल रहते हुए अत्यंत दुर्बल और शक्तिहीन था, किन्तु वहाँ भी उसे उत्तम, उत्तम पोषण प्राप्त हुआ।
वित्त.

यह दुनिया में तब आया जब यह अभी भी कमजोर और नपुंसक था, और इसका पोषण अच्छा और अपेक्षाकृत उत्तम था।

वह थोड़ा बड़ा हुआ और उसे महसूस होने लगा कि उसमें एक निश्चित मात्रा में इच्छा-शक्ति आ गई है।
इसने परेशानियों और कठिनाइयों का भी सामना करना शुरू कर दिया, इसलिए इसकी सहायता के लिए माता-पिता की करुणा अभी भी प्रदान की गई।

लेकिन जब उसे लगा कि उसमें इच्छाशक्ति के साथ-साथ कुछ शक्ति भी है, तो उसे स्वतंत्र कर दिया गया और उसे अपने हाल पर छोड़ दिया गया। अपनी इच्छा से उसने जो कुछ भी करने की कोशिश की, उससे सिर्फ़ उलझन ही पैदा हुई।

जब वह इच्छाशक्ति से अनभिज्ञ था, तो उसके शरीर की क्रियाविधि, जो पूर्ण नियमितता के साथ काम करने की आदी थी, उसके घर या उसके शहर में कोई गड़बड़ी पैदा नहीं करती थी।

लेकिन जब उसकी इच्छा शक्ति ने हस्तक्षेप करना शुरू किया, तो उसके जीवन की व्यवस्था नष्ट हो गई और उसकी इच्छा शक्ति ने उसे दोषपूर्ण बना दिया। इसलिए, हमें हमेशा कहना चाहिए:

"हमारे रब! हमें अपने हाल पर न छोड़, क्योंकि हम मुसीबत में हैं।
हमारी वयस्कता!”

और शक्ति को हमेशा कहना चाहिए: "हे मेरे प्रभु! मैंने अपने जीवन में हर चीज़ के आरंभ और अंत में आप पर भरोसा रखा है!"

ईश्वरीय शक्ति की दृष्टि में, किसी सजीव प्राणी की व्यवस्था का मूल्य उसके जीवन के समान ही है।

जिस प्रकार शक्ति एक "बहाना" ढूंढती है और उसे अपना जीवन दे देती है, उसी प्रकार वह
वह अपना प्रावधान बनाता है और उसे उंडेल देता है।

ऐसा लगता है मानो शक्ति निरंतर, तीव्र प्रयास के साथ कार्य कर रही है, तथा मृत्यु के जगत को जीवन के जगत में तथा सघन जगत को पारदर्शी में परिवर्तित और रूपान्तरित कर रही है।

जिस प्रकार यह जीवन की चमक को सबसे निम्न पदार्थ में भी बिखेर देता है -
यह हर चीज़ में प्रावधान भी बोता है और संग्रहीत करता है।

मृत परमाणु जीवन के प्रकाश से मिलने के लिए आगे बढ़ते हैं।
कुछ वास्तविक शरीर बनाते हैं, जबकि अन्य आलंकारिक शरीर बनाते हैं।

प्रावधान आता है और उनके साथ एकजुट हो जाता है। प्रावधान व्यापक रूप से फैला हुआ है
और यह एक व्यापक शरीर है। संक्षेप में, जीवन के दो शरीर हैं,

एक का निर्माण और संयोजन होता है, दूसरा बिखरा हुआ होता है। प्रावधान और जीवन
वे जुड़वाँ हैं, और सत्ता की दृष्टि में उनका मूल्य समान है।

यह वह शक्ति है जो अस्तित्वहीनता से सब कुछ उत्पन्न करती है; नियति उस प्रथम शरीर की व्यवस्था करती है जिसमें वह आवृत होती है।

ईश्वरीय कृपा से भोजन, बिखरे हुए शरीर और
इस प्राणी को भोजन कराने के लिए विद्यमान प्राणी के पास भेजता है।

इन दोनों शरीरों में अंतर है: जीवन से लेकर पहला
विद्यमान सत्ता का शरीर एक रचना है, वह अपनी समग्रता में दिखाई देती है।

जबकि प्रावधान बिखरा हुआ है और धीरे-धीरे आता है, इसलिए मानव जाति इसके बारे में चिंता करती है। जब तक मानव जाति की गलत इच्छा-शक्ति हस्तक्षेप नहीं करती, तब तक नियम निश्चित रूप से सत्य है:

"भूख से कोई मौत नहीं होती; भोजन की कमी से मृत्यु नहीं होती।"
शरीर में अनेक भण्डार जमा हैं, जिनमें से प्रत्येक भरा हुआ है।

बहुत सी चीजें वसा के रूप में जमा होती हैं। लेकिन इस वसा का उपयोग करने से पहले
ऊपर, मौत आती है। इसलिए, मौत का कारण प्रावधान की कमी नहीं है।

यह भोजन सौ दिन के लिए पर्याप्त है, लेकिन दस दिन में मृत्यु हो सकती है।

शायद यह रोग नियमित पोषण में परिवर्तन या परित्याग से उत्पन्न हुआ हो।
जब तक भोजन उपलब्ध था, तब तक आग आ गई और मृत्यु हो गई।

मांसाहारी पशुओं का वैध प्रावधान

प्रत्येक वस्तु में एक व्यवस्था और बुद्धि विद्यमान है; इसमें संयोग के लिए कोई स्थान नहीं है, यद्यपि ऐसा प्रतीत होता है कि यह इस कारण है कि हम दिव्य बुद्धि द्वारा स्थापित इस सार्वभौमिक व्यवस्था को समझने में असमर्थ हैं।

ईश्वरीय बुद्धि ने असंख्य शवों को भोजन के रूप में नियुक्त किया है पशु जगत में मांस खाने वालों के लिए जंगली जानवर।

इसने इन जानवरों को इन शवों को खाने के लिए आमंत्रित किया है, ताकि वे दोनों ही पृथ्वी की सतह को स्वच्छ करते हैं और अपना वैध प्रावधान पाते हैं।

इसलिए उनके लिए अपने खाने के लिए किसी जीवित प्राणी को मारना अवैध है। उनका जीवन। हाथियों से लेकर कीड़े-मकौड़ों तक,

हर दिन लाखों जानवर मरते हैं, लेकिन उनमें से किसी का शव नहीं मिलता खुला। यह ध्यान देने योग्य है; ज्ञान और व्यवस्था पर विचार करें

कैसे मूल शक्ति और गहन बुद्धि ने पशुओं और मनुष्यों को भोजन की कमी से ग्रस्त बना दिया है। उन्होंने उन पर आवश्यकता और भूख की लगाम लगा दी है।

उन्होंने इस लगाम के माध्यम से जीवित प्राणियों को क्रम में रखा है, उन्हें आवश्यकता के क्षेत्र में यात्रा करने की अनुमति दी है, उन्हें क्रम से बाहर जाने की अनुमति नहीं दी है।

वे दोनों ही विश्व को घोर असमंजस में जाने से बचाते हैं और अराजकता को दूर करें और मानव जीवन में प्रगति के लिए आवश्यकता को आधार बनाएं।

अपव्यय से अपव्यय होता है, अपव्यय से गरीबी होती है

मेरे फिजूलखर्च भाई! दो निवाले में पोषण की मात्रा और गुणवत्ता एक जैसी होती है, लेकिन एक की कीमत एक कुरुश (सेंट) होती है, दूसरे की दस; वे मुंह में जाने से पहले और गले से नीचे जाने के बाद भी बराबर होते हैं। मुंह में कुछ

सेकंड के लिए ही वे स्वाद की "नशे में" इंद्रिय को आनंद देते हैं।

अंतर केवल उनके स्वाद में है, जो धोखे का कारण है; स्वाद की इन्द्रिय वस्तुतः पेट की द्वारपाल और निरीक्षक है।

लेकिन धोखे के कारण इसका दुरुपयोग होता है। केवल द्वारपाल को टिप देकर और उसे तृप्त करना - स्वाद की इन्द्रिय को क्षणिक आनन्द प्रदान करना,

अपने कर्तव्य पालन में उसे भ्रमित किया जा सकता है। एक के स्थान पर ग्यारह कुरुश खर्च करना शैतानी आदत है।

यह सबसे खराब तरीकों में से एक है, सबसे खराब प्रकार की बर्बादी में से एक है: इसकी तलाश मत करो.

स्वाद की इंद्रिय एक मुखबिर है; इसे सुखों से मत बहकाओ

ईश्वरीय प्रभुता की बुद्धि और कृपा ने तुम्हारे भीतर मुख और नाक के द्वारा दो केन्द्र बनाए हैं, जो एक सीमा चौकी का निर्माण करते हैं। उन्होंने संवाददाता भी नियुक्त किए हैं।

इस सूक्ष्म जगत - मनुष्य - में ईश्वर ने रक्त वाहिकाओं को टेलीफोन और तंत्रिकाओं को टेलीग्राफ बनाया है, टेलीफोन को गंध की इंद्रिय (नाक) और टेलीग्राफ को स्वाद की इंद्रिय (मुंह या जीभ) के सहायक के रूप में नियुक्त किया है।

अपनी दया से, उस सच्चे प्रदाता ने सभी में निर्देश अंतर्निहित कर दिए हैं
भोजन के प्रकार: स्वाद, रंग और गंध।

इस प्रकार, ये तीन विशेषताएँ घोषणाएँ, निमंत्रण, अनुमतियाँ और प्रदाता की ओर से संदेशवाहक हैं: जो लोग जरूरतमंद हैं और भोजन चाहते हैं वे इनके माध्यम से आकर्षित होते हैं।

उसने जरूरतमंद जानवरों को स्वाद, दृष्टि और गंध की इंद्रियां दी हैं
उन्होंने भोजन को भी विभिन्न प्रकार की सजावटों से सजाया है।

वह इच्छुक आत्माओं को शान्त करता है, तथा उदासीन और निष्क्रिय लोगों को उत्तेजित करके उन्हें आकर्षित करता है।

जब भोजन मुंह में जाता है, तो स्वाद की इंद्रिय तुरंत शरीर के हर हिस्से को संदेश भेजती है। गंध की इंद्रिय हमें फोन करके भोजन के प्रकार के बारे में बताती है।

जिन इन्द्रियों और अंगों को भोजन की आवश्यकता होती है, वे अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्य करती हैं और आवश्यक तैयारी करती हैं - या तो वे स्वीकार करती हैं या मना कर देती हैं।

चूँकि स्वाद की इन्द्रिय एक टेलीग्राफर है, जिसका कार्य टेली-संदेश भेजना है।
ईश्वरीय कृपा से इसे भोग विलास से मत लुभाओ।

क्योंकि तब वह भूल जाएगा कि सच्ची भूख क्या है; झूठी भूख उभरती है और
यह उसे परेशान करता है, तथा दंड के रूप में बीमारियाँ और व्यसन लाता है।

सच्चा आनंद सच्ची भूख से उत्पन्न होता है, सच्ची भूख सच्ची आवश्यकता से उत्पन्न होती है; यह आवश्यक आनंद राजा और भिखारी दोनों के लिए पर्याप्त है, और दोनों को समान बनाता है।

इसके अलावा, जबकि एक दिरहम (सेंट) उस आनंद के लिए पर्याप्त है और आवश्यकता और भूख दोनों के दर्द को शांत करता है, एक दीनार (डॉलर) खर्च करना फिजूलखर्ची है और इसका मूल्य एक दिरहम के बराबर हो जाता है ।

इरादे की तरह, नज़रिया भी बदल सकता है
आदतन कार्यों को पूजा में बदलना

इस बात पर ध्यान दें! जिस प्रकार इरादे (ईश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने) के माध्यम से, अनुमेय आदतन कार्य पूजा बन सकते हैं, उसी प्रकार ईश्वर के प्रति समर्पण भी पूजा बन सकता है।

सही दृष्टिकोण अपनाने पर भौतिक विज्ञान ईश्वर का ज्ञान बन सकता है।

यदि आप अध्ययन और चिंतन करें, अर्थात, यदि आप चीजों को एक दूसरे के प्रतीक के रूप में देखें - उनके निर्माता के रूप में - और उनमें निहित कला के संबंध में, तो आप कहेंगे: "निर्माता ने इसे कितनी खूबसूरती से बनाया है, उसने इसे कितनी अच्छी तरह से किया है!" बजाय इसके कि "यह कितना सुंदर है।"

यदि आप इस दृष्टिकोण से ब्रह्माण्ड को देखेंगे, तो इसके अस्तित्व के उद्देश्य और इसकी पूर्णता की झलकें शाश्वत निर्माता की रचना से चमकती हुई दिखाई देंगी, तथा व्यवस्था और ज्ञान आपके संदेहों को दूर कर देंगे;

और ब्रह्मांड का विज्ञान ईश्वर का ज्ञान बन जाएगा। लेकिन अगर आप चीजों को "प्रकृति" के दृष्टिकोण से और "वे अपने आप कैसे अस्तित्व में आए हैं?" के दृष्टिकोण से देखते हैं -

यदि आप ब्रह्मांड को इस तरह से देखेंगे, तो आपका सारा वैज्ञानिक ज्ञान केवल अज्ञान होगा। इस तरह से मालिकहीन सत्य बेकार हाथों में बेकार हो जाते हैं। इसके कई प्रमाण हैं।

कभी-कभी किसी चीज़ का नाम लेना ही एक कारण हो सकता है
इसके बारे में पूर्ण ज्ञान को प्रतिस्थापित करना

यहाँ प्रकाश है, लेकिन यह अंधकार को अंधकारमय बनाता है या अंधकार को प्रकाशित करता है - वर्तमान सोच के अनुसार, यह साधारण अज्ञान को मिश्रित अज्ञान में बदल देता है।

वे किसी अज्ञात चीज़ को एक चमकदार नाम देते हैं और सोचते हैं
ऐसा करने से उन्हें इसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया है।

अन्य अज्ञात चीजों से इसकी तुलना करते हुए, वे मान लेते हैं कि उन्होंने उन्हें समझा दिया है, जबकि किसी चीज को परिभाषित करने और समझाने का अर्थ है उसकी पूरी तस्वीर जानना।

नाम मात्र देना - नाम देने वाला अज्ञानी है, और यद्यपि वह आंखों को उज्ज्वल और आकर्षक प्रतीत होता है, तथापि उसका स्वरूप जो नामित वस्तु से जुड़ा है, अंधकारमय है।

इसे परिभाषित करना या समझाना संभव नहीं है; केवल मन ही भ्रमित है। इसके कई उदाहरण हैं, जैसे:

सामान्य गुरुत्वाकर्षण, चुंबकीय बल, विद्युत शक्ति, टेलीपैथी, कंपन और चुंबकत्व...

इस समय शरिया अमीरी की इजाजत नहीं देता

जब सुख हमें बुलाते हैं, तो हमें कहना चाहिए: "सनकी येदिम (ऐसा लगता है जैसे मैंने इसे खा लिया है।)" क्योंकि जिसने इसे नियम बनाया, उसने मस्जिद का उपभोग नहीं किया!

पहले, अधिकांश मुसलमान भूखे नहीं रहते थे, इसलिए एक निश्चित सीमा तक आराम और सुविधा की अनुमति थी।

हालाँकि, अब अधिकांश लोग भूखे रहने लगे हैं और शरिया अब सुखद जीवन की अनुमति नहीं देता।

मुसलमानों के बड़े हिस्से की, यानी कि मासूमों की, आजीविका बहुत सरल है। इसलिए उनके सादगी भरे जीवन का अनुसरण करना, उन अल्पसंख्यकों या कुछ व्यभिचारी लोगों की तरह विलासितापूर्ण जीवन जीने से हजार गुना बेहतर है।

आपकी खुशी आपके दर्द में है और आपकी खुशी में आपका दर्द है

हे विपत्ति से पीड़ित!

पीड़ाओं को आपको यह करने के लिए प्रेरित करना चाहिए: आपको अस्थायी सुखों की अपेक्षा अस्थायी पीड़ाओं का स्वागत करना चाहिए और उन पर मुस्कुराना चाहिए।

दर्द मधुमक्खियों की तरह होते हैं: यदि आप उन्हें परेशान करते हैं, तो वे आपके चारों ओर भीड़ लगा लेते हैं, लेकिन यदि आप उनके प्रति उदासीन बने रहते हैं, तो वे इधर-उधर बिखरकर अपने काम में लग जाते हैं।

जो कोई भी अपने पिछले जीवन के बारे में सोचने के लिए "पीछे मुड़ता है", उसका हृदय या जीभ या तो दुःख की आह या राहत की आह या परमेश्वर के लिए प्रशंसा और कृतज्ञता के शब्द बोलेगी।

यह आत्मा में छिपी हुई पीड़ा है जो दुःख की आह द्वारा व्यक्त होती है, जबकि राहत की आह या ईश्वर के प्रति स्तुति और कृतज्ञता का उच्चारण हमें हृदय में प्रचुरता और प्रसन्नता की सूचना देता है।

अतीत में बचे हुए सुखों की स्मृति हृदय और जीभ दोनों को दुःख की आहें निकालने का कारण बनती है।

क्योंकि जिस तरह दुख का अंत सुख है, उसी तरह सुख का अंत दुख है। सुख के अंत के बारे में सोचना या याद करना भी आत्मा को निरंतर दुख देता है।

यही कारण है कि प्रत्येक आलंकारिक प्रेम - विपरीत लिंग के प्रति प्रेम - विलापों का एक संग्रह है, जो उनके समाप्त होने के भय से उत्पन्न पीड़ा से उत्पन्न होता है।

लेकिन अतीत के दुखों का अंत दिल और जीभ दोनों को एक नई दिशा में ले जाता है राहत की गहरी साँस और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता के शब्द।

एक दिन की खुशी का गायब होना एक स्थायी दर्द है, जबकि एक दिन के दर्द का गायब हो जाना आत्मा में एक स्थायी खुशी है।

मानव विवेक या चेतना हमेशा अनंत आनंद और उदारता की इच्छा रखती है। यह ईश्वर के प्रेम और ज्ञान, चिंतन और आध्यात्मिक पूर्णता में निहित है;

यह आध्यात्मिक उपहारों में भी निहित है जो हृदय में प्रवाहित होते हैं, सत्य की झलक में, और सच्ची खुशी की खोज में। ये सभी ईश्वर में विश्वास और उसके ज्ञान की निश्चितता के माध्यम से संभव हैं, और उसी पर आधारित हैं।

कभी-कभी इनाम की अनुपस्थिति भी एक इनाम होती है

स्मरण शक्ति एक वरदान है, किन्तु विपत्ति के समय एक अनैतिक, असावधान व्यक्ति के लिए विस्मृति अधिक अच्छी होती है।

विस्मृति भी एक वरदान है; यह व्यक्ति को केवल दुःख ही सहने की अनुमति देती है। यह न केवल वर्तमान को बल्कि संचित दुखों को भी भुला देता है।

हर विपत्ति में एक इनाम छिपा है

हे विपत्तिग्रस्त! विपत्ति के भीतर एक उपहार छिपा है। ध्यान से देखो और तुम उसे देखोगे!

जैसे हर चीज़ में कुछ हद तक गर्मी होती है, वैसे ही हर विपत्ति में कुछ हद तक उदारता भी होती है। एक बड़ी विपत्ति पर विचार करें और फिर छोटी विपत्ति में उदारता की सीमा देखें,

और परमेश्वर को बहुत धन्यवाद दो। क्योंकि यदि तुम किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहने से डर जाओगे, और शिकायतों से उसे बढ़ा दोगे, तो वह बढ़ती जाएगी।

और जैसे-जैसे यह बढ़ता जाएगा, यह और भी बदतर होता जाएगा। अगर आप इसके बारे में चिंता करेंगे, तो यह दोगुना हो जाएगा। आपके दिल में इसकी छवि हकीकत में बदल जाएगी।

विपत्ति वास्तविकता से सीख लेगी, फिर आप पर आक्रमण करेगी और आपके हृदय पर प्रहार करना शुरू कर देगी...

महत्वपूर्ण मत दिखो, नहीं तो अपमानित हो जाओगे

हे अहंकारी और घमंडी दिमाग वाले! तुम्हें इस कसौटी को समझना और उस पर विचार करना चाहिए: मानव समाज में, मानव समुदाय की सामाजिक संरचना में, हर किसी के पास एक खिड़की होती है, जिसे स्थिति के रूप में जाना जाता है, जिसके माध्यम से देखा जा सकता है और देखा जा सकता है।

अगर खिड़की किसी व्यक्ति की ऊंचाई (कद या मूल्य) से ऊंची है, तो वह गर्व के कारण लंबा (या उससे भी लंबा) दिखने की कोशिश करेगा। लेकिन अगर खिड़की किसी व्यक्ति की ऊंचाई (कद या मूल्य) से ऊंची है, तो वह गर्व के कारण लंबा (या उससे भी लंबा) दिखने की कोशिश करेगा।

वे अपनी ऊंचाई (अपने कद या ईश्वर और लोगों के लिए उनके प्रयासों की सीमा) से कम होंगे, वे विनम्रता से झुकेंगे और सिर झुकाएंगे।

परिपक्व और सिद्ध व्यक्ति में महानता का मापदंड यह जानना है कि वह निम्न कोटि का है। जबकि दोषपूर्ण व्यक्ति में निम्न कोटि का माप महानता का दिखावा करना है।

गुण स्थान बदलते हैं तो स्वभाव भी बदल जाता है

एक गुण - अलग-अलग स्थानों पर कभी राक्षस, कभी देवदूत, कभी पुण्यात्मा, कभी दुष्ट - कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

यदि कोई गुण जो बलवान या शक्तिशाली के समक्ष कमजोर के लिए गरिमा या आत्म-सम्मान के रूप में माना जाता है, वह बलवान या शक्तिशाली में पाया जाता है, तो वह गर्व और अहंकार है।

यदि कोई विशेषता मजबूत या शक्तिशाली लोगों के लिए विनम्रता के रूप में मानी जाती है
इससे पहले कि कमज़ोर को कमज़ोर में पाया जाए, यह आत्म-हीनता और पाखंड है।

अपने कार्यालय में, अधिकार प्राप्त व्यक्ति की गंभीरता गरिमा है, और उसका आत्म-शून्य होने का भाव आत्म-हीनता है। लेकिन अपने घर में, उसका आत्म-शून्य होने का भाव विनम्रता है और उसका गुरुत्वाकर्षण अहंकार है।

अपने आप में सहनशीलता अच्छी बात है, लोक-हितैषी होना तथा त्याग करना भी अच्छा कर्म है, प्रशंसनीय गुण है।

हालाँकि, जब दूसरों के लिए किया जाता है, तो किसी की सहिष्णुता विश्वासघात है, और किसी का बलिदान एक दुष्ट गुण या कार्य है।

सभी आवश्यक उपाय करने और सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करने से पहले किसी मामले की सफलता को ईश्वर पर छोड़ देना आलस्य है, जबकि जो कुछ किया जाना चाहिए और किया जा सकता है, वह सब करने के बाद वांछित परिणाम की प्राप्ति को ईश्वर पर छोड़ देना, उस पर भरोसा करना है, जैसा कि शरीयत ने हमें सिखाया है।

अपने भाग्य से या अपने प्रयासों के बाद प्राप्त परिणामों से संतुष्ट होना प्रशंसनीय संतोष है, तथा यह आगे और प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है, तथा व्यक्ति की ऊर्जा को पुनः सक्रिय करता है।

लेकिन जो कुछ पहले से ही है, उससे संतुष्ट रहना वांछनीय संतुष्टि नहीं है; बल्कि, यह आवश्यक प्रयास की कमी है। इसके कई अन्य उदाहरण हैं।

कुरान में आम तौर पर अच्छे कामों, धर्मपरायणता और धार्मिकता का उल्लेख किया गया है, लेकिन उन्हें परिभाषित नहीं किया गया है। उन्हें अपरिभाषित करके, यह परिस्थितियों के परिभाषित महत्व की ओर संकेत करता है; इसका संक्षिप्त होना वास्तव में एक विस्तृत व्याख्या है और इसका मौन, एक विस्तृत शब्द है।

"सत्य की जीत होती है" यह बात अपने आप में और परिणामों के संदर्भ में भी सत्य है

मित्र! एक बार एक प्रश्नकर्ता ने पूछा था: "जब 'सत्य की जीत होती है' तो फिर अविश्वासियों को मुसलमानों पर विजय क्यों मिलती है और बल या ताकत को अधिकार पर विजय क्यों नहीं मिलती?"

मैंने कहा: इन चार बिंदुओं पर विचार करो और तुम्हारी कठिनाई हल हो जाएगी। पहली बात यह है कि हर सत्य और अधिकार तक पहुँचने का हर साधन हर समय सत्य और उचित नहीं हो सकता।

इसी तरह, हर झूठ का हर साधन झूठा नहीं होना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि एक साधन जो (झूठ का उपयोग करता है और) सत्य होता है, वह झूठे साधन (जिसका उपयोग सत्य या अधिकार करता है) पर हावी हो जाता है। इस स्थिति में, सत्य पर झूठ हावी हो जाता है। लेकिन यह अस्थायी और अप्रत्यक्ष रूप से हुआ है, अनिवार्य रूप से या स्थायी रूप से नहीं।

हालाँकि, अंतिम विजय हमेशा सत्य की ही होती है। (यह भी नहीं भूलना चाहिए कि) बल में सत्य होता है, और उसके निर्माण में एक उद्देश्य और अर्थ होता है। दूसरी बात यह है:

यद्यपि यह अनिवार्य है कि सभी मुसलमानों की सभी विशेषताएं मुस्लिम हों,
वास्तविकता यह है कि हमेशा ऐसा नहीं हो सकता।

इसी प्रकार, सभी अविश्वासियों के सभी गुण एक जैसे नहीं होते।
अविश्वास से उत्पन्न या उनके अविश्वास से उत्पन्न।

उसी तरह, सभी पापी अपराधियों के सभी गुण एक जैसे नहीं हो सकते।
पापपूर्ण होना आवश्यक नहीं है, न ही यह आवश्यक है कि वे सदैव पाप से ही उत्पन्न हों।

इसका मतलब यह है कि एक नास्तिक की मुस्लिम विशेषता एक मुसलमान की अधार्मिक विशेषता पर हावी हो जाती है। अप्रत्यक्ष रूप से और साधनों के कारण, नास्तिक आस्तिक पर हावी हो सकता है।

इसके अलावा, इस दुनिया में जीवन का अधिकार सर्वव्यापी है। जीवन - सार्वभौमिक दया की सार्थक अभिव्यक्ति - में ज्ञान का एक उदाहरण है, जिसे अविश्वास बाधित नहीं कर सकता।

तीसरी बात यह है कि सर्वशक्तिमान की पूर्णता के दो गुण दो प्रकार के नियमों को जन्म देते हैं। एक है जीवन या ब्रह्मांड की रचना और संचालन का शरीयत, जो इच्छा के गुण से उत्पन्न होता है; और दूसरा, प्रसिद्ध शरीयत, जो वाणी के गुण से उत्पन्न होता है।

जिस प्रकार सुप्रसिद्ध शरीयत के आदेशों या कानूनों का पालन किया जाता है या
इसी प्रकार लोग जीवन के शरीयत का पालन या अवज्ञा करते हैं।

पहले वाले का पुरस्कार और दंड अधिकतर परलोक में मिलता है, जबकि दूसरे वाले का दंड और पुरस्कार अधिकतर इसी संसार में भोगना पड़ता है।

उदाहरण के लिए, धैर्य का पुरस्कार सफलता है, जबकि आलस्य का दंड अभाव है; और श्रम का पुरस्कार धन है।

दृढ़ता का पुरस्कार विजय है, विष का दण्ड है
बीमारी और उसके मारक का पुरस्कार स्वास्थ्य है।

कभी-कभी दोनों शरीयत के आदेश एक ही चीज़ में लागू होते हैं; इसमें दोनों से संबंधित पहलू होते हैं।

इसका मतलब है, जीवन के नियमों का पालन करना एक सत्य है, और आज्ञाकारिता
प्रबल है, जबकि इसकी अवज्ञा एक गलत रवैया है।

अगर सत्य किसी झूठ का साधन रहा है, तो जब वह प्रबल होगा तो वह झूठ का सच्चा साधन होगा। यह सत्य की हार का एक उदाहरण है, जो साधनों के कारण झूठ से हार गया। यह सत्य की हार नहीं है।

परिणामस्वरूप, “सत्य की जीत होती है” का अर्थ है: “सत्य विजयी होता है
अनिवार्य रूप से या अपने आप में।" इसके अलावा, अंत या परिणाम का इरादा है।

चौथा बिन्दु यह है कि सत्य में क्षमता बनी हुई है या वह शक्तिहीन है, मिलावटी है या दूषित है। उसे विकसित करने या नई ताकत देने की जरूरत है।

इसे सुधारने और चमकाने के लिए, झूठ को अस्थायी रूप से इस पर हमला करने की अनुमति दी जाती है, ताकि सत्य का जितना भी शुद्ध सोना चाहिए वह बिना मिलावट के निकल आए।

इस संसार में यदि प्रारम्भ में मिथ्यात्व विजयी भी हो जाए, तो भी वह युद्ध में विजय नहीं पा सकता। अन्तिम (सुखद) परिणाम ईश्वरभक्त, धर्मात्मा पुरुषों के पक्ष में ही होता है।
उस पर प्रहार होगा!

इस प्रकार असत्य की पराजय होती है। "सत्य की जीत होती है" का सत्य उसे दण्ड देता है। देखिए: सत्य की विजय होती है।

कुछ सामाजिक सिद्धांत

यदि आप सामाजिक जीवन के लिए कुछ सिद्धांत चाहते हैं तो वह न्याय जो समतावादी नहीं है, न्याय नहीं है।

समान आयु और स्थिति या सामाजिक प्रतिष्ठा प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष का कारण बनती है।
पूरक और अनुरूप होना एकजुटता का आधार है।

हीन भावना अहंकार को जन्म देती है। कमजोर चरित्र अहंकार का स्रोत है। नपुंसकता विरोध को जन्म देती है।

जिज्ञासा ज्ञान की शिक्षक है। आवश्यकता गुरु और पहिया है
प्रगति की। ऊब और संकट अपव्यय के शिक्षक हैं।

इस प्रकार, अपव्यय का स्रोत दुःख और ऊब है। जहाँ तक दुःख का प्रश्न है, उसका स्रोत निराशा, निराशावाद और अनिष्ट-संदेह है, साथ ही विचारों में भटकाव, हृदय में अंधकार और शरीर का दुरुपयोग है।

निम्न सभ्यता ने महिलाओं के प्रति सम्मान को नष्ट कर दिया है

जब मूर्ख पुरुष अपनी कल्पनाओं का अनुसरण करके स्त्रियोचित बन जाते हैं,
विद्रोही महिलाएं निर्लज्जता के माध्यम से मर्दाना बन जाती हैं।

निम्न सभ्यता ने महिलाओं को सामान्य वस्तु बना दिया है तथा उनके प्रति सम्मान को नष्ट कर दिया है।

इस्लाम की शरीयत दयालुतापूर्वक कहती है कि यह (मूल रूप से) उनके घर हैं जहाँ महिलाओं को सच्चा सम्मान मिलेगा; उनके घरों में, पारिवारिक जीवन में, वे
आरामदायक हैं.

स्वच्छता उनका श्रृंगार है, उनकी भव्यता उनके अच्छे चरित्र में है, उनकी शालीन सुंदरता उनकी पवित्रता में है, उनकी सच्ची पूर्णता उनकी करुणा में है, और उनके बच्चे उनका विश्राम और आनंद हैं।

मनोरंजन।

भ्रष्टाचार के इतने सारे साधनों के सामने, भ्रष्टाचार से अप्रभावित रहने के लिए व्यक्ति को इस्पात की तरह मजबूत और अडिग रहना होगा।

यदि कोई सुन्दर स्त्री "भाइयों" की सभा में प्रवेश करती है, तो दिखावा, प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या और स्वार्थ की भावना जागृत होती है। सोई हुई कल्पनाएँ और वासनाएँ अचानक जाग उठती हैं।

महिलाओं की अनियंत्रित स्वतंत्रता ने अचानक जागृति और
मानव जाति में बुराइयों की वृद्धि।

वे छोटे-छोटे शव जिन्हें चित्र कहा जाता है, वे मुस्कुराती हुई लाशें, आधुनिक मनुष्य की आत्मा को क्रुद्ध और क्रोधी बनाने में महत्वपूर्ण और भयानक भूमिका निभाती हैं।32

32 जिस प्रकार किसी स्त्री के मृत शरीर को वासना से देखना अद्वितीय नीचता का प्रतीक है, उसी प्रकार दया की आवश्यकता वाली स्त्री के सुंदर चित्र को वासना से देखना, जो उसे शव के समान बनाता है, आत्मा की उदात्त भावनाओं को समाप्त कर देता है।

निषिद्ध मूर्ति या तो पत्थर की तरह अत्याचार है, या पाखंड का मूर्त रूप है, या ठोस जुनून है। या यह एक ताबीज है जो इन दुष्ट आत्माओं को आकर्षित करता है।

विस्तार की प्रवृत्ति जो धर्मपरायण लोगों में नहीं होती भ्रष्टाचार और विनाश की प्रवृत्ति है

ऐ तुम जो इस्लाम में इज़्तिहाद (नया कानून) ढूँढ रहे हो ताकि इसकी सीमाएँ विस्तृत हो जाएँ! अपने शरीर पर ध्यान दो: अगर इसके विस्तार की प्रवृत्ति भीतर से आती है, तो यह इसके विस्तार की ओर ले जाती है; लेकिन अगर यह बाहर से आती है, तो यह आपकी त्वचा को फाड़ देती है।

इसी प्रकार, एक व्यक्ति ईमानदारी से इस्लाम के आवश्यक और बुनियादी आदेशों की पुष्टि करता है और उनका पूरी तरह से पालन करता है: ऐसे व्यक्ति में विस्तार की प्रवृत्ति पूर्णता की प्रवृत्ति है।

हालाँकि, यही प्रवृत्ति किसी अन्य व्यक्ति में, जो इस्लामी मूल सिद्धांतों के पालन के दायरे से बाहर है और उनके प्रति उदासीन है, भ्रष्टाचार और विनाश की प्रवृत्ति है।

इस समय, जब बार-बार "तूफानों" और "भूकंपों" से पीड़ित होने के कारण, नए कानूनों के लिए दरवाजे खोलने की नहीं, बल्कि खिड़कियों को बंद करने की आवश्यकता है।

जो लोग धर्म के प्रति लापरवाह और उदासीन हैं, उन्हें कोई छूट नहीं दी जानी चाहिए; बल्कि उन्हें कड़ी चेतावनी दी जानी चाहिए और अधिक भारी जिम्मेदारी और अधिक सावधानी के साथ जागृत किया जाना चाहिए।

दैवी शक्ति का दायरा मध्यस्थों और सहायकों को अस्वीकार करता है

सर्वशक्तिमान महामहिम के लिए, उनकी शक्ति के नियंत्रण और संचालन के दायरे के संबंध में, हमारा सूर्य एक कण के समान है।

प्राणियों के एक ही क्षेत्र में परमेश्वर की शक्ति के नियंत्रण और संचालन की विशालता की कुछ झलक पाने के लिए, दो परमाणुओं के बीच गुरुत्वाकर्षण को लीजिए, और फिर इसे सूर्यों के सूर्य और आकाशगंगा के बीच गुरुत्वाकर्षण के पास रख दीजिए।

एक देवदूत जिसका भार एक बर्फ का टुकड़ा है, को एक सूर्य-समान देवदूत के पास लाओ जो सूर्य को धारण करता है; एक व्हेल के बगल में एक सुई-मछली रखो;

फिर एक बार शाश्वत सर्वव्यापी की विशाल अभिव्यक्ति पर विचार करें-

शक्तिशाली, महिमावान और छोटी से लेकर बड़ी चीज़ों में असीम रूप से परिपूर्ण “कारीगरी”।

गुरुत्वाकर्षण, चालकता, पारगम्यता या व्यापकता और नियम जैसी परिचालित चीजें - ये केवल उसकी शक्ति की अभिव्यक्तियों और उसकी बुद्धि के उदाहरणों के नाम हैं;

उनका कोई और अर्थ या कार्य नहीं हो सकता और वास्तव में उनका कोई और अर्थ या कार्य नहीं हो सकता। उनके बारे में एक साथ सोचें और आप निश्चित रूप से समझ जाएंगे कि कुशल या रचनात्मक कारणों और साधनों के अस्तित्व का दावा करना और उन्हें सहायक और साझेदार बताना सब झूठ है, उस शक्ति के सामने सब कुछ भ्रामक और भ्रामक है। जीवन अस्तित्व की पूर्णता है; इसका स्थान महान और महत्वपूर्ण है। इसलिए, मैं कहता हूं:

पृथ्वी, हमारा संसार, एक आज्ञाकारी, अधीनस्थ इकाई, एक विनम्र जानवर की तरह क्यों नहीं होना चाहिए?

अनन्त सम्राट के पास अंतरिक्ष के क्षेत्र में इस प्रकार के अनेक उड़ने वाले जानवर हैं, और वे शानदार और सुंदर हैं।

उसने उन्हें सृष्टि के बगीचे में फैला दिया है, और उन्हें निरंतर गतिशील बनाए रखा है। अंतरिक्ष में रहने वालों के गीत और संसार में रहने वालों की गतिविधियाँ सभी महिमा के शब्द हैं, उस एक की पूजा के कार्य हैं जिसका कोई आदि और अंत नहीं है, वह शाश्वत और सर्वज्ञ है।

हमारी पृथ्वी एक सजीव प्राणी जैसी दिखती है जो जीवन के लक्षण प्रदर्शित करती है।
मान लीजिए असंभव बात यह है कि इसे अंडे के आकार तक घटा दिया गया,

यह संभवतः एक छोटा सा सूक्ष्म जीव बन जाएगा। यदि किसी सूक्ष्म जीव को पृथ्वी के आकार तक बड़ा कर दिया जाए, तो संभवतः वह पृथ्वी जैसा ही होगा।

यदि ब्रह्माण्ड को मनुष्य के आकार का कर दिया जाए, तथा उसके तारों को कण बना दिया जाए, तो सम्भव है कि वह एक चेतन प्राणी बन जाए; तर्क इस बात से इनकार नहीं करता।

इसका अर्थ यह है कि यह संसार अपने सभी भागों सहित सनातन ईश्वर का महिमामय सेवक है।
जीवित सृष्टिकर्ता, शाश्वत सर्वशक्तिमान, आज्ञाकारी और अधीन।

यह आवश्यक नहीं है कि कोई वस्तु गुणात्मक रूप से महान होने के लिए आकार में भी बड़ी हो, क्योंकि सरसों के दाने के आकार की घड़ी अयासोफिया (हागिया सोफिया) के आकार की घड़ी से अधिक प्रभावशाली होती है।

मक्खी की रचना हाथी जैसे भव्य प्राणी की रचना से कम नहीं, बल्कि शायद अधिक ही आश्चर्यजनक है।

यदि कुरान को इस संसार के किसी परमाणु पर ईथर के परमाणुओं में शक्ति की कलम द्वारा लिखा जाए, तो उसमें कला की दृष्टि से, उसके आकार के व्युत्क्रमानुपाती,

यह आकाश के तारों पर लिखी गई कुरान के बराबर होगी। शाश्वत लेखक की कला हर जगह अत्यंत सुन्दर और परिपूर्ण है।

हर जगह ऐसा ही है। पूर्णता की एक ही डिग्री की हर चीज़ कलम की एकता और इसलिए दिव्य एकता की घोषणा करती है। इस सबसे सार्थक टुकड़े का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें!

फ़रिश्ते एक समुदाय हैं जिन्हें सृष्टि की रचना और ब्रह्मांड के संचालन का दायित्व सौंपा गया है

दो दिव्य शरिया (कानूनों का समूह) हैं, जो दो दिव्य कानूनों से निकलते हैं।
विशेषताएँ; दो प्रकार के मनुष्यों को संबोधित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक के लिए एक व्यक्ति जिम्मेदार है:

ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन का शरिया, जो इच्छा के गुण से आगे बढ़ता है, ब्रह्मांड, वृहद मानव की परिस्थितियों और गतिविधियों को आदेश देता है, जो स्वैच्छिक नहीं हैं। यह भगवान की शाश्वत रूप से निर्धारित प्रणाली है, और इसे गलत तरीके से "प्रकृति" कहा जाता है।

शरीयत जो वाणी के गुण से निकलती है, वह कानूनों का समूह है जो मानवता, सूक्ष्म जगत के कार्यों को आदेश देता है, जो स्वैच्छिक हैं।
एकल.

कभी-कभी दोनों शरिया एक ही तरह के प्राणियों - ईश्वर के फ़रिश्ते - पर लागू होते हैं। वे एक शक्तिशाली समुदाय हैं, सर्वशक्तिमान की एक सेना।

वे आज्ञाकारी सेवक और कार्यकर्ता हैं, जो प्रथम शरीयत की पूर्ति के लिए जिम्मेदार हैं; वे प्रतिनिधि हैं, (ईश्वर के दरबार में निर्जीव, पौधे और पशु साम्राज्य की पूजा का प्रतिनिधित्व करते हैं)।

उनमें से कुछ लोग ईश्वर के उपासक हैं, अन्य लोग ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में लीन हैं, तथा उसके निकट उसके सर्वोच्च सिंहासन के चारों ओर स्थित हैं।

जैसे-जैसे पदार्थ परिष्कृत होता है, जीवन तीव्र होता जाता है

जीवन मौलिक है, बुनियादी है; पदार्थ इस पर निर्भर है और इसके अधीन है, और इसके माध्यम से जीवित रहता है। यदि आप एक सूक्ष्म जीव की तुलना उसकी पाँच इंद्रियों और मानव इंद्रियों से करें,

आप देखेंगे कि मनुष्य चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो
सूक्ष्म जीव होने के कारण उसकी इन्द्रियाँ भी उसी स्तर तक हीन होती हैं।

जीव अपने भाई की आवाज सुनता है, अपना भोजन देखता है। यदि उसे मनुष्य के आकार का कर दिया जाए तो उसकी इंद्रियाँ विस्मयकारी होंगी, उसका जीवन चकाचौंध होगा, और उसका दृश्य आकाश में चमकती बिजली के समान होगा।

व्यक्ति मृत पिंड से बना जीवित प्राणी नहीं है, बल्कि एक जीवित प्राणी है।
मानव कोशिका अरबों जीवित कोशिकाओं से बनी होती है।

मनुष्य यासिन के बड़े अक्षरों के समान है, जिसमें सुरतु यासिन अंकित है। कितना धन्य और सर्वोच्च है वह रचयिता ईश्वर, जो सर्वोत्तम और सबसे उपयुक्त रूप में सृजन करता है!

भौतिकवाद एक आध्यात्मिक विपत्ति है

भौतिकवाद एक आध्यात्मिक महामारी है। इसने मानवता को इस भयंकर बुखार से संक्रमित कर दिया है[33] - इसने उसे ईश्वरीय क्रोध और दंड के अधीन कर दिया है। लगातार शिक्षा और अनुकरण के माध्यम से,

और मानव जाति की आलोचना करने की क्षमता के विकास के अनुपात में,
यह महामारी और भी गंभीर हो गई है तथा व्यापक रूप से फैल रही है।

इसे विज्ञान द्वारा विकसित किया जाता है और सभ्यता के नाम पर इसका अनुकरण किया जाता है।

स्वतंत्रता ने आलोचना को जन्म दिया है, तथा सभ्यता के कारण उपजे अहंकार से गुमराही पैदा हुई है।

अस्तित्व में कुछ भी निष्क्रिय नहीं है; निष्क्रिय व्यक्ति अस्तित्वहीनता के कारण काम करता है

सबसे अधिक दुखी, दुखी और व्यथित व्यक्ति वह है जो निष्क्रिय रहता है।
क्योंकि आलस्य अस्तित्व के भीतर अस्तित्वहीनता है, जीवन के भीतर मृत्यु है।

जबकि परिश्रम या कड़ी मेहनत करना शरीर का जीवन और जीवन की जागृत अवस्था है!

सूद और ब्याज इस्लाम के लिए बिल्कुल हानिकारक हैं

सूदखोरी से आलस्य पैदा होता है और काम के प्रति उत्साह खत्म हो जाता है।

बैंकों का मुनाफा, जो सूदखोरी के द्वार और उसके अड्डे हैं,
हमेशा मानव जाति के सबसे बुरे लोगों, काफिरों के लिए।

इसका लाभ काफिरों को मिलता है, उनमें से सबसे बुरे लोगों को, अर्थात्
उत्पीड़कों.

[33] यहाँ लेखक प्रथम विश्व युद्ध का उल्लेख कर रहा है।

अत्याचारियों का लाभ सदैव उनमें से सबसे बुरे लोगों को मिलता है; अर्थात अत्याचारियों का लाभ सदैव उनमें से सबसे बुरे लोगों को मिलता है।
यह इस्लाम की दुनिया के लिए बिल्कुल हानिकारक है।

शरिया न तो किसी कीमत पर सभी मानव जाति की निरंतर समृद्धि की मांग करता है और न ही इसकी जिम्मेदारी लेता है। इस्लाम और मुसलमानों के साथ युद्ध करने वाले काफिर को सम्मान या कानूनी सुरक्षा नहीं मिलनी चाहिए।

कुरान अपनी रक्षा करता है और अपनी प्रामाणिकता कायम रखता है

मैंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा जो निराशा से ग्रस्त था और निराशावाद से बीमार था। उसने कहा: "विद्वानों की संख्या में कमी आई है, और मात्रा में यह कमी गुणवत्ता में कमी का कारण बनती है। मुझे डर है कि हमारा धर्म एक दिन खत्म हो जाएगा।"

मैंने उत्तर दिया: जब तक ब्रह्माण्ड नष्ट नहीं हो जाता, इस्लामी विश्वास कायम रहेगा।
ख़त्म नहीं होगा.

इसके अलावा, जब तक इस्लाम के सार्वजनिक चिह्न, धर्म की मीनारें, ईश्वरीय पूजा के स्थान, शरीयत की शिक्षाएं - ये सभी धरती में मजबूती से गाड़े गए खूंटों की तरह हैं - जब तक उन्हें बुझाया नहीं जाता, इस्लाम हमेशा चमकता रहेगा।

मस्जिदें प्रशिक्षक हैं, जो अपने अस्तित्व और प्रकृति के माध्यम से उन लोगों को शिक्षा देती हैं जो उनमें आते हैं। इस्लाम के सार्वजनिक चिह्न सभी शिक्षक बन गए हैं: अपने अस्तित्व और प्रकृति की भाषा के माध्यम से, वे विश्वासियों को प्रेरित करने में कभी विफल नहीं होते या भूलते नहीं हैं।

सभी निशानियाँ विद्वान शिक्षक हैं, जो लगातार इस्लाम की भावना की शिक्षा देते हैं जो लोग उन्हें देखते हैं, उनके लिए यह संसार सदियों तक बना रहता है।

इस्लाम की रोशनी मानो उसके सार्वजनिक चिन्हों में सन्निहित है; और इस्लाम का शुद्ध जल मानो उसके पूजा स्थलों में ठोस रूप में जम गया है, जिनमें से प्रत्येक विश्वास का मूर्त स्तंभ है।

इस्लाम के आदेश मानो सार्वजनिक चिह्नों में सन्निहित हैं; इस्लाम के स्तम्भ उसके क्षेत्र में दृढ़तापूर्वक स्थापित हैं - प्रत्येक एक हीरे जैसा स्तम्भ है, और उनके द्वारा पृथ्वी और आकाश एक दूसरे से बंधे हुए हैं।

विशेष रूप से, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान एक वक्ता है; यह लगातार एक शाश्वत प्रवचन देता रहा है - मुस्लिम भूमि के भीतर कोई भी गांव, कोई भी स्थान नहीं बचा है

जिसने न तो उसकी बात सुनी है, न उसकी शिक्षा सुनी है।
हम ही इसके रक्षक और संरक्षक हैं (15:9) के अर्थ के अनुसार , क़ुरआन को याद करना बहुत बड़ा स्थान है। इसे पढ़ना मनुष्यों और जिन्नों के लिए इबादत है।

इसका निरंतर पाठ इस्लाम के स्पष्ट, निर्विवाद मूल तत्वों की शिक्षा देता है और बार-बार उनकी याद दिलाता है; यह सैद्धांतिक विषयों को इतना स्पष्ट कर देता है कि उन्हें किसी और स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती।

धर्म के ये तत्व सैद्धांतिक बातें नहीं रह गए हैं और स्पष्ट, आसानी से समझ में आने वाली वास्तविकताएँ बन गए हैं। उनका ज़िक्र करना ही काफ़ी है; उन्हें याद दिलाना ही काफ़ी है। क़ुरआन हमेशा मरहम लगाने वाला (दिमाग, दिल और आत्मा के ज़ख्मों को भरने वाला) है।

इसके अलावा, इस्लाम के मूल तत्वों का लगातार उल्लेख और स्मरण कराने तथा इस्लामी पुनरुत्थान और सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने के माध्यम से, इन सभी मूल तत्वों के लिए साक्ष्य प्रत्येक के लिए साक्ष्य है।

इस्लाम में सामाजिक जीवन की शुरुआत होने के बाद से ही किसी व्यक्ति का विश्वास उसके अपने प्रमाणों तक सीमित नहीं है, न ही उसका विश्वास या विवेक केवल उन्हीं पर आधारित है। बल्कि, ये असंख्य प्रमाणों पर भी आधारित हैं जो समुदाय के सामान्य हृदय में स्थित हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि समय बीतने के साथ-साथ एक कमज़ोर विचारधारा को भी खत्म करना मुश्किल होता जा रहा है। तो इस्लाम के बारे में क्या, जो दो मज़बूत नींवों - रहस्योद्घाटन और जन्मजात मानवीय स्वभाव - पर आधारित है और जिसने कई शताब्दियों तक इतने प्रभावशाली ढंग से शासन किया है!

अपने दृढ़ सिद्धांतों, अपने गहन कार्यों के साथ, यह आधी दुनिया में समाहित हो गया है, एक स्वाभाविक आत्मा बन गया है। इसे कैसे ग्रहण किया जा सकता है, खासकर तब जब यह अभी-अभी एक अस्थायी ग्रहण से उभरा है?

अफसोस की बात है कि कुछ अपमानजनक काफिरों ने झूठ बोलकर हम पर हमला किया है। जब भी उन्हें मौका मिला, उन्होंने इस ऊंचे महल की मजबूत नींव को ढहा दिया।

वे इस्लाम की नींव हिलाने की कोशिश करते हैं। लेकिन इसके सिद्धांतों पर हमला नहीं किया जा सकता, न ही छेड़छाड़ की जा सकती। अब चुप हो जाओ, अधर्मी! वह बदमाश दिवालिया हो चुका है। अब बहुत हो गया अविश्वास और झूठ का यह प्रयोग!

कुफ्र की दुनिया के खिलाफ इस्लामी दुनिया का अग्रिम मोर्चा यही दारुलफुन्नुन था। 34 लेकिन हमारी उदासीनता और असावधानी के कारण, साँप जैसा दुश्मन हमारे विरुद्ध लड़ने में सक्षम हो गया।

मोर्चे के पीछे दरार खोलने के लिए; अधर्म ने हमला किया और राष्ट्र हिल गया। यह अग्रिम चौकी, यह जन्नत जैसा “बाग”, इस्लाम की आत्मा से रोशन,

---

[34] दारुलफुनुन ओटोमन काल के दौरान इस्तांबुल विश्वविद्यालय का नाम था। इस नाम का शाब्दिक अर्थ है विज्ञान का घर। (ट्र.)

इस्लाम के संबंध में यह सबसे दृढ़ और सबसे अधिक जागृत संस्था होनी चाहिए, अन्यथा इसे विज्ञान सदन के रूप में संदर्भित नहीं किया जा सकता।

इस्लाम को धोखा देना.

विश्वास का स्थान हृदय है; मन वह स्थान है जहाँ विश्वास का प्रकाश प्रतिबिम्बित होता है।

मन कभी योद्धा (झूठ से लड़ने वाला) होता है, कभी झाड़ू (संदेह दूर करने वाला) होता है; यदि मन के संदेह हृदय में प्रवेश न करें, तो विश्वास और विवेक कभी नहीं डगमगाएंगे।

यदि, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं, विश्वास मन में है, तो अनेक आधारहीन सम्भावनाएं (मन में घूमती रहती हैं) उस निश्चितता की निर्मम शत्रु बन सकती हैं, जो अनुभव पर आधारित है, जो विश्वास की आत्मा है।

हृदय और अंतःकरण विश्वास के स्थान हैं। अंतर्ज्ञान और प्रेरणा विश्वास के प्रमाण हैं। एक और इंद्रिय है जो विश्वास का मार्ग है।
35

विचार और बुद्धि, या मन, विश्वास के पहरेदार हैं।

सैद्धांतिक विषयों की शिक्षा की अपेक्षा, यह आवश्यक है लोगों को इस्लाम के स्पष्ट, निर्विवाद मूल तत्वों की याद दिलाना

धर्म के मूल तत्व, शरीयत के स्पष्ट, निर्विवाद मामले, लोगों के दिलों में मौजूद हैं; अगर लोगों को लगातार इनकी याद दिलाई जाए तो वे इनके प्रति पूरी तरह सचेत हो जाएंगे।

इस प्रकार वांछित परिणाम प्राप्त होता है। अरबी भाषा यह कार्य करती है
अधिक उत्कृष्ट ढंग से स्मरण दिलाना।

धर्मोपदेश में सैद्धांतिक विषयों की शिक्षा की आवश्यकता नहीं है।

इसके अलावा, अरबी प्रवचन इस्लाम के एकजुट चेहरे पर एकता की छाप है।

पैगम्बर की बातें (हदीसें) कुरान की आयतों से कहती हैं: आप तक पहुंचना संभव नहीं है!

यदि आप कुरान की आयतों और हदीसों की तुलना करें, तो आप स्पष्ट रूप से देखेंगे कि मानव जाति का सबसे वाक्पटु व्यक्ति, जो ईश्वरीय संदेश का वाहक है, भी वाक्पटुता में कुरान के स्तर तक नहीं पहुंच सका।

---

[35] छठी इंद्री से सईद नूरसी का तात्पर्य उन "इंद्रियों" या भरोसे और मदद मांगने के बिंदुओं से है जो मानव विवेक में समाहित हैं; उन्होंने रिसाले-ए नूर में कई जगहों पर इसका उल्लेख किया है। यानी, हर इंसान भरोसे या सहारे और मदद मांगने के बिंदुओं के अस्तित्व को महसूस करता है, जिसके ज़रिए वे भरोसा करने और मदद पाने की शक्ति की तलाश करते हैं, खास तौर पर विपत्तियों और असहायता के समय। इन इंद्रियों या बिंदुओं का अस्तित्व एक सर्वज्ञ और शक्तिशाली व्यक्ति के अस्तित्व को दर्शाता है। (अनुवाद)

कुरान उनकी कही बातों से मेल नहीं खाता। इसका मतलब यह है कि सारी बातें एक जैसी हैं। मुहम्मद की ज़बान से निकले शब्द उनके नहीं थे।36

कुरान की चमत्कारिकता का संक्षिप्त विवरण

एक बार मैंने एक सपना देखा: मैं माउंट अरारत के नीचे था। पहाड़ दक्षिण-
डेनली में विस्फोट हुआ, जिससे पूरे विश्व में पर्वतों के आकार की चट्टानें बिखर गईं और पूरा विश्व हिल गया।

तभी अचानक एक आदमी मेरे पास आया और मुझसे बोला, "कुरान की चमत्कारिकता के बारे में जो कुछ भी तुम्हें मालूम है, उसे संक्षेप में और सटीक रूप से समझाओ!"37

जब मैं अभी भी सपने में था, तब मैंने सपने के अर्थ के बारे में सोचा और
मैंने खुद से कहा: यहाँ विस्फोट मानव जाति में एक क्रांति का प्रतीक है।

इसके परिणामस्वरूप सत्य और असत्य के बीच की कसौटी (क़ुरआन) का मार्गदर्शन सर्वत्र प्रबल होगा, और वह शासन करेगा। और उसकी चमत्कारिकता को स्पष्ट करने का समय आएगा!

मैंने प्रश्नकर्ता से उत्तर में कहा: कुरान की चमत्कारिकता का मूल
सात सार्वभौमिक स्रोतों में या सात सार्वभौमिक तत्वों से बना है:

प्रथम स्रोत: यह इसकी प्रस्तुति का शानदार तरीका है जो इसके शब्दों की प्रवाह, इसके अर्थों की वाक्पटुता, इसकी अवधारणाओं की मौलिकता, इसकी भाषा की शुद्धता, इसके शब्द-क्रम की सुंदरता और इसकी शैलियों की विशिष्टता से उत्पन्न होता है।

इन सभी तत्वों के सम्मिलित होने से इसकी चमत्कारिकता भावों की एक अद्भुत कढ़ाई और एक मौलिक भाषाई कला को प्रकट करती है, इसलिए इसकी पुनरावृत्ति कभी भी थकाती या ऊबाऊ नहीं होती।

दूसरा (स्रोत या) तत्व: ब्रह्मांडीय घटनाओं के अंतर्निहित अदृश्य सिद्धांतों, और अदृश्य, रहस्यमय दिव्य सत्यों, और स्वर्ग में निहित अदृश्य वास्तविकताओं, और अतीत के पर्दे के पीछे अदृश्य हो चुकी घटनाओं, और भविष्य के पर्दे के पीछे अदृश्य रह जाने वाली बातों और घटनाओं से निर्मित,

---

36 अर्थात्, अपने स्वयं के कथनों (हदीसों) के अलावा, पैगम्बर मुहम्मद ईश्वर द्वारा अवतरित कुरान के भी संवाहक थे। (ट्र.)

कुरान की अद्वितीयता पर 37 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। यहाँ सैद नूरसी ने जो कहा है, वह बहुत ही संक्षिप्त सारांश है। कुछ हद तक इसे द ट्वेंटी-फिफ्थ वर्ड इन द वर्ड्स में उदाहरणों के साथ समझाया गया है। (अनुवाद)

कुरान अदृश्य की भाषा है; यह दृश्यमान, भौतिक दुनिया से बात करती है, अदृश्य के कुछ मामलों को सूक्ष्म, गहन और प्रतीकात्मक अभिव्यक्तियों के साथ प्रकट करती है। यह मानव जाति को संबोधित करती है। यह इसकी चमत्कारिकता की एक और झलक है।

तीसरा स्रोत: कुरान में पांच पहलुओं में असाधारण व्यापकता है: इसके शब्द, अर्थ, आदेश, ज्ञान और इसके उद्देश्यों में संतुलन।

इसकी शब्दावली: इसमें अभिव्यक्ति के अनेक विविध तरीके हैं तथा इसके शब्दों में विभिन्न पहलू हैं, जिनमें से प्रत्येक वाक्पटुता की दृष्टि से स्वीकार्य, व्याकरणिक रूप से सही तथा कानून बनाने के लिए पूर्णतः उपयुक्त है।

इसका अर्थ है: कुरान की व्याख्या की चमत्कारिकता एक साथ सभी संतों के तरीकों, ईश्वर के ज्ञान में पारंगत लोगों की रोशनी, सूफी मार्ग का अनुसरण करने वालों के स्कूल, धर्मशास्त्रियों के तरीके और दार्शनिकों के मार्गों को समझती और समाहित करती है।

कुरान में जो कुछ कहा गया है उसकी सीमा और विविधता, तथा इसके अर्थों का विस्तार: यदि आप इस खिड़की से देखें, तो आप पाएंगे कि इसका क्षेत्र कितना व्यापक है!

इसके आदेशों का दायरा: कुरान से अद्भुत शरीयत जारी की गई है; इसके आदेश एक ही समय में दोनों दुनियाओं में खुशी के लिए आवश्यक सिद्धांतों, मोक्ष और सुरक्षा के साधनों, सामाजिक जीवन के संबंधों, शिक्षा के तरीकों और परिस्थितिजन्य वास्तविकताओं के प्रति जवाबदेही को कवर करते हैं।

इसके ज्ञान की गहनता: कुरान विभिन्न स्तरों पर, संकेतों और संकेतों के साथ, भौतिक विज्ञानों और ईश्वरीय विज्ञानों दोनों का उल्लेख या संकेत करता है; कुरान अपने सूराओं के महलों के भीतर सभी प्रकार के ज्ञान के स्वर्गीय उद्यानों को एक साथ लाता है।

अपने लक्ष्यों और प्रयोजनों में , कुरान में पूर्ण संतुलन और नियमित अनुक्रम है, और यह सृष्टि के मूल ईश्वरीय पैटर्न और प्रणाली के सिद्धांतों के पूर्णतः अनुरूप और सहमत है, और इसने उनके संतुलन को संरक्षित रखा है।

इसके शब्दों की व्यापकता, इसके अर्थों की व्यापकता, इसके आदेशों का दायरा, इसके ज्ञान की गहनता और इसके उद्देश्यों के संतुलन में इसकी शानदार व्यापकता को देखिए।

चौथा (स्रोत या) तत्व: कुरान अपनी क्षमता के अनुसार हर युग को भरपूर, प्रकाशवान उपहार और आशीर्वाद प्रदान करता है।

समझ और साहित्यिक स्तर पर तथा सभी वर्गों के लोगों पर उनकी क्षमताओं और योग्यताओं के अनुसार प्रभाव डाला जाएगा।

इसका द्वार हर युग और हर वर्ग के लिए खुला है। ऐसा लगता है मानो यह दयालु की वाणी हर क्षण, हर स्थान पर ताज़ा रूप से प्रकट होती है।

जैसे-जैसे समय बीतता है, कुरान युवा होता जाता है; इसके संकेत और प्रतीक अधिक स्पष्ट और प्रत्यक्ष होते जाते हैं; ईश्वरीय संदेश प्रकृति और कारणों के पर्दे को फाड़ देता है (प्रकृति और "प्राकृतिक" कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देते हुए)।

कुरान में ईश्वरीय एकता का प्रकाश हर आयत से लगातार फूटता रहता है। यह अदृश्य से दृश्यमान, भौतिक दुनिया का पर्दा उठाता है। इसके संबोधन की महानता मनुष्यों को सावधान रहने के लिए आमंत्रित करती है।

कुरान अदृश्य की भाषा है, जो दृश्यमान, भौतिक दुनिया से बात करती है। इसी स्रोत से इसकी असाधारण ताज़गी निकलती है, यह अर्थों का एक सर्वव्यापी महासागर है।

कुरान में मानव मन के लिए ईश्वरीय कृपा शामिल है ताकि वे उससे परिचित हो सकें। विभिन्न रूपों में इसकी शैलियों की प्रवाहशीलता इसे मनुष्यों और जिन्नों के लिए प्यारा बनाती है।

पांचवां स्रोत: कुरान अपने सभी वर्णनात्मक विवरणों और उनमें निहित घटनाओं को उनके आवश्यक बिंदुओं के साथ जोड़ता है और इन्हें एक मौलिक, सार्थक शैली में प्रस्तुत करता है, मानो घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन कर रहा हो।

अतीत की घटनाओं के इन वर्णनात्मक विवरणों के माध्यम से, कुरान मानव जाति को चेतावनी देता है। यह भूतपूर्व लोगों और उनके अनुभवों, भविष्य के लोगों और उनके अनुभवों, नरक और स्वर्ग के बागों के रहस्यों के बारे में बताता है।

और अदृश्य की सच्चाई, दृश्यमान रहस्य, भौतिक दुनिया, ईश्वरीय रहस्य, और सृष्टि और ब्रह्मांड के बंधन। इसके वर्णन की शैली से ऐसा लगता है कि कुरान वही बताता है जो वह देखता है।

न तो समय और न ही समय के साथ खोजे गए तथ्य इस बात का खंडन कर पाए हैं
और न तर्क कभी कुरआन की सच्चाइयों का खंडन करता है। और जो दूसरी किताबें अवतरित हुई हैं, उनका संसार आदर करता है।

कुरान उन बिंदुओं को पुष्टिकारक ढंग से बताता है जिन पर वे सहमत हैं, और जिन विषयों पर वे मतभेद रखते हैं उन्हें सुधारात्मक शैली में उल्लेख करता है। यह सारा ज्ञान और ये तर्क आपस में संबंधित हैं या इनके द्वारा बताए गए हैं।

कोई “अनपढ़”: यह सभी समय का आश्चर्य है!

छठा (स्रोत या) तत्व: कुरान इस्लाम धर्म का संस्थापक है और इसमें इस्लाम समाहित है। यदि आप समय और स्थान पर विचार करें, तो न तो अतीत इस्लाम जैसा कुछ पैदा करने में सक्षम था, न ही भविष्य।

यह एक स्वर्गीय रस्सी है जो पृथ्वी को उसकी वार्षिक और दैनिक कक्षाओं में रखती है, उसे घुमाती है। यह पृथ्वी पर सवार होकर उसे नीचे गिराती है, उसे विद्रोह (अपने कर्तव्य के विरुद्ध) करने नहीं देती।

सातवां स्रोत: इन छह स्रोतों से निकलने वाली छह ज्योतियाँ एक दूसरे के भीतर विद्यमान रहती हैं, और इन्हीं से सौंदर्य उत्पन्न होता है, और इसी सौंदर्य से अंतर्ज्ञान, समझने का एक प्रकाशमान साधन निकलता है।

इससे एक ऐसा आनन्द उत्पन्न होता है जो अपनी चमत्कारिकता के व्यापक आनन्द की सेवा करता है, किन्तु इसका वर्णन करने के लिए हमारी भाषा अपर्याप्त है, मन भी अपर्याप्त है। वह दिव्य तारा (अपनी वाणी में आनन्द का) दिखाई तो देता है, किन्तु उसे हाथ में नहीं पकड़ा जा सकता।

तेरह शताब्दियों से कुरान के शत्रु उसे चुनौती देने की कोशिश करते रहे हैं, जबकि उसने अपने मित्रों में अनुकरण की इच्छा जगाई है। यह भी इसकी चमत्कारिकता का प्रमाण है।

इन दोनों के परिणामस्वरूप अरबी में लाखों पुस्तकें लिखी गई हैं।

तीव्र इच्छाएँ, और अस्तित्व के पुस्तकालय में प्रवेश कर चुके हैं।

यदि उनकी तुलना ईश्वर के रहस्योद्घाटन, कुरान से की जाए, यदि उन्हें तराजू पर तौला जाए, तो न केवल विद्वान, बल्कि सबसे आम लोग भी, जो केवल अपनी आंखों और कानों से निर्णय करते हैं, घोषणा करेंगे: "यह स्वर्गीय है; वे मानव हैं!"

वे यह भी निष्कर्ष निकालेंगे: "यह उनसे मिलता-जुलता नहीं है, यह उसी वर्ग का नहीं है। यह या तो उन सभी से कमतर है - और यह स्वतः स्पष्ट है

सच नहीं है – या

"यह उन सभी से श्रेष्ठ है।" अपने अवतरण से इतने लम्बे समय के दौरान, कुरान के अर्थ हमेशा मानव जाति के लिए खुले रहे हैं; इसने आत्माओं और मनों को अपने पास बुलाया है!

मानव जाति ने इन अर्थों को अपनाया है, लेकिन वह अभी तक कुरान के अर्थों का विरोध नहीं कर पाई है; मानवता ऐसा कभी नहीं कर पाएगी; अब परीक्षा का समय बीत चुका है।

कुरान किसी भी अन्य पुस्तक से मिलता जुलता नहीं है, इसकी तुलना उनसे नहीं की जा सकती। क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान के कारण इसे आवश्यकता के अनुसार तथा विभिन्न भागों में, बीस वर्षों से अधिक समय में, भाग-भाग करके अवतरित किया गया।

कुरान को विभिन्न अवसरों पर अवतरित किया गया; विभिन्न और बार-बार पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर देने के लिए, तथा अनेक और विविध अवसरों और परिस्थितियों से संबंधित निर्णयों को कानून बनाने के लिए।

सभी स्थितियां अलग-अलग थीं।

जिन परिस्थितियों में कुरान प्राप्त हुआ और संप्रेषित हुआ, वे विविध और विविधतापूर्ण थीं; जिन समूहों को यह संबोधित कर रहा था, वे असंख्य और एक दूसरे से दूर थे; इसके मार्गदर्शन के लक्ष्य असंख्य और भिन्न-भिन्न स्तर के थे।

इन आधारों पर आधारित, कुरान व्याख्या करता है, शिक्षा देता है, उत्तर देता है, कानून बनाता है, आदेश देता है, मना करता है, सलाह देता है, याद दिलाता है, चेतावनी देता है, प्रशंसा करता है, प्रोत्साहित करता है, निंदा करता है और रोकता है। फिर भी इसके बावजूद, कुरान वाक्पटुता, प्रवाह, पारस्परिक अनुपात और सामंजस्य में परिपूर्ण है। बयानबाजी, वाक्पटुता और ललित कला के विज्ञान इसकी गवाही देते हैं।

कुरान की एक अनूठी विशेषता है; भाषण के किसी भी अन्य रूप में यह विशेषता नहीं है। यदि आप कोई भाषण सुनते हैं, तो आप उसके पीछे वक्ता (या लेखक) को देखेंगे, या आप उन्हें उसके भीतर पाएंगे: शैली उस व्यक्ति का दर्पण है जो लिखता या बोलता है।

कुरान स्पष्ट रूप से पैगंबर की ओर इशारा करता है, जो इसके संबोधित करने वाले हैं, जो वाणी के स्वामी के सामने एक पर्दा हैं। वाणी का स्वामी अद्वितीय रूप से अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी है, जिसके शब्द या प्रवचन अनंत और असंख्य हैं।

वह अतीत के अनन्त काल से लेकर भविष्य के अनन्त काल तक अपने सभी असंख्य अभिभाषकों को संबोधित करता है; तथापि, सर्वशक्तिमान की वाणी केवल सजीव, सीमित वाणी में ही सुनी जाती है।

यदि हमारे लिए उनके सभी अनंत शब्दों को एक साथ सुनना संभव होता, तो वे अपनी सारी बातें अपनी वाणी के एक ही रूप में कह सकते थे।

अथवा यदि उनके सभी सम्बोधितकर्ता ब्रह्माण्ड के सभी कणों से निर्मित एक कान होते - तो वह सार्वभौमिक कान, विश्वास का वह सार्वभौमिक प्रकाश, अंतःकरण में वह प्रेरणा,

सर्व-महिमावान के भाषण का प्रतिनिधित्व देखा होगा
अपने समस्त ऐश्वर्य और वैभव के साथ, अनंत भाषणों या शब्दों के पीछे या भीतर।

इसका मतलब यह है कि कुरान की शैलियों में भिन्नता इसलिए है क्योंकि कुरान में सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा और उनके नामों और गुणों की अभिव्यक्तियाँ शामिल हैं। यह कुरान में सन्निहित उनके भाषण के पीछे विश्वास के साथ देखने से पता चलता है।

हर व्यक्ति कह सकता है, "इस दुनिया में, जो बनाई गई और गर्म की जाती है और जैसे मेरा घर, सूरज, स्वर्ग की आंख, मुझ पर मुस्कुरा रहा है, रोशन हो गया।

"यदि ईश्वर ने इसे चेतना और वाणी दी होती, तो स्वर्ग की वह नाजुक, सुंदर इकाई मुझसे बात करती और दर्पण उसके साथ संचार का साधन होता।"

मन की स्वायत्तता प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार देती है, इसलिए वे यह भी कह सकते हैं, "मेरा प्रभु अपनी वाणी, कुरान के पीछे से मुझसे बात करता है; मैं अपने विश्वास के साथ एक दयालु प्रकाश को देखता हूँ।"

आत्मा वाले सभी प्राणी, यहाँ तक कि पूरा ब्रह्मांड भी एक साथ यह कह सकता है, क्योंकि उसके साथ संवाद करते समय कोई भीड़भाड़ या रुकावट नहीं होती है, (जैसे कि सूर्य से किसी का लाभ उठाना दूसरों को इससे लाभ उठाने से नहीं रोकता है)। कोई भी उस पर एकाधिकार नहीं कर सकता या उसे प्रतिबंधित नहीं कर सकता। वह समय और स्थान में सीमित नहीं है।

हे स्वप्न-प्रश्नकर्ता! तुमने संक्षिप्तता मांगी थी, इसलिए मैंने संकेत कर दिया है। यदि तुम विस्तृत व्याख्या चाहते हो, तो वह मेरी क्षमता से परे है!

एक मक्खी आकाश को देख या स्कैन नहीं कर सकती।

इसकी चमत्कारिकता के चालीस पहलुओं में से केवल एक ही है इसकी धाराप्रवाहता शब्द-क्रम; इसे इशारतुल-एजाज़ में पूरी तरह से समझाया नहीं जा सका ।[38]

इस हेतु मेरी यह लगभग दो सौ पृष्ठ की टिप्पणी अपर्याप्त है। बल्कि, मैं आपसे विस्तृत व्याख्या चाहता हूँ, क्योंकि आपकी आध्यात्मिक प्रेरणाएँ बहुत हैं।

का काल्पनिक, वासना-उत्तेजक, प्रतिभा-प्रभावित, सांसारिक हाथ पश्चिमी साहित्य कुरान के उपचारात्मक, प्रकाश-प्रसारक, मार्गदर्शक, स्वर्गीय, शाश्वत साहित्य की बराबरी नहीं कर सकता

परिपक्व और सिद्ध व्यक्ति की उच्च रुचि को भाने वाली कोई भी वस्तु बचकानी कल्पनाओं या उच्छृंखल स्वभाव को संतुष्ट नहीं करती।

इस कारण से, जो व्यक्ति नीच, लम्पट, शारीरिक और वासनापूर्ण सुखों के बीच पला-बढ़ा है, उसे आध्यात्मिक सुख का अनुभव नहीं होगा।

उपन्यासों पर आधारित और उनके द्वारा निर्मित परिप्रेक्ष्य में देखने पर, यूरोप से आया वर्तमान साहित्य, कुरान की उत्कृष्ट सूक्ष्मताओं या भव्य गुणों को न तो देख पाएगा और न ही अनुभव कर पाएगा।

---

[38] इशारतुल-एजाज़, फ़ातिहा (कुरान का पहला अध्याय) और सूरतुल-बक़रा की शुरुआती आयतों पर सैद नूरसी की टिप्पणी है। इसमें दो सौ से ज़्यादा पन्ने हैं।
यह कुरान को समझने और उस पर टिप्पणी करने की कुंजी है। (ट्र.)

यह साहित्य कुरान को अपने तराजू से नहीं तौल सकता, न ही माप सकता है। साहित्य तीन क्षेत्रों में घूमता है, वह इन्हीं सीमाओं के भीतर घूमता है:

या तो प्रेम और दु:ख, या वीरता और पराक्रम, या वास्तविकता का चित्रण।

यूरोप आधारित साहित्य सत्य की खोज नहीं करता या वीरता में अधिकार की प्रशंसा नहीं करता; बल्कि, यह क्रूरता की सराहना करके सत्ता की इच्छा पैदा करता है।

उत्पीड़कों.

जहाँ तक दु:ख और प्रेम का प्रश्न है, यह साहित्य सच्चे प्रेम से परिचित नहीं है; यह आत्मा में वासना-उत्तेजक रोमांच भर देता है।

वास्तविकता के चित्रण के मामले में, यह अविभाज्य नहीं दिखता है।

वह कविता को ईश्वरीय कला मानता है; वह इसे सर्व-दयालु की पेंटिंग के रूप में नहीं देखता है।

बल्कि, यह साहित्य कुरान को "स्वयं-अस्तित्व वाली प्रकृति" या प्रकृतिवाद के दृष्टिकोण से देखता है, और उसे इस प्रकार चित्रित करता है; यह स्वयं को इस सीमा से मुक्त नहीं कर सकता।

इस कारण से, ऐसा साहित्य प्रकृति के प्रति झूठा प्रेम पैदा करता है।

यह हृदय में भौतिकवाद से जुड़ी भावनाओं को रोप देता है, जिनसे वह स्वयं को आसानी से नहीं बचा सकता।

इसके अलावा, वह अशिष्ट साहित्य केवल भौतिकवाद से उत्पन्न भटकाव से उत्पन्न आत्मा के कष्ट के लिए एक शामक और मादक औषधि मात्र है; वह कोई उपचार प्रदान नहीं कर सकता।

इसका एक ही उपाय है, और वह है उपन्यास और कथा साहित्य। किताबें एनिमेटेड लाशें हैं, फ़िल्में चलती-फिरती लाशें हैं। मृतक जीवन नहीं दे सकते!

और रंगमंच - उसे अपनी इन तीन तरह की कल्पनाओं पर कोई शर्म नहीं आती

अतीत के रूप में जानी जाने वाली विशाल कब्र से “पुनर्जन्म” वाले भूतों जैसा।

इसने मानव जाति के मुँह में झूठी, झूठी जीभ डाल दी है, उसके चेहरे पर वासना भरी आँखें लगा दी हैं, संसार को लाल वस्त्र पहना दिया है, और शुद्ध सौंदर्य को नहीं पहचानता।

यदि साहित्य सूर्य की ओर संकेत करता है, तो वह पाठक के मन में एक सुन्दर गोरी अभिनेत्री की छवि प्रस्तुत करता है; किन्तु वह स्पष्टतः यह भी कहता है: "व्यभिचार बुरा है; यह मानवता के लिए उचित नहीं है।"

साहित्य में हानिकारक परिणामों का संकेत मिलता है। लेकिन इसके चित्रण इतने व्यभिचारी होते हैं कि मुँह में पानी आ जाता है और तर्क टिक नहीं पाता

नियंत्रण।

वे भूख जगाते हैं, इच्छा को उत्तेजित करते हैं, इस प्रकार भावनाएँ न तो सलाह पर ध्यान देती हैं और न ही चेतावनियों पर। हालाँकि, कुरान का साहित्य ऐसी कोई इच्छा नहीं जगाता;

यह सत्य के प्रति प्रेम और लगाव, शुद्ध सौंदर्य और उसमें आनंद के लिए जुनून और सत्य को प्राप्त करने और स्थापित करने का उत्साह प्रदान करता है। यह कभी धोखा नहीं देता।

कुरान ब्रह्मांड को "स्वयं-अस्तित्व वाली प्रकृति" या प्रकृतिवाद के दृष्टिकोण से नहीं देखता है; यह इसे ईश्वरीय कला के रूप में, दयालु ईश्वर की पेंटिंग के रूप में बताता है। यह मन को भ्रमित नहीं करता है।

यह सृष्टिकर्ता के ज्ञान का प्रकाश पैदा करता है। यह सभी चीज़ों में उसकी निशानियों को दर्शाता है। क़ुरआन और आधुनिक युग का साहित्य दोनों ही मार्मिक करुणा पैदा कर सकते हैं, लेकिन वे एक दूसरे से मिलते जुलते नहीं हैं।

यूरोप में जन्मा साहित्य एक दयनीय दुःख को उभारता है जो मित्रों के अभाव से, स्वामीहीन होने से उत्पन्न होता है; यह कोई ऊंचा दुःख नहीं है।

यह साहित्य बहरी प्रकृति और अंधी शक्ति से प्रेरित एक निराशाजनक उदासी है। यह दुनिया को एक उजाड़ बंजर भूमि के रूप में जानता और दिखाता है, किसी और तरह से नहीं।

साहित्य दुनिया को इसी तरह चित्रित करता है, और वह दुखी लोगों को, बिना मालिक के, अजनबियों के बीच छोड़ देता है, और उन्हें आशाहीन छोड़ देता है।

साहित्य ने उन्हें जो भावनात्मक भाव दिया है, उसके कारण वे धीरे-धीरे भटकाव की ओर बढ़ते हैं; इस प्रकार नास्तिकता का मार्ग खुल जाता है, जहाँ से लौटना कठिन होता है। शायद वे कभी वापस न लौटें।

जहाँ तक कुरान के साहित्य का सवाल है, यह दुख तो पैदा करता है, लेकिन यह प्रेम का दुख है, अनाथों का नहीं। यह दुख दोस्तों से बिछड़ने से पैदा होता है, उनके न होने से नहीं।

अंध प्रकृति के स्थान पर ब्रह्माण्ड के प्रति उसका दृष्टिकोण चेतन, मृदु है।
यह एक दिव्य कला है; यह "अंधे और बहरे" स्वभाव की बात नहीं करता है।

कुरान में अंधी ताकत के बजाय बुद्धिमान और दयालु ईश्वरीय शक्ति का वर्णन किया गया है। इसलिए, ब्रह्मांड एक उजाड़ बंजर भूमि का रूप नहीं लेता है।

वास्तव में, पवित्र शोक से ग्रस्त लोगों की दृष्टि में, जिनके लिए यह कुरान संबोधित है, कुरान मित्रों का एक समूह बन जाता है। हर तरफ आपसी प्रेम और सहानुभूति है, जो किसी भी प्रकार की परेशानी का कारण नहीं बनती।

हर कोने में मित्रता है, जो उस समाज में दुःखी लोगों को सहारा देती है।
यह एक उत्कट दुःख है, एक उन्नत भावना है, न कि एक हताश दुःख।

दोनों ही उत्सुकता को जन्म देते हैं। लेकिन विदेशी साहित्य द्वारा भड़काई गई उत्सुकता से शारीरिक आत्मा उत्तेजित हो जाती है, काल्पनिक इच्छाएँ उत्तेजित हो जाती हैं; आत्मा को कोई खुशी नहीं मिलती।

कुरान की उत्सुकता, हालांकि, आत्मा को उत्तेजित करती है, और व्यक्ति को ऊंचे लक्ष्यों की ओर प्रेरित करती है। यही कारण है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की शरिया न तो खेल की इच्छा रखती है और न ही मनोरंजन की।

उसने मनोरंजन के लिए कुछ वाद्यों को हराम करार दिया है और कुछ को अनुमति दी है। अर्थात् जो वाद्य कुरानिक शोक और उत्सुकता पैदा करते हैं, वे हानिकारक नहीं हैं।

लेकिन अगर ऐसा संगीत अनाथ के लिए निराशा भरा दुख या शारीरिक उत्तेजना और उत्सुकता पैदा करता है, तो उस वाद्य को प्रतिबंधित कर दिया जाता है। यह हर व्यक्ति में अलग-अलग होता है, हर कोई एक जैसा नहीं होता।

दो दृष्टिकोण हैं, एक अंधकारमय, दूसरा प्रकाशमय

दो दृष्टिकोण हैं, और दो तरह की जांच। एक जो उत्तरोत्तर प्रकाशित और उज्जवल होता जाता है, जबकि दूसरा जो उत्तरोत्तर संदेह में डूबता जाता है, जिसके परिणामस्वरूप मन अंधकारमय होता जाता है।

उदाहरण के लिए: एक स्रोत से सुखद, मीठा पानी बह रहा है। यह
हज़ारों नहरों में बहता है। कुछ जगहों पर इसमें गंदी चीज़ें मिल सकती हैं।

एक व्यक्ति स्रोत को देखता है, पानी का स्वाद लेता है, और समझ जाता है कि यह पानी है।
वे निष्कर्ष निकालते हैं कि गंदगी स्रोत से नहीं है।

जब भी कोई व्यक्ति किसी नहर या जलमार्ग से गुजरता है, तो पानी के शुद्ध और मीठे होने का छोटा सा संकेत ही उसे उसकी मूल मिठास और शुद्धता का एहसास करा देता है।

केवल एक निर्णायक, ठोस सबूत ही ऐसे संकेत का खंडन कर सकता है। तब व्यक्ति कहता है: "इस शुद्ध, मीठे पानी में कोई और पदार्थ मिल गया है।"

इस तरह की जांच से ईमान मजबूत होता है, दिल का विस्तार होता है और वह खुश होता है, और सच्चाई विकसित होती है और फलती-फूलती है। इसी शानदार नज़रिए को क़ुरआन ने प्रोत्साहित किया है।

दूसरा दृष्टिकोण दोषपूर्ण और हानिकारक है। मूर्ख व्यक्ति अपने साथ चलता है
स्रोत से शुरू करने के बजाय, इसे अनजाने में नहरों के चारों ओर फैला दिया जाता है।

उनकी नज़रें ज़मीन पर टिकी रहती हैं; जब भी उन्हें नहर मिलती है
और एक संदिग्ध संकेत देखें कि पानी कड़वा है,

उन्हें संदेह है कि पानी मीठा है। यह जानने के लिए कि पानी मीठा है या नहीं, वे निर्णायक प्रमाण की तलाश करते हैं।

वे एक विशाल, शुद्ध स्रोत से उत्पन्न जबरदस्त परिणाम को एक बहुत ही तुच्छ संकेत पर आधारित करना चाहते हैं।

उनका संदेह बढ़ता है (क्योंकि उन्हें बाहर से पानी में कुछ मामूली गंदगी मिलती है), और वे अपना पुराना विश्वास खोने लगते हैं, और निराधार संदेह का लक्ष्य बन जाते हैं। इस तरह के दृष्टिकोण का प्रतिफल त्रुटि में वृद्धि है।

उनकी बुद्धि दोषपूर्ण है, उनके द्वारा अपनाए गए सिद्धांत त्रुटिपूर्ण हैं, तथा उनकी समझने की क्षमता संकीर्ण है।

यदि वे सत्य तक नहीं पहुंच पाते, तो वे वापस लौटकर कहते हैं: “यह सत्य नहीं है,” तथा इसका खंडन और खंडन करते हैं।

कुर्दों के बीच एक कहावत है: एक भालू एक बेल के नीचे खड़ा था, और अंगूरों तक न पहुँच पाने के कारण बोला, "इन पर हाय! ये तो बदबूदार और खट्टे हैं!"

दया के नाम पर शाखाएँ फल चढ़ाती हैं

स्पष्टतः, सृष्टि रूपी वृक्ष की शाखाएँ हर ओर से जीवों के हाथों में वरदानों के फल पहुँचाती हैं।

लेकिन वास्तव में यह दया का हाथ है, शक्ति का हाथ है, जो
उन शाखाओं पर लगे ये फल हमें दे दो।

तुम्हें कृतज्ञता से उस दया के हाथ को चूमना चाहिए; तुम्हें कृतज्ञ होना चाहिए-
उस शक्ति के हाथ की पवित्रता का बखान करो।

बताए गए तीन तरीकों का स्पष्टीकरण
सूरतुल-फातिहा के अंत में

हे आकांक्षाओं से भरे भाई! अपनी कल्पना को साथ लेकर मेरे साथ चलो। देखो, हम एक देश में हैं, हम चारों ओर देखते हैं। हमें देखने वाला कोई नहीं है।

ऊंचे पहाड़ों पर काले बादलों की एक परत जम गई है, जो तम्बू की तरह हैं। बादलों ने धरती के उस हिस्से को भी ढक लिया है जहां हम हैं।

वे हमारे ऊपर एक ठोस छत बनाते हैं, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि इसकी छह भुजाएँ खुली हैं और वहाँ सूरज चमक रहा है। हालाँकि, हम बादल और अंधकार के नीचे हैं
हम पर अत्याचार करता है.

संकट दम घोंटने वाला है; ताजी हवा की कमी हमें मार रही है। अब हमारे लिए तीन रास्ते खुले हैं। एक है प्रकाशित क्षेत्र; मैंने एक बार इसे देखा था। मैं पहले भी एक बार यहाँ आया हूँ; मैं तीसरे क्षेत्र में भी गया हूँ।

हमारे सामने जो पहला रास्ता है वह यह है: अधिकांश लोग इसे अपनाते हैं और यह दुनिया भर का रास्ता, हमें यात्रा करने के लिए आमंत्रित करता है।

देखो, हम पैदल ही जा रहे हैं। इसकी उबलती रेत देखो। रेगिस्तान में, वे कैसे अपने क्रोध से हमें जला रहे हैं, हमें धमका रहे हैं!

उस समुद्र में पहाड़ी लहरों को देखो, वे भी हमसे नाराज हैं। अब भगवान का शुक्र है कि हम दूसरी तरफ पहुंच गए हैं, हम सूरज की रोशनी देख सकते हैं।

लेकिन सिर्फ़ हम ही जानते हैं कि हमने कितनी मुश्किलें झेली हैं। अफ़सोस! हम फिर से उसी बंजर भूमि पर लौट आए हैं, जहाँ बादलों की काली छत हमारे ऊपर मंडरा रही है। हमें एक अद्भुत प्रकाश से भरे क्षेत्र की ज़रूरत है,

जो दिल की आंख रोशन कर देंगे, अगर हिम्मत है तो हम इस गंतव्य तक पहुंचने के लिए सभी लोग एक साथ इस अत्यंत जोखिम भरे रास्ते पर चलेंगे।

हमारा दूसरा तरीका: हम "प्रकृति" में गोता लगाएँगे, और दूसरी तरफ़ चले जाएँगे। या फिर हम एक प्राकृतिक सुरंग से काँपते हुए निकल जाएँगे।

मैंने पहले भी एक बार इस रास्ते से यात्रा की थी, ईश्वर के सामने बिना किसी अनिच्छा के, विनती और प्रार्थनाओं से भरा हुआ। लेकिन उस अवसर पर मेरे पास "प्रकृति" को सूँघने और चीरने के लिए एक पदार्थ था।

तीसरे मार्ग का चमत्कारी मार्गदर्शक, कुरान ने मुझे यह दिया। भाई, मेरे पीछे-पीछे रहो, और डरो मत!

देखो, यहाँ सुरंग जैसी गुफाएँ और भूमिगत झरने इंतज़ार कर रहे हैं। वे हमें जाने देंगे। प्रकृति या इन भयानक बेजान प्राणियों से किसी भी तरह से डरो मत!

क्योंकि उसके खट्टे चेहरे के पीछे उसके दयालु स्वामी का मुस्कुराता हुआ चेहरा था - जिसे मैंने कुरान के रेडियम जैसे पदार्थ के प्रकाश के माध्यम से देखा।

आप कितने खुश हैं! अब हम रोशनी से भरी दुनिया में आ गए हैं; इस सुन्दर पृथ्वी को, इस सुखद और प्यारे स्वर्ग को देखो।

अपना सिर ऊपर उठाओ! देखो, यह तूबा-वृक्ष हमें आमंत्रित कर रहा है - यह आकाश में ऊँचा हो गया है, बादलों को चीर कर उन्हें बहुत नीचे छोड़ दिया है।

यह कुरान है। इसकी शाखाएँ हर जगह फैली हुई हैं। हमें इसे अपने पास रखना चाहिए। इस शाखा पर जो नीचे झुक रही है, ताकि यह हमें ऊपर उठा सके।

धरती पर उस स्वर्गीय वृक्ष की एक अभिव्यक्ति शानदार शरिया है। इसका मतलब है कि हम बिना किसी कठिनाई के इस प्रकाश की दुनिया में चढ़ सकते हैं; हम संकट से नहीं हिलेंगे।

चूँकि हम गलत रास्ते पर चले गए हैं, इसलिए अब हम अपने पुराने स्थान पर लौटेंगे और सही रास्ता खोजेंगे।

देखो, हमारा तीसरा रास्ता! पहाड़ों के ऊपर एक शाही बाज़ मंडराता है, जो पूरी दुनिया को अज़ान सुनाता है।

देखो, सर्वोच्च मुअज़्ज़िन मुहम्मदुल-हाशिमी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मानव जाति को प्रकाश की चमकदार दुनिया में बुला रहे हैं।
वह दुआ और अनिवार्य नमाज़ का आदेश देता है।

उन हिदायत के पहाड़ों को देखो! उन्होंने बादलों को चीर दिया है और आसमान तक पहुँच गए हैं। उन शरिया के पहाड़ों को देखो, उन्होंने धरती के चेहरे और आँखों को कैसे सजाया है!

अब हमें यहाँ से ऊँची आकांक्षा और प्रयास के साथ प्रस्थान करना चाहिए। क्योंकि प्रकाश और हवा वहाँ ऊपर हैं; अनुग्रह का उज्ज्वल चेहरा वहाँ है। आह, अब यहाँ दिव्य एकता का उहुद39 है, वह शक्तिशाली, प्रिय पर्वत।

यहाँ इस्लाम का जूदी40 है , जो मुक्ति और सुरक्षा का पर्वत है। यहाँ चाँद का पर्वत41 है, जो उज्ज्वल कुरान है; "नील" नदी, जीवन और दया का शुद्ध जल, उस उदात्त स्रोत से बहती है। इसके मीठे पानी का एक घूँट पी लो!

> अतः धन्य है वह रचयिता, जो सर्वोत्तम और सर्वोत्तम रूप में सृजन करता है! (33:14)

> और उनका अंतिम आह्वान है, “सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है!” (10:10)

मित्र! अब अपनी कल्पना को त्याग दो और अपनी बुद्धि को धारण करो! पहले दो मार्ग "उन लोगों के हैं जिन्होंने तुम्हारा क्रोध भड़काया है" और "वे जो भटक गए हैं।"

---

[39] माउंट उहुद मदीना में एक पर्वत है, जो पैगंबर की मस्जिद से पाँच किलोमीटर उत्तर में है। पैगंबर के समय में, 624 में, मुस्लिम सेना और मक्का के बहुदेववादियों के बीच एक भयंकर युद्ध हुआ था। एक बार ईश्वर के दूत, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा: "उहुद - यह हमसे बहुत प्यार करता है और हम भी इससे बहुत प्यार करते हैं।" (अल-बुखारी, "फ़दाइलुल-मदीना" 6; मुस्लिम, "हज" 462) (अनुवाद)

40 माउंट जूडी वह पर्वत है जहां जल प्रलय के बाद पैगंबर नूह का जहाज रखा गया था। देखिये, कुरान, 11:44. (अनुवाद)

41 मून माउंटेन इथियोपिया में स्थित पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जिन्हें कभी व्हाइट नील नदी का स्रोत माना जाता था। लेखक ने आस्था, इस्लामी विश्वास और जीवन तथा कुरान की तुलना कुछ पहाड़ों से की है। (अनुवाद)

उनके खतरे बहुत हैं। इनके साथ हमेशा सर्दी रहती है, इनका पूरा साल सर्दी ही रहता है। सौ में से केवल एक ही बच पाता है, जैसे प्लेटो42 और सुकरात43

तीसरा रास्ता आसान है, सीधा और सीधा है। कमज़ोर और ताकतवर बराबर हैं। हर कोई इसे अपना सकता है। सबसे आसान और सुरक्षित यह है: या तो "गाजी" बनो।44

शहीद या

अब हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि पहले दो रास्ते वैज्ञानिक भौतिकवाद और दर्शनशास्त्र के मार्ग और स्कूल हैं। जहाँ तक कुरान के मार्गदर्शन का सवाल है, तीसरा रास्ता उसका सीधा रास्ता है; यह हमें हमारी मंज़िल तक ले जाएगा।

> ऐ अल्लाह! हमें सीधा मार्ग दिखा। उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की है, न कि उन लोगों का जो तेरे प्रकोप के भागी हुए हैं और न उन लोगों का जो पथभ्रष्ट हैं।

सभी सच्ची पीड़ाएं गुमराही में हैं, और सभी सच्ची खुशी विश्वास में है: कल्पना में लिपटा एक महान सत्य

हे समझदार सहयात्री! हे प्रिय मित्र! यदि तुम सीधे मार्ग के प्रकाशमान मार्ग और ईश्वर के प्रकोप को झेलने वालों तथा पथभ्रष्ट लोगों के अंधकारमय मार्ग के बीच स्पष्ट अंतर देखना चाहते हो,

आओ, अपनी कल्पना को उड़ान दो, साथ मिलकर हम अस्तित्वहीनता के अंधेरे में जाएंगे। हम उस विशाल कब्र, उस शहर का दौरा करेंगे जो मृतकों से भरा है।

एक शाश्वत सर्वशक्तिमान ने हमें अस्तित्वहीनता के अंधकार से बाहर निकाला।

अपनी शक्ति के हाथ से हमें अस्तित्व पर चढ़ाया, और हमें इस संसार में, इस सुख रहित नगर में भेज दिया।

अब हम अस्तित्व की दुनिया में आ गए हैं, इस भयावह रेगिस्तान में।

आँखें खुल गई हैं और हमने छह दिशाओं में देखा है।

सबसे पहले, हम दया और सहायता की आशा करते हुए अपने सामने देखते हैं, लेकिन क्लेश और दर्द हम पर दुश्मनों की तरह हमला करता है। हम इससे डर जाते हैं और पीछे हट जाते हैं।

---

42 प्लेटो (428-348 ईसा पूर्व) सबसे प्रसिद्ध शास्त्रीय यूनानी दार्शनिकों में से एक थे। वे सुकरात के छात्र थे। वे एक गणितज्ञ, दार्शनिक संवादों के लेखक और एथेंस में अकादमी के संस्थापक भी थे, जो पश्चिमी दुनिया में उच्च शिक्षा का पहला संस्थान था। उनके अनुसार, भौतिक दुनिया जैसी हमें दिखती है, वह वास्तविक दुनिया नहीं है, बल्कि वास्तविक दुनिया की एक छाया मात्र है। (ट्र.)

43 सुकरात (469-399 ई.पू.) प्लेटो के शिक्षक थे और उन्हें पश्चिमी दर्शन के संस्थापकों में से एक माना जाता है। उन्हें उनके छात्रों, खास तौर पर प्लेटो के छात्रों के वृत्तांतों के ज़रिए जाना जाता है। वे नैतिकता के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हुए हैं। (अनुवाद)

44 “गाजी” एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जो ईश्वर के लिए युद्ध करता है। (अनुवाद)

हम मदद की तलाश में प्राकृतिक तत्वों की ओर बायीं और दायीं ओर देखते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि उनके दिल कठोर और निर्दयी हैं। वे अपने दांत पीसते हैं, हमें गुस्से और धमकी भरे अंदाज में देखते हैं। वे न तो हमारी विनती सुनते हैं और न ही शिकायत।

असहाय प्राणियों की तरह, हम निराश होकर अपनी निगाहें ऊपर की ओर उठाते हैं।
सहायता के लिए हम आकाशीय पिंडों की ओर देखते हैं, लेकिन वे हमें ख़तरनाक लगते हैं।

मानो हर कोई एक बम हो; अपने-अपने आवरणों से निकलकर वे अंतरिक्ष में तेज़ी से भाग रहे हों। लेकिन किसी तरह वे एक-दूसरे को छूते नहीं हैं।

यदि कोई गलती से भी इसका मार्ग बदल दे, तो यह दृश्यमान, भौतिक जगत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा; भगवान न करे! वे संयोग पर निर्भर होकर चलते हैं; उनसे कोई अच्छाई नहीं हो सकती।

निराशा में हम उस दिशा से अपनी दृष्टि वापस मोड़ लेते हैं, पीड़ादायक घबराहट से अभिभूत हो जाते हैं। हम अपना सिर झुका लेते हैं, अपनी छाती पर झुक जाते हैं; हम अपने आप को देखते हैं, अपने आप पर विचार करते हैं और स्वयं का अध्ययन करते हैं।

अब हम अपने दुखी मन से असंख्य ज़रूरतों की चीखें सुनते हैं। हज़ारों इच्छाओं की चीखें निकलती हैं। सांत्वना की उम्मीद करते हुए, हम डर जाते हैं।

उससे भी कोई फायदा नहीं होता। शरण लेने के लिए हम अपनी अंतरात्मा या चेतन प्रकृति से सलाह लेते हैं; हम साधन और मदद की तलाश में उसमें झाँकते हैं। अफ़सोस, हम फिर से बिना किसी मदद के रह जाते हैं; हमें अपनी चेतन प्रकृति की मदद करनी पड़ती है।

क्योंकि इसमें हज़ारों आकांक्षाएँ, उबलती हुई इच्छाएँ, उग्र भावनाएँ हैं, जो पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई हैं। हम उन सभी से काँपते हैं, और मदद नहीं कर सकते।

अस्तित्व और अनस्तित्व के बीच बिना किसी सहायता के छोड़ दिए जाने पर, ये आकांक्षाएँ एक तरफ अतीत में अनंत काल तक और दूसरी तरफ भविष्य में अनंत काल तक फैल जाती हैं। वे इतनी व्यापक हैं। अगर चेतन प्रकृति दुनिया को निगल भी जाए, तो भी वह संतुष्ट नहीं होगी।

इस दुखदायी मार्ग पर हमने जो भी रास्ता चुना है, उसमें हमें विपत्तियाँ ही मिली हैं। क्योंकि जिन पर ईश्वर का प्रकोप है और जो भटके हुए हैं, उनके मार्ग भी ऐसे ही हैं। यह संयोग और गुमराही ही है जो हमें इन मार्गों पर ले जाती है।

यह हम ही हैं जिन्होंने संयोग और गलत दिशा में जाने दिया है, और इसलिए हम अपनी वर्तमान स्थिति में आ गए हैं। हम ऐसी स्थिति में हैं कि हम अस्तित्व की शुरुआत और दुनिया के अंत को भूल गए हैं, साथ ही साथ यह भी भूल गए हैं कि हम क्या कर रहे हैं।

सृष्टिकर्ता और मृतकों का पुनरुत्थान।

हम ऐसी स्थिति में हैं जो नरक से भी बदतर है; यह अधिक भयंकर रूप से झुलसाती है और हमारी आत्माओं को कुचल देती है। हमने इन छह दिशाओं का सहारा लिया, लेकिन परिणाम यह हुआ।

यह एक निर्दयी अवस्था है, जिसमें भय और आतंक, नपुंसकता और कांपना, चिंता और अलगाव, अनाथ होना और निराशा शामिल है।

अब हम दोनों दिशाओं के विपरीत मोर्चे पर मोर्चा संभालेंगे (जहाँ से हमने दया और मदद माँगी थी, लेकिन निर्दयी स्थिति में आ गए) और उन्हें पीछे धकेलने की कोशिश करेंगे। सबसे पहले, हमारे पास अपनी ताकत का सहारा है, लेकिन अफसोस! हम शक्तिहीन हैं, कमजोर हैं।

दूसरा, हम अपनी आत्मा की ओर मुड़ते हैं, यह आशा करते हुए कि उनकी आवश्यकताएं शांत हो जाएंगी।
लेकिन अफ़सोस! हम देखते हैं कि वे लगातार चिल्ला रहे हैं।

तीसरा, हम मदद के लिए पुकारते हैं, किसी उद्धारकर्ता की तलाश करते हैं; लेकिन कोई सुनने वाला और जवाब देने वाला नहीं होता। हमें लगता है कि सब कुछ शत्रुतापूर्ण है, सब कुछ अजीब है। कुछ भी हमारे दिल को सांत्वना नहीं देता; कुछ भी सुरक्षा या सच्ची खुशी का एहसास नहीं देता।

चौथा, जितना अधिक हम आकाशीय पिंडों को देखते हैं, उतना ही अधिक वे हमें भय और विस्मय से भर देते हैं। एक भयावह अकेलेपन की भावना, जो विवेक को परेशान करती है, प्रकट होती है; यह मन को पीड़ा देती है और हमें भ्रम से भर देती है।

भाई! यही तो गुमराही का रास्ता है! इसी पर हमने अविश्वास का अंधकार भोगा है। आओ, अब मेरे भाई, हम फिर से उस ओर मुड़ें
अस्तित्वहीनता.

हम फिर आएंगे। इस बार हमारा रास्ता सीधा रास्ता और ईमान का रास्ता है। हमारे मार्गदर्शक और नेता ईश्वरीय कृपा और कुरान हैं, जो सदियों से उड़ते हुए बाज़ हैं।

एक समय, शाश्वत प्रभु की दया और कृपा ने हमारे अस्तित्व की इच्छा की, उनकी शक्ति ने हमें जन्म दिया, कृपापूर्वक हमें उनकी इच्छा के नियम पर स्थापित किया, तथा हमें चरण दर चरण पूरा किया।

फिर उसने दया करके हमें जीवन का वस्त्र पहनाया और हमें सर्वोच्च आस्था का दर्जा प्रदान किया, जिसकी सजावट प्रार्थना और अनिवार्य नमाज़ें हैं।

ये सभी पड़ाव हमारी लंबी यात्रा में वरदानों के महल हैं। हमारी यात्रा को आसान बनाने के लिए, ईश्वरीय नियति ने हमारे माथे के चर्मपत्र पर एक आदेश अंकित किया है;

---

45 सर्वोच्च विश्वास मानव अहंकार या मानव होना या मानव स्वभाव है जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होने वाले ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियों का केंद्र है। (ट्र.)

हम जहाँ भी जाते हैं, चाहे हम किसी भी समूह के मेहमान हों, हमारा स्वागत सच्चे भाईचारे के साथ किया जाता है। हम अपनी चीज़ें देते हैं और हम उनकी चीज़ों से लेते हैं: एक सुखद व्यापार।

वे हमारा पोषण करते हैं, हमें उपहारों से सजाते हैं, फिर हमें विदा करते हैं।
आख़िरकार हम दुनिया के दरवाज़े पर आ गए हैं। हमें एक शोर सुनाई देता है।

देखो, हम धरती पर आ गए हैं। हमने दृश्यमान दुनिया में कदम रख दिया है। यहाँ एक सैर-सपाटा और उत्सव है, जो दयालु ईश्वर ने मानव जाति के शोरगुल भरे निवास के लिए आयोजित किया है।

हम कुछ भी नहीं जानते, हमारा मार्गदर्शक और नेता दयालु की इच्छा है। हमारी कोमल आँखें इस मार्गदर्शक की प्रतिनिधि हैं। हम अपनी आँखें खोलते हैं और चारों ओर देखते हैं। क्या हमें वह पुराना समय याद है जहाँ से हम आए थे?

हम अजनबी थे, अनाथ थे, हमारे कई दुश्मन थे। हमें नहीं पता था कि हमारा रक्षक कौन है। अब, विश्वास की रोशनी के साथ, जो एक मजबूत स्तंभ है, हम अपने अंदर उन दुश्मनों के खिलाफ़ एक सहारा और मदद का बिंदु पाते हैं।

हमारा रक्षक, ईश्वर में विश्वास, हमारे शत्रुओं को दूर भगाता है। यह हमारी आत्माओं का प्रकाश है, हमारे जीवन का प्रकाश है, और हमारी आत्माओं की आत्मा है। अब हमारे दिल शांत हैं और हम शत्रुओं की उपेक्षा करते हैं, उन्हें पहचानते भी नहीं।

जब हमने अपनी पिछली यात्रा में अपनी चेतन प्रकृति से परामर्श किया, तो हमने
असंख्य चीखें, विलाप और शिकायतें सुनीं।

और इसलिए हम विपत्तियों से घिर गए। अब, हमारी आकांक्षाएँ और इच्छाएँ, हमारी क्षमताएँ और इंद्रियाँ, निरंतर अनंत काल की कामना करती हैं। लेकिन हम नहीं जानते थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए। हम इस बात से अनभिज्ञ थे कि इसे कैसे प्राप्त किया जाए और हमारी चेतन प्रकृति विलाप करती और रोती रही।

हालाँकि, ईश्वर की स्तुति और आभार हो, इस बार हमें सहायता का एक बिन्दु मिल गया है; यह हमारी क्षमता और आकांक्षाओं को निरंतर जीवन देता है, तथा उन्हें अनंत काल तक उड़ान भरने में सक्षम बनाता है।

यह उन्हें रास्ता दिखाता है, और उस उत्साहवर्धक, रहस्यमय बिन्दु - परमेश्वर में विश्वास - से हमारी क्षमता को सहायता मिलती है, वह जीवन का जल पीती है, और अपनी पूर्णता की ओर बढ़ती है।

ईमान का दूसरा ध्रुव पुनरुत्थान, मृतकों के पुनरुत्थान और शाश्वत सुख की पुष्टि है। ईमान इस सीप का मोती है और कुरान इसका प्रमाण है। मानव विवेक इसका संकेत देने वाला एक रहस्य है।

अब अपना सिर उठाओ और ब्रह्मांड को देखो। उससे बात करो। हमारे पिछले रास्ते पर यह कितना अद्भुत दिखाई देता था। अब यह हर तरफ मुस्कुरा रहा है, शान से पलकें झपका रहा है और बोल रहा है।

क्या तुम नहीं देखते - हमारी आँखें मधुमक्खियों की तरह हो गई हैं? वे ब्रह्मांड के बगीचे में हर जगह, फूलों की भीड़ के चारों ओर उड़ती हैं; प्रत्येक फूल इन मधुमक्खियों को स्वादिष्ट रस प्रदान करता है।

प्रत्येक फूल मित्रता, सांत्वना और प्रेम भी प्रदान करता है। हमारी आँखें उन्हें इकट्ठा करती हैं और गवाही के पराग को वापस लाती हैं। वे सबसे स्वादिष्ट शहद को प्रवाहित करते हैं।

जैसे ही हमारी नज़र आकाशीय पिंडों - सितारों या सूर्यों - की गतिविधियों पर पड़ती है, वे सृष्टिकर्ता की बुद्धि को उसके हाथों में सौंप देते हैं। महत्वपूर्ण सबक सीखते हुए और उसकी दया की अभिव्यक्ति करते हुए, यह उड़ान भरता है।

ऐसा लगता है जैसे सूरज हमसे बात कर रहा है, कह रहा है: "मेरे भाइयों और बहनों! अकेले या डरे हुए महसूस मत करो। आपका स्वागत है, आप कितने अच्छे आए! यह निवास स्थान आपका है; मैं तो बस एक मोमबत्ती-धारक हूँ।

"मैं भी आपकी तरह ही हूँ, एक शुद्ध, पूर्ण आज्ञाकारी सेवक के अलावा कुछ नहीं। अपनी असीम दया से, अद्वितीय और शाश्वत रूप से चाहने वाले ने मुझे आपके लिए प्रकाश का सेवक बनाया है। प्रकाश और ऊष्मा मुझसे हैं, प्रार्थना और प्रार्थना आपसे है!"

अब चाँद को देखो! और तारे और समुद्र; हर कोई अपनी भाषा में कहता है: "स्वागत है! आपका आना अच्छा हुआ! क्या आप नहीं पहचानते-

हमे क्या नकारोगे?"

सहयोग के रहस्य को देखो, व्यवस्था के संकेतों पर कान लगाओ। हर कोई कहता है: "हम सभी सेवक हैं, सर्वशक्तिमान की दया के दर्पण हैं; चिंता मत करो, हमसे थको या डरो मत!

"गर्जन की गर्जना और घटनाओं की चीखें तुम्हारे अंदर भय या संदेह पैदा न करें, क्योंकि उनके भीतर दिव्य गायन, महिमा, प्रार्थना और विनती गूंजती हैं।

"अल्लाह तआला जिसने तुम्हें हमारे पास भेजा है, उनकी लगाम अपने हाथों में रखता है। ईमान की नज़र उनके चेहरों पर रहमत की निशानियाँ दिखाती है; हर कोई इसका एहसानमंद है।"

हे जाग्रत हृदय वाले आस्तिक! अपनी आँखों को थोड़ा विश्राम दो; अब हम उनकी जगह अपने संवेदनशील कानों को ईमान के पवित्र हाथों में सौंप देंगे।

हम उन्हें इसकी मधुर धुन सुनने के लिए दुनिया भर में भेजेंगे।

जिन आवाजों और ध्वनियों को हम अपने पिछले मार्ग पर मृत्यु का सार्वभौमिक शोक और विलाप समझते थे, वे वास्तव में प्रार्थनाएं और प्रार्थनाएं, महिमा की पुकारें हैं।

हवा की बड़बड़ाहट, पक्षियों का चहचहाना, वर्षा की बूंदों की आवाज, समुद्र की छींटे, बादलों की गड़गड़ाहट, पत्थरों की चरमराहट; ये सभी प्रार्थना और महिमा की सार्थक ध्वनियाँ हैं।

हवा की मधुर ध्वनियाँ, बादलों की गड़गड़ाहट, लहरों की ध्वनियाँ, ये सब ईश्वरीय महिमा के ही गान हैं। वर्षा का गान, पक्षियों का चहचहाना, ये सब दया के ही गुणगान हैं - उनकी भाषा में सत्य के संकेत हैं।

चीज़ों की आवाज़ें अस्तित्व की आवाज़ें हैं: "मैं भी मौजूद हूँ," वे कहते हैं। शांत दिखने वाला ब्रह्मांड बिना रुके बोलता है: "हमें बेजान मत समझो, हे बकबक करने वाले साथी!"

पक्षियों को या तो उदारता की खुशी होती है या दया का अवतरण, जो उन्हें गाने पर मजबूर करता है। अपनी अलग-अलग आवाज़ों, अपने गीतों से वे दया की सराहना करते हैं, उदारता पर उतरते हैं और धन्यवाद देते हुए उड़ जाते हैं।

वे स्पष्ट रूप से कहते हैं: "हे ब्रह्माण्ड के प्राणियों, हे भाइयों और बहनों!
हम कितने बढ़िया हालात में रहते हैं; हमें कोमलता से पाला जाता है, हम अपने भाग्य से खुश हैं!" अपनी चोंचें आकाश की ओर उठाकर वे हवा में अपने हर्षित गीत भेजते हैं।

ब्रह्मांड अपनी संपूर्णता में एक भव्य ऑर्केस्ट्रा है; इसके पाठ विश्वास के प्रकाश के माध्यम से सुने जाते हैं। क्योंकि बुद्धि संयोग के अस्तित्व को अस्वीकार करती है और अस्तित्व में व्यवस्था किसी भी निर्माण या घटना को यादृच्छिक संयोग के कारण होने से रोकती है।

साथी यात्री! अब हम चित्रण की इस दुनिया को छोड़ रहे हैं, छवियों के दायरे से नीचे उतर रहे हैं। हम तर्क के क्षेत्र में रुकेंगे, अपनी आँखों के सामने हमने जो यात्रा की है उसका अनुसरण करेंगे और उनकी तुलना करेंगे।

हमारा पहला, दर्दनाक मार्ग उन लोगों का है जिन पर ईश्वर का क्रोध आया है, और जो भटक गए हैं। यह विवेक पर, उसके अंतरतम भाग में पीड़ा पहुंचाता है; पीड़ा और गंभीर दर्द। चेतना यह दिखाती है; हमने अपने विवेक के विपरीत उस मार्ग पर यात्रा की।

हमें इससे बचना होगा, हमें ऐसा करने की आवश्यकता है - या तो दर्द कम किया जाना चाहिए, या मानवीय भावनाओं को सुन्न किया जाना चाहिए - अन्यथा हम इसे सहन नहीं कर सकते, क्योंकि मदद के लिए हमारी पुकार पर ध्यान नहीं दिया जाता।

मार्गदर्शन उपचार है, लेकिन शारीरिक प्रवृत्तियाँ और कल्पनाएँ भावनाओं को अवरुद्ध करती हैं। शारीरिक प्रवृत्तियों और कल्पनाओं के प्रति समर्पण के लिए सांत्वना की आवश्यकता होती है, और सांत्वना के लिए विस्मृति, व्याकुलता, व्यस्तता और मनोरंजन की आवश्यकता होती है

ताकि धोखे के वे तत्व अंतरात्मा को मूर्ख बना सकें और आत्मा को सुला सकें, जिससे उसे कोई दर्द महसूस न हो। अन्यथा, वह भयंकर पीड़ा अंतरात्मा को झुलसा देती है, विलाप असहनीय होता है और निराशा की पीड़ा सहन नहीं की जा सकती।

इसका मतलब यह है कि जितना ही कोई सीधे रास्ते से भटकता है, उतना ही वह इस स्थिति से पीड़ित होता है, और उसकी अंतरात्मा चिल्लाती है। हर सुख के भीतर एक दुख है, जो इस स्थिति का एक निशान है।

इसका अर्थ यह है कि सभ्यता की चमक-दमक, जो कल्पना, वासना, मनोरंजन और अपव्यय का मिश्रण है, वह पथभ्रष्टता से उत्पन्न भयंकर संकट का भ्रामक इलाज है; चमक-दमक एक विषैली नशीली दवा है।

मेरे प्यारे दोस्त! दूसरे रास्ते पर, उस रोशनी से भरी सड़क पर, हमने महसूस किया
मन की एक ऐसी अवस्था जिसमें जीवन आनंद का स्रोत बन जाता है और दर्द खुशी का।

हमने समझा कि दूसरा तरीका आत्मा को एक ऐसी अवस्था से भर देता है जिसकी आस्था की ताकत के अनुसार अलग-अलग डिग्री होती है। शरीर को आत्मा के माध्यम से आनंद मिलता है और आत्मा को चेतना के माध्यम से आनंद मिलता है।

अंतःकरण में तत्काल आनंद की अनुभूति होती है; हृदय में आध्यात्मिक स्वर्ग विद्यमान होता है। चिंतनशील विचार उस आनंद को और बढ़ाने के लिए उसे खोलते हैं, जबकि चेतना रहस्यों का अनावरण करती है।

जितना अधिक हृदय जागृत होता है, जितना अधिक विवेक उत्तेजित होता है और आत्मा उत्तेजित होती है, उतना ही अधिक आनंद मिलता है; अग्नि प्रकाश में और शीत ऋतु ग्रीष्म ऋतु में परिवर्तित हो जाती है।

अंतरात्मा में स्वर्ग के द्वार खुल जाते हैं और दुनिया स्वर्ग बन जाती है। इसके भीतर हमारी आत्माएं उड़ान भरती हैं, बाजों और पतंगों की तरह ऊंची उड़ान भरती हैं, विनती करती हैं, प्रार्थना करती हैं।

प्रिय साथी यात्री! अभी के लिए विदा। आइये हम सब मिलकर प्रार्थना करें
और फिर हम फिर से मिलने के लिए अलग हो जायेंगे!

हे ईश्वर! हमें सीधे मार्ग पर ले चलो। आमीन।

कुरान में दोहराव का रहस्य

कभी-कभी प्रकाश में आग दिखाई देती है। (संदेश) को पुष्ट करने के लिए दोहराव, (संदेश) को स्थापित करने के लिए याद दिलाना, और ध्यान आकर्षित करने के लिए पुनरावृत्ति वे सभी उपकरण हैं जिनका उपयोग भाषाविद्, वक्ता और वक्ता करते हैं।

जिस प्रकार हर क्षण मनुष्य को हवा की आवश्यकता होती है , हर दिन भोजन की, हर रात रोशनी की, और हर साल दवा की (हर बीमारी के लिए),

कारणों की पुनरावृत्ति (जैसे आवश्यकता) के लिए प्रभावों की पुनरावृत्ति (जैसे संतुष्टि) की आवश्यकता होती है,

इसी तरह, मनुष्य की बुद्धि, जो उसका सबसे कीमती साधन है, और उसकी अंतरात्मा तथा अन्य गहरी क्षमताओं को हर पल सत्य की आवश्यकता होती है। हर पल, वे उत्सुकता से इसकी चाहत करते हैं और ईश्वरीय अभिव्यक्तियों की खोज में तत्पर रहते हैं।

उन्हें हर घंटे ईश्वरीय स्मरण की आवश्यकता महसूस होती है, और वे हर दिन ईश्वरीय ज्ञान की खोज करते हैं। चूँकि ये ज़रूरतें बार-बार दोहराई जाती हैं, इसलिए कुरान उन्हें बार-बार दोहराए जाने के ज़रिए प्रकाश की ओर ले जाता है।

कुरान में दोहराई गई आयतें गंभीर अनुस्मारक और ताज़गी प्रदान करती हैं।
निश्चित रूप से, ऐसे अन्य संदर्भ भी हैं जहां पुनरावृत्ति को एक दोष के रूप में देखा जा सकता है; यह केवल उन चीजों के लिए एक अतिरिक्त सजावट है जो केवल आनंद देती हैं (और शिक्षा नहीं)।

उदाहरण के लिए, अगर कोई भोजन शरीर के लिए ज़रूरी पोषण है, तो उसका बार-बार सेवन करने से उससे वांछनीय परिचय मिलता है। मानव स्वभाव हमेशा उस भोजन की तलाश करता है जिसकी उसे ज़रूरत होती है और जिससे वह परिचित है।

लेकिन यदि भोजन फलयुक्त या मीठा हो तो बार-बार खाने से उससे ऊब और घृणा होने लगती है।

किसी भी आवश्यक, अपरिवर्तनीय सत्य के लिए, जिसमें कोई शब्द निहित है, जो विकसित होने में सक्षम है - पुनरावृत्ति के कारण वह अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकेगा और स्थापित हो सकेगा; यह भी कुछ ऐसा है जो मन चाहता है।

शैलियाँ - शब्द का रूप या परिधान - घिस जाती हैं, इसलिए उन्हें बदलाव और नवीनीकरण की आवश्यकता होती है, जो भाषाविदों और बयानबाज़ों को स्वीकार्य है।

सीआईएएन्स.

कुरान पूरी तरह से दिल का भोजन और शक्ति का स्रोत है।
विवेक के लिए; इसका कद इतना बड़ा है कि यह स्वर्ग तक पहुंचता है।

यह आत्माओं के लिए भोजन और मन के लिए उपचार भी है। इसके दोहराव और पुनरावृत्ति सत्यापन हैं जो इसकी सच्चाई को स्थापित करते हैं और ज्ञान प्रदान करते हैं जो मार्गदर्शन को मजबूत और परिपूर्ण बनाता है।

इसके कुछ दोहराए गए सत्य इसके भोजन के अर्क हैं, जो मनुष्यों के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। जितना अधिक वे आवश्यक हैं, उतना ही अधिक उन्हें दोहराया जाता है।

जबकि कुछ अन्य अर्क के अर्क हैं, सत्य के लिए खमीर, और सतत, मूर्त प्रकाश हैं। बासमाला एक उदाहरण है, जिसके लिए, हवा की तरह, निरंतर, महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

चूँकि कुरान सच्चा और प्रकाशमान सत्य है, इसलिए इसे ख़त्म नहीं किया जा सकता; बल्कि यह हमें प्रकाश देता है और हमारी “बीमारियों” के इलाज के लिए मार्गदर्शन देता है।

पैगम्बर मूसा के बारे में कुरान की कथा के अनेक लाभ हैं। कुरान ने पैगम्बर मूसा के जीवन और संदेशवाहक होने को अपने "उज्ज्वल हाथों" में लिया है और इसे कई उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया है। वाक्पटुता के जादूगर इसकी वाक्पटुता के आगे झुकने से खुद को नहीं रोक पाते।46

मूसा के अनुभवों में महान सत्य और अनेक रहस्य समाहित हैं। उन्होंने पहले मुसलमानों के लिए उत्कृष्ट, सबसे उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत किए, और आज भी वे ऐसे ही हैं;

यह इस्लाम की स्थापना, ईश्वरीय संदेश के संचार को समझने, ईश्वर के मार्ग में आने वाली हर परेशानी और कठिनाई को सहन करने, मुस्लिम समुदाय के दिलों में कुछ सत्यों को स्थापित करने और लोगों को इन सत्यों को अपनाने और उन्हें अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

मूसा की कहानी में ईश्वरीय संदेशवाहक और कई अन्य बुनियादी सिद्धांतों की नींव भी शामिल है। इसे विषय के मूल विषय और उद्देश्यों के अनुसार इसके विभिन्न पहलुओं के साथ वर्णित किया गया है; कभी-कभी संदेश को समर्थन देने के लिए।

एक तरह से, मूसा के बारे में कहानियों में मानवीय सामाजिक जीवन के सिद्धांत समाहित हैं जो इतने व्यापक और गहन हैं कि वे अतीत और भविष्य दोनों की गहराई तक फैले हुए हैं। जीवन की वास्तविकताओं को जानने की आवश्यकता जीवन के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि प्रकाश और भोजन,

इस प्रकार, जिस तरह से कुरान में जीवन के इन आवश्यक सिद्धांतों और वास्तविकताओं को बार-बार प्रस्तुत किया गया है, उसी तरह से सीखे जाने वाले सबक भी दोहराए गए हैं।

आत्मा की चारों इन्द्रियों का एक परम उद्देश्य होता है

अंतःकरण के चार तत्व आत्मा की इन्द्रियाँ हैं: इच्छा-शक्ति, मन, अनुभूति या अनुभूति की शक्ति, और आध्यात्मिक बुद्धि।

इन चारों इन्द्रियों के अस्तित्व का एक परम उद्देश्य है: इच्छा-शक्ति का परम उद्देश्य सर्व-दयालु की आराधना करना है, जबकि

---

46 यह सार्थक अंश पैगंबर मूसा, उन पर शांति हो, के बारे में कुछ तथ्यों को संदर्भित करता है। उन पर किए गए चमत्कारों में से एक यह था कि जब उन्होंने अपना दाहिना हाथ अपनी बांह के नीचे रखा तो वह चमकता हुआ, सफेद निकला। उस समय के मिस्र के सबसे कुशल जादूगर मूसा के “चमकते, उज्ज्वल हाथ” और उनकी छड़ी के साँप में बदल जाने के चमत्कारों के आगे झुक गए। (अनुवाद)

मन के लिए यह ईश्वर का ज्ञान है। अनुभूति या अनुभूति की शक्ति के लिए यह ईश्वर का प्रेम है, और आध्यात्मिक बुद्धि के लिए यह ईश्वर का दर्शन है - जो सर्व-महिमावान का उपहार है।

उपासना का आदर्श रूप या स्तर इन चारों को सम्मिलित करता है - इसे ही कुरान में तक़वा (धर्मपरायणता और धार्मिकता) कहा गया है।

शरीयत उन्हें पोषण देती है, ताकि वे विकसित हों, और उन्हें आवश्यक सामग्री से सुसज्जित करती है, तथा उन्हें उनके अस्तित्व के अंतिम उद्देश्यों की ओर निर्देशित करती है।

ईश्वर के अलावा कोई सृजनात्मक शक्ति अस्तित्व में नहीं है

कारण केवल सृजन में ही प्रत्यक्ष होते हैं; यदि उनमें वास्तविक एजेंसी होती या उन्हें रचनात्मक प्रभाव दिया जाता, तो उन्हें सार्वभौमिक चेतना भी दी जानी चाहिए थी। इसके अलावा, चीजों की संरचना और कला दोनों में परिवर्तनशील डिग्री होती।

हालाँकि, सबसे प्रतिष्ठित से लेकर सबसे साधारण तक और सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक, आँखों ने कभी भी चीजों में कोई दोष या असंगति नहीं देखी है।

सब कुछ पूरी तरह से दृढ़ है और अत्यंत सावधानी से किया गया है; आविष्कारक
हर चीज़ को उसके स्वरूप के अनुसार एक परिपूर्ण स्वभाव दिया है।

इसका अर्थ यह है कि यह नहीं कहा जा सकता कि कुछ चीजें अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर के निकट हैं, जबकि अन्य दूर हैं।

सृष्टि में पूर्णता और पूर्ण दृढ़ता के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि आविष्कारक को कुछ आविष्कारों में साधन की आवश्यकता पड़ी है, जबकि अन्य में नहीं।

मनुष्य को आंशिक इच्छा शक्ति दी गई है, और इसी कारण उसके कार्यों में दोष दिखाई देते हैं। अर्थात् उसके कार्यों में दृढ़ता का अभाव यह दर्शाता है कि उसे विधाता ने कुछ करने के लिए बाध्य नहीं किया है। इच्छा शक्ति ही उसके द्वारा किए गए कार्यों के लिए उसकी जवाबदेही का आधार है।

ईश्वर ने मानवीय आंशिक इच्छा-शक्ति को सापेक्षता का साधन बनाया है।
निपटान का क्षेत्र; यह भगवान की एकता और बुद्धि द्वारा आवश्यक है।

यह ध्यान देने योग्य बात है कि मानवीय आंशिक इच्छा-शक्ति के कारण मानवीय प्रयास और बुद्धि द्वारा निर्मित नगर, व्यवस्था और व्यवस्था के मामले में, ईश्वरीय प्रेरणा से निर्मित मधुमक्खी के छत्ते से भी निम्न स्तर का होता है; पूर्व कभी भी उत्तरार्द्ध के बराबर नहीं हो सकता।

जबकि अपनी न्यूनतम इच्छा-शक्ति के कारण, मधुमक्खियों का समुदाय और छत्ते - उनकी कलाकृतियाँ - क्रम और व्यवस्था में एक अनार और एक अनार के फूल - दोनों कोशिकाओं का एक शहर - से नीच हैं।

इसका मतलब यह है कि जिस पेन पर सामान्य रूप से गुरुत्वाकर्षण अंकित है वह वही पेन जिससे विशेष गुरुत्वाकर्षण परमाणुओं में गिर गया है।

इस्लाम और ईसाई धर्म द्वारा अपने संतों के साथ किये जाने वाले व्यवहार की तुलना

इस्लाम का आधार यह है कि, " उसके अलावा कोई रचयिता नहीं है", तथा यह सिद्धांत चीजों और घटनाओं के उत्पादन में प्राकृतिक कारणों और साधनों की वास्तविक एजेंसी को अस्वीकार करता है।

इस्लाम के ईश्वरीय एकता के मूल सिद्धांत में यह माना गया है कि प्राकृतिक कारण और साधन अक्षरों की तरह हैं, जिनका अपने आप में कोई महत्व नहीं है। सृष्टिकर्ता के प्रति समर्पण मुसलमानों को इस पंथ की ओर ले जाता है, जो उस पर भरोसा करने की श्रेणी भी सिखाती है। इबादत में ईमानदारी भी इसे यह रोशनी देती है।

इसके विपरीत, ईसाई धर्म कारणों और साधनों को वास्तविक एजेंसी मानता है और उन्हें शब्दों की तरह अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य मानता है - अर्थात उनका एक रचनात्मक प्रभाव होता है; यह गुमराह करना है।

यीशु को ईश्वर का पुत्र मानने का सिद्धांत इस सिद्धांत और मठवाद तथा पुरोहिताई के तरीकों के लिए आधार प्रदान करता है; भिक्षुओं/भिक्षुओं और पुरोहितों को दी गई भूमिकाओं ने ईसाई धर्म को इस दिशा में निर्देशित किया है। भौतिकवादी दर्शन द्वारा अंततः इसकी हार का यह एक कारण है।

ईसाई धर्म अपने संतों को ऐसे दीपकों की तरह मानता है जो सूर्य से प्राप्त प्रकाश को ग्रहण करते हैं। इसका मतलब है कि संत प्रकाश का सच्चा स्रोत बन जाते हैं जो लोगों को प्रकाशित करता है।

मनुष्य को प्रकाश के वास्तविक स्रोत के रूप में देखने से निश्चित रूप से परमेश्वर के साथ साझेदारों का जुड़ाव।

हालाँकि, इस्लाम अपने संतों को अक्षरों की तरह ही अपना कोई वास्तविक या पूर्ण कार्य नहीं मानता। यह जानता है कि उन्हें सूर्य से निकलने वाली रोशनी से ज्ञान प्राप्त हुआ है और वे केवल दर्पण की तरह इस प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं।

इस्लाम के अनुसार न केवल संत, बल्कि पैगम्बर भी ईश्वर की अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण हैं - अर्थात, वे अनन्त सूर्य से निकलने वाले प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं। वे केवल बर्तन हैं जिनमें ईश्वरीय दृष्टि का शहद डाला जाता है; फिर लोग उनसे यह शहद लेते हैं।

यही कारण है कि नक्शबंदी सूफी मार्ग के अनुयायी वे मानते हैं कि उनके मार्गदर्शकों को उनके द्वारा परावर्तित प्रकाश से लाभ मिलता है।

मार्गदर्शक कभी नहीं जानता कि वह इस प्रकाश का स्रोत है; अनुयायी को पता है कि यह मार्गदर्शक एक नश्वर प्राणी है - और इसलिए ऐसे लोगों के लिए प्रकाश का स्रोत होना असंभव है।

यही कारण है कि आध्यात्मिक मार्ग में दीक्षा विनम्रता या शील पर आधारित होती है तथा आत्म-त्याग के मार्ग पर तब तक चलती रहती है जब तक कि ईश्वर के अस्तित्व के समक्ष उसका विनाश न हो जाए।

केवल इसी बिंदु से आध्यात्मिक यात्रा के मार्ग के पड़ाव शुरू होते हैं। यह अहंकार को नष्ट करता है, घमंड को समाप्त करता है, और शारीरिक, दुष्ट आत्मा को नष्ट करता है।

इसके विपरीत, ईसाई धर्म अहंकार को उसकी सभी शक्तियों से मजबूत करता है और अहंकार टूटता नहीं है। एक मजबूत अहंकार वाला व्यक्ति, अगर ईसाई है, तो धर्मयुद्ध करने वाला बन जाता है;

लेकिन अगर वह मुसलमान है, तो उसका प्रबल अहंकार उसे धर्म के प्रति उदासीन बना देता है। यही कारण है कि ईसाइयों के विपरीत आम मुसलमान लोग कुलीन वर्ग से ज़्यादा धार्मिक होते हैं।

परमानंद प्रेम और ज्ञान के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर

यदि ईश्वर के सच्चे प्रेमी अपने मार्ग पर चलने में, अपनी व्याख्याओं में, या उनका वर्णन करने में गलती करते हैं, तो उनका मार्ग, किसी भी स्थिति में, अपने प्रियतम की ओर ही होता है। प्रियतम उन्हें अपनी ओर आकर्षित करता है, उन्हें भटकाव से बचाता है।

क्योंकि प्रेम में एक आकर्षक गुण है, जो स्वर्गीय सुन्दरता से मोहित होता है; यह एक स्वर्गीय आकर्षण है। यदि प्रेम को प्रेम की सच्ची वस्तु की ओर मोड़ दिया जाए, जो सच्चे प्रेम के योग्य है, तो कोई भी गलत तरीका उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

यदि ईश्वर के ज्ञान में प्रतिष्ठित संत, ईश्वर के नियमों का पालन करने में गलती करते हैं,
किसी भी तरह से या अपनी दृष्टि से या अपनी वाणी से, वे अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते।

यदि ज्ञान का मार्ग भटकाव वाला है, तो वह कभी भी इच्छित लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकता। यदि आवश्यक शर्त पूरी नहीं की जाती है, तो परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता। ज्ञान से संपन्न लोग प्रेमियों की तरह नहीं होते; उनकी स्वतंत्रता और उनकी मुक्त गति पर प्रतिबंध होते हैं।

ईश्वर के ज्ञान वाले लोग स्वयं ही ऊपर चढ़ते हैं और इसलिए उन्हें हर कदम सावधानी से उठाना पड़ता है। इसके विपरीत, ईश्वर के प्रेमी आगे की ओर खिंचे चले आते हैं और इसलिए उन पर कोई बंधन नहीं होता।

इसका अर्थ यह है कि यदि संत प्रेमी भूल करते हैं, तो वे स्वयं सही मार्ग पर हैं, भले ही वे दूसरों को भी भटका दें। लेकिन जो ज्ञानी हैं, जो

वे स्वयं को और दूसरों को गुमराह करते हैं। इसलिए, उनका अनुसरण नहीं किया जाना चाहिए।

इसका कारण यह है कि ईश्वर के ज्ञान वाले कुछ लोगों के कुछ शब्द - उनके पाखंड को दर्शाने वाले शब्द - उन्हें गुमराही की ओर ले गए और अंततः उन्हें मृत्युदंड दिया गया, क्योंकि उनके द्वारा कहे गए ऐसे शब्द व्याख्या के लिए खुले नहीं थे और इसलिए उन्हें बर्दाश्त नहीं किया गया।

लेकिन ईश्वर के प्रेमियों को - यहां तक कि जब उनमें से कुछ ने स्पष्ट रूप से वही पाखंड-सूचक शब्द कहे हैं, संकेतात्मक रूप से नहीं, तब भी मुस्लिम समुदाय द्वारा सम्मान दिया जाता रहा है, जिसने उन्हें किसी भी तरह से दंडित नहीं किया है।

इस कारण से, यद्यपि मुहयिद- दीन47, मुल्ला जामी48, इब्नुल-फरीद49 और इब्नुस-सबीन50 के पाखंड-सूचक शब्द एक-दूसरे से मिलते-जुलते थे, फिर भी उन्हें एक जैसा नहीं समझा गया और इसलिए उन्हें एक जैसा नहीं माना गया।

जब मुहीउद्दीन का ज्ञान, जो अंततः उसे प्रेम की ओर ले गया, उसके प्रेम पर हावी हो गया, तो उसके पाखंड-सूचक शब्दों ने उस पर (आलोचना के) भयानक बाण छोड़े, यहाँ तक कि सुल्तान सलीम प्रथम ने उसके शब्दों का अर्थ प्रकट कर दिया।51

---

47 मुहीउद्दीन इब्नुल-अरबी (1165-1240 ई.): सबसे महान और सबसे प्रसिद्ध सूफी गुरुओं में से एक। उनके अस्तित्व की पारलौकिक एकता के सिद्धांत, जिसे अधिकांश लोग अद्वैतवाद और सर्वेश्वरवाद के रूप में गलत समझते हैं, ने उन्हें अंतहीन विवादों का लक्ष्य बना दिया। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं फुसुस उल-हिकम और अल-फुतुहातु-अल-मक्कियाह। (अनुवाद)

48 मौलाना नूरुद्दीन 'अब्दुर-रहमान इब्न अहमद अल-जामी' (1414-1492 ई.), जिन्हें सामान्यतः मुल्ला जामी के नाम से जाना जाता है, को फारस का अंतिम महान शास्त्रीय कवि और एक संत माना जाता है।
उन्होंने कई गीत और गाथाएँ लिखीं, साथ ही गद्य में भी कई रचनाएँ कीं। उनका सलामन और अबशाल अपवित्र और पवित्र प्रेम का एक रूपक है। उनकी कुछ अन्य रचनाओं में हफ़्त अवरंग, तुहफ़तु'ल-अहरार, लैला वु मजनूं, फ़तिहतु'श-शबाब और लावा'इह शामिल हैं । (अनुवाद)

49 उमर इब्न अली इब्न अल-फरीद (1181-1235 ई.) एक मुस्लिम अरब सूफी कवि थे। उनका जन्म काहिरा में हुआ था, कुछ समय तक मक्का में रहे और काहिरा में ही उनकी मृत्यु हुई। उन्हें सबसे महान सूफी कवियों में से एक माना जाता था। नज़्म-सुलुक ("सूफी मार्ग पर यात्रा की कविता") और हमरिया
("द ओड ऑफ वाइन"), जो आध्यात्मिक आनंद के बारे में है, उनकी दो उत्कृष्ट कृतियाँ हैं। (अनुवाद)

50 इब्नू-सबीन ईश्वर के प्रति असीम प्रेम से प्रतिष्ठित संतों में से एक थे। उनका जन्म 1217 में मर्सिया, अल-अंडालस में हुआ था और 1270 में मक्का में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें दर्शनशास्त्र, सूफीवाद, साहित्य , कीमिया और चिकित्सा जैसे विभिन्न विषयों और अनुशासनों में रुचि थी और उन्होंने उन पर लिखा भी। (ट्र.)

51 मुहीउद्दीन इब्नुल-अरबी ने एक बार दमिश्क में अपने आस-पास के लोगों से कहा: "तुम जिसकी पूजा करते हो वह मेरे पैरों के नीचे है।" लोगों ने उसका अपमान किया और उसे मारने की कोशिश की, लेकिन वह बच निकला। सदियों बाद जब 8वें ओटोमन सुल्तान सुल्तान सेलिम I ने 1516 में सीरिया पर विजय प्राप्त की, तो उसने मुहीउद्दीन की कब्र का अनावरण किया और उस स्थान पर खुदाई करने का आदेश दिया जहाँ उसने उपर्युक्त कथन किया था; यहाँ सोने के कुछ टुकड़े पाए गए। सैद नूरसी इस घटना का जिक्र कर रहे हैं। (ट्र.)

बहरहाल, मुल्ला जामी एक प्रेमी थे; उन्होंने भी स्पष्ट रूप से यही बातें कहीं, लेकिन वे आलोचना के बाणों से सुरक्षित एक सम्मानित व्यक्ति की तरह जीवन जीते रहे।

इब्नुल-फरीद प्रेम में अधिक थे और अपने शब्दों में मुहयिद्दीन से आगे चले गए, लेकिन उन्हें कम आलोचना मिली और उन्हें माफ कर दिया गया।

इब्ने-साबिन के शब्दों में शुद्ध प्रेम प्रकट नहीं होता था, इसलिए उनके सिद्धांतवादी शब्दों के कारण उन पर विधर्म का आरोप लगाया गया और वे स्वयं को इससे बचा नहीं सके।

अगर आप कहते हैं कि मुहीउद्दीन के शब्दों में विरोधाभास है, तो मेरा जवाब है कि हो सकता है, लेकिन उन्होंने वही कहा जो उन्होंने देखा। उन्होंने वह नहीं कहा जो उन्होंने नहीं देखा।

हालाँकि, किसी चीज़ से हमेशा यह अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए कि वह सार रूप में वैसी ही हो जैसी वह दिखती है (बाहरी रूप में)। कोई इसे आँखों से देखने के तरीके से अलग तरह से आंक सकता है; कभी-कभी यह भी हो सकता है कि अंतर्दृष्टि किसी चीज़ को उसकी संपूर्णता में न समझ सके।

अगर मुहीउद्दीन ने कहा, “मैंने देखा!” तो यह सच है कि उसने देखा था। वह एक महान आत्मा था, जिसके लिए जानबूझकर झूठ बोलना कभी संभव नहीं था; उसने कभी झूठ बोलने के लिए खुद को नीचे नहीं गिराया।

इस मामले का सार यह है: वह एक यात्राशील आत्मा था, इसलिए, अस्थिर, निरंतर गतिशील अभिव्यक्तियाँ उसे स्थापित, अपरिवर्तनीय वास्तविकताओं के रूप में दिखाई देती थीं। बीज की तरह, स्थापित, अपरिवर्तनीय वास्तविकताएँ हमेशा अंकुरित होती हैं।

हालाँकि, स्थापित, अपरिवर्तनीय वास्तविकताएँ न तो उनके गतिशील, अस्थिर अभिव्यक्तियों के समान हैं और न ही उनसे भिन्न हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक फूल न तो अपने बीज से भिन्न हो सकता है और न ही उसके समान हो सकता है। हर दावे को तौलने के लिए बिल्कुल सटीक तराजू कुरान है।

यदि आप कहते हैं कि, "मुहिद्दीन के बीच ऐसे शब्द हैं जिनका शरीयत में कोई स्थान नहीं है और इस कारण कुछ प्रमुख विद्वानों ने उन्हें अविश्वास के शब्द माना है," तो मैं जवाब में कहता हूँ:

एक स्थापित नियम है, जिसके बारे में मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ। उदाहरण के लिए, अगर शरिया किसी शब्द या काम को अविश्वास मानता है और इसलिए कोई आस्तिक इसे बोल या कर नहीं सकता है, तो इसका मतलब है कि यह शब्द या काम विश्वास के साथ संगत नहीं हो सकता है। यह अविश्वास है, और जिसने इसे बोला या किया है, उसने अविश्वास का काम किया है, लेकिन इसलिए हम उस व्यक्ति को अविश्वासी नहीं मान सकते।

क्योंकि उनके पास कई अन्य गुण हैं जो उनके विश्वास से उत्पन्न होते हैं और जो साबित करते हैं कि वे आस्तिक हैं। कुछ परिस्थितियों में बोला या किया गया कोई शब्द या कार्य आस्तिकता को दर्शाता है।

परिस्थितियों या किसी भिन्न अवस्था या मनोदशा में, और जो व्याख्या के लिए खुला है, उनके गुणों को रद्द नहीं कर सकता है जो प्रदर्शित करते हैं कि वे एक आस्तिक हैं।

हम उस व्यक्ति को अविश्वासी तभी मान सकते हैं जब हम निश्चित हों कि वह शब्द या कार्य उसके अविश्वास से उत्पन्न हुआ है; अर्थात्, हम ऐसा कथन तभी कर सकते हैं जब उनमें देखा गया अविश्वास का गुण अविश्वास का परिणाम हो, न कि किसी और चीज़ का।

मुहीउद्दीन जैसे लोगों द्वारा कहे गए विधर्म या अविश्वास को दर्शाने वाले शब्द कई कारणों और अर्थों से जुड़े हैं। इसलिए, यह संदिग्ध है कि उनका क्या मतलब है। इस वजह से, ऐसे शब्दों को अविश्वास के संकेत के रूप में नहीं माना जा सकता।

किसी व्यक्ति के आदतन कर्म और स्थापित गुण जो विश्वास को दर्शाते हैं
यह साबित करो कि वे आस्तिक हैं; संदेह निर्णय का आधार नहीं हो सकता।

जब संदेह निश्चितता पर आधारित हो तो वह हमेशा निर्णय को रद्द नहीं कर सकता।
किसी व्यक्ति पर उसके किसी शब्द या कार्य के कारण अविश्वास का आरोप नहीं लगाया जा सकता।
भूलने की बीमारी या अनजाने में हुई गलती या भ्रम के कारण ऐसा होता है।

यदि आप कहते हैं, "कुछ आध्यात्मिक तरीकों में ऐसे अनुष्ठान हैं जिन्होंने पूजा का रूप ले लिया है," तो मैं जवाब में कहता हूं: यदि उन्हें अच्छे इरादे से अपनाया गया है और निम्नलिखित तीन शर्तें पूरी होती हैं, तो वे हानिकारक नहीं हो सकते हैं:

उन्हें किसी भी तरह से ईश्वरीय स्मरण की मर्यादा और गंभीरता के विपरीत नहीं होना चाहिए, न ही उन तौर-तरीकों के विपरीत होना चाहिए जिन्हें ईश्वर की उपस्थिति में अपनाया जाना चाहिए।

दूसरी शर्त यह है कि कभी भी धार्मिक रूप से मनाही नहीं होनी चाहिए-
यदि ऐसा कोई तरीका है तो उसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता।

तीसरी शर्त यह है कि इन कृत्यों या कार्रवाइयों को नहीं किया जाना चाहिए
पूजा के हिस्से के रूप में बाहर जाने की अनुमति नहीं है। इन्हें जानबूझकर भी नहीं किया जाना चाहिए।
वे कुछ और नहीं, बल्कि वह होना चाहिए जो अनजाने में और अनजाने में आनंद और उल्लास के कारण किया गया हो।

क्योंकि इबादत अपने आप में एक स्मरण है, जबकि अन्य क्षम्य कार्य या अनुष्ठान प्रोत्साहन का साधन हो सकते हैं। कुरान ने स्मरण के किसी भी रूप को निर्धारित नहीं किया है; इसने किसी अनुमेय रूप पर कोई प्रतिबंधात्मक परिभाषा नहीं रखी है।

स्मरण के कार्य शरीयत द्वारा निर्धारित इबादत के कार्यों से मिलते जुलते नहीं हो सकते। क्योंकि शरीयत द्वारा निर्धारित कार्य फलों के समान हैं, जिनके अन्दरूनी भाग और छिलका दोनों ही खाने योग्य हैं।

जबकि ईश्वरीय स्मरण में सम्मिलित कर्मकाण्ड अखरोट के समान हैं।
उनके खोल केवल कठोर आवरण हैं और खाने योग्य नहीं हैं।

ब्रह्माण्ड में होने वाली गतिविधियों में बहुत आनंद है

शाश्वत बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, शक्ति के हाथ ने हर चीज में गतिविधि को शामिल किया है ताकि जो भी क्षमता है उसे कार्यान्वित किया जा सके;

और इसने उस गतिविधि में एक गहन आनंद जोड़ दिया है, जिससे यह एक महत्वपूर्ण गतिविधि बन गई है।
विश्व में परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक या तंत्र।

यह तंत्र, जो एक नियम है, विकास के लिए बीज और प्रगति के लिए चक्र बना दिया गया है। यह शक्ति ही है जो उस बीज को बनाती है, उसे रूप प्रदान करती है और दया ही उसका पोषण करती है।

जिस प्रकार जेल से निकलकर एक विशाल बगीचे में जाना एक आनंद है, उसी प्रकार
इसके अलावा, संकुचित बीज के लिए अंकुर बनना एक व्यापक आनंद है।

रासायनिक संरचना में परिवर्तन शुरू होता है और प्रकाश से गर्मी पैदा होती है। इसी तरह, जब परिवर्तन की दिशा में गतिविधि शुरू होती है, तो आनंद बढ़ता है और अपनी सीमाओं से बाहर निकल जाता है।

यह आनंद ही है जो कर्तव्यों के पालन में कष्टों को सहन करने की क्षमता प्रदान करता है तथा उन्हें पूरा करने के लिए उत्साह प्रदान करता है। इसी कारण, चेतन प्राणियों की तुलना में, जड़ प्राणियों द्वारा किए जाने वाले कर्तव्य दोषरहित होते हैं।

निर्जीव प्राणियों को जो कार्य करने के लिए बनाया गया है, वे इतने आकर्षक हैं कि वे उन्हें काम करने के लिए प्रेरित करते हैं और निर्जीव प्राणी अपने सृष्टिकर्ता की महिमा करके उसका धन्यवाद करते हैं। क्योंकि वे उसे "स्वाभाविक रूप से" जानते हैं।

इस वास्तविकता के कारण ही सहजता वास्तव में कष्टकारी है और जो परिश्रम क्रियाकलाप में निहित है, वह सहजता है। निष्क्रिय व्यक्ति दुखी होता है, जबकि प्रयास करने वाला सुखी होता है; निष्क्रिय व्यक्ति शाश्वत ईश्वरीय इच्छा द्वारा स्थापित व्यवस्था के प्रति विद्रोही होता है, जबकि प्रयास करने वाला आज्ञाकारी होता है।

बहुसंख्यकों को जलाने के लिए जो आग जलाई गई है, उसमें अल्पसंख्यक जल रहे हैं।
अन्यथा, यदि जिम्मेदारी अपना अर्थ खो दे,
परीक्षण में बुद्धि खो गई है

एक निर्दोष अल्पसंख्यक को पापी बहुसंख्यक द्वारा दी गई सज़ा भुगतनी पड़ती है। क्योंकि मानव की स्वतंत्र इच्छा के लिए यह आवश्यक है कि जिम्मेदारी का ज्ञान और रहस्य छिपा रहे और व्याख्या के लिए खुला रहे।

धार्मिक उत्तरदायित्व एक परीक्षा है जो अवश्य होनी चाहिए; यदि बुद्धि
परीक्षण में यह स्पष्ट हो जाता है कि अब जिम्मेदारी में परीक्षण शामिल नहीं है।

मान लीजिए कि एक घर जल गया है और उसमें दो व्यक्ति हैं; एक निर्दोष है, दूसरा पापी और अवज्ञाकारी है।

यदि निर्दोष व्यक्ति को अदृश्य हाथ द्वारा बचा लिया जाता है, तो न केवल मानव की स्वतंत्र इच्छा अपना अर्थ खो देगी, बल्कि उसमें निहित जिम्मेदारी और ज्ञान भी समाप्त हो जाएगा।

उत्तरदायित्व आत्माओं के विकास, परिष्कार और श्रृंगार का एक साधन है, जो कि कच्चे खनिजों के समान हैं जिन पर काम किया जाना है।

आदेशों की पूर्ति और निषिद्ध कार्यों से परहेज़ करने के कारण, अबू बकर, सत्यवादी, वफादार, गुफा में पैगंबर के प्रसिद्ध साथी, हीरा बन गए, और उनकी शुद्ध आत्मा ने परिष्कार और विवेक प्राप्त किया, जबकि अबू जहल की आत्मा अंधकार की परतों में डूब गई।

यदि मानवीय उत्तरदायित्व में बुद्धिमत्ता न होती, तो उनकी आत्माएं एक दूसरे से भिन्न नहीं होतीं, एक चमकता सितारा होता और दूसरा अंधकार में डूबा होता; एक प्रतिष्ठित नेता नहीं होता जबकि दूसरा गंदा जहर होता।

उत्तरदायित्व का ज्ञान और रहस्य, उसकी पूर्ति में आने वाली कठिनाइयाँ, अच्छे कार्यों के लिए प्रयास और प्रतिस्पर्धा - ये सब प्रकाश के भीतर की अग्नि हैं।

यह अग्नि मनुष्य के शुद्धिकरण, परिष्कार और श्रृंगार का कार्य करती है।
आत्माओं का ज्ञान तथा उच्च आत्माओं को निम्न आत्माओं से अलग करना।

बीज बड़ा होकर वृक्ष बन गया और वृक्ष फल देने लगा।

कमज़ोरी कभी-कभी अत्याचारी होती है

निराशा और संदेह दिल में कमज़ोरी पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए: इससे प्रभावित व्यक्ति देखता है कि अत्याचारी के प्रहार से पीड़ित को चोट पहुँचती है।

आघात भयंकर हैं; उत्पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा उस कमजोर दिल वाले व्यक्ति के हृदय में प्रतिबिंबित होती है और उसे दुखी करती है।

दुखों को सहना कमज़ोर दिल के लिए बहुत मुश्किल होता है। इंसान उनसे बचना चाहता है, इसलिए दिल को राहत देने के लिए वह खुद को धोखा देता है और कहता है कि पीड़ित व्यक्ति को ही मार खानी चाहिए।

वे बहाना ढूँढने की कोशिश करते हैं और बहाना पाते हैं: “उस नीच आदमी का उस जगह क्या काम है जहाँ उसे पीटा जाएगा?”

इस प्रकार व्यक्ति अन्यायी बन जाता है और अत्याचारी की सहायता करता है।
कमज़ोर, दुखी प्राणी जो अपनी कमज़ोरी के कारण बच नहीं सकते।

इस परिणाम का वास्तविक कारण बाघ की क्रूरता है, लेकिन उसके शिकार की दुर्बलता तो बस एक बहाना है। दुर्बल हृदय वाला व्यक्ति क्रूरता का अपराध शिकार की दुर्बलता पर थोपता है।

अस्तित्वहीनता का पाप अस्तित्व के लिए दण्डनीय है।

लालच ही अभाव का कारण है

लालच से अभाव और आवेग से हानि होती है। क्योंकि जीवन के दिव्य नियम ने इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक के बाद एक कदम उठाने का विधान किया है।

चूँकि लालची व्यक्ति इन चरणों का पालन नहीं करता, इसलिए अधिकांश मामलों में वह सफल नहीं हो पाता। यदि वह इन चरणों का पालन करने का प्रयास भी करता है, तो लालच के कारण कम से कम एक कदम तो वह छोड़ ही देता है; अंत में वह निराश हो जाता है और असावधानी में डूब जाता है।

तथापि, यदि दया उन पर दया करती है, तो वह उनकी इच्छाएं पूरी करती है।
लगभग सभी लोगों ने इसका अनुभव किया है।

ईश्वर ने हृदय के अन्दरूनी भाग को ईश्वर के प्रति विश्वास और प्रेम के लिए बनाया है।
उसके लिए, साथ ही उसके दर्शन के लिए भी, इस प्रकार इसे नाजुक बना दिया गया।

यह उस शाश्वत् आराध्य का दर्पण है; कोई मूर्ति इसमें प्रवेश नहीं कर सकती,
क्योंकि इस “पत्थर” के वजन से वह “कांच” टूट जाता है।

परमेश्वर ने हृदय के बाहरी भाग को भी अन्य वस्तुओं के लिए एक व्यवस्थित भण्डार बनाया है। अपराधी लालच उस नाजुक हृदय को छेद देता है और उसे बहुत कष्ट पहुँचाता है।

यह बिना अनुमति के मूर्तियों का आयात करता है। इससे भगवान नाराज होते हैं और दंड-
लालची को उसके लक्ष्य के विपरीत प्राप्ति कराकर उसे नष्ट कर देता है।

जो लोग अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं और पहुंच को इस्लामी पंथ के अंतरतम मंदिर तक ले जाते हैं, उन्हें सम्मान और गौरव नहीं, बल्कि अपमान और शर्म का सामना करना पड़ता है।

वे अपमान की वस्तु हैं। इसी कारण से प्रतीकात्मक प्रेम - विपरीत लिंग के प्रति प्रेम - आमतौर पर हानि और वंचना से मिलता है।

उन लोगों द्वारा रचित कविताओं का संग्रह जो आलंकारिक प्रेम में पड़ गए हैं
शिकायतों, विलापों और अपमानजनक विलापों से भरे हुए हैं।

क्योंकि अधिकांश प्रेमी अत्याचारी होते हैं; वे अपने प्रेमियों को अपमानित करते हैं और उन पर दया नहीं करते।

क्योंकि हृदय के अन्दर प्रतीकात्मक प्रेम ईश्वरीय आदेश और जीवन के नियमों का अपमान है, यह उनके लिए अपमानजनक है।

ईश्वरीय व्यवस्था जो भी उसके विपरीत है, उसका तिरस्कार करती है, और
वह ऐसे अपमानजनक और आपत्तिजनक कृत्यों और व्यवहारों की भी निंदा करता है।

लालच के सिद्धांत के कारण ही दो उदाहरण दिए गए हैं
मानव सामाजिक जीवन के बारे में सभी को जानकारी है।

एक तो नींद का लालच, जिसके कारण नींद नहीं आती। दूसरा लालची, हठी भिखारी को दान से कोई लाभ नहीं होता।

सोने के लिए अत्यधिक उत्सुक रहने और आधी रात को सोने का प्रयास करने के कारण व्यक्ति अपनी नींद खो देता है और सुबह उठने पर उसकी नींद खुल जाती है।

दो भिखारी हैं, एक लालची और जिद्दी, दूसरा संतुष्ट, शर्मीला और शांत।

दान देने की इच्छा दूसरे को होती है, पहले को नहीं।
इस प्रकार ईश्वरीय आदेश आग्रह या दण्ड देता है। ऐसे कई अन्य उदाहरण हैं, जो इस कानून की सार्वभौमिकता को प्रदर्शित करते हैं।

ईश्वर के लिए न्याय और निष्पक्षता ही मुसलमान बनती है, अहंकारपूर्ण आलोचना नहीं

हमारी सबसे बड़ी बीमारी, जो वास्तव में एक आपदा है, वह है अहंकार, वाचालता और द्वेष से उत्पन्न आलोचना। यदि कोई न्यायप्रिय, सत्य-प्रेमी व्यक्ति भी ऐसी आलोचना करता है, तो वह सत्य को नुकसान पहुंचाता है, जबकि यदि यह आलोचना घमंड में की जाती है, तो यह सत्य को नष्ट कर देती है।

सबसे अधिक दु:खद तब होता है जब ऐसी आलोचना आस्था के सिद्धांतों और धर्म की नींव के विरुद्ध की जाती है - क्योंकि आस्था एक प्रतिज्ञान और दृढ़ विश्वास दोनों है; यह वरीयता, समर्पण और पालन भी है -

प्रश्नगत आलोचना समर्पण और पालन, वरीयता और अनुपालन को नुकसान पहुंचाती है। भले ही यह संदेह पैदा न करे, लेकिन यह पुष्टि के संबंध में उदासीनता और तटस्थता का कारण बनती है।

संदेह, शंका और निराधार आशंकाओं के इस समय में, प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह उन शुद्ध कार्यों का ईमानदारी से अध्ययन और अनुसरण करे जो अनुपालन और पालन को पोषित और मजबूत करते हैं, साथ ही उन प्रेरक और उत्साहवर्धक विचारों और शब्दों का भी, जो संदेह से मुक्त हैं और जो प्रबुद्ध, गर्म हृदय से आते हैं।

पाश्चात्य-प्रेमी लोगों की जुबान पर वस्तुपरक या निष्पक्ष विचार और तर्क ही प्रसारित होते हैं, जबकि यह दृष्टिकोण, भले ही अस्थायी रूप से, अधर्म का पक्ष लेना है।

यह रवैया केवल वही व्यक्ति अपना सकता है जो धर्म में प्रवेश करने का इरादा रखता है या जो अभी-अभी धर्म में प्रवेश कर चुका है। अथवा सौ में से एक व्यक्ति अस्थायी रूप से धर्म के शत्रुओं को चुप कराने या धर्म चाहने वालों को समझाने के उद्देश्य से ऐसा रवैया अपना सकता है।

हालाँकि, इसे लोकप्रिय बनाने से चालीस मुसलमानों की आशा खत्म हो जाती है
इस्लाम के एक दुश्मन पर विजय पाने का प्रयास।

आत्म-सम्मान कमजोरी से आता है और गुमराही की ओर ले जाता है: यह अपने साथियों के बीच भटकाव है, जबकि यह शत्रुतापूर्ण अविश्वासियों के भ्रामक उकसावों के खिलाफ दृढ़ता है

गुमराही के स्रोतों में से एक है अपनी राय पर गर्व करना। किसी के गर्व या आत्मसम्मान का मतलब है कि उनकी राय का "जनता के आम तरीके" से कोई लेना-देना नहीं है और इसलिए उन्हें कहीं और ले जाना चाहिए - फिर व्यक्ति को अपने लिए दूसरा रास्ता बनाना होगा।

जो व्यक्ति आम जनता के मार्ग से भिन्न मार्ग अपनाता है, उसे संदेह और शंका की दृष्टि से देखा जाता है, और स्वाभिमानी व्यक्ति ऐसे संदेहों और शंकाओं से लड़ने के लिए बाध्य होता है।

वह अभिमानी व्यक्ति न केवल अकेला रह जाता है और जनता की सद्भावना से वंचित हो जाता है, बल्कि वह संदेह और शंका का पात्र भी बन जाता है, और लोग उसके विरुद्ध हो जाते हैं। ऐसे एक हजार लोगों में से केवल एक ही व्यक्ति को मुक्ति मिल पाती है।

हे सही मार्गदर्शन की तलाश करने वाले! घमंड के सिर को अपने पैरों के नीचे रखो और उसे कुचल दो! विश्वास के दुर्जेय किले में प्रवेश करो और विश्वास करने वाले लोगों के मार्ग का अनुसरण करो।

पापी और वासनाओं में लिप्त व्यक्ति को ईश्वर का अस्तित्व पसंद नहीं आता।
नर्क, क्योंकि यह उनके दिल की सहजता के विपरीत है। वे ऐसी किसी भी चीज़ का स्वागत करते हैं जो उनके दोषपूर्ण दृष्टिकोण के अनुसार, नर्क के अस्तित्व का खंडन करती है। इस दृष्टिकोण के साथ, एक व्यक्ति नर्क को नकारने की हद तक जा सकता है।

चुगली की दुष्टता की हद

क्या तुममें से कोई अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसंद करेगा? (49:12)

यह महान आयत, जिसका मूल अरबी संस्करण छः शब्दों का है, छः गंभीरता के साथ चुगली की निन्दा करती है; यह चुगली की निन्दा करती है और उसे फटकारती है।

वाक्य के आरंभ में प्रश्नवाचक चिह्न (और यहां इसका अनुवाद ' होगा' किया गया है) को चिह्नित करते हुए ' हम्ज़ा ' पानी की तरह प्रवेश करता हुआ, पद्य के सभी शब्दों तक पहुंच जाता है, जिससे उनमें से प्रत्येक में प्रश्नवाचक लहजा होता है।

इस प्रकार, बिलकुल शुरुआत में यह पूछता है, "अपनी बुद्धि पर विचार करें: क्या
क्या यह ऐसी घृणित बात की अनुमति देता है?”

इसमें आगे पूछा गया है: "यदि आपके पास ठोस बुद्धि नहीं है, तो देखिए
अगर आपके पास दिल है, तो क्या वह ऐसी दु:खद चीज़ से प्यार करता है?

"अगर तुम्हारा दिल ठीक नहीं है, तो अपने ज़मीर से पूछो। तुम अपने ही दांतों से खुद को कैसे काट सकते हो, जबकि दर्द तुम ही भुगत रहे हो?
इसके अलावा, क्या आपकी अंतरात्मा इस बात से सहमत है कि आप अपने सामाजिक जीवन को इस हद तक भ्रष्ट कर रहे हैं?

"यदि आपमें सामाजिक चेतना नहीं है, तो अपनी मानवता पर विचार करें: वह इतनी अधिक पाशविकता की भूख कैसे महसूस कर सकती है जो साथी मनुष्यों को टुकड़ों में फाड़ने की अनुमति देती है?

"यदि आप में मानवता नहीं है, तो अपनी मानवीय कोमलता, अपनी समझ पर विचार करें
रिश्तेदारी का: क्या यह आपकी अपनी कमर को नष्ट करने जैसे जंगली कार्य के लिए इच्छुक है?

"शायद तुममें मानवीय कोमलता नहीं है, रिश्तेदारी की भावना नहीं है; तो, कम से कम, क्या तुम्हारा स्वभाव इतना अच्छा नहीं है कि तुम सम्मान-योग्य मृतक को अपने दांतों से टुकड़े-टुकड़े कर सको?"

इसका अर्थ यह है कि चुगली एक चिरकालिक बीमारी है, जो बुद्धि और हृदय, विवेक और मानवता, मानवीय कोमलता और रिश्तेदारी की दृष्टि में, साथ ही साथ मानव स्वभाव और शरीयत दोनों में घृणित और निन्दनीय है।

खण्डन किया हुआ, अस्वीकृत चुगली केवल निर्वासित किये जाने के योग्य है। कोई कैसे लगातार मनुष्यों का खून पी सकता है?

मुस्लिम अपराधी अन्य धर्मों के अपराधियों की तरह नहीं हैं; हमारी नैतिकता हमारे धर्म से ही चलती है

अगर मुसलमानों में से कोई एक अपराधी है, तो वह आम तौर पर अनैतिक होता है। उनमें से ज़्यादातर अन्यायी और बेईमान होते हैं। मुसलमान में बुरी इच्छा तभी विकसित हो सकती है जब उनके ज़मीर में ईमान की आवाज़ दबा दी गई हो।

इसका अर्थ यह है कि कोई भी मुस्लिम अपराधी अपनी अंतरात्मा और हृदय को आहत किए बिना, या अपने आध्यात्मिक मूल्यों को अपमानित किए बिना, स्वतंत्र रूप से कोई बुराई नहीं कर सकता।

इसी कारण से इस्लाम धर्म एक अपराधी को देशद्रोही या अपराधी मानता है; यह उनकी गवाही को अस्वीकार करता है। इसी कारण से इस्लाम एक धर्मत्यागी को जानलेवा ज़हर मानता है।

हालांकि, यह एक गैर-मुस्लिम के जीवन को मान्यता देता है जो एक स्वर्गीय धर्म से संबंधित है, जब तक कि वे सार्वजनिक कानून का पालन करते हैं, या उसके साथ युद्ध में नहीं हैं।

किसी अच्छे काम को अच्छा बनाने के लिए उसके पीछे की अच्छी मंशा जिम्मेदार होती है। साथ ही, धर्म के नाम पर न्याय लागू किया जाना चाहिए, ताकि आत्मा के साथ-साथ मन, हृदय और विवेक भी उसके अधीन हो सकें और उसका पालन कर सकें।

यदि कोई कानून केवल सार्वजनिक या राजनीतिक व्यवस्था के नाम पर लागू किया जाता है, तो यह केवल दिल में भय या आशंका पैदा कर सकता है।

कानून केवल आशंका के माध्यम से ही मन को प्रभावित कर सकता है; यदि कोई व्यक्ति अपराध करने के लिए इच्छुक है तो वह केवल औपचारिक दंड के बारे में ही सोचता है। वे दंड की मार से तभी डरते हैं जब यह साबित हो जाता है कि वे अपराधी हैं।

या फिर वे इस डर से अपराध करने से बचते हैं कि लोग उन्हें डांटेंगे। इसी तरह, उन्हें इस उम्मीद में भी सुकून मिलता है कि उनका अपराध लोगों से छिपा रहेगा।

न्याय के क्रियान्वयन में धर्म की उपेक्षा के कारण ही न्याय अब सम्मानीय या प्रभावी नहीं रह गया है।

यद्यपि इसका पूर्ण रूप से पालन किया जाता है, लेकिन धर्म के नाम पर जो न्याय लागू नहीं किया जाता है, वह उस प्रार्थना के समान है जो बिना इरादे के, काबा की दिशा में मुंह किए बिना, या अनिवार्य तैयारी के बिना की जाती है - यह वह प्रार्थना है जो स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसमें कुछ अनिवार्य संस्कार गायब हैं।

एक आस्तिक अपने बड़ों का आदर करता है, उन पर दया करता है अपने से छोटे, तथा अपने साथियों के प्रति प्रेम और उदारता

एक जहाज़ सिर्फ़ इसलिए नहीं डूब सकता कि उसमें सवार एक भी अपराधी है। इसी तरह, एक आस्तिक जिसके पास कई निर्दोष गुण हैं, उसके साथ सिर्फ़ एक आपराधिक गुण या काम की वजह से दुश्मनी नहीं की जा सकती।

खास तौर पर, महान गुण, जैसे कि विश्वास, ईश्वरीय एकता की पुष्टि, और ईश्वर के प्रति समर्पण, जो सभी प्रेम के साधन हैं, उहुद पर्वत के समान हैं। इसके विपरीत, जो दोष शत्रुता के साधन हैं, वे कंकड़ के समान हैं।

यह कितनी बड़ी मूर्खता और पागलपन है कि कंकड़ों को उहुद पर्वत से भी भारी समझा जाए! एक आस्तिक द्वारा दूसरे आस्तिक के प्रति शत्रुता महसूस करना भी उतनी ही निर्दयता है।

भावनाओं के तराजू पर तौला जाए तो ईमान वालों में दुश्मनी इस्लाम और उससे मिलने वाली सुरक्षा और शांति के खिलाफ है। एक मुसलमान अपने मुसलमान भाई/बहन के प्रति सिर्फ़ उनकी गलतियों के लिए दया ही महसूस कर सकता है, और किसी तरह की द्वेष भावना नहीं रख सकता

बिल्कुल भी।

संक्षेप में: इस्लाम भाईचारे की मांग करता है, और प्रेम विश्वास के लिए आवश्यक है।

जिस व्यक्ति में बुरे नैतिक गुण मौजूद हैं, वह पहले से ही इनसे दण्डित और पीड़ित है, जबकि अच्छे नैतिक गुण अपने आप में अपना पुरस्कार रखते हैं। इसलिए इस मामले को सभी के लिए न्यायप्रिय न्यायाधीश के पास भेज दें।

हालाँकि, आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपने भीतर सरासर अज्ञानता को छुपाए हुए है, क्योंकि यह सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के कार्यों को "प्राकृतिक" कारणों और साधनों से जोड़ता है और उन्हें इस रूप में प्रचारित करता है।

मानवता में यह भूचाल, मुस्लिम समाज का हिलना, भूचाल से होने वाली शर्मिंदगी को दूर करेगा और उन्हें स्थिरता प्रदान करेगा। संभवतः यह पश्चिम को कमजोर कर देगा

और पूर्व प्रकाशित हो जाए।

एक समय किसी ने कहा था, "काफिरों की सभ्यता मुसलमानों पर विपत्ति लेकर आई है। अब समाजवाद प्रकट हुआ है, जिसने दुनिया को अराजकता में डाल दिया है; इसके अनुयायी अत्यंत कट्टर हैं।"

मैंने जवाब में कहा: "डरो मत! लोकप्रिय सभ्यता ही सामाजिक-
"यह इस्लाम के सिद्धांतों के विपरीत नहीं है। पश्चिम को इससे डरना चाहिए।"

लेकिन वर्तमान, बिखरी हुई सभ्यता अभिजात वर्ग के लिए विशिष्ट है; यह
इस्लाम को भ्रष्ट करने की कोशिश की और उसे बहुत नुकसान पहुंचाया, बहुत तबाही मचाई।

इसने सबसे बड़ी "रिश्वत" ली है, क्योंकि इसे भौतिकवाद और धर्माधिकरण के खमीर के साथ गूंथा गया है; यह कई मामलों में मोहक है, भ्रामक और भड़काऊ तत्वों से सुसज्जित है।

यह देशद्रोही, मोहक जादू-टोना मुसलमानों को धर्म, शुद्धता और उच्च, महान भावनाओं के बदले में बेचता है। एक शानदार जीवन का वादा करते हुए, यह छल-कपट कई तरीकों से धर्म और शुद्धता दोनों को भ्रष्ट करता है।

जहाँ तक समाजवाद की बात है, यह एक सादा जीवन प्रदान करता है और खुद को आम लोगों के लिए प्रस्तुत करता है। यह लोगों को उनके धर्म और शुद्धता के बदले में बलिदान करने के लिए मजबूर नहीं करता है; कोई भी इसके प्रति ऋणी महसूस नहीं करता है।

जिस तरह लोगों को भोजन की ज़रूरत होती है, उसी तरह उन्हें आनंद की भी ज़रूरत होती है। अगर आनंद की उनकी ज़रूरत वैध, आध्यात्मिक “भोजन” से पूरी नहीं होती, तो वे इसे बुरे, नीच और भ्रष्ट तरीकों से पूरा करने की कोशिश करते हैं।

उदाहरण के लिए, कुछ लोग आपको भोजन के लिए आमंत्रित करते हैं। उनमें से एक व्यक्ति दिखावे का शौकीन है, और मनोरंजन का शौकीन है; वह आपको अच्छे शब्दों में आमंत्रित करता है।

दूसरे का जीवन सादा है, थोड़े से संतुष्ट हैं; वे आपको बिना चापलूसी भरे शब्दों का इस्तेमाल किए, सादा सूप पीने के लिए आमंत्रित करते हैं। यह नमाज़ पढ़ने का समय है।

आप पहला निमंत्रण स्वीकार कर लें, जो बहुत समृद्ध है, तथा जमात के साथ नमाज़ अदा करने और उसके सुन्नत भाग को छोड़ दें; आप नमाज़ को पूरी तरह से छोड़ने की कीमत पर भी इसे स्वीकार कर सकते हैं।

हालाँकि, आप दूसरे सरल निमंत्रण को स्वीकार नहीं करते हैं और नमाज़ को उसके सुन्नत भाग के साथ करना पसंद करते हैं, जो आध्यात्मिक आनंद और स्थायी खुशी देता है।

पहला निमंत्रण वर्तमान सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि दूसरा, लोकप्रिय सभ्यता, अधिक समतावादी है।

इस्लाम से शुद्ध न्याय निकलता है और आत्मा को जीवन देता है। यह आपके जीवन को नष्ट नहीं करता; यह जो जीवन प्रदान करता है वह गलत और इसलिए अंधकार से मुक्त है।
यह हमें पूर्ण सत्य की ओर ले जाता है।

मुसलमानों ने सबक सीख लिया है; उनकी उपेक्षा और असावधानी के कारण इस्लाम उनसे नाराज है। जबकि ईसाई लोग - सभ्यता और विज्ञान को धोखे से मित्र बनाकर और उन्हें हड़पकर - हम पर हावी हो गए हैं।

अब पूर्व में एक भयानक हथियार का निर्माण किया जा रहा है; इसका निर्माण निकट है। यह अधिकांशतः सत्य है, जो हमारी संपत्ति है, और इसलिए हमें इसकी रक्षा करनी चाहिए। जहाँ तक इसके धोखेबाज, वार्निश वाले हिस्से का सवाल है, हमें इसे इसके निर्माताओं पर छोड़ देना चाहिए।

अगर हम इसके प्रति उदासीन बने रहेंगे और इसके प्रति नाराजगी महसूस करेंगे, जैसा कि हमने अतीत में किया था, तो ईसाई जगत इसके साथ दोस्ती कर लेगा और इस्लाम के नुकसान के लिए इसका इस्तेमाल हमारे खिलाफ करेगा। इसका विरोध करना बहुत मुश्किल होगा।

यह एक नया विचार है, जो विनाशकारी और उपयोगी दोनों है, जिसे जनता की ओर मोड़ा गया है। यदि जनता को संबोधित कोई विचार पवित्रता प्राप्त नहीं करता है, तो वह जल्द ही कमज़ोर हो जाएगा और मर जाएगा।

दो महान धर्म हैं जो पवित्रता का विचार प्रदान करते हैं, लेकिन एक उस पर अंधकार लाता है, जबकि दूसरा प्रकाश।

यह चतुर पूर्वी विचार - जब यह पैदा हुआ, तो इसने पाया कि वर्तमान ईसाई धर्म इसका दुश्मन है, जो इसके ठीक बगल में खड़ा है। इसलिए, इसने कभी भी धर्म के साथ शांति नहीं बनाई।

इस विचार या मार्ग को निश्चित रूप से स्थायित्व की आवश्यकता है और इसका स्थायित्व इस पर निर्भर करता है
जनता द्वारा इसकी स्वीकृति पर।

जनता द्वारा स्वीकृति के लिए पवित्रता की आवश्यकता होती है। जो इसे पवित्रता दे सकता है वह ऐसा धर्म होना चाहिए जो जनता पर दया करता हो।

इसका मतलब यह है कि यह विचार या रास्ता अनिवार्य रूप से इस्लाम का सहारा लेगा, या यह
मर जाएगा; उसे इस बात का भली-भाँति ज्ञान होना चाहिए।

यदि आप कहते हैं, "ऐसा क्यों है कि इस्लाम दयनीय और विचित्र हो गया है, अपनी महिमा खो रहा है, और हम भी उसके द्वारा दी गई समृद्धि के साथ डूब गए हैं? इस्लाम का सितारा अभी तक नहीं चमका है।"

मैं जवाब में कहता हूं: "ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि हम पश्चिम के प्यार में पड़ गए हैं और एक अशुभ प्रेम के साथ उसकी ओर मुड़ गए हैं।"

हमने इस्लाम का सूरज अस्त कर दिया है। जब हम अपना चेहरा इस्लाम की ओर मोड़ते हैं।
यदि तुम पूरब की ओर ईमानदारी से देखोगे, तो यह वह समय होगा जब इस्लाम की महिमा चाँद को प्रकाशित करेगी। यह इस्लाम के सूर्य से अपना प्रकाश प्राप्त करके उसे फैलाएगा, और इस्लाम का चाँद ऊँचा उठेगा।

हमें धोखा दिया गया है और हमने बहुत बड़ी गलतियाँ की हैं, हमने अपना प्यार विदेश में खर्च किया है और घर में दुश्मनी फैलाई है। हमें अपने होश में आना चाहिए ताकि हम ठीक हो सकें और विकास कर सकें।

एंग्लिकन चर्च को जवाब

एक समय इस्लाम का एक क्रूर, निर्दयी दुश्मन, एक राजनीतिक षड्यंत्रकारी, एक षडयंत्रकारी धोखेबाज जो खुद को श्रेष्ठ दिखाना चाहता था, एक पुजारी की आड़ में, इनकार करने के इरादे से,

एक दुःखद समय पर, अपने पंजों से हमारा गला दबाते हुए, उन्होंने द्वेषपूर्ण ढंग से हमसे चार बातें पूछीं, तथा हमसे छः सौ शब्दों में उत्तर देने को कहा।

हमें ऐसी द्वेषपूर्णता के सामने थूक कर जवाब देना चाहिए था, उनकी साजिश के सामने आक्रोश में चुप रहना चाहिए था, तथा उनके इनकार का मौन, जोरदार उत्तर देना चाहिए था।

हालाँकि, मैं उस शत्रुता के बारे में बोलने के लिए नीचे नहीं गिरूँगा, बल्कि एक सत्य-खोजकर्ता को निम्नलिखित उत्तर दूँगा:

सत्य की खोज करने वाले ने पूछा: “वह कौन सा धर्म है जो मुहम्मद लेकर आये?” मैंने उत्तर दिया:

"यह कुरान में निहित है। कुरान के मूल उद्देश्य विश्वास के छह स्तंभ और इस्लामी जीवन के पाँच स्तंभ हैं।"

उनका दूसरा सवाल था: “इसने मानव विचार और जीवन को क्या दिया है?” मैंने जवाब दिया: “इसने मानव विचार को एकता और जीवन को एक सीधी दिशा दी है। इसके लिए मेरे गवाह ये हैं:

> कह दो, "वह अल्लाह है, जो सर्वथा एक है।" (112:1) अतः जो कुछ तुम्हें आदेश दिया गया है, उसका पालन करो (11:112)।

उन्होंने यह भी पूछा: “यह मानवता की वर्तमान बीमारियों को कैसे ठीक करता है?” मैंने जवाब दिया: “ब्याज और सूद पर प्रतिबंध और ज़कात के दायित्व के माध्यम से। इसके लिए मेरे गवाह ये हैं:

> अल्लाह ब्याज और सूद को किसी भी प्रकार की बरकत से वंचित कर देता है (2:176); अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज और सूद को अवैध ठहराया है (2:275); नमाज़ स्थापित करो और ज़कात (निर्धारित शुद्ध दान) अदा करो (2:43)।

चौथा, उन्होंने पूछा: "यह भारत में उथल-पुथल और क्रांतियों को किस तरह देखता है?"
मानवता? मैंने जवाब में कहा:

"श्रम आवश्यक है, और धन को केवल संचित या रखा नहीं जा सकता
अमीरों और अत्याचारियों के हाथों में। इसके लिए मेरे गवाह ये हैं:

> मनुष्य को तो बस वही मिलता है जिसके लिए वह परिश्रम करता है (53:39); जो लोग सोना-चाँदी इकट्ठा करते हैं और उसे अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते, उन्हें दुखद यातना की शुभ सूचना दे दो (9:34)।

सामान्य गुरुत्वाकर्षण के बजाय, यह आध्यात्मिक है कुरान की गंभीरता जो हमारे विश्व को सुरक्षित रखती है

यह वही स्वर्गीय रस्सी है जो हमारी पृथ्वी को थामे हुए है और इसे अपने दैनिक और वार्षिक अक्षों पर घुमाती है। यह पृथ्वी को सुरक्षित रूप से जकड़े हुए है, और इसे विद्रोह करने से रोकने के लिए इस पर टिका हुआ है।

शरिया ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से उतरा और मानव जाति से एक चमकदार पूजा को जन्म दिया। पूजा में, पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ और उसके पहले पढ़ी जाने वाली प्रार्थनाएँ शामिल हैं

एक के बाद एक, एक साथ बंधे हुए हैं। इन पाँच प्रकाशमान रस्सियों ने मानवता और पृथ्वी दोनों को अदृश्य के क्षेत्र और दिव्य सर्वोच्च सिंहासन से बाँध रखा है।

ये जोड़ने वाले बंधन, जिनका प्रारंभिक बिंदु पांच दैनिक हैं
प्रार्थनाएँ, और जिनका अंतिम बिंदु दिव्य सिंहासन और

अदृश्य, भौतिक, दृश्य क्षेत्र को अदृश्य से, पृथ्वी को मानव जाति से, तथा मानव जाति को स्वर्ग से जोड़ो।

ये पाँच बंधन पृथ्वी के चारों ओर एक बेल्ट हैं, जो पाँच बेल्टों से बनी है; दोनों अलग-अलग और एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। वे इसके वस्त्र भी हैं, दो ध्रुव भुजाएँ हैं; पृथ्वी के निवासी कभी नंगे नहीं रहते।

ये पट्टियाँ एक ही क्षण में एक हो जाती हैं, सूर्य के प्रकाश की तरह। वे एक ही समय में अलग-अलग भी होती हैं, इंद्रधनुष की चमकदार पट्टियों की तरह, और

एक ही बिंदु पर वे दोनों दिव्य सिंहासन से जुड़े हुए हैं और पृथ्वी को दिव्य सिंहासन से जोड़ते हैं। वे पृथ्वी को घुमाते हुए उसे जीवन प्रदान करते हैं। यदि यह वस्त्र फटा हुआ है,

या यदि रस्सी में से एक टूट जाए, तो कोलाहल देखें! ठंड का अंधेरा उस पर भारी पड़ता है, और वह जम जाता है; यह उसकी मृत्यु और दुनिया के विनाश की आसन्नता को इंगित करता है: एक अत्यंत भयानक भूकंप।

निश्चय ही हमने आदम की सन्तान को सम्मान प्रदान किया (17:70)।

किसी ने पूछा: "ऐसा क्यों है कि केवल मानव जाति को ही सर्वोच्च पद से सम्मानित किया गया है - सर्वोच्च ट्रस्ट को अपनाने के लिए - और पृथ्वी पर उप-प्रधान बनाया गया है?"

मैंने जवाब में कहा: सबसे अच्छी चीज़ वह है जो बीच में और मध्यम में हो। अगर ब्रह्मांड के केंद्र में एक शंकु खींचा जाए, तो परमाणु उसके नुकीले सिरे पर होगा।

ब्रह्माण्ड के प्रकाशमान व्यास के केन्द्र बिन्दु पर, जो सूर्यों के सूर्य तक फैला हुआ है, मानवता खड़ी है तथा सर्वोच्च ट्रस्ट की रक्षा कर रही है।

परमाणु और मानवता के बीच तथा मानवता और सूर्य के बीच की दूरी एक समान है। मानवजाति सृष्टि के हार में एक अद्वितीय कड़ी है।

क्योंकि वह अद्वितीय रत्न मोती अनाथ, पैगम्बर मुहम्मदुल-हाशिमी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के लिए एक सुखद शंख है; यह संपूर्ण सृष्टि का एक लघु नमूना है, जो अदृश्य और दृश्य दुनिया को समाहित करता है।

इसमें खिड़कियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक एक दुनिया की ओर खुलती है; वह इन खिड़कियों के माध्यम से इन दुनियाओं को देखता है। अपनी आंतरिक और बाहरी इंद्रियों के अलावा, इसमें कई अन्य इंद्रियाँ भी हैं।

गंध और स्वाद की तरह, प्रेरणा या आग्रह भी एक इंद्रिय है, जैसा कि उत्साह भी है।
दोनों ही बहुत सूक्ष्म हैं, तर्क या दृष्टि पर निर्भर नहीं हैं, तथा उन्हें यात्रा करने के लिए बहुत जगहें हैं।

वे - उद्देश्य और उत्साह - अपने हाथों में कई चीजें रखते हैं जिन्हें वे पूर्वाभास, सच्चे सपनों और ठोस आध्यात्मिक खोज या रोशनी के माध्यम से अनुभव करते हैं।

यह सोचना कि आवरण ही सार है, सार को खोना है।

पांच चीजें पांच अन्य चीजों को ढकती हैं: दृश्यमान भौतिक क्षेत्र अदृश्य को ढकता है; प्रकृति, ईश्वरीय इच्छा; अंध शक्ति, ईश्वरीय शक्ति; शब्द, अनुमानित अर्थ; और अनुमानित अर्थ, स्वयं अर्थ।

पर्दे पर ध्यान केंद्रित करने से हमेशा गलतियां होती हैं और निराधार संदेह पैदा होते हैं। उदाहरण के लिए, इसका अर्थ यह है: इसका स्थान मन है और यह बुद्धि का मनोरंजन करता है।

मन में निर्मित अर्थ पर ध्यान केन्द्रित करने और उसमें लीन होने से अर्थ से ही भटकाव हो जाता है, तथा अर्थ एक ऐसे रूप में पहुंच जाता है जो जीवन-रहित और बांझ होता है।

यह कमजोर, अनुत्पादक गतिविधि ऊर्जा और प्रयास को नष्ट कर देती है, और इसका परिणाम बेकार होता है, जो न तो प्रयास और ऊर्जा को उचित ठहराता है, न ही किसी के उत्साह को संतुष्ट करता है, न ही किसी की खुशी की भावना को प्रसन्न करता है।

इसलिए, निकाले गए अर्थ को या तो पारदर्शी बनाया जाना चाहिए या उसमें छेद कर दिए जाने चाहिए ताकि वह बाहरी दुनिया और बुद्धि की गतिविधि के लिए खुला रहे।

क्योंकि बाहरी दुनिया बहुत बड़ी है, एक ऐसी जगह जहाँ दिल और दिमाग सक्रिय हैं, और इसमें स्थापित वास्तविकताएँ शामिल हैं। आपने जो कमीज़ सिली है, वह मकड़ी के जाले की तरह, आपके संकीर्ण दिमाग के अर्थ के एक हिस्से से -

उस कमीज़ को - जो मक्खी के लिए बहुत टाइट है - भगवान के सर्वोच्च आसन और सिंहासन पर रखने की कोशिश मत करो। अपने मन में जो अर्थ तुम निकालते हो, उसके पन्ने पर तुमने एक छोटा सा नक्शा बनाया है, जो मक्खी के पंख जितना छोटा है, लेकिन संदेह रखने के लिए राजधानी जितना बड़ा है,

फिर आप उस छोटी, नाजुक जगह में खुद को खो देते हैं और सरपट दौड़ने की इच्छा करते हैं
यह कैसी विपत्ति है!

हे भौतिकवादी, प्रकृतिवादी, बल से अंधे और रूपों और शब्दों से धोखा खाए हुए। वैज्ञानिक भौतिकवादी प्रतिभा का अनुसरण करना छोड़ दो ताकि तुम सही मार्गदर्शन तक पहुँच सको।

पाँच पर्दों में से मैंने केवल एक का उदाहरण दिया है; यह पाँचों में सबसे छोटा है, इसलिए दूसरों की तुलना इससे करें। भौतिकवाद की भ्रांतियाँ आपको नारकीय गड्ढों में ले जाती हैं।

इसके बजाय, उस जंजीर को मजबूती से थामे रहो जो आत्मा को स्वर्ग तक ले जाती है।
हमें स्वर्ग में ऊँचा उठाता है।

प्रार्थना किसी असंभव चीज़ के लिए नहीं की जानी चाहिए और उसमें पापपूर्ण शब्द नहीं होने चाहिए

सच्चे मन से की गई कोई भी प्रार्थना स्वीकार की जाती है; जो भी मांगा जाता है, वह या तो वैसे ही दिया जाता है जैसा मांगा जाता है या किसी और तरीके से। लेकिन कुछ शर्तें होती हैं और प्रार्थना करने वाले को हमेशा भगवान से मांगने का अपेक्षित तरीका अपनाना चाहिए।

अपेक्षित अच्छे शिष्टाचार के बिना न तो प्रार्थना और न ही कोई अन्य पूजा-अर्चना स्वीकार की जाएगी।

कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के बारे में शिकायत करने या उसे फटकारने का तरीका नहीं अपना सकता
प्रार्थना में उसका स्मरण करना उचित नहीं है; न ही कोई व्यक्ति मनमाने ढंग से और स्वेच्छाचारितापूर्वक प्रार्थना कर सकता है।

ईश्वरीय ज्ञान और ब्रह्माण्ड के ईश्वरीय आदेश के विपरीत या असंभव कोई भी चीज़ नहीं माँगनी चाहिए।

कोई भी व्यक्ति किसी सीमित चीज़ के लिए अनंतता की माँग नहीं कर सकता। यह कहना कि, “मुझे सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त कराओ!” एक कल्पना है जो किसी सीमा को स्वीकार नहीं करती, और यह ऐसी प्रार्थना नहीं है जिसके लिए विनम्रता या विनती की आवश्यकता होती है।

इसी तरह, एक राशि तय करना, उदाहरण के लिए यह कहना: "परमेश्वर के ज्ञान में चीजों की संख्या के अनुसार," प्रार्थना के लिए उपयुक्त नहीं है -

जब तक कि कोई व्यक्ति उस राशि से बहुतायत का मतलब न निकाले। हालाँकि, प्रार्थना करते समय हमेशा इरादे को ध्यान में नहीं रखा जा सकता है।

भाग तीन

भाग तीन

मुसलमानों की स्थिति पर तर्क और इसे कैसे सुधारें

मुसलमान जिन बीमारियों से पीड़ित हैं और उनका इलाज

I मानव सामाजिक जीवन विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा हूँ

वर्तमान समय में, और यह महसूस करने के लिए कि जबकि यूरोपीय लोग भौतिक प्रगति में भविष्य की ओर ऊंची उड़ान भर रहे हैं, निम्नलिखित छह बाधाओं ने हमें भौतिक प्रगति के संबंध में मध्य युग में रखा है

सामग्री विकास:

पहला है हमारे भीतर निराशा का पुनः जागना।

दूसरा , राजनीतिक और सामाजिक जीवन में सच्चाई और ईमानदारी की मृत्यु।

तीसरा है प्रेमपूर्ण शत्रुता।

चौथा है उन आध्यात्मिक बंधनों के प्रति अज्ञानता जो हमें एक दूसरे से जोड़ते हैं।

विश्वासियों को एक दूसरे के प्रति समर्पित करें।

पांचवां है उत्पीड़न जो एक संक्रामक बीमारी की तरह जीवन के सभी पहलुओं में फैल जाता है।

छठा सिद्धांत है, अपने प्रयासों को केवल व्यक्तिगत हितों तक सीमित रखना।

मैं हमारे सामाजिक जीवन में इन छह भयानक बीमारियों के इलाज को उन छह शब्दों के साथ समझाऊंगा जो मुझे कुरान की फार्मेसी से प्राप्त हुए हैं, जो चिकित्सा के एक स्कूल की तरह है।

इलाज

पहला शब्द या इलाज है आशा और आकांक्षा

यानी हमें ईश्वर की दया पर दृढ़ आशा और अटूट विश्वास रखना चाहिए। मैंने जो सबक सीखा है, उसके आधार पर, ऐ मुस्लिम समुदाय, मैं खुशखबरी देता हूँ और पूरी दुनिया को यह यकीन दिलाता हूँ कि भविष्य सिर्फ़ इस्लाम का होगा। क्योंकि इस्लाम की सभी सच्चाइयों में भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से विकसित होने की जन्मजात क्षमता होती है।

इतिहास, जो मानवीय क्षेत्र में घटित घटनाओं को दर्ज करता है, इस सत्य का सबसे सच्चा गवाह है। यह हमें दिखाता है - जैसा कि रूसियों को हराने वाले जापानी कमांडर ने कहा था - कि मुसलमानों ने इस्लाम की सच्चाईयों पर अपने विश्वास के बल पर प्रगति की है और अपनी सफलताएँ प्राप्त की हैं।

इन सत्यों की शक्ति से शक्ति प्राप्त की है, जबकि उनका पालन करने में उनकी कमजोरी की सीमा तक गिरावट आई है। इस वास्तविकता का उल्टा अन्य धर्मों के लिए सच है। उनके अनुयायियों ने अपने धर्मों के पालन में अपनी कमजोरी की सीमा तक प्रगति की है और उनकी आसक्ति के अनुपात में क्रांतियों और गिरावट का सामना किया है।

इतिहास का कोई भी कालखंड, सुख के युग से लेकर अब तक, हमें यह नहीं बताता कि किसी मुसलमान ने अपने तर्क के आधार पर इस्लाम के बजाय किसी दूसरे धर्म को प्राथमिकता दी हो और ठोस सबूतों के आधार पर उस धर्म में प्रवेश किया हो। यह सच है कि कुछ लोग ऐसे भी रहे हैं जिन्होंने इस्लाम को छोड़ दिया है; लेकिन यह नकल के माध्यम से हुआ है और इसका कोई महत्व नहीं है। हालाँकि, दूसरे धर्मों के अनुयायी - यहाँ तक कि ब्रिटिश और रूसी लोगों में से भी कुछ, जो अपने धर्म से सबसे ज़्यादा जुड़े हुए हैं - लगातार ठोस सबूतों और ठोस तर्कों के आधार पर बड़ी संख्या में इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं। अगर हम अपने कामों से इस्लामी नैतिकता की पूर्णता और इस्लाम की सच्चाई को प्रदर्शित करते हैं, तो दूसरे धर्मों के अनुयायी बड़ी संख्या में इसमें प्रवेश करते रहेंगे; यहाँ तक कि धरती के कुछ पूरे क्षेत्र और देश इसे स्वीकार कर लेंगे।

इसके अलावा, विज्ञान, युद्ध और अन्य भयानक घटनाओं की चेतावनी के माध्यम से मानव जाति जागृत हुई है, और मानवता की वास्तविक प्रकृति को समझने और इसकी व्यापक क्षमता को समझने में सक्षम हुई है। इसलिए लोग धर्म के बिना मानव नहीं हो सकते और न ही जी सकते हैं। मानवता के बीच अधार्मिक लोगों को धर्म की शरण लेने के लिए बाध्य होना पड़ा है। हमारी अनिवार्य कमजोरी और बाहरी शत्रुता और आपदाओं के घावों के सामने हमारे भरोसे और समर्थन का एकमात्र बिंदु, और हमारी अनिवार्य गरीबी और असीमित जरूरतों और इच्छाओं के सामने मदद मांगने का हमारा एकमात्र बिंदु

अनंत काल की ओर जाने वाला मार्ग है ब्रह्मांड के निर्माता को पहचानना, तथा उस पर और परलोक पर विश्वास करना और उसकी पुष्टि करना।

मानवता यह भी समझ गई है कि इतने व्यापक सार के साथ, उन्हें इस संक्षिप्त, उथल-पुथल भरे सांसारिक जीवन के लिए नहीं बनाया गया है। वे एक अनंत जीवन के लिए किस्मत में हैं; उनकी इच्छाएँ और प्रवृत्तियाँ अनंत काल तक फैली हुई हैं। हर कोई यह महसूस करने लगा है कि क्षणभंगुर, संकीर्ण दुनिया हमारी असीमित इच्छाओं और इच्छाओं की प्राप्ति के लिए पर्याप्त नहीं है।

आकांक्षाएँ। यदि कल्पना शक्ति, जो मानवता की सेविका है, से कहा जाए कि, "तुम्हें समस्त मानव जाति के राजा के रूप में दस लाख वर्ष का जीवन दिया जाएगा, लेकिन अंततः तुम्हें बिना पुनर्जीवन के अनंत काल के लिए मार दिया जाएगा," तो जिसने अपनी सच्ची मानवता नहीं खोई है, उसकी कल्पना शक्ति अफसोस की आह भरेगी और खुशी के अनंत जीवन के अभाव के लिए रोएगी।

इन सबसे महत्वपूर्ण वास्तविकताओं के लिए ही हर किसी ने अपने दिल की गहराई में सच्चे धर्म की तलाश करने की प्रवृत्ति को महसूस करना शुरू कर दिया है। सबसे पहले, वे सच्चे धर्म में एक सच्चाई की तलाश कर रहे हैं जिस पर वे मौत की सज़ा के खिलाफ भरोसा कर सकते हैं, ताकि वे खुद को बचा सकें।

संक्षेप में, हम मुसलमान, जो कुरान के छात्र हैं, प्रमाण का पालन करते हैं और अपने तर्क, बुद्धि और हृदय से विश्वास की सच्चाई को स्वीकार करते हैं। अन्य धर्मों के कुछ सदस्यों के विपरीत, हम प्रमाण को नहीं छोड़ते और धार्मिक नेताओं की आँख मूंदकर नकल नहीं करते। इसलिए, भविष्य में, जब तर्क, विज्ञान और ज्ञान हावी होंगे, तो यह कुरान ही होगा, जिसके सभी आदेश और प्रस्ताव तर्क द्वारा पुष्टि किए गए हैं, जो निश्चित रूप से शासन करेगा।

अतीत में इस्लाम के पूर्ण प्रभुत्व के समक्ष आठ बाधाएं

निम्नलिखित आठ बाधाओं ने इस्लाम की सच्चाइयों को अतीत के महाद्वीप पर पूरी तरह से आक्रमण करने से रोका:

इनमें से पहली, दूसरी और तीसरी बाधाएँ थीं यूरोपियनों की अज्ञानता, सभ्यता से उनकी दूरी और धर्म के प्रति उनकी कट्टर आसक्ति। इन तीनों बाधाओं को वैज्ञानिक विकास और सभ्यता के गुणों के माध्यम से नष्ट किया जा रहा है।

चौथी और पांचवीं बाधाएँ थीं पुरोहितों और धार्मिक नेताओं का वर्चस्व और लोगों द्वारा उनका अंधानुकरण। विचार की स्वतंत्रता और सत्य की खोज की प्रवृत्ति के जन्म के माध्यम से ये दो बाधाएँ दूर होने लगीं।

छठी और सातवीं बाधाएँ हमारे अंदर का अत्याचार और हमारी बुरी नैतिकताएँ हैं जो शरिया के प्रति हमारे विरोध से उत्पन्न होती हैं। व्यक्तिगत, धार्मिक और धार्मिक मूल्यों का ह्रास।

राजनीतिक उत्पीड़न यह शुभ सूचना देता है कि समाज या वर्ग या समिति का भयंकर उत्पीड़न भी तीस या चालीस वर्षों के भीतर समाप्त हो जाएगा।52 इसके अतिरिक्त इस्लामी जोश का उभार और बुरे आचरण के बुरे परिणामों का एहसास इन बाधाओं के गायब होने का कारण बनेगा। वे गायब हो रहे हैं और ईश्वर की इच्छा से पूरी तरह से गायब हो जाएंगे।

आठवीं बाधा यह गलतफहमी है कि विज्ञान के स्थापित तथ्य कुछ इस्लामी सत्यों के बाहरी अर्थ के विपरीत हैं। उदाहरण के लिए, थौर (बैल) और हुत (मछली) नामक दो फ़रिश्तों का अर्थ क्रमशः एक विशाल, भौतिक बैल और मछली माना गया है, और विज्ञान और दर्शन के लोगों ने इस मामले की सच्चाई से अनजान होकर इस्लाम का विरोध किया है।53 इस तरह के कई अन्य उदाहरण हैं जिन्हें समझने के बाद सबसे कट्टर विरोधियों ने भी उनकी सच्चाई को स्वीकार करने का दायित्व महसूस किया है।54 इसलिए, ऐसे मामलों की व्याख्या करने के लिए कुछ प्रामाणिक मुस्लिम विद्वानों के अध्ययन से संकेत मिलता है कि यह आठवीं, भयानक बाधा पूरी तरह से नष्ट हो जाएगी।

विज्ञान, ज्ञान और सभ्यता के गुणों से लैस, मानव स्वभाव में सत्य, निष्पक्षता और न्याय की भावना की तलाश करने की मानवीय प्रवृत्ति, साथ ही मानवता के प्रति प्रेम, ऊपर वर्णित आठ बाधाओं को हराने और हटाने की शुरुआत कर रहे हैं। ईश्वर की इच्छा से, ये बाधाएं आधी सदी के भीतर पूरी तरह से नष्ट हो जाएंगी। मैं पूरी निश्चितता के साथ घोषणा करता हूं: यूरोप और अमेरिका इस्लाम से गर्भवती हैं और भविष्य में एक दिन मुस्लिम राज्य को जन्म देंगे, ठीक उसी तरह जैसे ओटोमैन यूरोप से गर्भवती हैं और एक यूरोपीय राज्य को जन्म देंगे (और उन्होंने ऐसा ही किया)।

पाँच शक्तियाँ जो मुसलमानों को मजबूत बनाती हैं

इस्लाम की सच्चाइयों में भौतिक रूप से विकसित होने की भी जन्मजात क्षमता है और इसलिए इस्लाम भविष्य में शासन करेगा, क्योंकि पांच मजबूत, अटूट शक्तियां एकजुट और विलीन हो गई हैं।55

---

52 सईद नूरसी द्वारा 1911 में दमिश्क में दिए गए इस उपदेश के 39 वर्ष बाद, तुर्की में एक दलीय प्रभुत्व समाप्त हो गया और बहुदलीय लोकतंत्र शुरू हुआ। (ट्र.)

53 सईद नूरसी ने इस मामले को मुहाक़मत में समझाया है, जो अंग्रेज़ी में द रीजनिंग्स के नाम से प्रकाशित हुआ है, तुघरा बुक्स, न्यू जर्सी 2008, पृ. 54–56. (ट्र.)

54 सईद नूरसी ने भी इनमें से कुछ मामलों पर द रीजनिंग्स में चर्चा की है। (अनुवाद)

55 हम कुरान की शिक्षा से समझते हैं कि पैगंबरों के चमत्कारों के उल्लेख के साथ कुरान हमें सूचित करता है कि मानव जाति उनका अनुकरण करेगी और विकास करेगी, और हमें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह कहता है:

पहली शक्ति इस्लाम की सच्चाई है, जो सभी सिद्धियों का शिक्षक है, जो करोड़ों आत्माओं को एक आत्मा में मिलाने में सक्षम है, और सच्ची सभ्यता और विज्ञान से सुसज्जित है, और जो इतना मजबूत है कि कोई भी ताकत उसे तोड़ नहीं सकती।

दूसरा है तीव्र अभाव, सभ्यता और शिल्प का सच्चा स्वामी, तथा जो विकास की पूर्वापेक्षाओं और साधनों की पूर्ति से सुसज्जित है, और हमारी गरीबी, जो लगभग हमारी कमर तोड़ देती है।

यह ऐसी ताकत है जिसे न तो शांत किया जा सकता है और न ही हराया जा सकता है।

तीसरी शक्ति शरिया द्वारा आदेशित और अनुमत स्वतंत्रता है। यह मानवजाति को उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दौड़ने के लिए प्रेरित करती है, उत्पीड़न को नष्ट करती है, और उच्च भावनाओं को उत्साहित करती है। वर्तमान में, यह शक्ति प्रतिस्पर्धा, जागृति, सतर्कता, प्रतिस्पर्धा के उत्साह और पुनरुत्थान और सभ्यता की ओर झुकाव से सुसज्जित है। संक्षेप में, यह उन उच्चतम पूर्णता की ओर झुकाव और इच्छा से सुसज्जित है जो मानवजाति के लिए सबसे उपयुक्त हैं।

चौथा है साहस और उद्यम की भावना जो विश्वास से उत्पन्न होती है और जो करुणा से सुसज्जित होती है। यानी अन्याय या गलत काम करने वालों के सामने खुद को नीचा नहीं दिखाना और उत्पीड़ितों को नीचा नहीं दिखाना। शरिया द्वारा प्रोत्साहित की जाने वाली स्वतंत्रता की नींव के रूप में, इस चौथी शक्ति का अर्थ है उत्पीड़कों की चापलूसी न करना और कमज़ोर और ग़रीबों पर हावी न होना।

पांचवी ताकत इस्लामी गरिमा है। इसके लिए ईश्वर के नाम का उत्थान जरूरी है। इस समय ईश्वर के नाम का उत्थान भौतिक विकास और सच्ची सभ्यता को अपनाने पर निर्भर करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि

इन चमत्कारों के उदाहरण प्रस्तुत करो और दिखाओ! पैगम्बर सुलैमान (उन पर शांति हो) की तरह एक दिन में दो महीने की दूरी तय करो; पैगम्बर ईसा (उन पर शांति हो) की तरह भयंकर बीमारियों को ठीक करने की कोशिश करो; पैगम्बर मूसा (उन पर शांति हो) की छड़ी की तरह चट्टानों से जीवन का जल निकालो और मानव जाति को प्यास से बचाओ; पैगम्बर अब्राहम (उन पर शांति हो) की तरह उन पदार्थों की खोज करो जो तुम्हें आग से बचाएंगे और उन्हें धारण करो; कुछ पैगम्बरों (उन पर शांति हो) की तरह पूर्व और पश्चिम में सबसे दूर की आवाजें सुनो और सबसे दूर के रूपों को देखो; पैगम्बर दाऊद (उन पर शांति हो) की तरह लोहे को आटे की तरह पिघलाओ या मोम की तरह बनाओ ताकि इसका इस्तेमाल सभी तकनीकी विकासों के लिए एक साधन के रूप में किया जा सके; और जितना तुम घड़ी और जहाज से लाभ उठाते हो, जो क्रमशः पैगम्बर यूसुफ और नूह के चमत्कार थे, उतना ही दूसरे पैगम्बरों के सभी चमत्कारों से लाभ उठाओ और उनका अनुकरण करो। (सैद नूरसी द्वारा इस मामले की विस्तृत व्याख्या के लिए, द वर्ड्स (अनुवाद), "द 20थ वर्ड," द लाइट, न्यू जर्सी 2005, पृ. 59-79 देखें। [अनुवाद])

मानव जाति को हर प्रकार से शिक्षा देकर, उन्हें आध्यात्मिक और भौतिक विकास के लिए प्रेरित करके, कुरान यह प्रदर्शित करता है कि वह एक सार्वभौमिक शिक्षक है।

भविष्य में इस्लाम की दुनिया का सामूहिक व्यक्तित्व इस कर्तव्य को पूरी तरह से पूरा करेगा, जो इस्लाम की गरिमा के लिए विश्वास पर आधारित है।

अतीत में इस्लाम को कभी-कभी दुश्मन की कट्टरता और हठधर्मिता को तोड़ने और उसके हमलों को पीछे हटाने के लिए तलवार का सहारा लेना पड़ा है। लेकिन भविष्य में वह अपने दुश्मनों को सच्ची सभ्यता, भौतिक विकास और सच्चाई और सच्चाई की आध्यात्मिक तलवार से हराएगा।

आगे क्या होगा, इसे समझें:

सभ्यता के नाम पर हम जो मांग करते हैं, वह है इसकी खूबसूरती और इसकी अच्छाइयां, जो मानव जाति के लिए लाभदायक हैं। हम कभी भी इसकी बुराइयों या बुराइयों की मांग नहीं करते, जिन्हें कुछ मूर्ख लोग खूबसूरती मानते हैं और जिनकी नकल करके हमने अपनी खुद की “संपत्ति” को नष्ट कर दिया है। उन्होंने धर्म के बदले में दुनिया को रिश्वत दी है, लेकिन वे दुनिया को नहीं ले पाए हैं। सभ्यता की बुराइयों ने इसकी खूबसूरती को हरा दिया है और मानवता को विश्व युद्ध के रूप में एक भयानक झटका (अब दो भयानक झटके) मिला है और इस तरह दुनिया खून से रंग गई है। ईश्वर की इच्छा से, इस्लाम की शक्ति से समर्थित, सभ्यता की सुंदरता भविष्य में प्रबल होगी, पृथ्वी को गंदगी से साफ करेगी और आम शांति सुनिश्चित करेगी।

चूंकि पूर्णता की ओर झुकाव मानव स्वभाव में निहित है, इसलिए यदि मानवता को अपने दोषों और अन्यायों के कारण पूर्ण विनाश का सामना नहीं करना पड़ता है, तो इस्लाम की सच्चाई विशेष रूप से मुस्लिम जगत और सामान्य रूप से पूरे विश्व में खुशी लाएगी, और इस प्रकार मानवता के अतीत और वर्तमान के दोषों के लिए प्रायश्चित का काम करेगी।

देखो, समय एक सीधी रेखा में नहीं चलता है ताकि उसका आरंभ और अंत एक दूसरे से दूर हो जाए। बल्कि, पृथ्वी की गति की तरह, समय एक चक्र बनाकर चलता है। यह कभी वसंत और गर्मी के रूप में प्रगति को प्रदर्शित करता है और कभी सर्दियों और तूफानों के मौसम के रूप में गिरावट को प्रदर्शित करता है। इसलिए, जिस तरह हर सर्दी के बाद वसंत और हर रात की सुबह होती है, उसी तरह मानव जाति भी, ईश्वर की इच्छा से, एक नई सुबह और वसंत का अनुभव करेगी। ईश्वरीय दया से हम इस्लाम की सच्चाई के सूरज में एक सामान्य शांति द्वारा चिह्नित सच्ची सभ्यता को देखने की उम्मीद कर सकते हैं।

इसके अलावा, जैसा कि वैज्ञानिक अध्ययनों और अनगिनत अनुभवों से स्पष्ट रूप से पता चलता है, ब्रह्मांड के क्रम में और इसके अस्तित्व के लिए सर्व-महान निर्माता के मूल उद्देश्यों में जो प्रमुख है वह है अच्छाई, सुंदरता और पूर्णता। क्योंकि विज्ञान की हर शाखा जो ब्रह्मांड का अध्ययन करती है, वह सामान्य सिद्धांतों के साथ ऐसी शानदार व्यवस्था और पूर्णता को इंगित करती है-

सिद्धांत जिस पर यह आधारित है कि मन इस ब्रह्मांड से बेहतर कुछ नहीं सोच सकता। उदाहरण के लिए, शरीर रचना विज्ञान, खगोल विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान, सभी महान निर्माता के आदेश का प्रत्यक्ष परिणाम होने के सामान्य सिद्धांतों के साथ, उनकी शक्ति और बुद्धि के चमत्कारों को प्रदर्शित करते हैं, साथ ही साथ वह जो अपनी बनाई हर चीज को उत्कृष्ट बनाता है, उसकी सच्चाई को भी प्रदर्शित करते हैं (32:7)।

यह भी एक अवलोकनीय और अनुभवजन्य तथ्य है कि बुराई, कुरूपता, झूठ और बुराई सृष्टि में गौण और गौण हैं। वे सृष्टि के उद्देश्य नहीं हैं; बल्कि, वे अप्रत्यक्ष रूप से और तुलना के उपायों के रूप में मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, कुरूपता सुंदरता को विभिन्न रूपों और डिग्री में प्रकट करने का काम करती है। बुराई और यहाँ तक कि शैतान को भी मनुष्यों पर हमला करने की अनुमति दी गई है ताकि वे मनुष्यों के विकास और पूर्णता के साधन के रूप में कार्य कर सकें। संक्षेप में, कुरूपता और बुराई को सार्वभौमिक सुंदरता और अच्छाई के साधन के रूप में काम करने के लिए बनाया गया है।

अच्छाई, पूर्णता और सुंदरता ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। इसलिए, मानव जाति, जिसने अपने अन्याय और अविश्वास से पृथ्वी को कलंकित किया है, पहले ऐसे अत्याचारों के लिए दंड भुगते बिना और फिर ब्रह्मांड के अस्तित्व के मूल उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन बने बिना (ईश्वरीय आदेश का पालन करके) अस्तित्व में नहीं जा सकेगी।

यह एक और स्थापित तथ्य है कि मानव जाति सबसे महान और सबसे अधिक दयालु है।
प्राणियों में सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि मानव जाति तुलना की एक इकाई है
ईश्वर के कार्यों और कला को समझें। यह अपनी बुद्धि से ईश्वर के सम्बन्धों का पता लगाता है।
ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन में प्रत्यक्ष कारणों और उनके प्रभावों के बीच संबंध और कदम, और इस प्रकार ईश्वर की कला के बुद्धिमान कृत्यों और कार्यों का अनुकरण करता है। यह अपने विशेष ज्ञान और कलात्मकता के माध्यम से ईश्वर की कला, उनके सार्वभौमिक, सर्वव्यापी कृत्यों और उनके गुणों का ज्ञान भी प्राप्त करता है। यह सब साबित करता है कि मानव जाति ब्रह्मांड में सबसे सम्माननीय और सबसे महान प्राणी है।

इसके अलावा, जैसा कि ब्रह्मांड और मानव जाति से संबंधित इस्लाम की सच्चाईयों से प्रमाणित होता है, इस्लाम के लोग, जो सत्य के लोग हैं, मनुष्यों में सबसे प्रतिष्ठित और सम्माननीय हैं। जैसा कि इतिहास से पता चलता है और पैगंबर मुहम्मद के लगभग एक हजार चमत्कारों और उनकी सबसे महान नैतिकता और सर्वोत्तम आचरण, साथ ही कुरान और इस्लाम की सच्चाईयों से प्रमाणित होता है, पैगंबर मुहम्मद, उन पर हो

शांति और आशीर्वाद, इस्लाम के लोगों और इसलिए मानव जाति के लिए सबसे धन्य और सर्वोच्च है।56

इन वास्तविकताओं के सामने, क्या यह संभव है कि मानव जाति विज्ञान, इतिहास, अनुभवों और तर्क की गवाही का खंडन कर सके और इस तरह ईश्वरीय इच्छा और बुद्धि का विरोध कर सके, जो पूरे ब्रह्मांड को घेरे हुए है? क्या यह अपनी बर्बरता, जिद्दी अविश्वास और भयानक विनाश को जारी रख सकता है? क्या यह संभव है कि वर्तमान स्थिति, जो इस्लाम के विपरीत है, बनी रहे?

मैं अपनी पूरी ताकत से शपथ लेता हूँ, और मैं चाहता हूँ कि मैं अनगिनत ज़बानों से उस सर्वशक्तिमान, परम दयालु और परम सुंदर निर्माता की शपथ ले सकूँ, जिसने इस ब्रह्मांड को कणों से लेकर ग्रहों तक, मक्खियों के पंखों से लेकर आकाश के दीपों तक को पूर्ण बुद्धि से बनाया है, कि सृष्टि की अन्य सभी प्रजातियों और उससे निम्न सभी प्रकार के विद्यमान प्राणियों के विपरीत, मानव जाति अब अधिक समय तक सार्वभौमिक व्यवस्था का उसके सार्वभौमिक बुराइयों के साथ विरोध नहीं कर सकेगी; वह अपने राज्य में अच्छाई पर बुराई की विजय के नारकीय फलों को खाना और पचाना जारी नहीं रख सकेगी। इसलिए, जिस प्रकार स्वर्ग और नरक का अस्तित्व निश्चित है, उसी प्रकार, भविष्य में अच्छाई और सच्चे धर्म की विजय भी संदेह से परे है; इस प्रकार मानव जाति अच्छाई और सद्गुण के प्रभुत्व में ब्रह्मांड में अपने भाइयों और बहनों - अन्य सभी प्रजातियों - के बराबर होगी, और इस प्रकार शाश्वत ज्ञान का रहस्य मानव क्षेत्र में भी साकार होगा।

यदि मानव जाति की बुराइयाँ और अन्याय, मानव जाति के सिर पर प्रलय का दिन शीघ्र ही न फटक दें, तो हम दयालु और दयावान ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह इस्लाम की सच्चाइयों को मानव जाति को सबसे निम्नतम स्तर पर गिरने से बचाने, पृथ्वी को उसके पापों से शुद्ध करने और सार्वभौमिक शांति की प्राप्ति का साधन बनाए।

दूसरा शब्द या इलाज

आगे जो लिखा है, और यही मेरे जीवन के अनुभवों का परिणाम है:

निराशा एक बहुत ही भयानक बीमारी है जो मुस्लिम दुनिया के दिल में घुस गई है। यह निराशा ही है जिसने हमें मार डाला है और कुछ लाख की आबादी वाले एक छोटे से पश्चिमी देश को दुनिया के करोड़ों मुसलमानों पर हावी होने पर मजबूर कर दिया है।

पूर्व की ओर जाना और अपने देश को उपनिवेश बनाना। यह निराशा भी है जो विलुप्त हो चुकी है-

---

56 पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के चमत्कारों की उत्कृष्टता के लिए देखें सैद नूरसी, द लेटर्स (अनुवाद), "द 19थ लेटर", द लाइट, न्यू जर्सी 2007, पृ. 117-236. (अनुवाद)

हमारे उच्च नैतिक मूल्यों को नष्ट कर दिया और हमें सार्वजनिक हितों को त्यागकर अपने विचारों को केवल अपने निजी हितों तक सीमित कर दिया। यह निराशा ही है जिसने हमारी आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति को इस हद तक नष्ट कर दिया है कि जबकि हमारी पिछली पीढ़ियाँ, जो संख्या में छोटी थीं, लेकिन असाधारण आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति से सुसज्जित थीं, ने पूर्व से पश्चिम तक फैले विशाल क्षेत्र पर विजय प्राप्त की, अन्यायी विदेशियों ने पिछली चार शताब्दियों से करोड़ों मुसलमानों को पकड़कर गुलाम बना लिया है। वे मुसलमान

एक दूसरे की उदासीनता और ऊर्जा की कमी में अपने आलस्य का बहाना ढूँढ़ लिया है, और कहा है, "हर कोई मेरे जैसा बुरा है," और इस्लामी उत्साह और इस्लाम की सेवा करने की जिम्मेदारी को त्याग दिया है, जो विश्वास के लिए आवश्यक है। चूँकि इस बीमारी ने हमारे साथ इतना बुरा किया है और हमें लगभग मार ही डालने वाला है, इसलिए हम, ईश्वर की इच्छा से, ईश्वर की दया से निराश न हों (39:53) के साथ इसका सिर फोड़ देंगे, और इस्लामी सिद्धांत की सच्चाई से इसकी कमर तोड़ देंगे, "अगर कोई चीज पूरी तरह से प्राप्त नहीं की जा सकती है, तो उसे पूरी तरह से छोड़ना भी नहीं चाहिए।"

निराशा राष्ट्रों के लिए सबसे भयानक बीमारी है, एक कैंसर है। यह पूर्णता के मार्ग को अवरुद्ध करती है और ईश्वर की इस घोषणा की सच्चाई के विपरीत है, "मैं अपने सेवक के साथ उसी तरह हूँ जिस तरह वह मेरे बारे में सोचता है।"57 यह नीच, कायर और नपुंसक की विशेषता है। यह कभी भी इस्लामी वीरता और प्रयास की भावना के साथ एक नहीं हो सकता। ईश्वर की इच्छा से, सभी मुस्लिम लोग पूर्ण एकजुटता और एकता के साथ एक-दूसरे के साथ हाथ मिलाएंगे और पूरी दुनिया में कुरान का झंडा फहराएंगे।

तीसरा शब्द या इलाज

मेरे जीवन के दौरान किए गए सभी अध्ययनों और मैंने जो सामाजिक उथल-पुथल देखी है, उससे मुझे पता चला है कि सत्यता ही इस्लाम की बुनियाद है, वह बंधन है जो इसकी सभी श्रेष्ठ विशेषताओं को एक दूसरे से जोड़ता है, और उच्च भावनाओं का सार और योग है। इसलिए हमें अपने सामाजिक जीवन की बुनियाद के रूप में सत्यता को पुनर्जीवित करना चाहिए और इसके साथ अपने आध्यात्मिक रोगों का इलाज करना चाहिए।

सच्चाई इस्लामी सामाजिक जीवन का मूल है। दिखावा एक धोखा है

चाटुकारिता और दिखावा झूठ बोलने का एक बहुत ही घटिया प्रकार है। पाखंड झूठ बोलने का सबसे हानिकारक प्रकार है। झूठ बोलना सर्वशक्तिमान निर्माता की शक्ति को बदनाम करना है।

---

[57] अल-बुखारी, "तौहीद" 15; मुस्लिम, "तौबा" 2, एट-तिर्मिज़ी, "ज़ुहद" 51।

अपने सभी रूपों में, अविश्वास एक झूठ है, जबकि विश्वास सत्य है। इस कारण, झूठ और सत्य के बीच एक अनंत दूरी है, इसलिए उन्हें एक दूसरे से अनंत दूरी पर रखा जाना चाहिए; वे कभी एक साथ मौजूद नहीं हो सकते।

हालाँकि, निर्दयी राजनीति और अन्यायपूर्ण प्रचार ने उन्हें मिला दिया है, और इस प्रकार मानव पूर्णता को भ्रमित कर दिया है।58

सत्य और झूठ एक दूसरे से उतने ही दूर हैं जितने कि ईमान और अविश्वास। पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) सत्य के द्वारा ही सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँचे और इसी से ईमान की सच्चाइयों और सृष्टि की सच्चाइयों के खजाने खोले, जबकि मुसैलिमा द लायर59 और उनके जैसे लोग झूठ बोलकर सबसे नीचे गिर गए। इसी कारण से, सत्य मानव सामाजिक जीवन के बाज़ार में सबसे मूल्यवान और वांछित संपत्ति रही है। यही कारण है कि पैगम्बर के साथियों ने कभी भी जानबूझकर झूठ का ग्राहक नहीं बने या झूठ से खुद को कलंकित नहीं किया। चूँकि वे हमेशा अपनी पूरी ताकत से पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के पदचिन्हों पर सत्य की तलाश करते थे, इसलिए उनकी न्याय और सत्यता हदीस के विज्ञान में एक मानक बन गई। हदीस और शरीयत के विद्वानों ने निष्कर्ष निकाला

कि इन नायकों द्वारा पवित्र पैगम्बर की कही गई बातें सत्य और विश्वसनीय थीं।

---

58 हे भाइयो और बहनो! पुराने या भूतपूर्व सईद राजनीति और इस्लामी सामाजिक जीवन में शामिल थे। लेकिन कभी यह मत सोचो कि उन्होंने धर्म को राजनीति के साधन के रूप में इस्तेमाल करने का तरीका अपनाया। भगवान न करे! बल्कि, उन्होंने राजनीति को धर्म के साधन के रूप में इस्तेमाल करने में सक्षम होने के लिए अपनी पूरी कोशिश की। वे कहा करते थे: "मैं सांसारिक राजनीति की तुलना में धर्म के एक सत्य को अधिक पसंद करता हूँ।" एक पूर्वाभास के माध्यम से उन्हें लगा कि कुछ पाखंडी विधर्मी राजनीति को अधर्म के साधन के रूप में इस्तेमाल करेंगे, और इसलिए पुराने सईद ने पूरी ताकत से राजनीति को धर्म की सेवा में लगाने की कोशिश की।

हालाँकि, बीस साल बाद ओल्ड सईद ने देखा कि जबकि वे पाखंडी विधर्मी पश्चिमीकरण के बहाने राजनीति को अधर्म के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे, कुछ धार्मिक राजनेताओं ने धर्म को इस्लामी राजनीति के साधन के रूप में इस्तेमाल करने का प्रयास किया।
इस्लाम के सूर्य को धरती के तारों की सेवा में नहीं लगाया जा सकता। इन तारों की सेवा में इसका उपयोग करना इस्लाम के मूल्य को कम करना है और यह एक बहुत बड़ा अपराध है। ओल्ड सईद ने अंततः देखा कि राजनीति धार्मिक लोगों को किस हद तक ले जा सकती है। उन्होंने देखा कि राजनीतिक पक्षपात के कारण एक धर्मपरायण विद्वान ने एक पाखंडी की बहुत प्रशंसा की जो उनके राजनीतिक दृष्टिकोण से सहमत था, जबकि उन्होंने एक धर्मपरायण विद्वान की आलोचना की और उस पर अपराध का आरोप लगाया जो उनके राजनीतिक विचारों का विरोध करता था। ओल्ड सईद ने उससे कहा: "यदि कोई शैतान आपके राजनीतिक दृष्टिकोण में आपका समर्थन करता है, तो आप उस पर ईश्वर का आशीर्वाद मांगेंगे; लेकिन यदि कोई फ़रिश्ता आकर आपका विरोध करता है, तो आप उसे शाप देंगे।" नतीजतन, ओल्ड सईद ने कहा, "मैं शैतान और राजनीति से ईश्वर की शरण लेता हूं," और पूरी तरह से राजनीतिक भागीदारी छोड़ दी।

59 मुसैलिमा (झूठा) वह व्यक्ति था जिसने पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - के बाद पैगम्बर होने का दावा किया था। (ट्र.)

जबकि सुख के युग में हुई महान क्रांति के साथ सत्य और झूठ तथा विश्वास और अविश्वास एक दूसरे से असीम रूप से दूर थे, समय के साथ वे एक दूसरे के करीब आ गए हैं। राजनीतिक प्रचार ने कभी-कभी झूठ को वांछनीय बना दिया है, और इस प्रकार बुराई और झूठ एक निश्चित सीमा तक फैल गए हैं। यही कारण है कि अब कोई भी व्यक्ति साथियों के स्तर को प्राप्त नहीं कर सकता है।

जहाँ तक संभावित लाभ के लिए झूठ बोलने की बात है, समय ने इसे समाप्त कर दिया है। वर्तमान समय ने उस अनुमति को भी समाप्त कर दिया है जो कुछ विद्वानों ने एक निश्चित स्वीकार्य लाभ के लिए अस्थायी रूप से झूठ बोलने की अनुमति दी थी। क्योंकि इस अनुमति का इतनी बार दुरुपयोग किया गया है कि यदि इससे एक लाभ होता है, तो इसका नुकसान सौ गुना होता है।

आप जो भी कहें वह सच होना चाहिए, लेकिन हर सच को बेपरवाही से बोलना सही नहीं है। अगर सच बोलने से नुकसान हो सकता है, तो चुप रहना चाहिए, लेकिन झूठ बोलने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए। आप जो भी कहें वह सही होना चाहिए, लेकिन आपको हर सही बात कहने का अधिकार नहीं है। क्योंकि अगर आप ईमानदारी से कुछ नहीं कहते हैं, तो इसका बुरा नतीजा हो सकता है और इस तरह सही बात गलत की भेंट चढ़ जाती है।

चौथा शब्द या इलाज

जो चीज प्रेम के लिए सबसे उपयुक्त और योग्य है, वह प्रेम है, और जो चीज शत्रुता के लिए सबसे अधिक योग्य है, वह शत्रुता है। अर्थात्, प्रेम का गुण, जो एक सुखी मानव सामाजिक जीवन को सक्षम बनाता है, वह सबसे अधिक प्रेम का हकदार है; जबकि शत्रुता, जो मानव सामाजिक जीवन को बर्बाद करती है, एक बदसूरत, हानिकारक गुण है जो शत्रुता और घृणा के सबसे अधिक हकदार है।

शत्रुता का समय समाप्त हो चुका है। दो विश्व युद्धों ने दिखाया है कि शत्रुता कितनी बुरी और विनाशकारी रूप से गलत हो सकती है। यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि बुराई से मानव जाति को कोई लाभ नहीं है। इस कारण से, जब तक कि बुरे कार्य आक्रामकता के रूप में न हों, हमारे दुश्मनों की ओर से ऐसे कार्य हमें शत्रुता की ओर नहीं ले जाने चाहिए। उनके लिए नर्क या भगवान की सजा ही काफी है।

अहंकार और स्वार्थ कभी-कभी गलत तरीके से विश्वासियों को अपने भाई-बहनों के प्रति शत्रुता की भावना में ले जाता है। भले ही वे खुद को सही मानते हों, विश्वासियों के प्रति शत्रुता का मतलब है उन्हें प्यार करने के शक्तिशाली कारणों को कम आंकना, जैसे कि विश्वास, मुस्लिम होना और एक साथी इंसान होना। यह पागलपन की हद तक है; प्रेम के पहाड़ के आकार के कारणों की तुलना में शत्रुता के लिए कंकड़ के आकार के कारणों को प्राथमिकता देना। यानी, प्रेम के कारण चमकदार, शक्तिशाली जंजीरें और आध्यात्मिक महल हैं जैसे कि विश्वास,

मुसलमान होना और इंसान होना, जबकि ईमान वालों से दुश्मनी की वजहें कंकड़-पत्थरों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं। इसलिए, ईमान वालों से दुश्मनी करना उतना ही बड़ा गुनाह है जितना कि प्यार के पहाड़ जैसे कारणों का अपमान करना।

संक्षेप में: भाईचारा और प्रेम इस्लाम की विशेषताएं हैं

और मुसलमानों के बीच आपसी रिश्तों को मजबूत करता है। दुश्मनी करने वाले लोग शरारती बच्चों की तरह होते हैं, जो रोना चाहते हैं और इसलिए रोने का बहाना ढूँढ़ते हैं। वे मक्खी के पंख जैसी छोटी सी बात को रोने का बहाना बना लेते हैं। वे एक अन्यायी, निराशावादी व्यक्ति की तरह भी होते हैं जो दूसरों के बारे में तब तक अच्छी राय नहीं रखता जब तक कि उसके लिए बुरी राय रखना संभव है। वह एक बुराई के साथ दस अच्छे कामों को समेट देता है। इस्लामी विशेषताओं के रूप में, निष्पक्षता और दूसरों के बारे में अच्छी राय रखने का नियम इस रवैये का मुकाबला करता है।

पाँचवाँ शब्द या इलाज

इस्लामी परामर्श से मैंने जो सबक सीखा है, वह इस प्रकार है:

वर्तमान समय में एक पाप एक नहीं रहता; वह बढ़ता है और दूसरों को संक्रमित करता है, कई गुना बढ़ता है। इसी तरह, एक अच्छा कार्य एक नहीं रहता; यह कभी-कभी हज़ारों डिग्री तक बढ़ता है। यह निम्नलिखित के कारण है:

इस्लामी स्वतंत्रता और परामर्श ने इस्लामी शासन के प्रभुत्व को प्रदर्शित किया है।

हमारी सच्ची राष्ट्रीयता। हमारी सच्ची राष्ट्रीयता की नींव और भावना इस्लाम है। मुस्लिम लोग, जिनमें विशेष रूप से तुर्क और अरब शामिल हैं, इस राष्ट्रीयता के खोल या गढ़ हैं।

इस पवित्र राष्ट्रीयता के बंधन के ज़रिए सभी मुसलमान एक कबीले की तरह हैं। कबीले के सदस्यों की तरह मुसलमान लोग भी इस्लामी भाईचारे में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे एक दूसरे को आध्यात्मिक रूप से और ज़रूरत पड़ने पर भौतिक रूप से सहारा देते हैं। ऐसा लगता है जैसे सभी मुसलमान लोग एक दूसरे से एक चमकदार जंजीर से जुड़े हुए हैं। तो, इस पर विचार करें: अगर कबीले का कोई सदस्य कोई अपराध करता है, तो दुश्मन कबीले की नज़र में कबीले के सभी सदस्य दोषी हैं, और उस एक अपराध का असर हज़ारों अपराधों के बराबर होता है। अगर कबीले का कोई सदस्य कुछ अच्छा करता है, जिससे पूरे कबीले का सम्मान होता है, तो कबीले के सभी सदस्य उस पर गर्व करते हैं, मानो हर सदस्य ने यह गौरव अर्जित किया हो।

इस वास्तविकता के कारण ही कोई बुराई केवल उसी तक सीमित नहीं रहती जिसने उसे किया है। यह परमेश्वर के विरुद्ध किया गया अपराध हो सकता है।

लाखों मुसलमानों के अधिकारों का हनन हो रहा है। इसके स्पष्ट उदाहरण चालीस या पचास साल बाद देखने को मिलेंगे।

तो, ऐ भाइयों, जो इस उमय्यद मस्जिद में मेरी बात सुन रहे हैं और मुस्लिम दुनिया की भविष्य की मस्जिद में मुस्लिम भाइयों और बहनों! बहाने मत बनाओ, यह कहते हुए कि, "हम कोई नुकसान नहीं कर रहे हैं, और हम अच्छा करने में असमर्थ हैं, इसलिए हमें माफ किया जाता है।" आपका यह बहाना स्वीकार्य नहीं है। इस्लामी राष्ट्रीयता और एकता के लिए आपकी आलस्य, उदासीनता और प्रयास की कमी आपके लिए बहुत बड़ा नुकसान और गलत है।

हज़ारों गुना बुराई की तरह, इस्लाम की पवित्रता से संबंधित इस समय किया गया कोई भी अच्छा काम कभी भी करने वाले तक सीमित नहीं रहेगा। यह लाखों ईमान वालों के लिए फायदेमंद हो सकता है। यह आध्यात्मिक और भौतिक जीवन के बंधन को मजबूत कर सकता है। इसलिए, यह उदासीन रहने (मुसलमानों की समस्याओं और हमारे आस-पास जो कुछ हो रहा है) या आलस्य के बिस्तर पर गिरने का समय नहीं है। कुर्द जैसी छोटी मुस्लिम जातियों का लाभ और सांसारिक और पारलौकिक सुख, तुर्क और अरब जैसी महान जातियों पर निर्भर है। आपकी आलस्य और उत्साह और ऊर्जा की कमी के कारण हमें नुकसान उठाना पड़ता है। इस कारण से, आप आलस्य के माध्यम से जो पाप करते हैं वह बहुत बड़ा है। आप जो अच्छा करेंगे वह भी महान और महान होगा। अपनी दोषपूर्ण समझ के कारण, मैं मुसलमानों के सामाजिक शरीर को कई पहियों वाली एक फैक्ट्री के रूप में देखता हूं। यदि इनमें से एक पहिया बंद हो जाता है या दूसरों की तुलना में अधिक धीरे काम करता है या दूसरे पहिये के साथ हस्तक्षेप करता है, तो फैक्ट्री की व्यवस्था और कार्यक्षमता गड़बड़ा जाती है। इसलिए हमें एक-दूसरे की व्यक्तिगत गलतियों को नजरअंदाज करना चाहिए।

जिस प्रकार कुछ यूरोपीय लोगों ने हमसे हमारी बहुमूल्य सम्पत्तियां और जमीनें छीन लीं तथा बदले में हमें बहुत ही मामूली, अपर्याप्त मूल्य दिया, उसी प्रकार उन्होंने हमसे हमारे कुछ उच्च नैतिक मूल्य तथा सामाजिक जीवन की कुछ उत्कृष्ट विशेषताएं भी छीन लीं। उन्होंने इनका उपयोग अपने विकास के साधन के रूप में किया तथा बदले में हमें अपनी बुराइयां तथा बुरे गुण दे दिए।

उदाहरण के लिए, हमसे उधार ली गई एक राष्ट्रीय विशेषता के कारण, उनमें से एक कहता है, "भले ही मैं मर जाऊं, लेकिन मेरे राष्ट्र को जीवित रहने दो, क्योंकि मेरे राष्ट्र में मेरा स्थायी जीवन है।" उन्होंने हमसे यह महान विशेषता उधार ली है और अपने विकास के लिए एक सबसे मजबूत आधार बनाया है।

यह विशेषता सच्चे धर्म और ईमान की सच्चाइयों से निकलती है। यह ईमान वालों की है। जबकि विदेशियों से हमारे पास आई एक बुरी विशेषता के कारण, हमारे बीच का एक स्वार्थी आदमी कहता है,

"अगर मैं प्यास से मर जाऊं, तो दुनिया पर बारिश न बरसने दें। अगर मैं खुश नहीं रह सकता, तो दुनिया को चाहे जैसे भ्रष्ट होने दें।" यह मूर्खतापूर्ण, दुष्ट रवैया अधर्म से उत्पन्न होता है; यह परलोक के बारे में अज्ञानता से आता है। यह विदेश से हमारे अंदर आया है और हमें जहर देता है। यूरोप का एक व्यक्ति अपने राष्ट्रीय और देशभक्ति के उत्साह के कारण अपने राष्ट्र जितना ही मूल्यवान होता है। क्योंकि एक व्यक्ति अपने इरादों और भावनाओं की सीमा तक मूल्यवान होता है।

जो कोई भी अपने राष्ट्र की खुशी के लिए जीता है और प्रयास करता है, वह स्वयं एक राष्ट्र है।

हमारी पवित्र इस्लामी राष्ट्रीयता के बावजूद, या तो असावधानी के कारण या विदेशों से उधार ली गई बुरी विशेषताओं के प्रभाव के कारण, एक व्यक्ति केवल अपने बारे में सोचता है और राष्ट्र के सामान्य हितों के प्रति उदासीन होकर अपने व्यक्तिगत हितों का पीछा करता है। इस प्रकार, एक हजार लोग एक व्यक्ति के स्तर तक कम हो जाते हैं। जो कोई केवल अपने व्यक्तिगत हितों का पीछा करता है, वह मनुष्य नहीं माना जा सकता, क्योंकि मनुष्य स्वभाव से सभ्य है; मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने साथी मनुष्यों की परवाह करे। उनका व्यक्तिगत जीवन सामाजिक जीवन के भीतर जारी रह सकता है। उदाहरण के लिए, एक रोटी प्राप्त करने के लिए, व्यक्ति को कई हाथों के सहयोग की आवश्यकता होती है। आप कपड़े की तुलना रोटी से कर सकते हैं। एक व्यक्ति जानवरों की तरह खाल के साथ नहीं रह सकता है और इसलिए उन्हें अपने साथी मनुष्यों के साथ परस्पर संबंध रखना होगा। जो व्यक्ति अपने आप को अपने व्यक्तिगत हितों तक सीमित रखता है, वह मनुष्य नहीं रह जाता; वह एक नरभक्षी जानवर बन जाता है।

छठा शब्द या इलाज

मुसलमानों के सामाजिक जीवन में खुशहाली की कुंजी परामर्श है, जैसा कि शरिया में आदेश दिया गया है। आयत, " उनके मामले आपस में परामर्श से होते हैं" (42:38) सामाजिक जीवन और प्रशासन के आधार के रूप में परामर्श का आदेश देती है। जबकि मानव इतिहास में युगों के बीच परामर्श "समय के साथ एक दूसरे का समर्थन करने वाले विचार" के नाम से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के लिए एक अनुकूल आधार रहा है, परामर्श का परित्याग एशिया में प्रतिगमन के कारणों में से एक है।

एशिया के सुखद भविष्य की कुंजी परामर्श है। व्यक्तियों के बीच परामर्श की तरह, देशों को एक दूसरे के साथ परामर्श करना चाहिए ताकि लाखों मुसलमानों के पैरों में लगी विभिन्न प्रकार की उत्पीड़न की बेड़ियाँ हटाई जा सकें। परामर्श का आदेश दिया गया

शरीयत और शरीयत द्वारा स्थापित स्वतंत्रता, जो ईमान से उत्पन्न करुणा और उत्साह से पैदा होती है और शरीयत द्वारा आदेशित अच्छे व्यवहार से सजी होती है - यह परामर्श और स्वतंत्रता ही है जो मुसलमानों के पैरों में जकड़ी हुई सभी उत्पीड़न की बेड़ियाँ हटा देगी; केवल इसी तरह से हम आधुनिक पश्चिमी सभ्यता से उधार ली गई बुराइयों और बुराइयों को त्याग सकते हैं। इस्लामी स्वतंत्रता, जो ईमान पर आधारित है, निम्नलिखित दो चीजों का आदेश देती है: उत्पीड़न के माध्यम से किसी को भी अपमानित न करना और अत्याचारियों के सामने झुककर खुद को अपमानित न होने देना। जो कोई भी ईश्वर का सच्चा सेवक बन जाता है, वह कभी किसी दूसरे की दासता स्वीकार नहीं करता। हममें से कोई भी ईश्वर के अलावा किसी को स्वामी न बनाए (3:64)। जो ईश्वर को नहीं पहचानता या उसका सेवक नहीं बनता, वह सभी में एक प्रकार का प्रभुत्व मानता है, प्रत्येक अपनी स्थिति के अनुसार और दूसरों को अपने ऊपर रखता है। इसके विपरीत, शरीयत द्वारा स्थापित स्वतंत्रता ईश्वर की ओर से एक उपहार है, जो उसके दयालु और दयावान होने का प्रकटीकरण है, और यह विश्वास की एक विशेषता है।

परामर्श के परिणामस्वरूप ईमानदारी और एकजुटता उत्पन्न होती है और तीन अलग-अलग (१-१-१) एक सौ ग्यारह (१११) बन जाते हैं। इस प्रकार, ईमानदारी और एकजुटता के माध्यम से, तीन व्यक्ति राष्ट्र के लिए उतने ही लाभकारी हो सकते हैं, जितने कि सौ से अधिक व्यक्ति। कई ऐतिहासिक घटनाओं से हमें पता चलता है कि परामर्श से उत्पन्न ईमानदारी और एकजुटता के माध्यम से, दस व्यक्ति एक हजार लोगों के बराबर महान सेवा करते हैं। चूँकि मानव जाति असीमित आवश्यकताओं और असंख्य शत्रुता से ग्रस्त है, लेकिन उसके पास नगण्य शक्ति और पूंजी है, और विशेष रूप से, क्योंकि यह विनाश के लोगों से खतरा है, जो अधर्म के कारण क्रूर प्राणियों में बदल गए हैं, मानवता केवल विश्वास के माध्यम से भरोसा और सहायता के बिंदुओं की खोज करके उनका विरोध कर सकती है, और केवल इस तरह, परामर्श के माध्यम से, सामाजिक जीवन जारी रह सकता है।

हम पूर्वी लोग पश्चिमी लोगों की तरह नहीं हैं। पूर्व में पैगम्बरों का उदय और पश्चिम में दार्शनिकों का आना ईश्वरीय नियति का संदेश है, जो हमें बताता है कि यह धार्मिक प्रयास और उत्साह ही है जो पूर्व को जागृत करेगा और उसे विकसित होने के लिए प्रेरित करेगा। धार्मिक उत्साह और प्रयास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए और राष्ट्रीय उत्साह और प्रयास को इसका समर्थन करना चाहिए। धार्मिक उत्साह और प्रयास एक चमकदार, अटूट श्रृंखला है जो ईश्वरीय सिंहासन से फैली हुई है; यह एक अविनाशी किला है। इतिहास इसका गवाह है।

हमारे सामने सबसे भयानक आपदाओं में से एक है धार्मिक विद्वानों को नीचा दिखाना, यह रवैया हमने पश्चिमी देशों से उधार लिया है। वास्तव में,

धार्मिक विद्वान किसी भी अन्य लोगों की तुलना में अधिक सम्मान, करुणा और प्रेम के पात्र हैं। उनके लिए लगाए गए दोष और कमियाँ उनके अस्तित्व से उत्पन्न नहीं होती हैं; वे समय की समस्याओं के कारण पूर्ण, सत्यापन करने वाले विद्वानों की कमी से उत्पन्न होती हैं। धार्मिक विद्वान इस्लामी जीवन का आधार हैं।

मैंने एक बार सुना था कि किसी ने देखा कि उसकी छत के नीचे का खंभा कमज़ोर हो गया है। नया, शक्तिशाली खंभा लगाने से पहले, इस आदमी ने दूसरा खंभा हटाना शुरू कर दिया। नतीजतन, छत उसके सिर पर गिर गई।

मैंने यह भी देखा है कि खलीफा उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की महिमा और महानता का प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए किसी ने कहा कि उमर एक मीनार के बराबर ऊंचे थे। जब किसी दूसरे ने उन्हें चेतावनी दी कि

उमर की ऊंचाई उनके व्यक्तिगत गुणों और आत्मा की महानता का संकेत थी, दूसरे व्यक्ति ने कहा: "उस मामले में, उमर हमारे जैसे एक साधारण व्यक्ति थे।"

मैंने यह भी देखा कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की धर्म में दृढ़ता पर हमला करके कट्टरता की निंदा कर रहा था। लेकिन चूँकि उसने इस बात का ज़िक्र या ज़ोर नहीं दिया कि इस व्यक्ति की धर्म में दृढ़ता उसकी धर्मनिष्ठा, धार्मिकता, नैतिकता और धर्म के नियमित अभ्यास में निहित है, और चूँकि उसने इन गुणों की ओर ध्यान नहीं आकर्षित किया, इसलिए धर्म में दृढ़ता रखने वाले व्यक्ति की आलोचना करके और लोगों की नज़र में उसके मूल्य को कम करके, उसने वास्तव में धर्म में दृढ़ता के सद्गुण पर ही हमला किया और लोगों की नज़र में उसे कमतर कर दिया।

इसलिए जो भी व्यक्ति अपने मकान की छत के नीचे कमजोर खंभे को हटाना चाहता है, वह पहले नया मजबूत खंभा लगाए और मकान को सुरक्षित बनाए।
अन्यथा, वे अनजाने में अपना घर नष्ट कर देंगे।

जो व्यक्ति किसी सत्य के समर्थन में प्रस्तुत किए गए निराधार तर्क को गलत सिद्ध करना या निरस्त करना चाहता है, उसे पहले उस सत्य का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए। अन्यथा, वह अनजाने में ही सत्य को गलत सिद्ध कर देगा।

जो व्यक्ति कट्टरता पर प्रहार करना चाहता है, उसे पहले धर्म में दृढ़ता स्थापित करनी चाहिए, उसे संरक्षण देना चाहिए तथा उसके गुणों और मूल्यों पर जोर देना चाहिए। अन्यथा वह न चाहते हुए भी दूसरों को गुमराह करेगा।

(ख़ुत्बा-ए-शामिया [“दमिश्क का उपदेश”] से)

यूरोप के विकास के दो प्रमुख कारण

यूरोप के विकास और वर्तमान प्रभुत्व के दो प्रमुख कारण हैं, एक भौतिक और दूसरा अभौतिक।

पहला, भौतिक कारण यूरोप की भौतिक परिस्थितियाँ हैं, जो सभी ईसाइयों का "चर्च" है और उनके जीवन का स्रोत है। यूरोप एक संकीर्ण महाद्वीप है, "स्वाभाविक रूप से" सुंदर है, इसमें महत्वपूर्ण नदियाँ और लोहे के विशाल स्रोत हैं, यह तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है, और इसकी तटरेखा घुमावदार है।

हालाँकि यूरोप पृथ्वी पर भूमि का लगभग पंद्रहवाँ हिस्सा कवर करता है, लेकिन इसने अपनी "प्राकृतिक" सुंदरता और समृद्ध संसाधनों के साथ दुनिया की एक-चौथाई (अब लगभग तेरहवाँ) आबादी को आकर्षित किया है। यह एक तथ्य है कि जनसंख्या का घनत्व ज़रूरतों की बहुलता का कारण है; जितने ज़्यादा लोग, उतनी ज़्यादा ज़रूरतें। ख़ास तौर पर जब ज़रूरतें बढ़ती हैं, तो परंपराओं, आधुनिकता या सभ्यता जैसे कुछ कारणों से, इसे भूमि की "प्राकृतिक" उत्पादकता के ज़रिए संतुष्ट नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि ज़रूरतें नए शिल्प के लिए रास्ता खोलती हैं, जिज्ञासा सीखने को प्रेरित करती है, और तनाव अपव्यय की ओर ले जाता है।

जनसंख्या की बहुलता नए शिल्पों के आविष्कार और ज्ञान में वृद्धि को जन्म देती है। यूरोपीय महाद्वीप की संकीर्णता और समुद्र और नदियों के माध्यम से यात्रा और परिवहन की संभावनाओं ने पर्यटन और आपसी परिचय को प्रोत्साहित और सुविधाजनक बनाया है, जिसके परिणामस्वरूप महाद्वीपीय व्यापार हुआ है। पारस्परिक सहायता या सहयोग के परिणामस्वरूप साझेदारी, आपसी संपर्क और संबंध बने हैं, जिसके परिणामस्वरूप विचारों का आदान-प्रदान और विकास हुआ है, जबकि प्रतिद्वंद्विता ने प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है। इसके अलावा, चूंकि यूरोप लोहे से बहुत समृद्ध है, जो उद्योग का स्रोत है, लोहे ने अपनी सभ्यता को ऐसे हथियार से लैस किया है कि यूरोपीय लोगों ने दुनिया भर में प्राचीन सभ्यताओं के सभी अवशेषों को लूट लिया और हड़प लिया, इस प्रकार दुनिया में शक्ति संतुलन को नष्ट कर दिया।

इसके अलावा, महाद्वीपीय यूरोप अपेक्षाकृत ठंडा है, और यह जलवायु लोगों को हर चीज को देर से अपनाने और देर से छोड़ने के लिए मजबूर करती है। इसने यूरोपीय लोगों को उनके प्रयासों में दृढ़ता और दृढ़ता प्रदान की है और उनकी सभ्यता को कायम रखा है। इसके अलावा, विज्ञान के आधार पर उनके राज्यों का गठन, उनके बीच लगातार टकराव, उनकी क्रूर निरंकुश प्रणालियों के कारण होने वाली कठिनाइयाँ और उत्पीड़न, धार्मिक कट्टरता का दबाव, जैसा कि इनक्विजिशन द्वारा दर्शाया गया है, जिसने बदले में महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं को जन्म दिया है, और अधिक विनम्र तत्वों के बीच प्रतिस्पर्धा ने यूरोपीय लोगों की क्षमताओं को विकसित किया है और उनमें जागृति पैदा की है।

कुछ पुण्य प्रवृत्तियाँ और राष्ट्रवाद।

दूसरा, अमूर्त कारण उनका भरोसा बिंदु है। जब कोई ईसाई किसी भी क्रमिक या संयुक्त लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है, तो वे पीछे मुड़ते हैं और एक शक्तिशाली भरोसा बिंदु देखते हैं जो उनके मनोबल को बढ़ाता है। वे अपने अंदर एक ऐसी शक्ति पाते हैं जो सबसे कठिन और महानतम मामलों का भी मुकाबला कर सकती है। इस भरोसे के बिंदु का एक उदाहरण इनक्विजिशन की पेचीदा, परिष्कृत कट्टरता है, जो कई ईसाइयों के जीवन की जड़ों को पोषित करने और मुसलमानों की जीवन-रक्तियों को काटने के लिए हमेशा तैयार रहती है। इसके अलावा, यूरोपीय सभ्यता, जो भौतिकवादी अधर्म से गूंथ गई है, एक ऐसे समूह की बैरक या चर्च बन गई है जो हथियारों से लैस है

अपनी सभ्यता की जीत का मदमस्त गर्व।

(सुनुहाट ("हृदय तक की घटनाएँ") से

इस समय मुसलमान गरीब क्यों हैं?

प्रश्न: पहले हम अमीर थे और गैर-मुस्लिम गरीब थे, लेकिन अब हर जगह स्थिति उलट है। क्यों?

उत्तर: कुछ गलत सुझावों और सिफारिशों ने प्रयास करने के उस उत्साह को नष्ट कर दिया है जो ईश्वरीय आदेश से प्राप्त होता है, और कि मनुष्य को केवल वही मिलता है जिसके लिए वह श्रम करता है (53:40), और इस्लामी शिक्षा, "ईश्वर उस व्यक्ति से प्रेम करता है जो अपनी आजीविका कमाने के लिए काम करता है।"

कुछ लोग और उपदेशक यह नहीं जानते कि इस समय ईश्वर के वचन का महिमामंडन भौतिक प्रगति पर निर्भर करता है। वे संसार को परलोक की कृषि योग्य भूमि के रूप में नहीं समझते। वे मध्य और परवर्ती युगों की आवश्यकताओं के बीच अंतर नहीं कर सकते। वे प्रयास और जो पहले से है, उससे संतोष या अपनी शक्ति और संभावनाओं के पूर्ण प्रयास के बाद मिलने वाले परिणाम और मजदूरी से प्रशंसनीय संतोष के बीच अंतर नहीं करते। वे ईश्वर पर भरोसा करने के दो विपरीत प्रकारों को भ्रमित करते हैं - एक आलस्य और वांछित परिणाम के लिए आवश्यक शर्तों का पालन न करना, जिसका अर्थ है साधन और श्रम और परिणाम के बीच संतुलन का विरोध करना - ईश्वरीय इच्छा द्वारा स्थापित संतुलन - और दूसरा, इस्लाम द्वारा अपेक्षित, जो सच्ची ईमानदारी का आवरण है और जिसका अर्थ है उस परिणाम को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सभी शर्तों को पूरा करने के बाद पूर्ण समर्पण के साथ परिणाम को ईश्वरीय इच्छा पर सौंपना। वे पैगंबर की अपने समुदाय के लिए पूर्ण चिंता और करुणा के रहस्य को नहीं समझते हैं जब वे कहते हैं: "मेरे समुदाय! मेरी कौम!", और न ही वे पैगंबर की इस उक्ति में निहित ज्ञान को समझ सकते हैं: "सबसे अच्छे लोग वे हैं जो सबसे अधिक उपयोगी और लाभकारी हैं

60 यह ऐसे लोग और उपदेशक हैं जिन्होंने मुसलमानों में श्रम और प्रयास के प्रति झुकाव और उत्साह को तोड़ दिया है।

हमारी गरीबी का दूसरा कारण यह है कि हमने अपनी आजीविका के लिए सरकारी नौकरियों और सिविल सेवा के पदों की तलाश की है, जो आलस्य के समानुपातिक है और गर्व को बढ़ावा देता है।

आजीविका के लिए प्राकृतिक, गतिशील तरीका शिल्प, खेती या कृषि और व्यापार है। सिविल सेवा अप्राकृतिक तरीका है। मेरी राय में, जो लोग आजीविका सुरक्षित करने के लिए सिविल सेवा और सरकारी नौकरियों की तलाश करते हैं, वे नपुंसक सार्वजनिक भिखारी हैं। जो कोई सिविल सेवा या प्रशासनिक पद की तलाश करता है, उसे केवल लोगों और देश की सेवा के लिए उन्हें तलाशना चाहिए - आजीविका के लिए उन्हें तलाशना भीख माँगने जैसा है। इस प्रकार, चूंकि सिविल सेवा और सरकारी नौकरियां आम तौर पर हमारे हाथों में रही हैं, इसलिए हमने अपनी संपत्ति बर्बाद कर दी है और अपनी संतानों को इधर-उधर बिखेर दिया है, जिससे दोनों ही खो गए हैं। हालांकि, गैर-मुस्लिमों ने शिल्प और व्यापार को अपने हाथों में रखा है, और इस तरह अमीर बन गए हैं।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

तानाशाही

प्रश्न: निरंकुशता क्या है?

उत्तर: निरंकुशता का अर्थ है अत्याचार, प्रभुत्व और मनमानी शक्ति। यह हिंसा पर आधारित मनमाना व्यवहार और मजबूरी है। यह किसी एक व्यक्ति की निर्विवाद राय है और सभी प्रकार के दुर्व्यवहारों के लिए उपयुक्त आधार है। यह अन्याय की नींव है और मानवता को नष्ट करती है। निरंकुशता मनुष्यों को दुख की सबसे गहरी घाटियों में ले जाती है और इसने इस्लाम की दुनिया को अपमान और अभाव में डाल दिया है। यह व्यक्तिगत द्वेष और शत्रुता को जगाती है, इस्लाम को जहर देती है और अपने जहर से हर चीज को संक्रमित करती है। इसने मुसलमानों के बीच मतभेद और असहमति पैदा की है, साथ ही मुताज़िला , जबरिया और मुर्जिया जैसे गुमराह करने वाले स्कूलों को जन्म दिया है।

61

यह विद्वत्तापूर्ण निरंकुशता है - जो नकल का जनक और राजनीतिक निरंकुशता की संतान है - जिसके कारण मुताज़िला, जाबरीय्या और मुरजिया जैसे संप्रदायों का जन्म हुआ, जिन्होंने मुसलमानों को इतना भ्रमित कर दिया है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

---

[60] अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 3:481.

[61] मुर्जिया एक पंथ है जो यह तर्क देता है कि यदि कोई व्यक्ति विश्वास करता है, तो चाहे वह कितना भी पापी क्यों न हो, ईश्वर उसे क्षमा कर देगा और उसे स्वर्ग में प्रवेश देगा। (ट्र.)

निष्क्रियता की कालकोठरी से बाहर निकलना

प्रश्न: हम निष्क्रियता की कालकोठरी में क्यों गिर गये हैं?

जवाब: जीवन प्रयास से बना है, उत्साह उसका सवार है। जब तुम उत्साह पर सवार होकर जीवन के मैदान में जाओगे तो सबसे पहले निराशा का सामना करोगे, जो तुम्हारा सबसे बड़ा दुश्मन है। यह तुम्हें निराश कर देता है। इस दुश्मन का मुकाबला निराशा की तलवार से करो! (39:53)

फिर, दूसरों से श्रेष्ठ होने की प्रवृत्ति का अत्याचार, जो सत्य की सेवा के क्षेत्र में पाया जाता है (यहाँ, सेवा करने के इच्छुक सभी लोगों के लिए एक स्वतंत्र स्थान है) हमला करना शुरू कर देता है। प्रयास को सिर पर मारकर, यह आपको अपने घोड़े से गिरा देता है। सत्य को त्यागें और केवल ईश्वर के लिए इस शत्रु के विरुद्ध प्रयास करें।

इसके बाद, जल्दबाज़ी उभरती है और आपको अपने लक्ष्य की ओर एक-एक करके सभी सीढ़ियाँ न चढ़ने के लिए उकसाकर रास्ता भ्रमित कर देती है। यह प्रयास को आगे बढ़ने से रोकती है। इससे बचाव के लिए ये उपाय करें: धैर्य रखें, एक-दूसरे को धैर्य रखने के लिए प्रोत्साहित करें और इसमें एक-दूसरे की मदद करें और एकजुटता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करें (3:200)।

मनुष्य स्वभाव से सभ्य है, और अपने साथी मनुष्यों के अधिकारों को संरक्षित करने और उनके साथ मिलकर रहने के लिए जिम्मेदार है। हालाँकि, जल्दबाजी के बाद, दूसरों से अलग होने और व्यक्तित्व की ओर झुकाव आपके सामने आता है। इसके खिलाफ, महान, परोपकारी योद्धा को भेजें। सबसे अच्छे लोग वे हैं जो लोगों के लिए सबसे उपयोगी और लाभकारी हैं।

फिर, रीति-रिवाज दूसरों के आलस्य में अवसर खोज लेते हैं और आप पर आक्रमण कर देते हैं, जिससे आप स्थिर हो जाते हैं। जो लोग भरोसा चाहते हैं, उन्हें केवल ईश्वर पर भरोसा करना चाहिए, दूसरों पर नहीं।

फिर आता है निर्दयी शत्रु जो अपने कर्तव्यों को एक दूसरे पर छोड़ देता है, जो अपने मार्ग में अविश्वास और निर्बलता से उत्पन्न होता है। प्रयास को किसी भी प्रयास से रोका जाता है। प्रयास को शिखर तक ऊँचा उठाओ। जो लोग भटक गए हैं वे तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते यदि तुम स्वयं मार्ग पर हो (5:105), ताकि उस शत्रु का हाथ प्रयास के पैरों तक भी न पहुँच सके।

फिर आता है अधार्मिक शत्रु जो कर्तव्य की पूर्ति को पूर्ण सफलता पर निर्भर बनाता है, जिसका अर्थ है ईश्वर के न्याय और कार्यों में हस्तक्षेप। यह प्रयास को मुंह पर तमाचा मारता है और आंख में घूंसा मारता है। जो सही है उसका पालन करने के कर्तव्यपूर्ण सत्य को नष्ट करें जैसा कि आपको आदेश दिया गया है

(11:112) और अपने स्वामी पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश न करो, ताकि प्रयास को अपना स्थान मिल जाए।

अंत में आती है आराम और सुख की चाहत, जो सभी कठिनाइयों की जननी है और सभी बुराइयों का घर है। यह प्रयास की हानि का कारण बनता है और आपको अभाव और दुख की कालकोठरी में डाल देता है। महान योद्धा को हटा दो, मनुष्य के पास केवल वही है जिसके लिए वह परिश्रम करता है (53:39) इस जादूगर के विरुद्ध।

कठिनाई में बड़ी आसानी है, क्योंकि उत्साही व्यक्ति की आसानी केवल संघर्ष और प्रयास में ही निहित है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

संविधानवाद

प्रश्न: संविधानवाद क्या है?

उत्तर: मैं संविधानवाद की व्याख्या नहीं करूंगा जिसके बारे में कुछ अधिकारियों ने अपने कार्यों और अपरिचित प्रथाओं के माध्यम से आपको गलत धारणा दी है और जिसे आप वर्तमान राजनीतिक आतंक के कारण उत्पन्न भ्रम के माध्यम से जानते हैं। इसके बजाय मैं आपको शरिया पर आधारित संविधानवाद की व्याख्या करूंगा।

संविधानवाद छंदों की अभिव्यक्ति है, परामर्श लें
(3:159) और उनके मामले आपस में सलाह-मशविरा करके चलते हैं (42:38)। यह वह सलाह-मशविरा है जिसका शरीयत आदेश देती है। इस चमकदार शरीर का जीवन बल या ताकत के बजाय हक़ है। इसका दिल ज्ञान है, इसकी ज़बान प्यार है। इसका विवेक कानून है, किसी एक व्यक्ति की इच्छा नहीं।

संविधानवाद जनता का शासन है। आप भी शासक होंगे!
संविधानवाद सभी लोगों की खुशी का कारण है। आप भी खुशी प्राप्त करेंगे! संविधानवाद उत्साह और उच्च भावनाओं को जगाता है। आपको भी नींद से जागना होगा! संविधानवाद मानवता को पशुता से बचाता है। आप भी पूर्ण मनुष्य बनेंगे! संविधानवाद मुस्लिम दुनिया और एशिया के बंद पड़े "सौभाग्य" को खोल देगा। आपके लिए खुशखबरी! यह हमारे राज्य के हमेशा जीवित रहने का साधन होगा। हमारा राज्य लोगों के निर्वाह से जीवित रहेगा। निराश न हों!

संविधानवाद एक व्यक्ति की निरंकुश, निर्विवाद राय को बदल देगा, जिसे सनक और कल्पना के प्रभाव में, एक पतले तार की तरह किसी भी दिशा में घुमाया जा सकता है, जनता की राय के शासन में, जो एक अडिग लोहे के खंभे या चमकते हीरे की तरह है

तलवार। आपको भी इस पर भरोसा करना चाहिए जैसे आप नूह की नाव पर भरोसा करते हैं। यह हर किसी को सुल्तान के पद पर पहुंचाता है; आपको भी स्वतंत्रता के प्रेम के माध्यम से सुल्तान बनने की कोशिश करनी चाहिए। यह मानव की स्वतंत्र इच्छा को सुरक्षित करता है, जो मानवता की नींव है, और मनुष्यों को मुक्त करता है। आपको भी एक निर्जीव वस्तु होने के लिए सहमत नहीं होना चाहिए। यह करोड़ों मुसलमानों को एक कबीले के सदस्यों की तरह एक दूसरे से बांधता है। आपको भी इस बंधन को बनाए रखना चाहिए।

एक संविधानवादी सरकार का उज्ज्वल प्रतिनिधित्व यह है: आप सभी नेता हैं और आप सभी उन लोगों के लिए जिम्मेदार हैं जिनका आप नेतृत्व करते हैं।

निरंकुशता के शासनकाल में बल का बोलबाला था। जिसके पास सबसे तेज़ तलवार और सबसे कठोर हृदय होगा, वह उठेगा। लेकिन संविधानवाद के तहत स्रोत, भावना, शक्ति, अधिकार और नेतृत्व तर्क, ज्ञान, कौशल, कानून और जनमत हैं। जिसके पास सबसे तेज़ तर्क और सबसे प्रबुद्ध हृदय होगा, वह उठेगा। चूँकि ज्ञान बढ़ता है और मजबूत होता है, और बल कम होता है क्योंकि वे पुराने होते हैं, इसलिए बल पर आधारित मध्ययुगीन सरकारें पतन और पतन के लिए अभिशप्त हैं, जबकि समकालीन सरकारें बनी रहेंगी, क्योंकि वे ज्ञान पर आधारित हैं।

संविधानवाद बर्बरता के भालुओं, अज्ञानता के अजगर और शत्रुता के भेड़ियों से डरता है। निराशा नपुंसकता से आती है और हर विकास में बाधा बनती है। संघर्ष की भावना सभी बाधाओं के खिलाफ दृढ़ता और दृढ़ता है, चाहे वे कितनी भी मजबूत हों। खुद को आलस्य से बचाएँ। संविधानवाद को आपके पास लाने के लिए, ज्ञान और गुणों की एक पगडंडी बिछाएँ ताकि जब आप पूर्णता की ट्रेन - सभ्यता - पर सवार हों और प्रगति के बीजों को उसमें सवार होने के लिए प्रोत्साहित करें, तो संविधानवाद सभी बाधाओं को पार कर सकेगा और आपका स्वागत कर सकेगा।

मुस्लिम समुदाय की आम सहमति शरीयत में एक निश्चित प्रमाण है। इस प्रकार, जनमत शरीयत का एक आधारभूत सिद्धांत है।
लोगों की प्रवृत्ति शरीयत की दृष्टि में सम्मान और विचार के योग्य है।

संविधानवाद का मतलब है जनता का शासन। यानी शासन संसद का है, जो जनमत का प्रतीक है।

सरकार सिर्फ़ नौकर है। वह संसद की बात मानती है। अगर आपको सरकार से शिकायत है तो आपको खुद से शिकायत करनी चाहिए, क्योंकि अपने अधिकारों की रक्षा का कोई और तरीका नहीं है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी फव्वारे में परिवर्तन होता है, जिसका पानी कई नहरों में बहता है, तो यह परिवर्तन सभी नहरों में दिखाई देगा।

अगर तालाब में सभी नहरें बहती हैं, तो तालाब फव्वारे पर निर्भर है। अगर तालाब पूरी तरह बदल भी जाए, तो भी फव्वारे पर इसका कोई असर नहीं होगा।
सरकार तालाब है और जनता फव्वारा। इसलिए, फव्वारा बनने के लिए, हमें संविधानवाद को मजबूत करना होगा, लोगों के रूप में अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होना होगा, और ज्ञान और योग्यता से लैस होना होगा।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

जो लोग संविधानवाद को महत्व नहीं देते

प्रश्न: वे कौन हैं जो लोगों को भ्रमित करते हैं और संविधानवाद का महत्व नहीं समझते?

उत्तर: वे एक समिति हैं, जिसके अध्यक्ष अज्ञान के सरदार, हठ के सज्जन, नकल के पूज्य और महाशय बकवादी हैं। यह एक ऐसी समिति है, जो परामर्श को बाधित करती है, जो मानव जाति के बीच खुशी का स्रोत है। इसके सदस्य वे हैं, जो राष्ट्र के लाभ के लिए एक हजार लीरा (डॉलर) के लिए एक भी लीरा (डॉलर) नहीं छोड़ते, जो राष्ट्र को नुकसान पहुंचाने में अपना लाभ देखते हैं, जो असंतुलित और अनुचित व्याख्याएं और निर्णय करते हैं, जो राष्ट्र के लिए खुद को बलिदान करने का दावा करते हैं, हालांकि वे हमेशा प्रतिशोध और व्यक्तिगत हित और दुर्भावना से काम करते हैं, और जिनका स्वायत्तता या संघ का समर्थन करने का दावा वास्तव में एक अलग राज्य या रियासत की ओर पहला कदम है; वे वे हैं, जिनका गणतंत्र का समर्थन करने का दावा वास्तव में एक निरंकुश निरंकुशता स्थापित करने का एक साधन है, जो अपने द्वारा सहे गए थोड़े से गलत की भरपाई सभी लोगों को दंड और पीड़ा देकर करना चाहते हैं, और जो लोगों की स्वतंत्रता और सहजता के साथ अपनी प्रतिशोध की भावना का सामंजस्य नहीं कर सकते।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

दोषरहित सरकार असंभव है

प्रश्न: अच्छाई बुराई का कारण कैसे बन सकती है?

उत्तर: असंभव की मांग करना अपने आप में बुराई करना है। जो उड़ने के लिए पहाड़ से उड़ान भरता है, वह टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। लोग एक निर्दोष, दोषरहित सरकार की कामना करते हैं। लेकिन इस समय एक व्यक्ति के लिए भी दोषरहित बने रहना या बनना संभव नहीं है। तो फिर सरकार, खासकर अगर उसके अंग पाप से बने हों, दोषरहित कैसे हो सकती है? इसलिए हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि क्या सरकार की अच्छाई बाहर है-

इसकी बुराइयों का वजन करता है। दोषरहित सरकार का होना असंभव है। मैं उन लोगों को अराजकतावादी मानता हूँ जो एक निर्दोष सरकार की इच्छा रखते हैं। क्योंकि अगर - भगवान न करे! - उनमें से कोई एक हज़ार साल तक जीवित रहे और हर तरह की सरकार देखे, तो वे संतुष्ट नहीं होंगे। वे अपनी कल्पना से उत्पन्न विनाश की प्रवृत्ति के साथ किसी भी रूप को नष्ट करने की कोशिश करेंगे।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

आज़ादी का सच्चा अर्थ

प्रश्न: कुछ लोग कहते हैं कि स्वतंत्रता का मतलब है कि कोई भी व्यक्ति जो कुछ भी करता है, अच्छा या बुरा, उस पर तब तक सवाल नहीं उठाया जा सकता जब तक कि उससे दूसरों को नुकसान न पहुँचे। क्या यह सच है?

उत्तर: ऐसे दावे उन लोगों की बकवास हैं जो बच्चों की तरह अपनी बुराइयों के लिए बहाने ढूँढ़ते हैं; यह आज़ादी नहीं है। सच है, परिष्कृत आज़ादी शरिया द्वारा सिखाई जाती है और अच्छे शिष्टाचार से सजी होती है। बुराई और अपव्यय की आज़ादी आज़ादी नहीं है; यह पशुता है, शैतान का वर्चस्व है, और शारीरिक, दुष्ट आत्मा की गुलामी है।

लोगों की स्वतंत्रता, व्यक्तियों की स्वतंत्रता का परिणाम है।
स्वतंत्रता का मूल लक्षण है स्वयं को तथा दूसरों को कोई हानि न पहुँचाना। स्वतंत्रता की पूर्णता किसी पर अत्याचार न करने तथा दूसरों की स्वतंत्रता का उपहास न करने में है। कानून के न्याय के बिना किसी को भी दूसरों पर प्रभुत्व नहीं जमाना चाहिए। सभी के अधिकारों की रक्षा होनी चाहिए तथा सभी को वैध कार्य करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। ईश्वरीय सिद्धांत, ईश्वर के अलावा हममें से किसी को भी स्वामी नहीं मानना चाहिए (3:64) मूल आदर्श होना चाहिए। मानवीय स्वतंत्रता ईश्वर की सेवा करने से पूर्ण होती है। स्वतंत्रता विश्वास का गुण है। क्योंकि विश्वास की गरिमा तथा इससे मिलने वाला पराक्रम विश्वासी को, जो विश्वास के बंधन के माध्यम से ईश्वर का सेवक बन गया है, किसी अन्य के सामने स्वयं को नीचा दिखाने या दूसरों के प्रभुत्व तथा उत्पीड़न के अधीन रहने की अनुमति नहीं देता। न ही विश्वास द्वारा उत्पन्न करुणा उन्हें दूसरों की स्वतंत्रता तथा अधिकारों का उल्लंघन करने की अनुमति देती है। विश्वास जितना अधिक परिपूर्ण होगा, स्वतंत्रता उतनी ही अधिक उज्ज्वल होगी।

प्रश्न: हम किसी महापुरुष, संत, महान विद्वान के सामने कैसे स्वतंत्र हो सकते हैं? उन्हें अपने गुणों के कारण हम पर हावी होने का अधिकार है। हम उनके गुणों के गुलाम हैं।

उत्तर: संतत्व और महानता की विशेषताएँ विनम्रता या शील हैं। वे अहंकार और प्रभुत्व नहीं हैं। जो अहंकार और शील को अनुभव करता है, वह अहंकार और शील को अनुभव करता है।

गैंट वह व्यक्ति होता है जो संत होने का दिखावा करता है या आध्यात्मिक मार्गदर्शक होने का दिखावा करता है। ऐसे व्यक्ति को महान न समझें।

प्रश्न: आप स्वतंत्रता और संविधानवाद के प्रति बहुत आशान्वित हैं।
लेकिन हमारे चारों ओर मौजूद उन भयानक सांपों का क्या, जिन्होंने हमारे जीवन को विषाक्त करने और हमारे राज्य को टुकड़े-टुकड़े करने के लिए अपना मुंह खोल रखा है?

उत्तर: डरो मत! जैसे-जैसे सभ्यता, सद्गुण और स्वतंत्रता मानव जगत में भारी पड़ने लगे हैं, तराजू का दूसरा पलड़ा धीरे-धीरे हल्का होता जाएगा। मान लीजिए कि असंभव है - अगर, भगवान न करे, वे हमें कुचल दें और मार डालें - तो निश्चित रूप से, हम बीस की संख्या में मरेंगे, लेकिन हम तीन सौ की संख्या में पुनर्जीवित होंगे। अपने सिर से बुराइयों और मतभेदों की धूल को हटाकर, हम मानवता के कारवां का नेतृत्व एक सच्चे प्रबुद्ध और एकजुट लोगों के रूप में करेंगे। हम ऐसी मृत्यु से नहीं डरते, जिसका परिणाम सबसे प्रतिरोधी, शक्तिशाली और शाश्वत जीवन होगा। भले ही हम मर जाएं, इस्लाम जीवित रहेगा। भविष्य में जो कुछ भी है वह निकट है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

क्या मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच समानता हो सकती है?

प्रश्न: हमारे बीच गैर-मुस्लिमों सहित सभी समान कैसे होंगे?

उत्तर: समानता कानून में है, सद्गुण या सम्मान में नहीं। कानून की नज़र में राजा और गुलाम एक समान हैं। चींटी को पैर से कुचलने की मनाही करने वाला शरीयत इंसानों के अधिकारों की अनदेखी कैसे कर सकता है? यह संभव नहीं है! लेकिन हम इसका पूरी तरह से पालन नहीं कर पाए हैं।

चौथे खलीफा अली का मुकदमा एक साधारण यहूदी के साथ, जबकि अली स्वयं खलीफा थे, तथा सलाहद्दीन अल-अय्यूबी का मुकदमा एक ईसाई के साथ, इस मामले में आपकी भूल को सुधार देगा।

वर्तमान में विजय तर्क, सकारात्मक राष्ट्रवाद, प्रगति और न्याय के माध्यम से संभव है। यदि कोई दूसरों को हराने के लिए तलवार का उपयोग करता है, तो उसके अनाथ (बच्चे या पोते) उसी तलवार का निशाना बनेंगे। वर्तमान में,

---

62 सलाहद्दीन अल-अय्यूबी (1138-1193)। वह अल-अय्यूबी के सुल्तानों में से एक था और इतिहास में सबसे प्रसिद्ध राजनेता और कमांडर था। उसने मिस्र, सीरिया, इराक, हेजाज़ और यमन पर शासन किया। उसने लेवेंट में फ्रैंक्स और अन्य यूरोपीय क्रूसेडरों के खिलाफ इस्लामी विरोध का नेतृत्व किया और अंततः यरूशलेम के साम्राज्य से फिलिस्तीन को वापस ले लिया। सलाहद्दीन के शूरवीर व्यवहार को ईसाई इतिहासकारों ने नोट किया और क्रूसेडरों का दुश्मन होने के बावजूद, उसने उनमें से कई का सम्मान जीता; यूरोप में एक घृणास्पद व्यक्ति बनने के बजाय, वह शूरवीरता के सिद्धांतों का एक प्रसिद्ध उदाहरण बन गया। (ट्र.)

तलवार तर्क के हाथ में है। हमारे असली दुश्मन, जो हमें नष्ट कर रहे हैं, वे हैं अज्ञानता के सरदार, उनके बेटे ज़रूरतमंद सज्जन और उनके पोते सर दुश्मनी। अगर अर्मेनियाई लोगों ने हमारे साथ दुश्मनी की है, तो उन्होंने इन तीन भ्रष्ट लोगों के आदेश के तहत ऐसा किया है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

क्या कुरान ईसाइयों और यहूदियों से प्रेम करने से मना करता है?

प्रश्न: कुरान ईसाइयों और यहूदियों से प्रेम करने से मना करता है: यहूदियों और ईसाइयों को मित्र और सहयोगी न बनाओ (5:51)। हम उनसे मित्रता कैसे कर सकते हैं?

उत्तर: कुरान और रसूल के कथन को निश्चित, विशिष्ट निर्णय का स्रोत बनने के लिए, इसका अर्थ और उद्देश्य निर्विवाद रूप से स्पष्ट होना चाहिए। कुरान का यह कथन व्याख्या के लिए खुला है और इसकी व्याख्या की आवश्यकता है। क्योंकि इसमें निहित निषेध का उद्देश्य और लक्ष्य निर्दिष्ट नहीं है। इसलिए इसे निर्दिष्ट करने की आवश्यकता है। समय एक महान व्याख्याकार है; यदि यह प्रतिबंध और विशिष्टता को प्रकट करता है, तो इसका विरोध नहीं किया जाना चाहिए। इसके अलावा, यदि निर्णय आदेश या निषेध के लक्ष्य पर आधारित है, तो यह लक्ष्य निर्णय का कारण बन जाता है। यानी, आयत यहूदियों और ईसाइयों के साथ दोस्ती और गठबंधन को मना करती है। इसका मतलब यह है कि हम उनके यहूदी धर्म और ईसाई धर्म में उनके साथ दोस्ती नहीं कर सकते और उनके साथ ईमान वालों के खिलाफ़ काम नहीं कर सकते। इसके अलावा, किसी व्यक्ति को उसके अपने कारण से प्यार नहीं किया जाता है; उसे उसके गुणों या चरित्र और कौशल के कारण प्यार किया जाता है। इसलिए, जिस तरह एक मुसलमान का हर गुण मुसलमान नहीं हो सकता, उसी तरह एक काफिर का हर गुण उसके काफिर होने से उत्पन्न नहीं होता। तो फिर, किसी काफ़िर में पाई जाने वाली मुस्लिम विशेषता और हुनर की सराहना करना या उसे अपनाना क्यों जायज़ नहीं होना चाहिए? अगर आपकी पत्नी यहूदी या ईसाई है, तो आप उससे ज़रूर प्यार करेंगे क्योंकि वह आपकी पत्नी है।

दूसरा, खुशी के युग में - पैगंबर के समय में - शांति और आशीर्वाद हो - एक सर्वोच्च धार्मिक क्रांति हुई। इसने सभी लोगों के दिमाग को धर्म की ओर मोड़ दिया, उन्हें इस्लाम पर केंद्रित कर दिया, सभी प्रेम और दुश्मनी केवल धर्म के लिए थी। इस कारण, गैर-मुसलमानों के लिए किसी भी तरह के प्रेम में पाखंड की गंध आती थी।

हालाँकि, चूँकि वर्तमान क्रांति विश्वव्यापी है और सभ्यता के क्षेत्र में घटित हो रही है, इसलिए सभी के मन सभ्यता, प्रगति और प्रगति में व्यस्त हैं।

इसलिए, गैर-मुसलमानों के साथ हमारी दोस्ती उनकी प्रगति और सभ्यता की सुंदरता के हस्तांतरण और सार्वजनिक सुरक्षा के संरक्षण के लिए है, जो सांसारिक खुशी की नींव में से एक है। इसलिए, इस तरह की दोस्ती को आयत में निषेध में शामिल नहीं किया गया है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

क्या ईसाइयों को अविश्वासी नहीं कहा जाना चाहिए?

प्रश्न: हमें मसीहियों को अविश्वासी क्यों नहीं कहना चाहिए?

उत्तर: हम किसी अंधे व्यक्ति को "ओ अंधे आदमी" कहकर संबोधित करने के लिए बाध्य नहीं हैं।
यह अपमानजनक होगा। पैगंबर की हदीसें मुस्लिम देश के गैर-मुस्लिम नागरिकों को अपमानित करने से मना करती हैं।63

दूसरे, काफ़िर की अवधारणा के दो अर्थ हैं, जिनमें से एक है ईश्वर का इनकार करने वाला। हम इस अर्थ को ईसाइयों पर आरोपित नहीं कर सकते। दूसरा है हमारे पैगम्बर और इस्लाम का इनकार करने वाला। यह अर्थ उनके लिए है, और वे इस आरोपण से नाराज़ नहीं हैं। हालाँकि, चूँकि यह अवधारणा पहले अर्थ को दर्शाती है, हम इसे जिस भी तरह से इस्तेमाल करते हैं, यह अपमान और अपमान का संबोधन बन गया है।

इसके अलावा, हम विश्वास के क्षेत्र को पारस्परिक संबंधों और बातचीत के क्षेत्र के साथ मिश्रित करने के लिए बाध्य नहीं हैं।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

सकारात्मक और नकारात्मक राष्ट्रवाद

हमने तुम्हें कबीले और खानदान में बाँट दिया है ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको
(49:13) दूसरे शब्दों में, ताकि तुम एक दूसरे को जान सको और एक दूसरे की सहायता करो और एक दूसरे से प्रेम करो, न कि इसलिए कि तुम एक दूसरे के लिए अजनबी बन जाओ और एक दूसरे के शत्रु और अपराधी बन जाओ।

जिस तरह एक निजी सैनिक का दस्ते, प्लाटून और सेना के पूरे पदानुक्रम के संबंध में एक विशिष्ट कर्तव्य और बंधन होता है, उसी तरह समाज में हर किसी के पास बंधनों और कर्तव्यों की एक श्रृंखला होती है। अगर इन बंधनों और कर्तव्यों का नाम और निर्दिष्ट नहीं किया जाता, तो आपसी परिचय और सहायता नहीं हो पाती।

राष्ट्रवाद की जागृति या तो सकारात्मक होती है - यह साथी नागरिकों से आने वाली मानवीय करुणा और चिंता के माध्यम से पुनर्जीवित और विकसित होती है -

---

63 अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 6:19.

जेनशिप, जो बदले में आपसी ज्ञान और सहायता की ओर ले जाती है - या यह नकारात्मक है और नस्लवादी भावनाओं और प्रवृत्तियों के माध्यम से बढ़ती है, जो आपसी अस्वीकृति, प्रतिरोध और दुश्मनी का कारण बनती है। इस्लाम इस नकारात्मक राष्ट्रवाद को स्पष्ट रूप से अस्वीकार करता है।

(सुनुहाट ["हृदय तक की घटनाएँ"] से)

अन्यायी काफिरों के प्रचार का जवाब

प्रश्न: हमें अन्यायी काफिरों के दुष्प्रचार का जवाब कैसे देना चाहिए?

उत्तर: दुष्प्रचार जनवाद की अवैध संतान है, जिसकी मैं पहले भी निंदा कर चुका हूँ। इसका जवाब किसी हथियार से नहीं दिया जाना चाहिए; हमें इसका जवाब सच्चाई और ईमानदारी से देना चाहिए। सच्चाई का एक दाना झूठ के ढेर को जला देता है।

कहो "अल्लाह" और फिर उन्हें व्यर्थता में डूबने के उनके खेल पर छोड़ दो (6:91)।

सबसे अच्छी, चतुर चाल यह है कि छल-कपट छोड़ दिया जाए।

(तुलुआत ["हृदय में उठती विचारों की चमक"] से)

कोई भी मुसलमान ठोस तर्क के आधार पर इस्लाम को नहीं छोड़ेगा

इतिहास का कोई भी कालखंड, सुख के युग से लेकर अब तक, हमें यह नहीं बताता कि किसी मुसलमान ने अपने तर्क के आधार पर इस्लाम के बजाय किसी दूसरे धर्म को प्राथमिकता दी हो या ठोस सबूतों के आधार पर उस धर्म में प्रवेश किया हो। यह सच है कि कुछ लोग ऐसे भी रहे हैं जिन्होंने इस्लाम को छोड़ दिया है; लेकिन यह नकल के माध्यम से हुआ है और इसका कोई महत्व नहीं है। हालांकि, दूसरे धर्मों के अनुयायी लगातार ठोस सबूतों और ठोस तर्कों के आधार पर बड़ी संख्या में इस्लाम में प्रवेश करते रहे हैं। अगर हम सच्चे इस्लाम और इस्लाम के योग्य सच्चाई और ईमानदारी का प्रदर्शन करें, तो लोग बड़ी संख्या में इस्लाम में प्रवेश करते रहेंगे।

इतिहास हमें यह भी बताता है कि मुसलमानों का विकास और सभ्यता इस्लाम की सच्चाई पर उनके पालन के अनुपात में है, जबकि दूसरों का विकास और सभ्यता उनके धर्म के विपरीत अनुपात में है। साथ ही, सच्चाई हमें यह भी बताती है कि मानवता की जागृति धर्म के बिना नहीं हो सकती। खास तौर पर, एक व्यक्ति जो सत्य के प्रति जागृत हो गया है, जिसने सच्ची मानवता को जान लिया है, और भविष्य और अनंत काल के लिए उम्मीदवार बन गया है, वह धर्म के बिना ऐसा नहीं हो सकता। जागृत होने के लिए-

मानव जाति का विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वह सत्य के केंद्र, यानी सच्चे धर्म को प्राप्त न कर ले, जिस पर वह ब्रह्मांड के आक्रमणों के विरुद्ध निर्भर रहेगा और जिससे वह अपनी अनंत महत्वाकांक्षाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सहायता मांगेगा। इसी वास्तविकता के कारण सभी में सच्चे धर्म की खोज करने की प्रवृत्ति जागृत हुई है। यह इस बात की खुशखबरी है कि मानवता भविष्य में स्वाभाविक रूप से इस्लाम को अपना लेगी।

हे अन्यायी लोगों! इस्लाम, जिसमें पूरी दुनिया को गले लगाने, जोड़ने, पालने और ज्ञान देने की क्षमता है, उसे तुम इतना संकीर्ण क्यों और कैसे समझते हो कि तुमने उसे गरीबों और कुछ कट्टरपंथी हुजों को सौंप दिया है, और उसके आधे अनुयायियों को छोड़ दिया है? तुम यह क्यों और कैसे सोचते हो कि इस्लाम का प्रकाश-भरा महल, जिसमें सभी सिद्धियाँ हैं और जिसमें सभी मानव जाति की उच्च भावनाओं को पोषित करने वाली सामग्री है, केवल कुछ गरीबों, बद्दुओं और प्रतिक्रियावादियों का है, मानो वह एक शोकाकुल काला तम्बू हो? यह एक सच्चाई है कि हर कोई अपने दर्पण में जो कुछ भी प्रतिबिंबित होता है, उसे देखता है और उसका अनुसरण करता है। इसका मतलब यह है कि आपका अंधेरा और झूठा दर्पण उसे ऐसा ही दिखाता है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

पूर्ण न्याय और महान गलत कार्य करने की मानवीय क्षमता का कुरानिक सिद्धांत

> प्रत्येक प्राणी अपने ही खाते में कमाता है, और कोई भी प्राणी बोझ उठाने वाला बनकर किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता और न ही उसे उठाने के लिए कहा जाता है (6:164)।

व्यक्तिगत, सांप्रदायिक और राष्ट्रीय राजनीति और कार्य के तरीकों में यह सबसे न्यायसंगत कुरानिक सिद्धांत है। हालाँकि:

> मनुष्य वास्तव में बहुत बड़ी गलतियाँ करने, गलत निर्णय लेने, तथा अज्ञानतावश कार्य करने के लिए प्रवृत्त रहता है (33:72)।

भयंकर गलत काम और अन्याय करने की मानवीय क्षमता का स्रोत यह है: जानवरों के विपरीत, मनुष्य अपनी जन्मजात शक्तियों या प्रवृत्तियों के संबंध में सृष्टि में प्रतिबंधित नहीं हैं। इस कारण से, जब तक उन्हें ऐसा करने के लिए निर्देशित और प्रशिक्षित नहीं किया जाता है, तब तक मनुष्य गलत काम करने या अहंकार की किसी सीमा का सामना नहीं करता है। जब अहंकार, आत्म-केंद्रितता, स्वार्थ, अहंकार और हठ को गलत काम करने की मानवीय प्रवृत्ति में जोड़ दिया जाता है, तो मनुष्य ऐसे भयानक अपराध और पाप करता है, जिन्हें वह अभी तक नहीं कर पाया है।

इन सभी का नाम लें। चूँकि ये नर्क की आवश्यकता के प्रमाण हैं, इसलिए इनकी सज़ा सिर्फ़ नर्क ही हो सकती है। निम्नलिखित पर विचार करें:

मनुष्य में अनेक गुण या विशेषताएँ होती हैं। यदि इनमें से कोई एक गुण शत्रुता को आकर्षित करता है, तो ऊपर उद्धृत प्रथम श्लोक के अनुसार शत्रुता केवल इसी गुण या विशेषता तक सीमित होनी चाहिए। अन्य अनेक अच्छे गुणों के होने पर उस मनुष्य पर केवल दया करनी चाहिए तथा अन्याय या अपराध का शिकार नहीं होना चाहिए।

हालाँकि, गलत काम करने की ओर अशिक्षित झुकाव और सरासर अज्ञानता से काम करने के कारण, मनुष्य उस इंसान के सभी गुणों और वास्तव में अपने व्यक्तित्व के प्रति शत्रुता का भाव रखता है। इससे संतुष्ट न होकर, वे अपने रिश्तेदारों और यहाँ तक कि सहकर्मियों के प्रति भी शत्रुता का भाव रखते हैं। हालाँकि, चूँकि कोई चीज़ कई कारणों का परिणाम हो सकती है, इसलिए शत्रुता के योग्य पाप या गलत काम का गुण किसी बाहरी कारक से उत्पन्न हो सकता है, न कि हृदय के भ्रष्ट होने से। इसलिए, भले ही यह गुण गलत हो, या अविश्वासी हो, उस व्यक्ति को गलत काम करने वाला नहीं माना जा सकता।

प्रतिशोध या प्रतिशोधात्मक शत्रुता के प्रभाव में, एक लालची व्यक्ति ने भविष्यवाणी की: "यह मुस्लिम राज्य बिखर जाएगा।" अपनी अशुभ भविष्यवाणी को साकार होते देखने और अपने अहंकार और अहंकार को संतुष्ट करने के लिए, वे मुसलमानों की दुर्दशा और इस्लामी भाईचारे के विनाश की कामना करते हैं।

वे दुश्मन के राक्षसी अन्याय को भड़काऊ तर्कों के माध्यम से न्याय के रूप में दिखाना चाहते हैं।

हम देखते हैं कि वर्तमान, आधुनिक सभ्यता ने मानवजाति को ऐसा अन्यायपूर्ण, निर्दयी सिद्धांत दे दिया है कि यह उसके सभी गुणों को शून्य कर देता है, और फ़रिश्तों की चिंता का कारण बताता है: "क्या तुम उसमें एक ऐसे व्यक्ति को बिठाओगे जो उसमें अव्यवस्था और विनाश फैलाए और खून बहाए?" (2:30)64

उदाहरण के लिए, यह सभ्यता किसी गांव को उसके सभी निर्दोष लोगों के साथ नष्ट करने की अनुमति देती है, यदि वहां किसी देशद्रोही ने शरण ले रखी हो, या पूरे समुदाय को उसके सभी निर्दोष लोगों, बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के साथ नष्ट करने की अनुमति देती है, यदि उनमें एक भी विद्रोही हो, या किसी पवित्र स्थान को नष्ट करने की अनुमति देती है।

---

64 सईद नूरसी कुरान की आयत 2:30 का हवाला देते हैं: याद करो (जब) तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा: “मैं धरती पर एक प्रतिनिधि नियुक्त कर रहा हूँ।” फ़रिश्तों ने पूछा: “क्या तुम उसमें एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त करोगे जो इस पर अव्यवस्था और भ्रष्टाचार फैलाएगा और खून बहाएगा, जबकि हम तुम्हारी प्रशंसा के साथ तुम्हारा गुणगान करते हैं (यह घोषणा करते हुए कि तुम किसी भी दोष से पूरी तरह मुक्त हो और सारी प्रशंसा सिर्फ़ तुम्हारी है,) और घोषणा करते हैं कि सिर्फ़ तुम ही सर्व-पवित्र हो और ईश्वर और प्रभु के रूप में पूजे जाने योग्य हो?” उसने कहा: “निश्चित रूप से मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।” निम्नलिखित आयतें 31-33 भी देखें। (अनुवाद)

यदि कोई व्यक्ति इस समाज के गलत कानूनों का पालन नहीं करता है, तो वह अयासोफ़िया (हागिया सोफिया) जैसी अमूल्य इमारत में शरण ले सकता है।

यदि कोई व्यक्ति परम सत्य की दृष्टि में अपने भाई के पाप के लिए उत्तरदायी नहीं है, तो यह कैसे हो सकता है कि हजारों निर्दोष लोगों को एक अनियंत्रित व्यक्ति के विद्रोह के लिए जिम्मेदार माना जाए, उस स्थान पर जहां हमेशा बुरे स्वभाव वाले क्रांतिकारी मौजूद रहते हैं?

(सुनुहाट [“हृदय तक की घटनाएँ”] से)

इस्लाम पर कुरान की पुस्तकों का पूर्ण प्रभुत्व

हमें दूरबीन की आवश्यकता है जिसके माध्यम से हम कुरान का अध्ययन करते हैं

> सब लोग मिलकर परमेश्वर की रस्सी को थामे रहो, और कभी अलग न हो जाओ (6:103)।
>
> अलिफ-लाम-मीम: यह वह किताब है, इसमें कोई संदेह नहीं; यह ईश्वर-भक्त, संयमी लोगों के लिए पूर्ण मार्गदर्शन है (2:1-2)।

मेरे विचार में इस्लामी आदेशों के पालन में मुस्लिम समुदाय की लापरवाही और असावधानी का सबसे महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित है:

धर्म के स्तंभ और आवश्यक, स्पष्ट आदेश, जो धर्म का नब्बे प्रतिशत बनाते हैं, कुरान और सुन्ना के हैं, जो कुरान की व्याख्या करते हैं। विवादित मामले जो विद्वानों की कानूनी प्रक्रियाओं के लिए भेजे जाते हैं जो इज्तिहाद करने के लिए योग्य हैं , वे केवल शेष दस प्रतिशत का गठन करते हैं। धर्म के स्तंभों और आवश्यक आदेशों और इसके विवादास्पद मामलों के बीच मूल्य में बहुत अंतर है जो विद्वानों के विवेक पर भेजे जाते हैं। यदि

दूसरे सोने के हैं, दूसरे हीरे के हैं। क्या नब्बे हीरे के खंभों को दस सोने के टुकड़ों की सुरक्षा में छोड़ना उचित या धार्मिक रूप से जायज़ है?

तर्कसंगत और धार्मिक तर्कों के बजाय धर्म के स्रोत की पवित्रता आम लोगों को उसका पालन करने के लिए प्रेरित करती है। प्रख्यात विद्वानों की पुस्तकें शीशे की तरह होनी चाहिए - उन्हें कुरान को प्रदर्शित करना चाहिए, न कि उसे ढकना चाहिए।

यह तार्किक रूप से स्थापित हो चुका है कि मन किसी आवश्यक चीज से उस चीज की ओर बढ़ता है जो उसे आवश्यक बनाती है, या उसकी कंडीशनिंग मिसाल की ओर।

यह स्वाभाविक रूप से एक कंडीशनिंग मिसाल से उस तक नहीं जाता है जो है

इस मिसाल का स्रोत। अगर यह उस दिशा में आगे बढ़ता भी है, तो यह एक नए इरादे और ध्यान के साथ होता है। यह स्वाभाविक नहीं है।

उदाहरण के लिए, शरीयत की किताबें जिनसे हम शरीयत के आदेश सीखते हैं, वे (अध्ययन और पालन के लिए) आवश्यक हैं। कुरान, जो उनका मूल स्रोत है, वही उन्हें पालन करने के लिए आवश्यक बनाता है। कुरान और उसके लेखक की पवित्रता, जो मानव विवेक को प्रेरित करती है, शरीयत के आदेशों के पालन के लिए प्राथमिक, मूल उद्देश्य है। हालाँकि, चूँकि आम लोगों के विचार शरीयत की किताबों पर केंद्रित हैं, इसलिए वे कुरान के बारे में केवल एक अस्पष्ट दृष्टिकोण रखते हैं।

वे कुरान और उसके रचयिता की पवित्रता पर शायद ही कभी ध्यान देते हैं। यही कारण है कि विवेक एक ठोस उदासीनता का आदी हो गया है।

फ़ेरेन.

अगर धर्म के मूल तत्वों और बुनियादी आदेशों की पुस्तकों में कुरान पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया होता, तो मन स्वतः ही कुरान के स्रोत - प्रकटकर्ता - की पवित्रता की ओर मुड़ जाता, जो उसके प्रति निष्ठा को प्रोत्साहित करता है, और विवेक को जागृत करता है, और जो इसका एक अनिवार्य पहलू है। इससे हृदय में संवेदनशीलता भी विकसित होती और वह विश्वास की चेतावनियों और प्रोत्साहनों के प्रति बहरा नहीं रहता।

इसका मतलब यह है कि शरिया पर लिखी गई किताबें कांच के टुकड़ों की तरह होनी चाहिए थीं, जिनके माध्यम से कुरान को पढ़ा जा सकता था, लेकिन समय के साथ नकल करने वाले और उद्धरण देने वाले लेखकों की गलतियों के कारण उनमें जंग लग गई और कुरान पर पर्दा पड़ गया। जिन किताबों को कुरान की व्याख्या करनी चाहिए थी, वे अलग-अलग, स्वतंत्र रचनाएँ हैं।

क़ुरआन शाश्वत ईश्वरीय संदेश है और अपनी चमत्कारिकता के कारण हमेशा नया और ताज़ा रहता है और यह अपने पवित्र मूल के कारण पवित्र है; यह हमेशा विश्वास के माध्यम से विवेक को प्रेरित करता है। आम लोगों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करने के तीन तरीके हैं:

- शरिया पर लिखी किताबों के लेखकों ने जो प्रसिद्धि, सम्मान और विश्वसनीयता अर्जित की है, उसे आलोचना के माध्यम से नष्ट करना। यह खतरनाक, अनुचित और अन्यायपूर्ण है।

- शरिया की किताबों को धीरे-धीरे, विशेष शिक्षा के माध्यम से कुरान के पारदर्शी व्याख्याताओं में बदलना, जिसके माध्यम से कुरान को देखा और पढ़ा जा सके। इस्लाम की शुरुआती पीढ़ियों के मुजतहिदों द्वारा लिखी गई किताबें , जैसे अल-मुवत-

इमाम मालिक द्वारा लिखित 'अल्लाह तआला'65 और इमाम अबू हनीफा द्वारा लिखित ' अल-फिकहुल-अकबर'66 इसी प्रकार के हैं।

उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति इब्न हजर के पास जाता है, तो उसे कुरान को समझने और यह जानने के लिए उसके पास जाना चाहिए कि उसमें क्या लिखा है, न कि यह समझने के लिए कि इब्न हजर क्या कहता है। इस दूसरे तरीके के लिए समय की आवश्यकता होती है।

• जिस तरह इस्लामी आध्यात्मिक मार्ग के कुछ महान मार्गदर्शकों ने किया है, उसी तरह आम लोगों का ध्यान कुरान के पर्दे से हटाकर कुरान की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए और कुरान की शुद्ध संपत्ति कुरान से ही मांगी जानी चाहिए; मुजतहिदों द्वारा निकाले गए दूसरे आदेश मुजतहिदों से या संबंधित पुस्तकों से मांगे जाने चाहिए । यही कारण है कि आध्यात्मिक मार्गदर्शकों के उपदेश आमतौर पर शरीयत के विद्वानों के उपदेशों से अधिक आकर्षक और प्रभावी होते हैं।

यह एक सामाजिक तथ्य है कि किसी चीज को जो पुरस्कार, मांग और ध्यान सार्वजनिक सम्मान देता है, वह उसके आवश्यक मूल्य के कारण नहीं, बल्कि आम लोगों की उसकी आवश्यकता के कारण होता है। एक घड़ीसाज़ का एक महान विद्वान से अधिक कमाना इस बात को सिद्ध करता है। इसलिए, यदि मुसलमान समुदाय की आवश्यक धार्मिक आवश्यकताएं कुरान की ओर निर्देशित होतीं, यदि मुसलमान लोग यह समझते कि उन्हें कुरान की किसी और चीज से अधिक आवश्यकता है और कुरान में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की तलाश करते, तो वह पुस्तक, जो अपने आप में स्पष्ट है और सत्य को स्पष्ट रूप से दर्शाती है, लाखों अन्य पुस्तकों की मांग से कहीं अधिक मांग में होती, और ऐसी आवश्यकता के परिणामस्वरूप कुरान को अधिक ध्यान मिलता। इस प्रकार, यह लोगों के बीच पूरी तरह से प्रमुख और प्रभावशाली होता। यह एक धन्य पुस्तक के रूप में नहीं रह जाती, जिसका आशीर्वाद केवल इसके पाठ में मांगा जाता है।

---

65 इमाम मलिक इब्न अनस (711-795): उनका जन्म, निवास और मृत्यु मदीना में हुई। वे फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के सबसे सम्मानित विद्वानों में से एक थे और मालिकी स्कूल ऑफ़ लॉ का नाम उनके नाम पर रखा गया था। (ट्र.)

66 इमाम आज़म अबू हनीफ़ा, नुमान इब्न साबित (मृत्यु 768): उन्होंने हनाफ़ी स्कूल ऑफ़ लॉ की स्थापना की और वे न्यायशास्त्र के सबसे महान मुस्लिम विद्वानों में से एक थे और कुरान और सुन्नत से नए कानूनों का निष्कर्ष निकालने वाले थे। वे धर्मशास्त्र में भी पारंगत थे। (ट्र.)

67 अल-हाफिज शिहाबुद्दीन अबुल-फदल अहमद इब्न अली, जिन्हें इब्न हजारी-अल-असकलानी के नाम से जाना जाता है, 1372-1448) इस्लाम के एक मध्यकालीन शफ़ीई सुन्नी विद्वान थे। वे हदीस के सबसे महान विद्वानों में से एक थे और शफ़ीई न्यायशास्त्र के एक प्रसिद्ध विशेषज्ञ भी थे। इब्न हजर ने हदीस, हदीस शब्दावली, इतिहास, जीवनी, कुरान की व्याख्या, कविता और शफ़ीई न्यायशास्त्र पर पचास से अधिक रचनाएँ लिखीं। (अनुवाद)

धर्म के आवश्यक और बुनियादी आदेशों को शरिया के गौण, विवादास्पद मामलों के साथ मिलाना और पूर्व को बाद वाले पर निर्भर बनाना एक और बड़ी गलती है। उन गौण मामलों पर विचारों के मतभेदों के लिए दो दृष्टिकोण हैं। पहला मुसव्विब है, जो मानता है कि गौण, विवादास्पद मामलों के बारे में एक से अधिक सत्य हो सकते हैं, और इसलिए कानून के सभी चार बुनियादी स्कूल अपने निष्कर्षों में सत्य हैं। दूसरा मुखतिया है, जो दावा करता है कि सभी स्कूल अपने निष्कर्षों में गलत हो सकते हैं। मुसव्विब

कहते हैं: "मैं मानता हूँ कि हमारा तरीका सही है, लेकिन यह भी संभव है कि यह ग़लत हो।
अन्य तरीके गलत हैं, लेकिन यह भी उतना ही संभव है कि वे सही हों।" आम लोग धर्म के बुनियादी, स्पष्ट आदेशों के बीच अंतर नहीं कर सकते हैं, जो कि कानून के स्कूलों के निष्कर्षों में भी शामिल हैं, और माध्यमिक, विवादास्पद मामले, जिनमें से सभी को वे - बुनियादी, स्पष्ट आदेश और माध्यमिक मामलों के संबंध में कानून के स्कूलों के निर्णय - संभवतः गलत मान सकते हैं। यह एक बहुत ही गंभीर और खतरनाक त्रुटि है। जो लोग मानते हैं कि कानून के सभी स्कूल माध्यमिक, विवादास्पद मामलों के संबंध में अपने निष्कर्षों में गलत हो सकते हैं, वे सोच और सत्य पर एकाधिकार रखने की बीमारी से पीड़ित हैं, जो आत्म-प्रेम से उत्पन्न होती है। वे कुरान की व्यापकता और हर समय सभी वर्गों के लोगों की समझ के सभी स्तरों के लिए इसकी पहुंच के प्रति लापरवाही के लिए भी जिम्मेदार हैं।

चूँकि मुख़्तियाह का दृष्टिकोण संदेह, दूसरों के प्रति बुरी राय और पक्षपात का मूल है, इसने आत्माओं की एकजुटता, दिलों की एकता और आपसी प्रेम और सहायता को बहुत नुकसान पहुँचाया है, जो इस्लाम और मुसलमानों के जीवन के लिए आवश्यक हैं - वास्तव में, हमें एक दूसरे के बारे में अच्छा विचार रखने, एक दूसरे से प्रेम करने और एकजुट रहने का आदेश दिया गया है।

(सुनुहाट ["हृदय तक की घटनाएँ"] से)

अपने वांछित भविष्य के लिए क्या किया जाना चाहिए?
कुर्द और तुर्क?

प्रश्न: कुर्दों और तुर्कों के विकास और वांछित भविष्य के लिए आप क्या सुझाव देते हैं?

उत्तर: मेरा सुझाव है कि एक विश्वविद्यालय, जिसका नाम मेद्रेसेतुज़-ज़हरा हो,
बिटलिस में खोला जाना चाहिए, जो कुर्दों के क्षेत्र का केंद्र है, और बिटलिस के दो विंग वान और दियारबाकिर में। सुनिश्चित करें कि हम कुर्द ऐसा न करें

दूसरों के समान; हम निश्चित रूप से जानते हैं कि हमारा सामाजिक जीवन तुर्कों के जीवन और खुशी पर निर्भर करता है।

प्रश्न: कैसे? किस तरह से? क्यों?

उत्तर: इस सुझाव की कुछ पूर्व शर्तें और फल हैं।

प्रश्न: इसकी पूर्व-आवश्यकताएं क्या हैं?

उत्तर: आठ हैं।

पहली बात यह है कि मेदरेसे नाम सभी को जाना-पहचाना और पसंद है, यह आकर्षक है और उत्साह जगाता है। इसमें एक महान सत्य भी छिपा है और इसीलिए यह शिक्षा की मांग को बढ़ाता है।

दूसरा यह है कि सकारात्मक विज्ञानों का अध्ययन धार्मिक विज्ञानों के साथ किया जाना चाहिए, तथा अरबी भाषा अनिवार्य, तुर्की भाषा अनिवार्य तथा कुर्द भाषा अनुमेय होनी चाहिए।

प्रश्न: इन दो प्रकार के विज्ञानों का अध्ययन करने में क्या बुद्धिमत्ता है?
क्या आप जानते हैं कि आप इसका पूरे दिल से समर्थन करते हैं और हमेशा इसका सुझाव देते हैं?

उत्तर: ऐसा अध्ययन बौद्धिक तर्क को चार भ्रष्ट सादृश्यों या तुलनाओं68 से उत्पन्न होने वाली भ्रांतियों के अंधकार से बचाएगा तथा उस कुतर्क को दूर करेगा, जिसे दार्शनिक दृष्टिकोणों ने परजीवी अनुकरणकर्ताओं में जन्म दिया है।

प्रश्न: किस तरह से?

उत्तर: विवेक का प्रकाश धार्मिक विज्ञान है, और तर्क या बुद्धि का प्रकाश भौतिक विज्ञान है। इनके सम्मिलन से सत्य प्रकट होता है। विद्यार्थियों का प्रयास इन दो पंखों पर उड़ान भरता है। जब ये अलग रहते हैं, तो धार्मिक विज्ञान कट्टरता पैदा करते हैं, जबकि भौतिक विज्ञान संदेह और धोखे को जन्म देते हैं।

तीसरी शर्त है कुर्द विद्वानों में से शिक्षकों की नियुक्ति करना जो क्षेत्रीय भाषा जानते हों और जिन पर तुर्क और कुर्द दोनों ही भरोसा करते हों, जो विद्वान धार्मिक ज्ञान और आध्यात्मिकता दोनों में पारंगत हों।

---

68 ये चार समानताएँ या तुलनाएँ हैं: (1) भौतिक या भौतिक की आध्यात्मिक से तुलना करना और आध्यात्मिक मामलों में आधुनिक, यूरोपीय दृष्टिकोण और स्थिति को आदर्श के रूप में स्वीकार करना, और विज्ञान के क्षेत्र में कुछ प्रसिद्ध लोगों के विचारों को अन्य विज्ञानों में भी प्रमाण के रूप में स्वीकार करना; (2) धार्मिक विद्वानों के विचारों को अस्वीकार करना, जिन्हें धार्मिक विज्ञानों का कोई ज्ञान नहीं है; (3) भौतिक विज्ञानों के अपने ज्ञान से उत्पन्न अहंकार के कारण धार्मिक मामलों में खुद पर भरोसा करना; (4) पिछली पीढ़ियों की तुलना नई पीढ़ियों से और अतीत की तुलना वर्तमान से करना, और धर्म पर गलत आपत्तियाँ उठाना। (अब्दुलमसीद उन्लुकुल, सैद नूरसी का भाई)

चौथा कुर्दों की क्षमता पर विचार करना और विज्ञान में उनकी सरलता और बचपन पर विचार करना है। क्योंकि लोगों के आकार के अनुसार वस्त्र अलग-अलग आकार के होते हैं; एक आकार के लिए उपयुक्त वस्त्र दूसरे के लिए बदसूरत होता है। बच्चों की शिक्षा या तो मजबूरी या उनकी कल्पनाओं और इच्छाओं की चापलूसी पर आधारित होती है।

पांचवां, श्रम विभाजन के सिद्धांत का पूर्णतः अनुपालन करना है, ताकि यद्यपि विज्ञान की शाखाओं को एक दूसरे से पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता तथा वे एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, तथापि प्रत्येक शाखा में विशेषज्ञों को लाया जा सके।

छठा उद्देश्य है छात्रों के लिए पोषण का स्रोत ढूंढना और इस विश्वविद्यालय को हर आधिकारिक स्तर पर अन्य विश्वविद्यालयों के बराबर स्थापित करना।
आदर करना।

सातवाँ यह है कि जब तक यह विश्वविद्यालय नहीं बन जाता, तब तक शिक्षकों के स्कूल को इस्तांबुल विश्वविद्यालय में एक केंद्रीय स्थान दिया जाना चाहिए और उसी दृष्टिकोण से पुनर्गठित किया जाना चाहिए, ताकि यह इस नए विश्वविद्यालय में प्रतिबिंबित या अनुकरण किया जा सके, और इस एक के गुण और धार्मिकता को दूसरे में स्थानांतरित किया जा सके। इस प्रकार दोनों के दो पंख हो सकते हैं (एक वैज्ञानिक विचार और दृष्टिकोण और दूसरा धार्मिकता और आध्यात्मिकता)।

आठवां यह है कि व्यक्तिगत शिक्षा, जो कि सामान्यतः एक तरीका है।
कुर्द क्षेत्र में, सामूहिक शिक्षा को प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।

प्रश्न: इसके क्या लाभ हैं?

उत्तर: इस्लामी और देशभक्तिपूर्ण उत्साह और प्रयास।

प्रश्न: और क्या?

उत्तर: इस मेदरेसे में, एक बीज की तरह, तूबा का पेड़ है। 69 यदि यह उत्साह और प्रयास के साथ बढ़ता और खिलता है, तो यह अपने खर्चों को स्वयं पूरा करने की स्थिति में आ जाएगा, आपके लगभग खाली पड़े घर से स्वतंत्र होकर विकसित होगा।
पर्स.

प्रश्न: कैसे?

उत्तर: पहला यह है कि यदि धर्मनिष्ठ नींव अच्छी तरह से संगठित हैं, तो वे मेड्रेस के एकीकरण की नहर के माध्यम से इस कुंड में महत्वपूर्ण मात्रा में "पानी" बहने देंगे।

दूसरा है ज़कात (निर्धारित शुद्ध दान)। कुछ समय बाद, वह मेदरेसेतुज़-ज़हरा अपने आप को ज़कात का कुछ हिस्सा दे देगा

---

६९ तूबा का वृक्ष स्वर्ग का वृक्ष है और असंख्य शाखाओं वाला विशाल होने का प्रतीक है-
है। (ट्र.)

इस्लाम और मानवता को दी जाने वाली सेवा के माध्यम से। यहां तक कि ज़कात की ज़कात भी पर्याप्त होगी।

तीसरा यह कि इस मदरसे के फल देने, प्रकाश फैलाने और इस्लाम के लिए की जाने वाली सेवा के कारण यह विद्या बुद्धि की दृष्टि में विज्ञान का सर्वोच्च विद्यालय है।

, यह दिलों की नज़र में एक आदर्श धार्मिक विद्यालय (मदरसे) भी होगा , और अंतरात्मा की नज़र में सबसे पवित्र दरवेश लॉज भी। चूँकि यह एक ही समय में एक विद्यालय, एक मदरसे और एक दरवेश लॉज दोनों होगा, इसलिए दान और मन्नतों की पूर्ति के लिए किए जाने वाले भुगतान, जो इस्लाम के "राष्ट्रीय" दान हैं

, उसमें प्रवाहित हो जाएगा।

चौथा यह है कि चूँकि इसका काम सीमित समय के लिए अध्यापकों के स्कूल द्वारा पूरा किया जाएगा, इसलिए इस स्कूल की आय बढ़ेगी और अधिशेष राशि को ऋण के रूप में मेद्रेसेतुज़-ज़हरा को दिया जाएगा। कुछ समय बाद, मेद्रेसे स्वतंत्र हो जाएगा और अपना ऋण चुका देगा।

प्रश्न: इस मदरसे से आपको और क्या अपेक्षाएं हैं , जिसके लिए आप दस वर्षों से अधिक समय से आवाज उठा रहे हैं?

उत्तर: मेरी आगे की अपेक्षाओं को संक्षेप में कहें तो - यह कुर्द विद्वानों के भविष्य को सुरक्षित करेगा, कुर्द क्षेत्र में वैज्ञानिक ज्ञान का परिचय देगा, और संविधानवाद और स्वतंत्रता की सुंदरता को प्रदर्शित करेगा ताकि लोग उनसे लाभान्वित हो सकें।

प्रश्न: इस पर और स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

उत्तर: सबसे पहले: मदरसों को एकजुट किया जाएगा और उनमें सुधार किया जाएगा।

दूसरा: इस्लाम को बेबुनियाद कहानियों, इसराइली कहानियों और सूचनाओं तथा ठंडे कट्टरपंथ से बचाया जाएगा। इस्लाम का चरित्र एक धार्मिक दृढ़ता है जो दृढ़ता, प्रतिबद्धता, दृढ़ संकल्प और सही और सत्य के समर्थन से बनी है। यह अज्ञानता या तर्क की कमी से उत्पन्न कट्टरपंथ नहीं है। मेरी राय में, सबसे भयानक और लाइलाज कट्टरपंथ या कट्टरता यूरोप के अंधे नकलचियों में पाई जाती है। वे अपने सतही संदेहों पर हठपूर्वक जोर देते हैं। यह धार्मिक विद्वानों का रवैया नहीं है जो सबूतों के आधार पर काम करते हैं।

तीसरा: संविधानवाद की खूबसूरती को फैलाने का एक रास्ता खुलेगा। कुर्दों का संविधानवाद को नुकसान पहुंचाने का कोई इरादा नहीं है, लेकिन अगर इसकी सराहना नहीं की जाती है, तो इससे नुकसान भी हो सकता है। अगर कोई मरीज़ सोचता है कि इलाज में ज़हर मिला हुआ है, तो वे निश्चित रूप से इसका इस्तेमाल नहीं करेंगे।

चौथा: मेदरेस में शिक्षा की एक नई शैली के प्रवेश का रास्ता खुल जाएगा और मेदरेस के लोगों को स्वीकार्य विज्ञान का एक शुद्ध स्रोत तैयार हो जाएगा। क्योंकि मैंने बार-बार कहा है कि एक बुरी समझ और छवि ने इनके साकार होने में बाधा डाली है।

पांचवां: मैंने लगभग सौ बार दोहराया है, लेकिन मैं फिर से दोहराऊंगा: मेड्रेस (विशुद्ध रूप से धार्मिक स्कूल) और (धर्मनिरपेक्ष) स्कूलों और आध्यात्मिक केंद्रों के लोगों या सदस्यों के बीच सामंजस्य होना चाहिए। उन्हें कम से कम अपने झुकाव और विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम से अपने मुख्य उद्देश्य पर सहमत होना चाहिए। क्या हम यह नहीं देखते कि उनके विचारों में असमानता ने असमानता पैदा की है और उनके अलग-अलग तरीकों ने प्रगति को रोका है? प्रत्येक समूह चरम पर जाता है क्योंकि वे अपने तरीके के प्रति कट्टरता दिखाते हैं और क्योंकि उन्हें अन्य तरीकों का सतही ज्ञान है। जबकि एक समूह दूसरे को गुमराह मानता है, दूसरा पहले वाले पर अज्ञानता का आरोप लगाता है।

संक्षेप में: यदि इस्लाम भौतिक रूप धारण करता है, तो यह एक ऊंचे, प्रकाश से भरे और अच्छी तरह से निर्मित महल के रूप में प्रकट होगा; इस महल का एक कमरा विज्ञान का विद्यालय होगा, दूसरा, मेदरेस या धार्मिक विज्ञान का विद्यालय होगा, और तीसरा, दरवेश लॉज होगा; इसका हॉल उन सभी लोगों की बैठक कक्ष होगा जो एक दूसरे की कमियों को पूरा करने के लिए एक सलाहकार समिति के रूप में एकत्र होते हैं। जिस तरह एक दर्पण अपनी क्षमता के अनुसार सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है, उसी तरह मेदरेसतुज़-ज़हरा भी भौतिक क्षेत्र में उस दिव्य महल का प्रतिनिधित्व करेगा।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

मुसलमान अपना सम्मान कैसे पुनः प्राप्त कर सकते हैं और उसे कैसे सुरक्षित रख सकते हैं?

प्रश्न: हम अपनी शक्ति कैसे जुटा सकते हैं और अपने राष्ट्रीय (इस्लामिक) सम्मान को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं?

जवाब: इस्लामी राष्ट्रवाद के साथ राष्ट्र की छाती में ज्ञान, कौशल और प्रेम का एक बड़ा तालाब बनाओ। शिक्षा के साथ नीचे की लीक और छेदों को बंद करो। इस्लामी गुणों से पानी को उसमें बहने के लिए नहरें खोलो। एक बड़ा फव्वारा है, जिसका पानी अब तक रेगिस्तानों की ओर जाता रहा है और कुछ भिखारियों और नपुंसकों को खिलाता रहा है। इस फव्वारे से एक सुंदर नहर बनाओ और इसे शरीयत के अनुसार अपने काम की उपज से भर दो और पानी को तालाब में बहने दो। इससे अपने पूर्णता के बगीचे को सींचो। यह एक अक्षय स्रोत है।

प्रश्न: वह फव्वारा क्या है?

जवाब: यह ज़कात है। आपके पास बुद्धि है, यह ज़कात के ज़रिए खिलेगी।

प्रश्न: कैसे?

उत्तर: यदि बुद्धिमान लोग अपनी बुद्धि की ज़कात और धनवान लोग अपनी संपत्ति की ज़कात राष्ट्र के हितों पर खर्च करें तो हमारा राष्ट्र अन्य राष्ट्रों की बराबरी कर लेगा।

प्रश्न: और क्या?

उत्तर: वादों या प्रतिज्ञाओं की पूर्ति में किए गए भुगतान
और दान-संस्थाएँ ज़कात की चचेरी बहनें हैं ; वे इस सेवा में मदद करेंगी।

प्रश्न: आप हमारी अनेक स्थापित प्रथाओं का अपमान क्यों करते हैं?

उत्तर: हर युग का एक नियम होता है। यह युग कुछ पुरानी प्रथाओं को मृत्युदंड देता है। चूँकि उनसे लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है, इसलिए उन्हें मृत्युदंड दे देना चाहिए।

प्रश्न: हमारे लिए सबसे ज़रूरी क्या है?

उत्तर: सत्यनिष्ठा।

प्रश्न: और क्या?

उत्तर: झूठ न बोलना।

प्रश्न: और फिर?

उत्तर: विश्वसनीयता, ईमानदारी, वफ़ादारी, दृढ़ता और एकजुटता।

प्रश्न: केवल ये?

उत्तर: हां.

प्रश्न: क्यों?

उत्तर: अविश्वास एक झूठ है, जबकि विश्वास सत्य है। क्या यह इस बात का पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि हमारा अस्तित्व विश्वास, सत्यनिष्ठा और एकता के माध्यम से संभव है?

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

मेदरेस और धार्मिक विद्वानों की वर्तमान स्थिति

प्रश्न: धार्मिक विद्वानों की बहुत निंदा की गई है...?

उत्तर: यदि विद्वान में विद्या के लिए अपेक्षित सौम्यता न हो, तो विद्वान में सौम्यता के अभाव से उत्पन्न दोषों के कारण ज्ञान की निन्दा करना मूर्खता है। अतः यदि यह मूर्खता नहीं है, तो फिर विद्वान की निन्दा करना क्या है?

विद्वान जो हमेशा अपनी क्षमता के अनुसार इस्लाम की पवित्रता को बढ़ावा देते हैं और अब , इस्लाम के आदेशों या आदेशों का संचार करना , क्या मुस्लिम लोगों के बीच सबसे अधिक सम्मान, प्रेम और करुणा का हकदार कोई व्यक्ति नहीं है, क्योंकि वर्तमान समय में समान क्षमता वाला कोई विद्वान नहीं है?

धार्मिक विद्वानों के अस्तित्व के कारण हमें कोई नुकसान नहीं हुआ है, लेकिन हमें जिन विद्वानों की आवश्यकता है उनकी कमी के कारण हमें नुकसान हुआ है। वर्तमान समय में, उच्च बुद्धि वाले लोगों ने विज्ञान के स्कूलों को प्राथमिकता दी है; धनी लोगों ने मदरसों की आजीविका के लिए सहमति नहीं दी है ।

चूँकि मेड्रेस को आवश्यक संगठन, आवश्यक शिक्षा के मानक और आधुनिक दुनिया में एक आउटलेट से वंचित रखा गया है, इसलिए वे हमारे समय के लिए आवश्यक विद्वानों को तैयार करने में सक्षम नहीं हैं। विद्वानों को कभी नापसंद न करें; उन्हें नापसंद करना एक बहुत बड़ा दोष और खतरनाक है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

आपसी मतभेद और असहमति पर मुस्लिम जगत के विद्वान

प्रश्न: मुस्लिम जगत के विद्वानों के बीच बड़े मतभेदों और असहमतियों के बारे में आपका क्या विचार है?

उत्तर: मैं इस्लाम की दुनिया को एक संसद या सलाहकार सभा के रूप में देखता हूँ जो व्यवस्था से बाहर हो गई है। शरिया कहता है कि बहुमत की राय स्वीकार्य है और निर्णय उसी पर आधारित है। अन्य राय को अलग-अलग व्यक्तिगत क्षमताओं के चयन पर छोड़ा जा सकता है, बशर्ते कि वे पूरी तरह से सत्य या स्वीकार्य सार से रहित न हों, जैसा कि उनकी शिक्षा के अनुरूप है। हालाँकि, निम्नलिखित दो बिंदु ध्यान देने योग्य हैं:

पहली बात यह है कि अगर कोई राय, जिसमें सिर्फ़ एक हद तक सच्चाई हो और जो बहुमत को स्वीकार्य न हो, उसे सिर्फ़ उस क्षमता तक सीमित और सीमित रहना चाहिए जो उसे अपनाती है, लेकिन उसका मालिक उसे आज़ाद छोड़ देता है। दूसरे लोग जो उसे अपनाते हैं और उसका प्रचार करते हैं और उसके अनुयायी उसे इस हद तक कट्टरता से थामे रहते हैं कि उसे बचाए रखने के लिए वे उसके विरोधियों का खंडन और विनाश करने की कोशिश करते हैं। इससे ऐसी होड़, एक-दूसरे का खंडन और निंदा पैदा होती है कि पैरों के नीचे से उड़ती धूल, मुँह से निकलता धुआँ और ज़बानों पर टूटती आंधी, इस्लाम के सूरज के सामने एक काले बादल की तरह बन जाती है। यह बादल न सिर्फ़ दयापूर्ण बारिश को रोक सकता है और न ही दे सकता है, बल्कि यह सूरज की रोशनी को भी रोक लेता है।

दूसरा बिंदु यह है कि यदि किसी राय में निहित सत्य जिसे केवल कुछ लोगों द्वारा अपनाया जाता है, उन लोगों की व्यक्तिगत प्रवृत्ति, इच्छाओं और कल्पनाओं पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता है जो इसे पसंद करते हैं, तो यह खतरनाक हो जाता है। क्योंकि इसे अपनाने वाली क्षमताओं को इसका रंग लेना चाहिए और इसके अनुसार कार्य करना चाहिए, वास्तव में वे इसे अपने व्यक्तिगत स्वभाव और कल्पनाओं के अनुकूल ढाल लेते हैं और इसे अपने अधीन कर लेते हैं। इससे मार्गदर्शन कल्पना और सनक में बदल जाता है और मार्ग व्यक्तिगत प्रवृत्ति द्वारा पोषित होता है। एक कीट तरल पदार्थ पीता है और शहद पैदा करता है, जबकि एक साँप पानी पीता है और जहर पैदा करता है।

हालाँकि, मुझे पूरी उम्मीद है कि इस उल्लासपूर्ण रूप से घूमती धरती पर मुस्लिम विद्वानों की एक उच्च सभा ज्ञान की एक पवित्र संसद का गठन करेगी। पूर्ववर्ती (जो पहले आए) और उत्तराधिकारी (जो बाद में आएंगे) सदियों तक एक-दूसरे को देखेंगे और उनके बीच एक सलाहकार सभा का निर्माण होगा।

दूसरे, हानिकारक असहमति के एक अन्य कारण के रूप में, "यह सत्य है" के स्थान पर "केवल यही सत्य है" और "यह सुंदर है" के स्थान पर "केवल यही सुंदर है" जैसे कथनों को अपनाया गया है। "ईश्वर के लिए घृणा" को "ईश्वर के लिए प्रेम" के स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया है। अपने तरीके से प्रेम करने के बजाय, अन्य तरीकों से घृणा ने आचरण और व्यवहार को निर्देशित किया है। सत्य के प्रति प्रेम की जगह स्वार्थ-केंद्रितता ने ले ली है। लक्ष्यों, गंतव्यों और उद्देश्यों के लिए साधन, वाहन और तर्क अपनाए गए हैं।

हालांकि, कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि गलत, झूठे साधन या तर्क किसी सच्चे लक्ष्य या सच्चे परिणाम तक पहुँचने में मदद कर सकते हैं। जब उद्देश्य और लक्ष्य सच्चे हों, तो साधनों और तर्कों में दोष और भ्रष्टाचार से मनमुटाव या दिलों में विभाजन नहीं होना चाहिए।

तीसरा, धार्मिक विद्वानों के बीच मतभेद का एक और कारण है, जनोन्माद, जो दमनकारी है। जनोन्माद या वाचालता, जो आलोचना और निराशावाद से उत्पन्न होती है, हमेशा गलत और दमनकारी होती है।

प्रश्न: जनोन्माद या वाचालता से आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर: विविध, विशाल मामलों में केवल दोष और कमियाँ देखना ही लोकतंत्र है; यह धोखा देने वाला और धोखा देने वाला दोनों है। लोकतंत्र का सार बुराई को इस हद तक बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना है कि वह अच्छाई को ढक ले।

संपूर्ण ब्रह्मांड उस माँ को देखकर बहुत दु:खी है जो अपने बच्चे की मृत्यु पर अत्यधिक दु:खी है। क्या अस्तित्व में ज्ञान और उपयोगिता ऐसी धारणा से सहमत है, जो मानव जीवन के आनंद को दु:ख से कम कर देती है?

एक थका हुआ यात्री एक बहुत ही सुंदर, सुव्यवस्थित बगीचे में एक घंटे के आराम के लिए प्रवेश करता है, और फिर देखता है - इस सिद्धांत के अनुसार कि केवल स्वर्ग के बगीचे ही सभी गंदगी और दोष से मुक्त हो सकते हैं और वहाँ दोष है

इस सृष्टि के निर्माण और विकृति के हर पूर्णता में - बगीचे के अलग-अलग कोनों में कुछ गंदी चीजें। अपने बुरे स्वभाव के कारण, वह केवल उन्हीं चीजों को देखता है, बगीचे को इस तरह देखता है जैसे कि वह पूरी तरह गंदगी से भरा हो, और यह नकारात्मक धारणा उसकी कल्पना द्वारा इतनी बढ़ जाती है कि उसे यकीन हो जाता है कि पूरा बगीचा एक गंदी और गंदी जगह है। नतीजतन, उसका पेट खराब हो जाता है, उसे उल्टी आती है, और वह पूरी तरह से घृणा से बगीचे से भाग जाता है।

जो हर चीज का अच्छा पक्ष देखता है वह अच्छा सोचता है।
अच्छा सोचता है और जीवन का आनंद लेता है।

प्रश्न: मुस्लिम जगत में मतभेद और असहमतियों को कैसे समाप्त किया जा सकता है?

उत्तर: सबसे पहले, हमें सहमति के बुनियादी बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। हमारा ईश्वर एक है, हमारा पैगंबर एक है, हमारा कुरान एक है, और हम सभी धर्म के मूल तत्वों पर सहमत हैं। गौण मामलों और विवरणों पर असहमति इस एकता को हिला नहीं सकती और न ही हिलानी चाहिए। दूसरे, अगर "ईश्वर के लिए प्रेम करना" को एक सिद्धांत के रूप में अपनाया जाता है और सत्य के प्रति प्रेम हमारे दृष्टिकोण और व्यवहार को निर्देशित करता है - समय और परिस्थितियाँ इन मामलों में हमारी बहुत मदद करती हैं - तो हमारे मतभेद और असहमति को सटीक, सीधे चैनलों में निर्देशित किया जा सकता है।

अफसोस की बात है कि यदि मुख्य उद्देश्य को भुला दिया जाए या उसकी उपेक्षा की जाए तो मन विचलित हो जाता है।
व्यक्तिगत अहंकार की ओर मुड़ें और उसके चारों ओर घूमें।

संस्था के विभिन्न अंगों में एक दूसरे के साथ सामंजस्य होना चाहिए। व्यक्तिगत योग्यता और क्षमताएं असहमति और मनमुटाव का कारण नहीं बननी चाहिए। व्यक्तिगत अहंकार को तोड़कर अलग कर देना चाहिए और "हम" को एक दूसरे के साथ जुड़ना चाहिए।
उभरना।

(तुलुआत [“हृदय में उठती विचारों की चमक”] से)

विभिन्न प्रकार के नेता, सरदार, धार्मिक विद्वान और मार्गदर्शक

प्रश्न: नेता दो प्रकार के होते हैं, सरदार, धार्मिक विद्वान और मार्गदर्शक। उनके बीच क्या अंतर है?

उत्तर: यदि कोई "महान" व्यक्ति बल, षड्यंत्र और आध्यात्मिक शक्ति पर निर्भर करता है, जिसका वह दिखावा करता है, भले ही उसके पास वह न हो, और लोगों के साथ ऐसा व्यवहार करता है मानो वे दास या नौकर हों - यदि वह भय और मजबूरी के दबाव के माध्यम से मानवता को जानवरों के स्तर तक गिरा देता है, और हमेशा लोगों को उनकी उत्सुकता, उत्साह और खुशी खोने का कारण बनता है, तो वह एक निरंकुश नेता, सरदार या धार्मिक मार्गदर्शक है। यदि कोई सफलता या जीत होती है, तो उसका श्रेय केवल उस निरंकुश व्यक्ति को दिया जाता है, लेकिन यदि कोई बुराई या हार होती है, तो उसे उसके गरीब लोगों में बाँट दिया जाता है। ऐसा "महान" व्यक्ति महान नहीं है; वास्तव में, वह छोटा है। वह अपने लोगों को अपमानित करता है और उनका कम मूल्यांकन करता है। लोग जो कुछ भी करना चाहते हैं, वह अनिच्छा से और केवल उस व्यक्ति के लिए करते हैं। यहां तक कि अगर वे अच्छा करते हैं, तो वे इसे पाखंडी तरीके से करते हैं, और इस प्रकार वे चाटुकारिता और झूठ बोलने के आदी हो जाते हैं। वे लगातार गिरावट में हैं, क्योंकि उत्साह, जो मानव प्रयास की भाप शक्ति है, बुझ गई है। उनके नेता और सरदार उनके कंधों पर बैठते हैं ताकि सिर्फ़ वे ही दिखें। वे उनका मांस खाते हैं ताकि वे बड़े हो सकें। ऐसे नेता लोगों की गुलाब की कली जैसी क्षमताओं पर पर्दा डालते हैं और रोशनी बंद कर देते हैं ताकि सिर्फ़ वे ही विकसित और खिल सकें।

लेकिन एक सच्चा महान व्यक्ति सच्चाई और हक़ पर भरोसा करता है, बुद्धि का इस्तेमाल करता है, अपने लोगों को प्यार से अपने साथ जोड़ता है और उनकी सफलताओं पर सवार होने के बजाय उनके अधीन हो जाता है और उनके उत्साह को जगाता है। अगर कोई अच्छाई है तो वह उसे अपने लोगों में बाँट देता है; हर किसी को उसका एक हिस्सा देकर वह उनके उत्साह को बढ़ाता है। वह अपने लोगों को ज्ञान की रोशनी के सामने खड़ा करता है ताकि हक़ और न्याय की जीत हो। वह लोगों की गुलाब की कली जैसी क्षमताओं और भावनाओं में प्यार और बुद्धि का पानी भेजता है ताकि वे विकसित हो सकें और खिल सकें। ऐसा नेता नेता की पैगम्बर की परिभाषा का ठोस उदाहरण है: "लोगों का नेता वह है जो उनकी सेवा करता है।"70

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

आध्यात्मिक मार्गदर्शकों को जागृत करना

प्रश्न: आप समय के आध्यात्मिक मार्गदर्शकों पर आक्रमण क्यों करते हैं? उनमें संत भी हैं। क्या आपको डर नहीं लगता कि आप उन पर अज्ञानतावश आक्रमण कर रहे हैं और क्या आपको अपने किए पर पछतावा नहीं है?

---

70 अल-अजलूनी, कश्फुल-खफ़ा', 2:463.

उत्तर: सर्वशक्तिमान ईश्वर, महामहिम, ने अपनी शक्ति से उनके ऊंचे माथे पर सत्य अंकित किया है। मेरा उद्देश्य उन लोगों को जागृत करना है जो सत्य के इस अंकन के लिए प्यासे हैं।

वे मुझे धमकियों से मेरे रास्ते से नहीं रोक सकते। मैं अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए हर जोखिम उठाने के लिए दृढ़ संकल्प हूं। जबकि एक साधारण गैर-मुस्लिम अपने देश के लिए अपने जीवन का बलिदान करता है, मेरे जीवन के साथ मेरा बंधन बहुत कमजोर है। मेरा जीवन, आज तक, लगभग सात बार मेरे हाथ से उड़ गया है, लेकिन इसे मेरे हाथ में छोड़ दिया गया है। मुझे अपने उद्देश्य की खातिर अपना जीवन देकर किसी को भी बाध्य करने का कोई अधिकार नहीं है। यद्यपि मेरी आत्मा अपने पिंजरे से पेड़ पर उड़ जाना चाहती है, और मेरा मन मेरे सिर से निराशा में भाग जाना चाहता है, उन्हें उनके स्थानों पर छोड़ दिया गया है ताकि मैं बाद में उनका बलिदान कर सकूं। इसलिए मुझे मौत की धमकी देना व्यर्थ है। वे मुझे परलोक खोने की भी धमकी देते हैं। कोई बात नहीं! मैं अपनी वर्तमान स्थिति के लिए दुख और आहों की आग में जल रहा हूं, और अपनी उपेक्षा और नुकसान पर अफ़सोस से गूंज रहा हूं। अगर मैं उनके अभिशाप के कारण नर्क की आग में जलता हूँ, तो मेरा विवेक दुखों, आहों और पछतावों की इस आग से बचने पर स्वर्गीय खुशी महसूस करेगा और मेरी कल्पना आशा और आकांक्षा से स्वर्ग का निर्माण करेगी। सबको बता दूँ कि मैं अपने दो हाथों में अपनी दो ज़िंदगियाँ - यह और अगली - लेकर चल रहा हूँ और मोर्चे पर दो दुश्मनों से लड़ने में व्यस्त हूँ। एक ही ज़िंदग़ी वाला कोई भी व्यक्ति मेरे खिलाफ़ न आए!

प्रश्न: आप वर्तमान मार्गदर्शकों से क्या चाहते हैं?

जवाब: मैं चाहता हूँ कि उनमें ईमानदारी या इरादे की पवित्रता हो जिसका वे हमेशा ज़िक्र करते हैं; मैं चाहता हूँ कि वे अपनी आत्मा के खिलाफ़ लड़ने के लिए खुद को लगाएँ - प्रमुख जिहाद - जो कि उनकी सैन्य नौकरी में उनका कर्तव्य है - आध्यात्मिक शुद्धि, अपने निजी हितों का पीछा करना छोड़ दें और एक सादगीपूर्ण जीवन जिएँ, जो कि उनका दावा और विशिष्ट चिह्न है, और एक दूसरे से प्यार करें, जिसका वे हमेशा दावा करते हैं और सलाह देते हैं, और जो कि इस्लामी स्वभाव का सार है। उन्होंने हमें काम पर रखकर अपना वेतन प्राप्त किया है, अब उनका कर्तव्य है कि वे हमारी सेवा करें।

प्रश्न: उन्हें कैसे कार्य करना चाहिए?

उत्तर: उन्हें या तो मार्गदर्शन का दावा करना छोड़ देना चाहिए या फिर अपने बीच से हठ, चुगली और पक्षपात को खत्म कर देना चाहिए। कुछ नवीन मार्गदर्शकों ने विचलन और नवाचार के कुछ स्कूलों के गठन का कारण बना है।

प्रश्न: जब कुछ लोग दूसरों को नकारते हैं तो वे एकजुट कैसे हो सकते हैं?

जवाब: क्या तुमने यह नहीं सुना और नहीं समझा कि "ईमानवाले सिर्फ़ भाई-बहन हैं " (49:10) एक ईश्वरीय सिद्धांत है, और क्या तुम नहीं जानते कि "ईमानवाले सिर्फ़ भाई-बहन हैं" (49:10)

देखो कि "तुम में से कोई भी व्यक्ति तब तक ईमान नहीं लाएगा जब तक कि वह अपने भाई (बहन) के लिए वही न चाहे जो वह अपने लिए चाहता है"71 एक पैगम्बरी सिद्धांत है? यह कैसे हो सकता है कि दूसरों का इनकार इन दो दृढ़, आवश्यक नींवों को खत्म करने में सक्षम है? भले ही वे एक-दूसरे का इनकार करते हों, यह एक ईश्वरीय वचन नहीं है, इसलिए इसे खत्म नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, चूंकि इसका नुकसान इसके लाभ से अधिक है, तो समय ने इसे खत्म कर दिया है। उस नियम के अनुसार कार्य करना जायज़ नहीं है जो पहले से ही खत्म हो चुका है।

प्रश्न: उनकी आपसी नापसंदगी उन बुराइयों के कारण हो सकती है जिनसे वे पीड़ित हैं।
एक दूसरे के हाथ में हाथ डाले।

उत्तर: यह कैसे हो सकता है? किस न्याय और निष्पक्षता के अनुसार?
यह कैसे हो सकता है कि ईमान, मुसलमान होने और मानवता में भाईचारे से पैदा होने वाला प्यार, कुछ तुच्छ गैर-इस्लामी कामों और व्यवहार के तरीकों से पैदा हुई दुश्मनी से परास्त हो गया है, जो कि एक बचकाना बहाना है? मुसलमान होना और मानवता का हिस्सा होना, जिसके लिए परस्पर प्रेम की आवश्यकता होती है, वजन में उहुद पर्वत की तरह है, जबकि दुश्मनी को जन्म देने वाले कारण कंकड़ की तरह हैं। दुश्मनी से प्रेम को हराना इतना मूर्खतापूर्ण काम है कि इसका मतलब है उहुद पर्वत को कुछ कंकड़ के बराबर हल्का करना। प्रकाश और अंधकार की तरह, प्रेम और दुश्मनी एक साथ नहीं रह सकते। अगर दुश्मनी जीत जाती है, तो प्रेम चापलूसी और पाखंड में बदल जाता है; अगर प्रेम जीत जाता है, तो दुश्मनी दया और करुणा में बदल जाती है। मेरा तरीका प्रेम से प्रेम करना और दुश्मनी से दुश्मनी करना है। दुनिया में मुझे सबसे ज्यादा प्यार प्रेम से है और सबसे ज्यादा नफरत दुश्मनी से है।

प्रश्न: एक संत मार्गदर्शक और मार्गदर्शन करने का दावा करने वाले के बीच क्या अंतर है?

जवाब: अगर किसी का उद्देश्य इस्लामी दिल की रोशनी को दिमाग की रोशनी के साथ मिलाना है, अगर उसका रास्ता प्यार पर आधारित है और विनम्रता या शालीनता की विशेषता है, अगर उसके रास्ते की खासियत निस्वार्थता और निजी हितों को आगे बढ़ाने से बचना है, और अगर कोई इस्लामी जोश से और इस्लाम की जीत के लिए काम करता है - तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि ऐसा व्यक्ति एक सच्चा मार्गदर्शक है। लेकिन, अगर उसका रास्ता दूसरों की आलोचना करके खुद को गुणी और सदाचारी दिखाने, दूसरों के प्रति दुश्मनी रखने और पक्षपात या पक्षपात करने - जो सत्ता के विभाजन का कारण बनता है, और अगर उसका प्यार दूसरों के प्रति दुश्मनी पर निर्भर करता है, जो चुगली को जन्म देता है, तो ऐसा व्यक्ति एक देशद्रोही, गुमराह करने वाला मार्गदर्शन का दावेदार और एक भेड़िया है।

---

71 अल-बुखारी, "विश्वास" 6; मुस्लिम, "आस्था" 71.

लूट की तलाश में। वे ढोल बजाने के बजाय अपने हाथों से आध्यात्मिक मार्ग पर ढोल बजाते हैं ताकि उन्हें टिप मिल सके और उपहार मिल सकें। वे धर्म के साथ दुनिया का शिकार करने का प्रयास करते हैं। वे या तो किसी विषैले आनंद या किसी तुच्छ कल्पना या गलत तर्क और अनुमान से धोखा खा गए हैं, इस प्रकार वे खुद को महान मानते हैं और सच्चे महान मार्गदर्शकों और पवित्र व्यक्तियों के बारे में गलत राय रखने का रास्ता खोल दिया है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

धर्म की खातिर कदम उठाना

उन्होंने मुझसे पूछा: "आप देखते हैं कि अधर्म फैल रहा है; क्या धर्म की सेवा के लिए कार्रवाई करना आवश्यक नहीं है?"

जवाब: हां, यह जरूरी है, लेकिन बशर्ते कि धर्म के नाम पर हमें आगे आने के लिए इस्लाम से प्यार और धार्मिक उत्साह की जरूरत हो। अगर मकसद राजनीति और पक्षपात है, तो यह खतरनाक है। अगर हम पहले मामले में गलती करते हैं, तो यह माफ किया जा सकता है, लेकिन अगर हम दूसरे मामले में सफल भी हो जाते हैं, तो हम इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार होंगे।

उन्होंने पूछा: "हम कैसे समझें कि इसका मकसद राजनीति है या इस्लाम के प्रति प्रेम?"

उत्तर: जो कोई भी व्यक्ति राजनीतिक बहाने के कारण अपने धार्मिक राजनीतिक विरोधी के बजाय अपने अपराधी, पापी साथी-पक्षपाती को प्राथमिकता देता है, उसका उद्देश्य राजनीति है। साथ ही, यदि विचारों के एकाधिकार के कारण कोई व्यक्ति धर्म को, जिसके सभी मुसलमान हैं, साथी-पक्षपाती लोगों तक सीमित रखता है, तो यह शक्तिशाली बहुमत में धर्म के प्रति विरोध को जन्म देगा और धर्म को नापसंद करेगा। इससे पता चलता है कि उद्देश्य राजनीति है। कोई व्यक्ति धर्म की सेवा लोगों को धर्म की ओर निर्देशित करके, उन्हें धर्म का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करके और उन्हें उनके धार्मिक कर्तव्यों की याद दिलाकर कर सकता है। कुछ लोगों पर अधर्म का आरोप लगाने का मतलब है उन्हें धर्म पर हमला करने के लिए प्रेरित करना। मुस्लिम भूमि में धर्म का उपयोग नकारात्मक उद्देश्यों या नकारात्मक उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

(सुनुहाट (“हृदय तक की घटनाएँ”) से

विश्वास और प्रेम, निष्ठा और इस्लामी देशभक्ति और उत्साह

जो लोग मुझे यात्रा के दौरान देखते हैं, वे मुझे व्यापारी समझते हैं और मुझसे पूछते हैं कि क्या मैं व्यापारी हूं।

उत्तर: मैं एक व्यापारी और रसायनज्ञ हूँ।

प्रश्न: आप किसका व्यापार करते हैं?

उत्तर: दो पदार्थों में: मैं उन्हें मिलाता हूँ, और एक दूसरे में परिवर्तित हो जाता है एक इलाज है, और दूसरा बिजली को रोशन करने में।

प्रश्न: वे कहां पाए जाते हैं?

उत्तर: सच्ची सभ्यता और सद्गुणों के बाज़ार में। वे एक चमकदार काले बक्से में समाहित हैं, जिस पर "दिल" लिखा है; यह उस छाती में मौजूद है जो दो पैरों पर खड़ी है और जिसके माथे पर "आदमी" लिखा है।

प्रश्न: उनके नाम क्या हैं?

उत्तर: ईमान और प्यार, वफ़ादारी, और इस्लामी देशभक्ति और जोश।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

इस्लामी एकता

प्रश्न: इस्लामी एकता शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: इस्लामी एकता की नींव या कढ़ाई को देखो: इसमें मासूम साहस और वीरता जो विनम्रता और देशभक्ति के जोश से उत्पन्न होती है, सम्मान और करुणा से उत्पन्न मासूम मुस्कान, अच्छाई, लालित्य और आत्मा की उदारता से उत्पन्न आध्यात्मिक सुंदरता, मासूम प्रेम और हमेशा ताजा उत्साह से उत्पन्न स्वर्गीय आनंद, उच्च दुःख और पाप रहित उल्लास से उत्पन्न पारलौकिक आनंद और अमूर्त सुंदरता और शानदार अनुग्रह से उत्पन्न पवित्र श्रृंगार शामिल हैं। इस विलय से उत्पन्न चमकदार रंग खुशी के काबा के ऊंचे मेहराब के इंद्रधनुष के सात रंगों की छवि का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें पूर्व और पश्चिम एक साथ मिलते हैं।

हालाँकि, ऐसी एकता अज्ञानता से संभव नहीं है; एकता विचारों का सामंजस्य है, जो ज्ञान और शिक्षा के विद्युत प्रकाश के माध्यम से आता है।

(मुनाज़ारत से ["चर्चाएँ"])

भाग चार

भाग चार

विविध मामले

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के प्रति मानव विवेक की गवाही

Cऑनसाइंस मानव चेतना प्रकृति है, अदृश्य और दृश्यमान, भौतिक क्षेत्रों के बीच का अंतर-विभाजन बिंदु , जहाँ इन दो क्षेत्रों के बीच ज्वार मिलते हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रति इसकी गवाही के संबंध में, निम्नलिखित चार पर विचार करें

अंक:

पहला: किसी वस्तु की जन्मजात प्रेरणा या उसका ईश्वर प्रदत्त स्वभाव झूठ नहीं बोलता। उदाहरण के लिए, बीज की बढ़ने की इच्छा कहती है: "मैं फलां पौधा बनूंगा और फल पैदा करूंगा," और फिर वह ऐसा करता है। अंडे की जीवन की इच्छा कहती है: "मैं चूजा बनूंगा," और फिर चूजा बन जाता है। पानी की जमने की इच्छा कहती है: "मैं और जगह घेर लूंगा," और फिर वह जम जाता है। कठोर और ठोस लोहा इसका विरोध नहीं कर सकता; बल्कि, जब जम जाता है, तो पानी उसे विभाजित कर देता है। ऐसी इच्छाएँ और आग्रह सृष्टि के दिव्य आदेशों की अभिव्यक्तियाँ हैं जो दिव्य इच्छा से निकलती हैं।

दूसरा: अपनी पांच बाहरी इंद्रियों और कुछ अन्य आंतरिक इंद्रियों के अलावा, एक व्यक्ति के पास कई खिड़कियां भी होती हैं जो अदृश्य दुनिया की ओर खुलती हैं, और कई अन्य, अगोचर इंद्रियां भी होती हैं। हमारे पास प्रेरणा या आग्रह की छठी इंद्री और उत्साह की सातवीं इंद्री होती है। ये दोनों इंद्रियां झूठ नहीं बोल सकतीं या गुमराह नहीं कर सकतीं।

तीसरा: कोई काल्पनिक चीज़ किसी बाहरी तथ्य या वास्तविकता का मूल या कारण नहीं हो सकती। भरोसा और भरोसे के बिंदु का अस्तित्व

मानवीय विवेक में मदद मांगने का मुद्दा एक निर्विवाद वास्तविकता है। इसके बिना, मानव आत्मा, जो सृष्टि का सबसे परिष्कृत अंश और सबसे महान है, सबसे नीच और सबसे दयनीय प्राणी होगी। लेकिन ब्रह्मांड के अस्तित्व और इसकी व्यवस्था और पूर्णता में मौजूद बुद्धि इस संभावना को खारिज करती है।

चौथा: भले ही बुद्धि अपना आवश्यक कर्तव्य त्याग दे और गलत तरीके से देखे और निर्णय करे, लेकिन मानव विवेक अपने निर्माता को नहीं भूल सकता। भले ही वह अपने अस्तित्व को नकार दे, लेकिन विवेक उसके बारे में सोचता है, उसे देखता है और उसकी ओर उन्मुख होता है। अंतर्ज्ञान, जो कि बिजली की तरह तेज गति से समझने की शक्ति है, लगातार उसे उत्तेजित करता है। प्रेरणा, जो कि अंतर्ज्ञान का दोहरा रूप है, लगातार उसे प्रकाशित करती है। इच्छा, जो कि दुगुनी प्रवृत्ति, तड़प, दुगुनी इच्छा और ईश्वर के प्रति प्रेम, दुगुनी तड़प है, हमेशा उसे सर्वशक्तिमान के ज्ञान की ओर प्रेरित करती है। किसी के सहज मानवीय विवेक में महसूस होने वाले आकर्षण और आकर्षित होने की भावनाएँ इस सारभूत सत्य की आकर्षक शक्ति के कारण हैं।

मनुष्य की चेतना प्रकृति, जिसे हम विवेक कहते हैं, और जो अच्छे और बुरे में अंतर करती है, जो अच्छे में आनंद और उल्लास महसूस करती है, और बुरे से पीड़ित और दुखी होती है, चार मूल तत्वों से मिलकर बनी है, अर्थात् आध्यात्मिक बुद्धि, इच्छा-शक्ति, मन और अनुभूति की शक्ति। इन चार तत्वों को आत्मा की इंद्रियाँ भी माना जाता है। अपने अलग-अलग कर्तव्यों और कार्यों के अलावा, इनमें से प्रत्येक इंद्रिय के अस्तित्व के लिए एक अंतिम उद्देश्य होता है। इच्छाशक्ति का अंतिम उद्देश्य ईश्वर की पूजा करना है; मन के लिए, यह ईश्वर का ज्ञान है, अनुभूति की शक्ति के लिए, यह ईश्वर से प्रेम है, और आध्यात्मिक बुद्धि के लिए यह ईश्वर का दर्शन है। जिसे हम तक़वा (धर्मपरायणता और धार्मिकता) कहते हैं, जो कि पूजा का सही रूप या डिग्री है, इन सभी चार इंद्रियों के कार्यों का परिणाम है। शरीयत उन्हें पोषण देती है ताकि वे विकसित हों, उन्हें आवश्यक सामग्री से लैस करें, और उन्हें प्रत्येक के अस्तित्व के लिए अंतिम उद्देश्यों की ओर निर्देशित करें।

(नोक्टा [“द पॉइंट”] से)

सृष्टिकर्ता का ज्ञान प्राप्त करने के तरीके

सृष्टिकर्ता का ज्ञान प्राप्त करने के चार तरीके हैं, जो कि वह उच्चतम बिंदु है जिस तक मनुष्य पहुँच सकता है:

पहला मार्ग विद्वान सूफियों का है, जो आत्मा की शुद्धि, हृदय के परिष्कार तथा आंतरिक प्रकाश और अवलोकन पर आधारित है।

दूसरा धर्मशास्त्रियों का तरीका है। यह दो तर्कों पर आधारित है। पहला यह है कि ब्रह्मांड का अस्तित्व आवश्यक नहीं है, क्योंकि ब्रह्मांड का अस्तित्व अपने आप में नहीं है और ब्रह्मांड में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इसके अस्तित्व को अनिवार्य बना सके; यह भी समान रूप से संभव है कि यह अस्तित्व में आए या न आए। यह समय और स्थान में समाहित है, या आकस्मिक या आकस्मिक है। इसलिए कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जिसने इसे चाहा और इसे अस्तित्व में लाया। दूसरा तर्क यह है कि ब्रह्मांड कालातीत या आरंभहीन नहीं है: इसका एक आरंभ बिंदु है, और इसके लिए समय से असीम एक व्यक्ति के अस्तित्व की आवश्यकता है जिसने इसे लाया

अस्तित्व में आया।

ये दोनों ही तरीके कुरान से लिए गए हैं, लेकिन मानवीय विचार
उन्हें अपने स्वयं के रूप दिए हैं और तदनुसार उन पर विस्तार से चर्चा की है।

तीसरा रास्ता बुद्धिमान लोगों या विश्वासी दार्शनिकों का है। यह रास्ता विवाद और सनक या संदेह के हमले के लिए खुला है।

चौथा रास्ता कुरान का रास्ता है, जो सबसे सीधा और स्पष्ट रास्ता है, जो कुरान की बेजोड़ वाक्पटुता को दर्शाता है और जिसका पालन सभी के लिए संभव है। इस उच्चतम पद पर चढ़ने के चार साधन हैं: प्रेरणा; अध्ययन; गलत जानकारी, पूर्वाग्रह, गलत दृष्टिकोण और पाप या उत्पीड़न और अहंकार जैसे पापपूर्ण दृष्टिकोण का सुधार; और एक सही दृष्टिकोण।

कुरान का मार्ग मुख्यतः दो तर्कों पर आधारित है। पहला
ब्रह्मांड की सही व्यवस्था और पारस्परिक सहायता, परोपकार और उद्देश्यपूर्णता का तर्क है। कुरान की सभी आयतें जो चीजों के उद्देश्यों और लाभों का उल्लेख करती हैं, इस तर्क का संकेत हैं। यह तर्क इस तथ्य पर आधारित है कि पूर्ण सार्वभौमिक व्यवस्था परोपकार और उद्देश्यपूर्णता को ध्यान में रखती है। जो कुछ भी मौजूद है वह कई लाभों और उद्देश्यों की पूर्ति करता है और उसमें ज्ञान के कई उदाहरण हैं। इस तर्क के परिणामस्वरूप, प्राणियों के निर्माण में संयोग या संयोग की किसी भी धारणा को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया जाता है। एक निर्णायक इच्छा के बिना पूर्णता या दोषहीनता असंभव है। जीवों की जंजीरों की कड़ियों से लटके फलों और उद्देश्यों को दिखाकर, और अस्तित्व में स्थितियों और अवस्थाओं के परिवर्तनों और रूपांतरणों की गांठों में छिपी हुई बुद्धि, उपयोग और लाभों के उदाहरणों को दिखाकर, ब्रह्मांड और

इसकी उत्तम व्यवस्था को देखें, निर्माता के उद्देश्य और बुद्धिमता की निर्णायक गवाही दें। उदाहरण के लिए:

वनस्पति विज्ञान और प्राणि विज्ञान के विज्ञान इस बात के गवाह हैं कि लाखों पौधे और पशु प्रजातियाँ एक समय में अस्तित्व में आईं और प्रत्येक का अंत एक पिता या माता-व्यक्ति से होता है। जिसे हम नियम कहते हैं, जिसका अस्तित्व हम ब्रह्मांड के कामकाज से निकालते हैं और जिसे हम नाम देते हैं, और इसलिए जो नाममात्र, अंधे, अचेतन प्राकृतिक कारण हैं, वे किसी भी क्षमता - ज्ञान, इच्छा और शक्ति - से पूरी तरह रहित हैं, जो प्राणियों और व्यक्तियों की इन अद्भुत श्रृंखलाओं - उन दिव्य मशीनों - को उत्पन्न, रूप या विकसित कर सकते हैं, जो उन्हें बनाते हैं। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक प्रजाति यह प्रदर्शित और घोषणा करती है कि वे एक सर्वज्ञ निर्माता की शक्ति के हाथ से निर्मित हुए हैं। कुरान कहता है: फिर से देखो: क्या तुम कोई दरार देख सकते हो? (67: 3)

कुरान परोपकार और उद्देश्यपूर्णता के तर्क को सबसे बेहतरीन तरीके से प्रस्तुत करता है। ब्रह्मांड पर चिंतन करने के अलावा, आयतों के अंतिम हिस्सों में जो चीजों के उद्देश्यों और लाभों का उल्लेख करते हैं, कुरान इस तरह के कथनों के साथ आदेश देता है और चेतावनी देता है कि सोचो और सबक लो! क्या वे नहीं जानते? क्या वे तर्क नहीं करते? क्या वे याद नहीं रखते और ध्यान नहीं देते?, हमें अपने तर्क का उपयोग करने और अपने विवेक से परामर्श करने के लिए कहता है। इस प्रकार, यह परोपकार और उद्देश्यपूर्णता के तर्क को स्थापित करता है।

सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के लिए कुरान का दूसरा तर्क
ness का अर्थ है सृजन या उत्पत्ति। इसका सारांश इस प्रकार है:

हर प्रजाति और उस प्रजाति के हर सदस्य को एक अस्तित्व दिया गया है जो उसे सौंपे गए कार्य या उद्देश्य और उसमें निहित क्षमता के अनुरूप है। इसके अलावा, कोई भी प्रजाति अतीत की अनंतता तक फैली हुई श्रृंखला की कड़ी नहीं है ताकि वह श्रृंखला की उत्पत्ति भी हो सके, क्योंकि प्रत्येक प्रजाति का अस्तित्व आकस्मिक है, निरपेक्ष नहीं। (एक इच्छा है जो प्रत्येक चीज़ के अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के बीच वरीयता बनाती है और एक शक्ति है जो उसे अस्तित्व देती है। अस्तित्व स्पष्ट रूप से कालातीत नहीं है, लेकिन समय और स्थान में निहित है, और इसलिए इसकी एक शुरुआत है।) एक सत्य या एक स्थापित वास्तविकता इसके विपरीत नहीं हो सकती है, न ही इसकी प्रकृति बदल सकती है। संकर प्रजातियाँ - जैसे खच्चर - जो दो अलग-अलग प्रजातियों की संतान हैं, प्रजनन नहीं कर सकती हैं। वे अपवाद हैं और उनका मतलब कभी भी एक स्थापित सत्य का पूर्ण परिवर्तन नहीं होता है, जो असंभव है। जिसे लोग पदार्थ कहते हैं वह परिवर्तनशील रूप या गति और परिवर्तनों से अलग या स्वतंत्र नहीं है।

समय के भीतर घटित होते हैं। इसलिए, पदार्थ की भी एक शुरुआत होती है और वह समयबद्ध होता है। आकस्मिक और समयबद्ध होने के कारण, बल और रूप प्रजातियों के बीच आवश्यक अंतर का कारण नहीं हो सकते। कुछ आकस्मिक मूल पदार्थ या सार नहीं हो सकता। इसका मतलब यह है कि सभी लिंक जो प्रजातियों और उनकी विशिष्ट विशेषताओं को बनाते हैं, वे गैर-अस्तित्व से उत्पन्न होते हैं। प्रजातियों में क्रमिक पीढ़ी या प्रजनन उनके जीवन और अस्तित्व के लिए केवल कुछ स्पष्ट, नाममात्र स्थितियों के बीच होता है।

यह कितना अजीब भ्रम है कि जो लोग ईश्वर को उसके आवश्यक गुण और अभिव्यक्तियाँ, जैसे कि अनंत काल और रचनात्मकता, नहीं दे सकते, वे उन्हें निर्जीव, शक्तिहीन, अचेतन और समयबद्ध पदार्थ या परमाणुओं के लिए जिम्मेदार ठहराने में सक्षम हैं। विशाल ब्रह्मांड दिव्य शाश्वत शक्ति के हाथ के बजाय छोटे परमाणुओं की गति के नियंत्रण और प्रबंधन के लिए खुद को कैसे प्रस्तुत कर सकता है? उत्पत्ति और सृजन, जो शाश्वत दिव्य शक्ति के लिए विशिष्ट हैं, को सबसे गरीब और सबसे शक्तिहीन कारणों के लिए कैसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिनका उत्पत्ति और निर्माण से कोई लेना-देना नहीं है?

परिणामस्वरूप, कुरान अपनी आयतों के माध्यम से इस तर्क को स्थापित करता है जिसमें सृजन और उत्पत्ति का उल्लेख है। सच्चा कारण केवल ईश्वर है। अन्य कारणों का चीजों के अस्तित्व या जीवन में कोई रचनात्मक हिस्सा नहीं है। ये कारण ईश्वरीय शक्ति की गरिमा और भव्यता के सामने परदे हैं, ताकि शक्ति का हाथ सतही कारण से तुच्छ कार्यों और मामलों से संबंधित न दिखे।

हर चीज़ के दो पहलू या चेहरे होते हैं; एक भौतिक होता है, दर्पण के काले चेहरे की तरह। इस चेहरे में विपरीतताएँ, जैसे कुरूपता और सुंदरता, बुराई और अच्छाई, छोटा और बड़ा, होती हैं। इस चेहरे में कारणों को एक भूमिका सौंपी गई है, क्योंकि दिव्य भव्यता की अभिव्यक्ति और शक्ति की गरिमा के लिए ऐसा होना ज़रूरी है।

दूसरा पारदर्शी, अमूर्त पहलू या चेहरा है, जैसे दर्पण का पारदर्शी चेहरा। इस चेहरे में सब कुछ शुद्ध और सुंदर है और कारणों का इसमें कोई हिस्सा या प्रभाव नहीं है। दिव्य एकता के लिए ऐसा होना ज़रूरी है। यही कारण है कि, जीवन के दोनों चेहरे, आत्मा - जो जीवन का प्रकाश है - और अस्तित्व शुद्ध, पारदर्शी और सुंदर हैं, उनके किसी भी चेहरे में कारणों का कोई हिस्सा नहीं है और वे सीधे दिव्य शक्ति के हाथ से बनाए गए हैं।

गुरुत्वाकर्षण, गति और बल जैसी चीज़ें वास्तव में ब्रह्मांड में ईश्वर के आदतन कार्यों के नाम हैं। बशर्ते कि उन्हें वास्तविक न माना जाए

ब्रह्मांड में होने वाली घटनाओं के लिए जिम्मेदार कारण या ताकतों को कानून कहा जा सकता है।

(नोक्टा ["द पॉइंट"] से)

शरिया की दृष्टि में बहुविवाह और गुलामी

प्रश्न: विदेशी लोग बहुविवाह और गुलामी जैसे कुछ बहानों के आधार पर सभ्यता के दृष्टिकोण से शरीयत पर संदेह व्यक्त करते हैं।

उत्तर: मैं फिलहाल एक सिद्धांत व्यक्त करूंगा; मैं ऐसे मामलों को एक अलग पुस्तिका में समझाने पर विचार कर रहा हूं।

इस्लाम में दो तरह की कानूनी संहिताएँ हैं। एक वह है जिस पर शरीयत आधारित है; इस संहिता में शामिल सभी सिद्धांत और आदेश शुद्ध रूप से अच्छे और सुंदर हैं।

दूसरा यह कि शरीयत ने संहिता को संतुलित और बेहतर बनाया है।
अर्थात्, शरीयत ने इस संहिता में शामिल सिद्धांतों और कानूनों को क्रूर और दमनकारी होने से बचाया है; इसने उन्हें संशोधित करके आवश्यक मानवीय प्रकृति के अनुकूल व्यावहारिक रूप में रखा है, और उन्हें समय के हवाले कर दिया है ताकि भविष्य में वे पूरी सुंदरता प्राप्त कर सकें। दुनिया भर में प्रचलित और मानवीय समाजों और संस्थाओं में गहराई से स्थापित किसी परंपरा, प्रथा या कानून को एक साथ खत्म करने के लिए मानवता की आवश्यक प्रकृति को बदलने की आवश्यकता होती है। यह असंभव है और नकारात्मक परिणाम पैदा करता है। नतीजतन, शरीयत ने गुलामी के खिलाफ कानून नहीं बनाया; बल्कि, इसने गुलामी को बर्बरता से बचाया और इसे संशोधित करके ऐसे रूप में रखा जिससे गुलामों की मुक्ति और गुलामी का पूर्ण उन्मूलन संभव हो सके।

जहाँ तक बहुविवाह का सवाल है, एक से चार पत्नियाँ रखने की अनुमति के खास उद्देश्य हैं और यह तर्क, बुद्धि या आवश्यक मानवीय स्वभाव के विपरीत नहीं है। हालाँकि, शरिया ने पत्नियों की संख्या एक से चार नहीं की। बल्कि, इसने उन्हें कई से घटाकर अधिकतम चार कर दिया। इसके अलावा, इसने एक से अधिक पत्नियाँ रखने पर ऐसे प्रतिबंध लगाए कि इन प्रतिबंधों का पालन करने से बहुविवाह से होने वाले किसी भी संभावित नुकसान को रोका जा सकता है। भले ही यह कुछ अवसरों पर कुछ बुराई पैदा कर सकता है, लेकिन यह बुराइयों में से कमतर है। पूरी बुराई के सामने कमतर बुराई को स्वीकार करना सापेक्ष न्याय है। मानव जीवन के हर आयाम या पहलू में शुद्ध अच्छाई का होना असंभव है।

(तुलुआत ["हृदय में उठती विचारों की चमक"] से)

हदीस के अस्तित्व को अस्वीकार करने के संदर्भ में

प्रश्न: यदि कोई कहे, “मैं इस हदीस को स्वीकार नहीं करूंगा,” तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?

उत्तर: अस्वीकृति को कभी-कभी गैर-अस्तित्व की स्वीकृति के साथ भ्रमित किया जाता है, और इससे कई गलतियाँ होती हैं। यदि किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए आवश्यक सबूत की कमी है, तो अस्वीकृति उचित है।

लेकिन अस्तित्वहीनता को स्वीकार करने के लिए अस्तित्वहीनता के प्रमाण की आवश्यकता होती है। पहला संदेह है, जबकि दूसरा इनकार है। उदाहरण के लिए, पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को पैगंबरी हदीस के रूप में जिम्मेदार ठहराया गया एक रिपोर्ट

या तो इसे स्वीकार कर लिया जाता है या नहीं स्वीकार किया जाता है, या फिर इसे अस्वीकार कर दिया जाता है।

पहले के लिए सबूत की ज़रूरत होती है। दूसरा सबूत के आधार पर फ़ैसला नहीं है; यह अज्ञानता या संदेह है। तीसरा खंडन और इनकार है, जिसके लिए सबूत की ज़रूरत होती है; यह एक नकार है, और नकार को आसानी से साबित नहीं किया जा सकता। अगर विचाराधीन रिपोर्ट का अर्थ ग़लत साबित हो जाता है या यह पैगंबर से संबंधित नहीं है, तो इसका पैगंबरी हदीस होना खारिज कर दिया जाता है।

(तुलुआत [“हृदय में उठती विचारों की चमक”] से)

आलोचना, विशेषकर धार्मिक मामलों में

प्रश्न: आप आलोचना को किस प्रकार देखते हैं, विशेषकर धार्मिक मामलों में?

उत्तर: आलोचना की ओर ले जाने वाली बात या तो मन में क्रोध और घृणा को शांत करने का प्रयास है या फिर करुणा को बढ़ावा देना है। दोस्त या दुश्मन में दोष ढूँढना इसका एक उदाहरण है।

किसी ऐसी चीज़ को स्वीकार करने या पसंद करने की प्रवृत्ति, जिसका सही या भ्रष्ट होना समान रूप से संभव है, करुणा से उत्पन्न होती है, जबकि अस्वीकृति की प्रवृत्ति - यदि संदेह का कोई स्थान नहीं है - घृणा से उत्पन्न होती है।

> प्रेम और सहमति की आँख सभी दोषों के प्रति अंधी होती है,
> जबकि क्रोध और घृणा से भरी आंख केवल बुराई ही देखती है।

आलोचना को प्रेरित करने वाली चीज सत्य के प्रति प्रेम और सत्य को असत्य से मुक्त दिखाने की इच्छा होनी चाहिए। हमारे धर्मपरायण पूर्वजों द्वारा की गई आलोचना इसी प्रकार की थी।

(तुलुआत [“हृदय में उठती विचारों की चमक”] से)

अनुक्रमणिका

डी

और

एफ

जी

एच

एन

पी

क्यू

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची